THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182411

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 | S61P Accession No. H. 2437

Author सिंक्लेअर, अप्टन |

Title प्रत्यावर्तन | १९५५ –

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रत्यावर्त्तन

प्रथम खण्ड

●

मूल लेखक—
अप्टन सिंक्लेअर

अनुवादक—
नन्दकुमार पाण्डेय

प्रकाशक—
प्राची प्रकाशन
१२, चौरंगी स्क्वायर,
कलकत्ता—१

प्रकाशक :—
प्राची प्रकाशन
१८, चौरंगी स्क्वायर,
कलकत्ता—१

प्रथम संस्करण मई १९५५
मूल्य दो रुपया

मुद्रक :—
जेनरल प्रिण्टिङ्ग वर्क्स लि०
८३, पुराना चीनाबाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता।

प्राक्कथन

"प्रत्यावर्त्तन" के प्रकाशन का एक छोटा सा इतिहास है जो मैं पाठकों को बतला देना उचित समझता हूं।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के यशस्वी और वयोवृद्ध लेखक, मिस्टर अप्टन सिंक्लेअर के उपन्यासों से मेरा परिचय १९४५ में हुआ। मुंशी और रमणलाल वसंतलाल देसाई का साहित्य मूल से पढ़ने के लिये मुझे उन दिनों गुजराती भाषा सीखने की धुन लगी थी। आफिस में एक गुजराती बन्धु काम करते थे। मैंने उनसे गुजराती भाषा की कोई पुस्तक मांगी। अगले दिन वे "कतलखानु" नाम की एक मोटीसी, पुरानी पुस्तक साथ ले आए। वह सिंक्लेअर महाशय के प्रसिद्ध उपन्यास "दि जंगल" का गुजराती अनुवाद था। मेरा दिल बैठ गया। लेखक का नाम पहिले कभी नहीं सुना था और न ही अंगरेजी की पुस्तक को गुजराती में पढ़ने को जी चाहा। किन्तु बाँसा पर जाकर मैंने वह पुस्तक खोली तो उसी समय बन्द कर रुका जब एक एक करके मेरी दोनों मोमबत्तियां जल कर बुझ गईं। पुस्तक पूरी करते करते गुजराती भाषा तो भली भांति सीख ही गया, साथ ही मुझे सिंक्लेअर महाशय पर भी श्रद्धा हो गई। "कतलखानु" में उन्होंने "साम्यवाद" के समर्थन में बड़ी पक्की दलीलें दी थीं और मैं तो अपने आप को कम्युनिस्ट मानता ही था। उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि गुजराती अनुवादक ने "सोशलिज्म" शब्द का अनुवाद "साम्यवाद" किया है और सिंक्लेअर महाशय मेरी तरह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के भक्त नहीं हैं।

उसके बाद १९४६ में मुझे उनकी पुस्तक "वाइड इज दि गेट" पढ़ने क सुअवसर मिला। वह पुस्तक "वर्ल्डस् एण्ड" नामक ग्रन्थमाला का तीसरा अथवा चौथा भाग थी। मैं ग्रन्थमाला की अन्य पुस्तकें पढ़ने के लिए छटपटा उठा। किन्तु पुस्तकें खरीदना तो दूर रहा जिन पुस्तकालयों में वे उपलब्ध थीं उनका डिपाजिट देने के लिए भी मेरे पास संबल नहीं था। मुश्किल १९४७ में मिटी। कलकत्ते

की कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रमुख सदस्य से मेरा परिचय हुआ। काफी अमीर आदमी थे वे और उनके फ्लैट पर एक कमरा पुस्तकों से भरा था। पहिले ही दिन वहां जाकर मैंने देखा कि उक्त ग्रन्थमाला में प्रकाशित छः पुस्तकें उनके पास हैं। वे सिंक्लेअर को "पैटी-बुर्जुआ" मानते थे किन्तु उनका मत था कि मार्क्सवाद का दुरूह रहस्य समझने के पूर्व ऐसे लेखकों को पढ़ लेना बुरा नहीं। मैं अपने आपको मार्क्सवाद का धुरन्धर माने बैठा था। कई मन मार्क्सवाद उस समय तक पढ़ चुका था। मित्र से बातें करने पर मुझे यह भी लगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के नारे तो उन्हें याद हैं किन्तु ठेठ मार्क्सवाद से उनका विशेष परिचय नहीं। तो भी सिंक्लेअर महाशय की पुस्तकें उनसे माँग कर मैंने पढ़ डालीं। पुस्तकों में युरोप तथा अमेरिका के पूंजीवाद और नाजीवाद-फासिस्टवाद का जो काला चित्र खींचा गया था उसको देखकर मुझे विश्वास हो गया कि एकमात्र कम्युनिज्म ही मानव जाति को बर्बरता से बचा सकता है!

उसके बाद १९४९ में मैंने कम्युनिज्म को तिलांजलि दी। रूस की वास्तविकता का उद्घाटन और स्टालिन के लेख मेरा अन्तिम विश्वास छीन ले गए थे और मैं बड़ी तत्परता से श्री अरविन्द की ओर लौट रहा था। इन्हीं दिनों ग्रन्थमाला का दसवां अन्तिम उपन्यास, "ओ शैफर्ड स्पीक!" मेरे हाथ आया और मैंने देखा कि सिंक्लेअर महाशय भी कम्युनिज्म का वही बर्बर चित्र उपस्थित कर रहे हैं जो मेरे मानस पर पहिले से अंकित हो चुका था। न जाने क्यों, मैंने सिंक्लेअर महाशय को एक पत्र लिख मारा। पत्र में मैंने अनुरोध जताया कि वे ग्रन्थमाला को वहीं बन्द न करके आगे बढ़ायें।

ग्रन्थमाला का नायक लैनी बड वास्तव में प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट का मित्र था, किन्तु बड़ी चतुराई से उसने हिटलर का विश्वासपात्र बनकर नाजी नेतृवृन्द के मनमें यह बात जमा दी थी कि वह जर्मन सरकार का गुप्तचर है जो अमेरिका तथा ब्रिटेन इत्यादि के शासकवर्ग से मिलकर भेद की बातें लाता रहता है। लैनी बड का असली स्वरूप नाजी नेताओं को उस समय मालूम हुआ जब नूरेम्बर्ग के कोर्ट में खड़े होकर उसने मार्शल गोयरिंग के विरुद्ध गवाही दी। इसी सूत्र को पकड़ कर मैंने अपने पत्र में लिखा :

"मेरी राय में आपको यह अधिकार नहीं था कि केवल गोयरिंग को नूरेम्बर्ग में दण्ड दिलवाने के लिये आप लैनी का भेद खोल दें। शायद एक पराजित गुण्डे को चकित कर डालने का मोह आप न छोड़ पाए हों। तो भी यह ठीक नहीं हुआ। लैनी का यह काम आप किसी और पात्र से करवा सकते थे। आज जबकि रूस के सत्ताधीश अधिकाधिक खुले रूप में हमारे सामने आ रहे हैं तो लगता है कि ये नाजी-फासिस्ट आततायियों जैसे ही हैं। अन्तर यही है कि ये लोग मानव के आदर्शवाद का दुरुपयोग करते हैं जबकि वे लोग खुल्लमखुल्ला उस आदर्शवाद पर थूकते थे। इस नए कुचक्र के भीतर घुस कर इसे भी तहस-नहस करने के लिए लैनी की जरूरत थी। मुझे नहीं मालूम, शायद आप स्वयं ही इस ग्रन्थमाला को आगे बढ़ाने का फैसला कर चुके हों। किन्तु मैं चाहता हूं, और आशा करता हूं, कि जब तक बोल्शेविक समग्रवाद का सम्पूर्ण विनाश न हो जाए तब तक आप इस ग्रन्थमाला को आगे बढ़ाते रहें।

"साम्राज्यवाद और गणतन्त्र के बीच अभी जो विश्वव्यापी संघर्ष होकर चुका है उसको चित्रित करते समय आप पाश्चात्य जगत से बाहर नहीं निकले। जापान के आक्रमण से किस प्रकार पुराना साम्राज्यवाद ध्वंस्त हुआ और दक्षिण-पूर्व तथा सुदूर-पूर्व एशिया में क्या-क्या नई शक्तियां जागीं, इसकी ओर आप का ध्यान ही नहीं गया। आप बड़ी आसानी से लैनी को भारत, बर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया, इण्डोचायना, स्याम, फिलीपाइन्ज, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड में ले जा सकते थे और इस भूभाग पर उमड़नेवाली शक्तियों तथा उठनेवाले व्यक्तित्वों का परिचय निकट से तथा अपनी नाटकीय शैली में पाठकों को करा सकते थे यह माना कि इस काम में आपको कितने ही देशों और संस्कृतियों से गहरा परिचय प्राप्त करना पड़ता। यह भी माना कि ऐसा परिचय प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है। किन्तु ऐसा करने से आपकी ग्रन्थमाला का सौष्ठव बढ़ जाता और दक्षिण-पूर्व एशिया में लैनी के काम की भूमिका तैयार हो जाती। आज यह अंचल संसार का केन्द्र बन गया है, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं। और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप जैसे अनूठे चित्रकार के लिये यहां भी जटिलता, रोमांच और रंगों की कमी नहीं रहती।"

सिंक्लेअर महाशय ने मेरे पत्र की स्वीकृति तो लिख भेजी किन्तु मेरे अनुरोध का कोई उत्तर नहीं दिया। उसके बाद बीच बीच में वे अपनी रचनाएं मेरे पास भेजते रहे। मैं भी ग्रन्थमाला की बात भूल गया। तब मार्च १९५३ में एक दिन अचानक एक बड़ा सा पार्सल मेरे सामने आ पड़ा। खोलकर देखा कि सिंक्लेअर महाशय के नये उपन्यास की टाइपलिपि के पांच खण्ड हैं। उपन्यास का नाम था "लैनी बड फ्लाइज अगेन।" उसके कुछ दिन बाद इङ्गलैण्ड से प्रकाशित इस नई पुस्तक का एक संस्करण "रिटर्न आफ लैनी बड" के नाम से बाजार में आया। साथ ही कुछ पत्रों में सिंक्लेअर महाशय का एक पत्र छपा जिसमें उन्होंने कहा कि यदि कोई प्रकाशक विदेशी भाषाओं में उनकी नई पुस्तक का अनुवाद छापना चाहें तो वे बिना रायल्टी के अधिकार देनेके लिये तैयार हैं। मैंने मित्रों से सलाह करके हिन्दी तथा बंगला में अनुवाद निकालने की अनुमति लेखक से मांग ली और उन्होंने दे भी दी। किन्तु अर्थाभाव के कारण अनुवाद निकालने में बहुत देर हो गई। अब उपन्यास का प्रथम खण्ड निकालते समय यह आशा है कि दूसरा खण्ड भी शीघ्र ही पाठकों के सामने रख सकेंगे। अंग्रेजी में पूरा उपन्यास एक ही जिल्द में उपलब्ध है किन्तु अनुवाद का विस्तार बढ़ जाने के कारण हम इसे दो खण्ड में छाप रहे हैं।

कलकत्ता
मई, १९५५

सीताराम गोयल

प्रत्यावर्त्तन

अध्याय १

अशान्तिके वातावरणमें शान्तिकी चर्चा

रेडियो स्टेशन के माइक्रोफोन के सम्मुख एक दार्शनिक खड़ा हुआ था। रेडियो स्टेशन एक ऐसा स्थान है जहां दार्शनिकों को अधिक नहीं बुलाया जाता। दार्शनिक एक कृषकाय, लघुआयतन व्यक्ति था और यद्यपि उसकी ७५ वीं जन्म-तिथि सन्निकट थी तथापि उसके चेहरेका रंग तपी हुई ईंट की भांति लाल था, उसका हाव-भाव एक फरिश्ते का सा था और उसके सिर पर श्वेत केशों की एक भव्य राशि थी जिसे उसने पीछे की ओर उलट रखा था। जन्म के संयोग से वह एक अंगरेज लार्ड था किन्तु चूंकि वह जन्मगत कुलीनता की परम्परा पर विश्वास न रखता था इसलिये उसने अपनी उपाधि का परित्याग कर दिया था। परन्तु अमेरिका के लोगों की दृष्टिमें लार्ड होना एक बहुत बड़ी बात है और इसलिये यहां पर हमारे दार्शनिक को अपनी उपाधि से नाता तोड़ना कठिन हो गया था।

वह अमेरिका के लाखों निवासियों को अपने उन विचारों से अवगत करा रहा था जो ७५ वर्ष के दीर्घ जीवन में उसने अर्जित किये थे। वह कह रहा था– "जब तक मानव जाति दो भागों में विभाजित है और प्रत्येक भाग दूसरे को दुष्ट समझता है तब तक इस प्रकार की स्थिति रहेगी जिसमें कष्ट और क्लेश की सृष्टि करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य रहेगा। यदि इस स्थितिको बदलना है तो हमें अपने मानसिक दृष्टिकोण को अधिक उदार बनाना पड़ेगा और संसार को अश्रुसिंचित समझकर प्रसन्न होने की पुरानी आदत को बदलना पड़ेगा।"

दार्शनिक ने अपनी वक्तृता जारी रखते हुए कहा: "हम लोग ऐसे युग में रह रहे हैं जो एक विचित्र प्रकार के संघर्ष से गुजर रहा है। इतिहास के प्रादुर्भाव के समय से अब तक मानव हृदय में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। किन्तु प्रकृति पर मनुष्य ने पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है। हमारी वासनाएं, इच्छाएं और आशंकाएं वैसी ही बनी हुई हैं जैसी कि प्रागैतिहासिक मनुष्य की थीं किन्तु

अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये हमारे हाथोंमें जो शक्ति आ गयी है वह सर्वथा नवीन है। आज इस बात की आवश्यकता है कि मनुष्य इस कटु सत्य को भली भांति समझ ले कि जिस पड़ोसी से वह घृणा करना है उसका सर्वनाश स्वयं उसको कोई लाभ नहीं पहुंचा सकता जिसके प्रति वह आसक्त है। यदि मनुष्य ने जो नई शक्तियां प्राप्त कर ली हैं उनके साथ साथ वह इस पृथिवी पर शान्ति पूर्वक निवास करना चाहेगा तो उसे केवल अपने मस्तिष्क का ही नहीं हृदय का भी विकास करना पड़ेगा।"

वक्तृता समाप्त करके दार्शनिक माइक्रोफोन छोड़कर एक ओर हट गया और एक अन्य व्यक्ति जो अपेक्षाकृत कम आयु का था उसके स्थानपर आकर बोला :

"शान्ति चर्चा यहां समाप्त हो रही है। यह चर्चा शान्ति संघ द्वारा परिचालित हुई है जो कि उच्च आदर्शों से अनुप्राणित एक ऐसी संस्था है जिसका उद्देश्य तृतीय विश्व-युद्ध का निवारण है। हमारे पूर्ववर्ती वक्ता नोबेल पुरस्कार विजेता दार्शनिक और गणितज्ञ बरट्रेन्ड रसेल थे। आज से ठीक एक सप्ताह बाद इसी समय रेडियो पर यह शान्ति चर्चा पुनः प्रसारित होगी। शान्ति संघ का पता है पेटिका संख्या १०००, एडगेमीयर, न्यूजर्सी। में लैनी बड बोल रहा हूँ। नमस्कार!"

नियन्त्रण-कक्षमें परिचालक ने माइक्रोफोन बन्द कर दिया और वह प्रौढ़ व्यक्ति अब अपने सम्मानीय अतिथि की ओर घूमा।

"बड़ी मनोरञ्जक रही यह वार्ता लार्ड रसेल!" उसने कहना शुरू किया। किन्तु दूसरे ही क्षण एक सेक्रेटरी ने आकर बाधा देते हुए कहा, "लार्ड रसेल, आपका टेलीफोन आया है। आपका भी मिस्टर बड!" रेडियोपर कोई प्रोग्राम समाप्त होते ही सदा ऐसा ही होता था। पास में रखे हुए लगभग आधे दर्जन टेलीफोन एक साथ घनघना उठते थे।

किन्तु इस बार टेलीफोन पर कोई उत्साही प्रशंसक न था। कम से कम लैनी वाले टेलीफोन पर कोई गम्भीर व्यक्ति था। तारके अन्दरसे एक आवाज बोल रही थी, "क्या आप मिस्टर लैनी प्रेस्काट बड हैं?' जब लैनी ने स्वीकारात्मक उत्तर दे दिया तब आवाज बोली, "मैं अमेरिका के गुप्तचर विभाग के वाशिंगटन कार्या-

लय से बोल रहा हूं। मेरा नाम है जॉन टर्नर। क्या आप ब्रानको जानते हैं?'

"इस नामके एक व्यक्ति को जानता हूँ। उसके अन्य नाम भी हैं।' लैनी ने उत्तर दिया।

"मैं भी जानता हूँ। उसका एक दूसरा नाम है वेटर्ल।"

"हां, हाँ, वही व्यक्ति है। मैं उसे जानता हूं।"

"हम लोगों को अभी अभी केबिलग्राम से आदेश प्राप्त हुआ है कि एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर आपसे परामर्श लें। क्या आप वाशिंगटन आ सकते हैं?"

"मैंने उनके अनुरोध को कभी अस्वीकार नहीं किया। क्या कल मध्यान्ह के समय आने से काम चल जाएगा?"

"हमलोग कल मध्यान्ह के समय आपकी प्रतीक्षा करेंगे। हम आपके खर्च का सारा प्रबन्ध कर देंगे। मैं शोरहम में आपके लिये एक सीट रिजर्व कराए देता हूँ।"

लैनी ने टेलीफोनका रिसीवर रख दिया किन्तु दूसरे ही क्षण फिर घण्टी घन-घना उठी। इसके बाद टेलीफोन पर संदेशोंका तांता लग गया। बधाइयां देने वाले उत्साही प्रशंसकों ने घण्टे दो घन्टे उसका पिण्ड न छोड़ा। इधर रेडियो कार्या-लय का प्रघोषक व्यस्त था, वक्ता व्यस्त था, प्रघोषक की पत्नी व्यस्त थी, और भी कई सहकारी व्यस्त थे; उधर श्रोता बधाइयां देनेपर तुले हुए थे। वे जानना चाहते थे कि वे इस आयोजन की क्या सहायता कर सकते हैं, वे "शान्ति" नामक छोटे से साप्ताहिक पत्र की प्रतियां मंगाना चाहते थे, वे भाँति भांति के प्रश्न पूछने के इच्छुक थे और विश्व शान्तिकी स्थापना के लिये अपने विचार प्रेषित करना चाहते थे। इन सभी व्यक्तियोंकी सद्भावना असंदिग्ध थी किन्तु इनमें सभी सुयोग्य न थे और इनकी बातोंको धैर्य पूर्वक सुनने के लिये—जैसे कि लैनी बड और लारेल बड तथा उनके मित्र पिछले एक वर्ष से सुनते आ रहे थे—बहुत बड़े आत्म-संयम की आवश्यकता थी।

लारेल आगामी दो मासोंके अन्दर ही एक नये शिशु की प्रतीक्षा कर रही थी। किन्तु इसके कारण लैनी ने अपनी मेजपर दैनन्दिन काम करना बन्द न किया था। वह बिस्तरपर लेटे लेटे अपनी डाक देखने, उत्तर लिखाने और संसार के भिन्न भिन्न भागोंसे आनेवाले यात्रियोंसे मिलने का काम पूर्ववत करता जा रहा

था। एक पुराने परित्यक्त कारखाने की इमारत को रेडियो-स्टेशन में परिवर्तित कर दिया गया था और वहीं पर एक साप्ताहिक पत्रके सम्पादन तथा प्रकाशन की व्यवस्था भी कर ली गयी थी। एक समाचारपत्र संघ भी बना लिया गया था। किन्तु कार्यकर्त्ता कम थे और काम अधिक था। फसल भरपूर थी किन्तु उसे समेटने वाले दुर्लभ थे!

(२)

अपने सम्मानित अतिथि को उनलोगों ने रात्रावास के लिये अपने घर पहुंचा दिया। घर पर उनके विश्राम की समुचित व्यवस्था करने के उपरान्त लैनी ने अपनी पत्नी लारेल से टेलीफोन पर आनेवाले उस संदेश की चर्चा की। लारेल का मुखमण्डल उदास हो गया। कुछ निरुत्साह कण्ठ से वह बोली, "हे भगवान्! वे लोग तुम्हें फिर ले जाना चाहते हैं।"

"अभी मैं कुछ नहीं कह सकता" लैनी ने उत्तर दिया, "उस व्यक्ति से पूरी बात करने पर ही वस्तु स्थिति का पता चलेगा। शायद वह मुझ से कुछ जानकारी मात्र चाहता हो।" उसने और कुछ न कहा क्योंकि विश्वसनीय और महत्वपूर्ण गुप्तचर अपनी पत्नी तक से अपनी बातें छिपा कर रखने के आदी होते हैं। पत्नी भी अपने पतिके स्वभाव से भली-भाँति अवगत थी; इसीलिये प्रश्न पूछ कर उसे परेशानी में न डालती थी। "मैं मोटरपर यात्रा की सोच रहा था।" लैनी से थोड़ी देर बाद कहा, "तुम चाहो तो साथ चल सकती हो। तुम्हें वायु परिवर्तन की आवश्यकता भी है। रास्ते में हमलोग अपनी समस्याओं पर भी विचार कर लेंगे।"

सचमुच वे लोग अपने दैनन्दिन कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि वृहत्तर योजनाओं के लिये उनके पास समय न बचता था।

लारेल ने स्वीकृति दे दी। उसने सोचा कि वह होटल में विश्राम अथवा कुछ पठन-पाठन करती रहेगी और उधर लैनी अपना काम पूरा करता रहेगा। उसने अपने सेक्रेटरी को आवश्यक आदेश दे दिये और लैनी ने अपने सेक्रेटरी को। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने प्रतिष्ठित अतिथि को दूसरे दिन प्रातःकाल

न्यूयार्क पहुंचा देंगे। एक रेडियो प्रोग्राम चलाना बहुत बड़े झंझट का काम है; उसके प्रसंग में आनेवाली छोटी मोटी बातों का कोई अन्त नहीं रहता। तिस पर लैनी और लारेल एक साप्ताहिक पत्र और समाचार-संघ भी चलाते थे। किन्तु इन सब कार्यों में जहाँ एक ओर बहुत बड़ी झंझट है वहाँ दूसरी ओर एक महत्वपूर्ण सुविधा भी है। वह यह कि आपको अपने युग के महान चिन्तकों के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त होता है और उनका सान्निध्य मानव जाति के प्रति आपकी आशाओं को बनाए रखने में बहुत दूर तक सहायक होता है।

उन्होंने अपने बिस्तर बाँधे और घड़ी में सबेरे छै बजे का अलार्म भर दिया। अक्टूबर का महीना था और इतने सबेरे सूर्य न उगता था। किन्तु उन्होंने सोचा कि यात्रा कुछ अंधेरा रहते शुरू कर देने पर रास्ते की भीड़ से थोड़ी बहुत राहत मिलेगी। दूसरे दिन सबेरे उठकर उन्होंने पूर्वकल्पित योजना के अनुसार केवल उतना ही विलम्ब किया जितना कि एक गिलास संतरे का रस पीने और थोड़ी सी रोटी तथा फल खाने के लिये आवश्यक था और इसके बाद वे तुरन्त अपने पथ पर रवाना हो गये। उन्होंने जिस सड़क पर अपनी यात्रा शुरू की वह दक्षिण की ओर जानेवाली मुख्य सड़क थी और "यू० एस० १" के नाम से प्रसिद्ध थी।

इतने सबेरे भी सड़क पर मोटरों और ट्रकों का तांता लग गया था। लैनी और लारेल की मोटर कई नगरों से होते हुए दौड़ी जा रही—नेवार्क, एलीजाबेथ, ट्रेन्टन, फिलाडेलफिया, विलमिन्डास्टन, बाल्टीमोर। बीच बीच में छोटे छोटे नगर और पेट्रोल पम्प तथा होटल भी मिलते जाते थे। कहीं कहीं पर बड़े बड़े कारखाने दिखाई देते थे और उनकी लम्बी लम्बी चिमनियों से युक्त ईंट की विशालकाय इमारतें यत्र-तत्र फैली हुई थीं। इन कारखानों में उत्पादित होने वाले विभिन्न माल ट्रकों तथा समानान्तर चलने वाली रेलवे लाइन द्वारा दूर दूर भेजे जा रहे थे। बंदरगाहों में भी जहाजों का आवागमन जारी था और इनमें इन कारखानों का माल भरा जा रहा था। पांच वर्षों तक अमेरिका ने इन जहाजों में विध्वंसक पदार्थ भर भर कर भेजे थे और अब उसे उस विनाश की क्षतिपूर्ति के लिए आगामी कई वर्षों तक रचनात्मक पदार्थ भर भर कर भेजने पड़ेंगे।

लैनी बड मोटर चलाने की कला में पारंगत था। वह युवावस्था से ही मोटर चलाने का अभ्यस्त था और पिछले तीस वर्षों में वह किसी दुर्घटना का शिकार न हुआ था। जब कभी वह यातायात की द्रुतगामी भीड़ में पड़ जाता तो वह अपनी मोटर और अगली मोटर के बीच थोड़ा सा रिक्त स्थान अवश्य छोड़ देता ताकि पीछे से कोई मोटर उसकी मोटर पर चढ़ आवे तो दोहरी दुर्घटना न हो। जब कोई उत्साही ड्राइवर अपने उत्साह के अतिरेक में उससे आगे निकलने का प्रयत्न करने लगता तो वह चुपचाप अपनी गति धीमी करके उसे निकल जाने देता। अब वह पूर्वापेक्षा और भी अधिक सतर्क था क्योंकि उसकी पत्नी लारेल के पेट में उस अपेक्षित द्वितीय संतान का अतिरिक्त भार था जिसकी प्रतीक्षा दोनों बड़ी उत्कण्ठा के साथ कर रहे थे।

रास्ते में पति-पत्नी संसार की विभिन्न समस्याओं की चर्चा करते जा रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वे दोनों ग्रीक देवता, एटलास की युगल मूर्तियाँ हो जो विश्व का भार अपने कंधों पर वहन करती हुई जा रही हों! संसार में चारों ओर अशान्ति फैली हुई है, सारा विश्व अपने भार से विह्वल सा होकर कांप रहा है। आजसे प्रायः सत्रह मास पूर्व भयानक विश्वयुद्ध समाप्त हुआ था। उस समय संसार के अनेकों राष्ट्र एकसाथ एकत्रित हुए थे, उन्होंने विश्व में शान्ति और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिये अपना एक अन्तर्राष्ट्रिय संगठन भी बनाया था। किन्तु आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह संगठन पूर्वकल्पित योजना के अनुसार सुचारु रूप में काम नहीं कर रहा। एक ही दिन में क्रेमलिन ने उसके तीन प्रस्ताव "वीटो" कर दिये और न्यूयार्क में सुरक्षा-समिति के अधिवेशन से सोवियत प्रतिनिधि अवज्ञापूर्वक निकल आया। क्या इसका यह अर्थ हुआ कि रूस इस संगठन से एकदम किनारा काट लेने का इच्छुक है? विन्स्टन चर्चिल ने मिसूरी आकर प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के आतिथ्य में रूस पर यह अभियोग लगाया कि वह देश अपने आसपास एक लौह आवरण डालकर पश्चिमी संसार को अलग कर रहा है। प्रत्युत्तर में स्टालिन ने चर्चिल को "युद्ध-पिपासु" के नाम से पुकारा!

सबसे अधिक चिन्तनीय घटना दक्षिणी सागर के बिकनी नामक टापू पर

घटित हुई जहाँ अमेरिका ने एक प्रदर्शन द्वारा संसार को दिखाया कि अणु-शक्ति कितनी भयानक वस्तु है ! उस विस्फोट के फलस्वरूप ११ पुराने जंगी जहाज नष्ट-भ्रष्ट हो गए थे और २५ अन्य जहाज गम्भीर रूप में क्षतिग्रस्त हुए थे। जल के अन्दर होने वाले एक द्वितीय विस्फोट ने एक जंगी जहाज, एक वायुयानवाहक तथा आठ अन्य युद्ध-पोतों को डुबा दिया था। अमेरिका ने राष्ट्र-संघ के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा था कि इस प्रकार के आणविक अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन पर प्रतिबन्ध आरोपित कर दिया जाय और इस प्रकार की व्यवस्था की जाय कि समय समय पर हर राष्ट्र की जाँच पड़ताल होती रहे ताकि कोई इस अन्तर्राष्ट्रीय समझौते का अतिक्रमण न कर सके। किन्तु रूस की ओर से यह घोषणा हुई थी कि वह इस प्रकार की योजना को कभी स्वीकार न करेगा। निश्चय ही ये सारी बातें उस दम्पति के लिये अचिन्तनीय थीं जो अपना सारा समय विश्व-शान्ति की चर्चा में लगा रहा था।

(३)

वाशिंगटन पहुंच कर लैनी ने एक अर्दली से कहकर अपनी मोटर गैरेज में रखवा दी। क्यों कि बड़े बड़े शहरों में अपनी मोटर को काम में लाना अर्थशून्य होता है ; बहुत सा समय व्यर्थ ही "पार्किंग" का स्थान खोजने में व्यर्थ हो जाता है। होटल में जाकर उसने लारेल के साथ भोजन किया और फिर उसे उसी होटल के एक कमरे में ठहरा कर एक टैक्सी द्वारा विशाल ट्रेजरी बिल्डिंग की ओर चला जिसमें उस रहस्याच्छन्न व्यक्ति जान टर्नर का कार्यालय था।

थोड़ी ही देर में लैनी उन राजकर्मचारियों में से एक के सम्मुख उपस्थित किया गया जिनके सम्बंध में समाचार पत्रों में भांति भांति की कटु आलोचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। इन राजकर्मचारियों के सम्बंध में बहुधा जनता की यह धारणा होती है कि ये आराम से मेज पर पैर फैलाए हुए बैठे रहते हैं। किन्तु लैनी ने इस प्रकार की विश्रामपूर्ण स्थिति में कभी किसी सरकारी अधिकारी को न देखा था। इस समय वह जिस अधिकारी से मिलने के लिये आया था उसने तुरन्त उठकर उसकी अभ्यर्थना की और पास पड़ी हुई एक कुर्सी पर बैठने के लिये आमं-

त्रित किया। वह एक गम्भीर और शान्त प्रकृति का प्रौढ़ व्यक्ति प्रतीत होता था; उसके सूट पर हाल ही में लोहा किया गया था और उसकी नेकटाई भी समुचित रंगरूप की थी। लैनी के सम्बन्ध में भी यही बात थी और इसलिये उन दोनों ने एक दूसरे को देखते ही समझ लिया कि वे समाज के एक ही स्तर पर हैं। दोनों ने यह जानकर उचित रूप में एक दूसरे का स्वागत भी किया। मिस्टर टर्नर ने लैनी की ओर सिगरेट बढ़ाई और जब उसने धूम्रपान न किया तो उन्होंने ने भी सिगरेट न सुलगाई।

"मिस्टर बड," टर्नर ने अपना वक्तव्य शुरू किया, "मैंने अपनी फाइल देख कर यह अनुमान लगाया है कि आपका गुप्तचर विभाग के साथ कभी घनिष्ट सम्बंध नहीं रहा। शुरू से ही हम लोगों पर एक उत्तरदायित्व यह भी रहा है कि हम जाली सिक्कों का उत्पादन रोकें। अमेरिका में ही हम लोगों के लिये जितना काम है वह पर्याप्त है किन्तु अब हमारे जिम्मे योरोप का भी एक अच्छा खासा भाग आ पड़ा है। इसके अतिरिक्त प्रशान्त महासागर के कई हजार द्वीप भी हैं।"

"क्या वे लोग जाली कौड़ियां बनाते हैं?" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा।

"वे लोग वे सभी चीज़ें बनाते हैं जिन्हें वे किसी अभागे पर लाद सकते हैं। अच्छा, यह तो बताइये कि नाजियों पर अपना शोध कार्य करते समय क्या आपको कभी जालसाजी का कोई प्रसंग मिला था?"

"मैं बहुधा इस प्रकार की बातें सुना करता था। किन्तु चूंकि इसका मेरे काम के साथ कोई सम्बंध न था इसलिये मैंने इस ओर कोई विशेष ध्यान न दिया था। मैं जानता हूं, हिटलर ने ब्रिटेन पर आक्रमण के लिये पूरी तयारी की थी और इस योजना के अन्तर्गत उसने बहुत बड़ी तादाद में जाली अंगरेजी सिक्के भी छाप लिये थे ताकि ब्रिटेन पर अपना अधिकार करने के बाद वह वहां की सारी सम्पत्ति बिना जब्ती का आश्रय लिये प्राप्त कर ले। मैंने सुना है कि साचसेनहासेन के बन्दी-शिविर में उसने जाली नोट बनाने के लिये एक अच्छा खासा ब्लाक-निर्माण विभाग खोल रखा था।"

"मुझे यह जानकारी मिली है कि एक समय उसके पास १४० से भी अधिक

कारीगर तथा सजायाफ्ता जालसाज थे जो भिन्न भिन्न देशों से आए थे। इन लोगों का काम भिन्नभिन्न राष्ट्रों की मुद्राओं के जाली ब्लाक तयार करना था। तटस्थ देश हिटलर का मार्क स्वीकार न करते थे, वे ब्रिटिश पाउण्ड अथवा अमरीकी डालर मांगते थे। यदि ये जाली डालर अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच पाते तो मित्रराष्ट्रों के बाजारों में जाली मुद्रा की बाढ़ सी आ जाती और चीजों के दाम आकाशगामी हो जाते। शत्रु को सारा माल मिलता रहता और हम दिवालिया हो जाते। उसने जो जाली सिक्के बनाये थे वे इतने अच्छे थे कि बहुत समय तक यह जाल छिपा रहा।"

"इसे हम लोग हिटलर की मुद्रा के नाम से पुकारा करते थे।" लैनी ने कहा।

"हम लोगों के पास यह जानकारी है कि उन लोगों ने प्रायः बीस करोड़ पाउण्ड के मूल्य के जाली ब्रिटिश नोट छापे थे—अर्थात् प्रायः एक अरब डालर। जब अमरीकी सेनाएं साचसेनहासेन के समीप पहुंची थीं तब उन लोगों ने सारी मशीनें और दास-मजदूर डैन्यूब के तट पर स्थित माथाउसेन बन्दी-शिविर में भेज दिया था। इसके बाद इन्हें आस्ट्रिया भेज दिया गया था और अन्त में जब जर्मनी का पतन हुआ तब इन सारे प्रसाधनों को सम्पूर्ण जर्मन भाषा-भाषी क्षेत्र में फैला दिया गया था। हाल ही में हम लोगों को फ्रेइसिंग की एक फैक्टरी में कुछ स्टाक मिला था। नोटों की एक दूसरी लाट धातु-निर्मित पीपों में बन्द करके आस्ट्रिया की बैड इस्टाल नामक झील में डुबा दी गयी थी। हमलोग इन जाली नोटों के बनाने के काम में आने वाली प्लेटों को प्राप्त करने के लिये विशेष रूप से उत्सुक हैं। जब तक ये प्लेटें हमारे हाथ में नहीं आ जातीं तब तक जाली मुद्रा को बाढ़ जारी रहने की आशंका भी नष्ट नहीं होती। अभी तक हमें इनका कोई सुराग नहीं मिल सका है; सम्भव है ये उन नये फासिस्टों के हाथों में हों जो सत्तारुढ़ होने की बाट जोह रहे हैं; यह भी सम्भव है कि ये प्लेटें इस समय गुण्डों के किसी गिरोह के पास हों—बहुत से नाजी इस समय इस पेशे पर उतर आए हैं, इतना तो आप जानते ही होंगे। इस बात की भी सम्भावना है कि ये प्लेटें कम्युनिस्टों के हाथ लग गयी हों और भविष्य के सम्बन्ध में इन लोगों की भी अपनी योजनाएं हैं। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि

यदि पश्चिमी संसार की अर्थव्यवस्था नष्ट भ्रष्ट हो गयी तो इससे कम्युनिस्ट लोग अप्रसन्न न होंगे।"

"मैं देख रहा हूँ कि आपके पास आवश्यकता से अधिक काम है। किन्तु मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?"

"पहले तो मैं आपसे इस व्यक्ति के बारे में कुछ जानाना चाहता हूं जो अपने आप को कभी ब्रान कहता है कभी वेटर्ल और कभी बर्नहाइट मान्क।"

"उसका वास्तविक नाम मान्क ही है।"

"आप उसे अच्छी तरह जानते हैं?"

"मैं उसे तेरह चौदह वर्षों से जानता हूं।"

"और आप उसपर विश्वास करते हैं?"

"पूरी तरह से। मैं कई प्रकारसे उसकी परीक्षा ले चुका हूं। वह एक पुराना नाविक और मजदूर नेता है। राजनीति के क्षेत्र में वह एक सोशल-डेमोक्रैट है। एक समय वह इस पार्टी का कोई अधिकारी था; आज भी उसका सक्रिय सदस्य है।"

"इसका तो यह अर्थ हुआ कि वह कम्यूनिस्ट नहीं है?"

"इसका अर्थ यह हुआ कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी गर्दनपर कम्यूनिस्ट लोग सत्तारूढ़ होते ही गोली चलाते हैं। मैं स्पेन के युद्धमें मान्क के साथ काम कर चुका हूं और नाजी आतंक के दिनों में भी आदि से अन्त तक मुझे उसका सहयोग प्राप्त हुआ था। आप उसका विश्वास कर सकते हैं।"

(४)

अपनी मेज़ की दराज़ से टर्नर ने कागज़ का एक गोल पुलिन्दा निकाला जो टेलीप्रिन्टर मशीन से निकला हुआ प्रतीत होता था। "मैं इसे पढ़ने के लिये आपको नहीं दे सकता क्योंकि यह सांकेतिक भाषा में है," उसने कहा, "किन्तु मैं थोड़ा सा पढ़कर आपको सुनाए देता हूं।"

उसने कागज के पुलिन्दे को एक निशान लगे हुए स्थान तक फलाकर कहा, "यहां एक सांकेतिक संख्या दी हुई है–यानी मान्क की संख्या। इसके बाद लिखा

है—एडगेमीयर, न्यूजर्सी का लैनी प्रेस्काट बड नामक व्यक्ति इस मामलेमें कुछ सहायता पहुंचा सकता है। वह भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट का योरोप-स्थित विश्वासी एजेन्ट था और उसका विश्वास किया जा सकता है। यदि वह एडगेमीयर में न हो तो उसके पिता राबर्ट बड जो न्यू कासेल, कनेक्टीकट, की बड अलिंग एयर क्राफ्ट कार्पोरेशन के अध्यक्ष हैं, के जरिये उसके साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। वह बचपन से ही स्ट्रबेनडर्फ को जानता है। वह ग्राफ और संगीतज्ञ कर्ट मेसनर को भी जानता है।—क्या ये सारी बातें ठीक हैं, मिस्टर बड ?"

"सब ठीक हैं। शायद आपके पास कोइ ऐसा सूत्र है जो स्ट्रबेनडर्फ की ओर संकेत करता है ?"

"उस ओर संकेत करनेवाले कई महत्वपूर्ण सूत्र हैं। किन्तु पहले मैं आपसे कुछ बातें पूछ लेना चाहता हूं। आपकी ग्राफ स्ट्रबेनडर्फ के साथ कितनी घनिष्टता है ?"

"वह जेनरल ग्राफ स्ट्रबेनडर्फ के रूप में प्रसिद्ध है। मैं बचपन से ही उसे जानता हूं। बर्लिनमें मैंने उसके कई सामाजिक आयोजनोंमें भाग लिया था। मैं यह तो नहीं कह सकता कि उसके साथ मेरी विशेष घनिष्टता है किन्तु मैं उससे अच्छी तरह परिचित हूँ।"

"और यह दूसरा व्यक्ति कर्ट मेसनर ?"

"कर्ट को भी मैं बचपन से जानता हूं—उस समय से जब कि हम दोनों नृत्यकला सीखनेके लिए हेलेराउ के डालक्रोज स्कूलमें भर्ती हुए थे। प्रथम महायुद्ध के बाद फ्रेंचरिवेयरा में वह मेरी माता के यहाँ अतिथि के रूप में ठहरा था। हम लोगोंने उसके लिये एक स्टूडियो की व्यवस्था कर दी थी जहां वह आठ वर्षों तक रहा था और जिसके फलस्वरूप आज वह एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हो सका है। किन्तु दुर्भाग्यवश इस समय हमारी मित्रता नष्ट हो चुकी है। पिछली बार जब उसके साथ मेरी भेंट हुई थी उसने घृणापूर्वक मेरे मुंहपर थूक दिया था।"

"यह मामला बड़ा महत्वपूर्ण है और यदि आप मुझे पूरी बात बताने में कोई संकोच न करें तो—" टर्नर ने कहा।

"नहीं, नहीं, संकोच की कोई बात नहीं।" लैनी ने उत्तर दिया।" प्रथम महा-युद्ध समाप्त होने के कुछ ही दिनों बाद कर्ट मेसनर नाजीवाद के प्रभावमें आ गया था। उसने हिटलर के साथ मेरी मुलाकात करायी थी किन्तु मैं उससे प्रभावित न हुआ था। किन्तु प्रायः दस वर्ष पूर्व जब प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट ने मुझसे सहायता चाही तब मैंने कर्ट के सम्मुख यह बहाना रचा कि अब मैं हिटलर के सम्बन्धमें अपनी पुरानी धारणाएं बदल चुका हूं और इसके बाद मैं उस महापुरुष के अंत-रंग मित्रों के व्यूह में प्रवेश पानेमें समर्थ हो गया। कर्ट तब तक इस बातको न समझ पाया कि मैं उसे धोखा दे रहा हूँ जब तक कि अमरीकी सेनाएं राइन तक न पहुंच गयीं। इसके बाद जब उसने मेरी चाल को समझा तो यह स्वाभाविक ही था कि वह मुझपर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे।"

"मान्क का इस सम्बन्ध में जो विचार है वह भी मैं आपको बताए देता हूँ।" टर्नर ने कहा और टेली प्रिण्टर के उस कागज से पढ़ना शुरू किया। "संख्या अमुक की रिपोर्ट है कि मेसनर को एक अमरीकी बन्दी शिविर से मुक्त कर दिया गया है और इस समय वह सम्भवतः स्ट्रेनडर्फ में है—जो अब पोलैन्ड का स्टिएलस्जक् है।—आप का क्या विचार है?"

"मुझे कुछ पता नहीं किन्तु मुझे सन्देह है कि वह वहां लौटने की बात सोचेगा और वहां वाले उसका वापस आना सहन करेंगे। किन्तु उसका नाजी दर्शन हम लोगों की अपेक्षा कम्युनिस्टों के अधिक अनुकूल है और इसलिये सम्भव है वे लोग उसे अपने यहां रख लें। आप तो जानते ही हैं, वे लोग संस्कृति का बहुत बड़ा स्वांग रचे हुए हैं—यह उनके प्रचार अभियान का एक अंग है। शायद वे लोग उसे कुछ आर्थिक सहायता प्रदान करके उससे संगीत की स्वर-रचना भी करावें।"

"क्या आप समझते हैं कि उसके साथ फिर मित्रता स्थापित करके आप उससे कोई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं?"

"मैं निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता, मिस्टर टर्नर। बचपन की मित्रता हमारे मस्तिष्क पर बड़ा गम्भीर प्रभाव डालती है और वह प्रभाव कभी पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होता। आयु में वह मुझ से दो वर्ष बड़ा है और लड़कपन में उसका अध्ययन तथा उसका आत्म सम्मान का भाव मेरी तुलना में कहीं अधिक था। मेरे

प्रति उसका दृष्टिकोण एक पिता का सा था। वह मुझे जर्मन आदर्शवाद की बातें समझाया करता था और इस प्रसंग में बड़े लम्बे लम्बे दुरूह शब्दों का प्रयोग करता रहता था। आज भी सम्भवतः उसके हृदय में मेरे लिये एक कोमल स्थान हो। शायद वह मेरे साथ सुलह करने के लिये राजी हो जाए।"

"आप एक गुप्तचर रह चुके हैं और इसलिये इस बात से भली-भाँति अवगत हैं कि हमलोग व्यर्थ की बकवास नहीं करते। यदि आप मेरे साथ सहयोग करने की कृपा करेंगे तो मैं आपको बता दूंगा कि इस काम में किस किस बात की आवश्यकता होगी। मौके पर तैनात हमारे एजेण्ट से आपको अधिक जानकारी प्राप्त होगी। हाँ, यह भी बता दूं कि हम लोग आपको सारा खर्च तथा क्षति-पूर्ति के रूप में एक समुचित रकम भी देने के लिये प्रस्तुत हैं।"

"मैंने आज तक सरकार से किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति नहीं ली है और अपना खर्च मैं स्वयं उठाता रहा हूँ। बात यह है, मिस्टर टर्नर, कि शान्ति का प्रचारक बनने के पूर्व मैं एक कला-विशेषज्ञ था और प्रेसीडेण्ट का एजेण्ट बनने के बाद मैं अपने उस गुण को एक आड़ की भाँति काम में लाता रहा हूं। मैंने एकबार ग्राफ स्ट्रबेनडर्फ की चाची से एक प्राचीन कलाकार के कुछ चित्र खरीद लिये थे। मैंने ये चित्र अपने लिये नहीं बल्कि अपने एक मुअक्किल के लिये खरीदे थे। स्ट्रबेनडर्फ में मैं इस प्रकार का और भी व्यापार कर सकता हूँ—बशर्ते कि वहाँ से चित्रों का चौरानयन हो सके।"

"हम लोगों को इस बात में राज़ी होने की दिशा में कोई अड़चन नहीं है। किन्तु आप को आने जाने का खर्च हमसे अवश्य लेना चाहिये। और मेसनर—उसकी आर्थिक स्थिति कैसी है?

"जहाँ तक मेरा अनुमान है वह निर्धन ही होगा। उसका परिवार काफी बड़ा था। युद्ध के समय एक घाव खाकर उसका शरीर अपंग हो गया था और अब वह पियानो नहीं बजा सकता। वह संगीत की स्वर-रचना अवश्य कर सकता है किन्तु जर्मनी में इस काम के लिये उसे पैसा कौन देगा? उसकी सबसे अन्तिम रचना जो मैं ने सुनी थी हिटलर का मार्च-गीत था—वागनेर के कैसर-मार्च की प्रणाली पर।"

"आपको एक उचित सीमा तक उसे पैसे का प्रलोभन देने की छूट रहेगी। सम्भव है वह हम लोगों की सेवा के लिये तयार हो जाय। किन्तु पहले आप इस बात का निश्चय कर लीजियेगा कि उस पर पूरा विश्वास किया जा सकता है अथवा नहीं। सम्भव है, चूंकि आपने उसे कई वर्षों तक धोखा दिया है इसलिये वह भी आपको उसी प्रकार धोखा देने की बात मन में ठान बैठे।"

"सभी नाज़ी दूसरों को धोखा देने पर विश्वास रखते हैं। प्रश्न केवल यह है कि वे अमरीकियों की अपेक्षा कम्युनिस्टों को धोखा देना अधिक पसंद करेंगे अथवा नहीं। मुझे इस सम्बन्ध में पहले से ही पूरा पता लगा लेना पड़ेगा, इसके बाद ही मैं उसे पैसे का प्रलोभन दूंगा। किन्तु मिस्टर टर्नर, पहले एक बात का स्पष्टीकरण कर दीजिये। स्टूबेनडर्फ नगर अब पोलैण्ड में है और मैं यह समझता हूँ कि वह एक स्वतन्त्र राज्य है; कम से कम वह एक स्वतन्त्र राज्य माना तो जाता ही है। क्या पोलैण्ड के लोग हमारे साथ सहयोग करेंगे?"

"हम लोग पोलैण्ड को एक मित्र राष्ट्र के रूप में देखने की पूरी पूरी चेष्टा कर रहे हैं, मिस्टर बड। हम लोगों के पास यह जानकारी है कि सोवियत रूस उस देश पर अपनी सैनीक तानाशाही आरोपित कर रहा है; किन्तु हमलोग उसे भी अपने मित्र के रूप में देखने का प्रयत्न करते हैं। हमने उन लोगों के पास अपनी रिपोर्टें भेजी थीं और आशा की थी कि वहां से हमें वही सहयोग प्राप्त होगा जिसकी कि एक मैत्रीपूर्ण सभ्य सरकार से आशा की जा सकती है। किन्तु एक वर्ष हो गया और अभी तक उन लोगों ने हमारी शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया। इधर यह विचित्र मुद्रा—जैसा कि हम लोग इसे कहा करते हैं—चोरी चोरी बर्लिन तथा पश्चिमी जर्मनी में आती जा रही है। इस बात की पूरी सम्भावना प्रतीत होती है कि स्थानीय अधिकारी, चाहे वे रूसी हों चाहे पोल, इन अपराधियों के साथ मिले हुए हैं और लाभ में अपना हिस्सा बटा रहे हैं। यदि बात ऐसी ही निकली तो इसे अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता का अतिक्रमण करने वाला एक गम्भीर अपराध समझा जायगा। हम लोगों ने यह निश्चय किया है कि स्वयं इस भेद को फोड़ने का प्रयत्न करें और हम समझते हैं कि शान्ति के प्रचारक तथा कला-मर्मज्ञ के रूप में आप को स्टूबेनडर्फ जाने के लिये

आवश्यक अनुमति प्राप्त हो जाएगी। आप वहाँ जाकर कुछ चित्र खरीदने का बहाना कर सकते हैं अथवा अपने पुराने मित्र कर्ट मेसनर से मिलने का बहाना कर सकते हैं—जो भी आप उचित समझें।"

"मेरे लिये वहां की यात्रा आसान न होगी। मेरी पत्नी गर्भवती है और दो महीने के अन्दर ही उसका समय आ जाएगा। इस प्रकार की स्थिति में पति का पास रहना आवश्यक रहता है। इसके अतिरिक्त मेरे पास और भी बहुत से काम पड़े हुए हैं। मुझे भविष्य के सम्बंध में सारी योजनाएं बन्द कर अपने कर्मचारियों को आवश्यक आदेश दे देने पड़ेंगे।"

"मैं समझता हूं इस काम में आपको अधिक समय न लगेगा, मिस्टर बड। और फिर यह मामला सर्वोपरि महत्व का है। हमारे पास इस अनुमान के लिये पर्याप्त आधार हैं कि जाली नोट बनाने वाली प्लेटों में से कुछ स्टबेनडर्फ में अवश्य छिपी हुई हैं; अथवा वहां के कुछ लोगों को इनकी जानकारी अवश्य है। क्या आप ऐसा नहीं समझते कि इस मामले में स्वयं मेसनर का भी कुछ हाथ हो सकता है?"

"मिस्टर टनर, आपके अनुमान के अनुसार इस काण्ड में तीन प्रकार के व्यक्तियों का हाथ हो सकता है—नाजियों का, गुण्डों का अथवा कम्यूनिस्टों का। आपका संदेह सबसे अधिक किस पर है?"

"निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है क्यों कि तीनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। कुछ पुराने नाज़ी अब गुण्डे हो गए हैं और कुछ ने कम्यूनिस्टों की सेवा स्वीकार कर ली है। बहुत से महत्वपूर्ण और सुयोग्य नाज़ी इस निम्न स्तर पर उतर आए हैं। अब रही गुण्डों की बात; सो वे सुविधानुसार कभी नाज़ी बन जाते हैं कभी कम्युनिस्ट। क्या आप मेसनर से अपनी पुरानी मित्रता के आधार पर नहीं मिल सकते? आप कह सकते हैं कि आप को इस मित्रता के भंग होने से बड़ा क्षोभ था और अब आप उस पुराने झगड़े को रफा दफा करने के लिये आए हैं।"

"मैं यह बहाना कर सकता हूं। किन्तु यह निश्चित है कि वह मुझपर संदेह अवश्य करेगा कि इसमें मेरा कोई गुप्त अभिप्राय है।'

"सावधानी के साथ उससे मिलिये, उसके साथ जर्मनी की स्थिति पर वार्त्तालाप करिये और उसके दृष्टिकोण के सम्बंध में एक निश्चित धारणा प्राप्त कीजिये। इसके बाद यदि आप उसे चकमा न दे सके तो कम से कम आप को इतनी भरोसा तो रहेगा कि आप स्वयं उसके चकमे में नहीं आए।"

(५)

इसके बाद प्रायः दो घण्टों तक लैनी ने जाली नोट बनाने वाली कला की प्रारम्भिक किन्तु आवश्यक बातों को समझने का प्रयत्न किया। उसने अभी तक इस विज्ञान को समझने की कोई चेष्टा न की थी और इसलिये इस दिशामें एकदम अनभिज्ञ था। उसने एक कागज पर आवश्यक बातें दर्ज कर लीं और उन्हें कण्ठस्थ करनेका आश्वासन दिया। उसे ब्रिटिश पांच पाउन्ड वाले नोट का नमूना दिखाया गया जो सफेद कागजपर छपा हुआ था। उसे अमरीकी पांच-डालरवाला नोट भी दिखाया गया जिसे अमेरिका में "दि लान्ग ग्रीन" और "फोल्डिन्ग मनी" जैसे प्रिय और मधुर नामों से पुकारा जाता है। उसे इन नोटों में कोई त्रुटि न दिखाई पड़ी और शायद बिना किसी द्विधा के वह इन्हें स्वीकार कर लेता। तब टर्नर उसे एक माइक्रोस्कोप के सामने ले गया और उन नोटों में जो सूक्ष्म त्रुटियां रह गयी थीं उनकी ओर उसका ध्यान आकर्षित किया। इतना होने पर भी इन त्रुटियों को अनायास पकड़ लेना सम्भव न था।

इन सूक्ष्म त्रुटियों के रह जाने के फलस्वरूप हिटलर के इन जाली नोट बनाने वालों में से कई एक को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा था। टर्नर ने बताया कि किस प्रकार तीन चार कारीगरों ने एक षड़यन्त्र रच कर अपनी प्लेटों में कुछ सूक्ष्म चिन्ह अंकित कर दिये थे जिनके जरिये ये नकली नोट बादमें पकड़े जा सकें। बाद में जब नाजियोंको इस बात का पता चला तो उन अभागे कारीगरों को तुरन्त गैस-घर में भेज दिया गया—अर्थात् उन्हें सियानोजेन की विषाक्त गैस द्वारा मार डाला गया और उनके शवों को जलाकर हड्डियां पीसकर खाद में परिवर्तित कर दी गयीं। साचसेनहासेन के दास-मजदूर-शिविर में सभी कारीगरों को मृत्यु के आतंक में काम करना पड़ता था। यदि उनसे कोई गलती हो जाती तो यही

समझा जाता कि उन्होंने यह गलती जानबूझ कर की है। गलतियों की कोई गुंजायश न रखी गयी थी।

लैनीको जिस मामलेकी छानबीन करनी थी उसके सम्बन्धमें टर्नर ने अधिक विवरण न दिया। वह उसे बर्लिन जाकर ट्रेजरी एजेण्ट से प्राप्त करना होगा; गुप्तचर विभाग इस बृहत्तर संगठन की एक शाखा मात्र है। टर्नर ने कहा, "संभव है कोई ऐसी बात हो जाय जिसके फलस्वरूप आप इस कामको हाथ में न ले सकें।" और लैनी ने संकेत समझ लिया। बात यह है कि लैनी इस बात से भली भांति अवगत था कि गुप्तचरों को उतनी ही बातें बताई जाती हैं जितनी कि आवश्यक होती हैं और वह भी तब जब उनका जानना नितान्त आवश्यक हो उठता है। इसीलिए शेष संसार के साथ उनका व्यवहार सब समय इसी आधार पर चलता है।

लैनी तीन दिन बाद वायुयान द्वारा यात्रा करने के लिये राज़ी हो गया। उसे बताया गया कि उसका पासपोर्ट तथा टिकट उसके घर पर पहुंचा दिया जायगा। उसे कैमरा-घर में ले जाया गया और उसका चित्र उतार लिया गया। यों तो उसका चेहरा बड़ा हंसमुख था किन्तु न जाने क्यों इस प्रकार के अवसरों पर हंसमुख चेहरे भी गम्भीर हो जाया करते हैं। चित्र को "डेवलप" करने में कुछ ही मिनट लगे। अन्तमें लैनी को चमड़े का एक फोल्डर दे दिया गया जो इस बात का प्रमाण था कि वह अमेरिका के गुप्तचर विभाग का एक एजेण्ट है।

अन्तमें सरकारी अधिकारी ने कहा, "कागजात खो सकते हैं अथवा चुराए जा सकते हैं। आप एक सांकेतिक शब्द चुन लीजिए ताकि अवसर आने पर आप उचित व्यक्ति के सम्मुख अपना परिचय दे सकें। कोई भी शब्द चुन लीजिए।"

लैनी आज तक इस बात को नहीं समझ सका कि उसके मस्तिष्क में सांकेतिक शब्द के रूप में क्रिस्टाफर कोलम्बस का नाम क्यों आया। किन्तु उस समय उसके मुंह से यही शब्द निकल गया और टर्नर ने मुस्करा कर "ठीक है" कहते हुए अपनी स्वीकृति दे दी। युद्ध के समय लैनी बहुधा इस बात पर आश्चर्य किया करता था कि सांकेतिक शब्दों के रूप में "आपरेशन ओवर

लार्ड," "भट्ठी" और "मशाल" जैसे विचित्र शब्द क्यों चुने गए। अब वह इस रहस्य को बहुत कुछ समझ गया।

(६)

ट्रेजरी बिल्डिंग से निकल कर लेनिन्ग टहलते हुए पेनसिलवानिया एवेन्यू की ओर चला जो यातायात की भीड़ से भरा हुआ था। उसने जालसाजी की कला से सम्बन्धित आवश्यक बातों के जो नोट तयार कर लिये थे वे उसके हाथ में थे और वह बड़ी तत्परता के साथ उन्हें कण्ठस्थ कर रहा था।

अचानक उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। वह तुरन्त एक टेलीफोन स्टैण्ड पर गया और ह्वाइट हाउस की लाइन जुड़ाई। उसने प्रेसीडेण्ट के प्रथम सेक्रेटरी से बात करने की इच्छा प्रकट की यद्यपि वह जानता था कि आवश्यकता से अधिक व्यस्त रहने के कारण प्रथम सेक्रेटरी के स्थान पर कोई सहकारी अधिकारी ही लाइन पर आवेगा। ऐसा ही हुआ भी। लैनी ने सहकारी अधिकारी से कहा कि प्रायः तीन मास पूर्व वह प्रेसीडेण्ट के व्यक्तिगत प्रतिनिधि के रूप में मास्को में मार्शल स्टालिन से मिलने के लिये भेजा गया था; सम्भव है सहकारी को इसकी खबर न हो किन्तु प्रथम सेक्रेटरी इस बातसे अवश्य अवगत होंगे। अब वह फिर योरोप जा रहा है और प्रेसीडेण्ट ने यह आदेश दिया था कि दुबारा यात्रा करने के पूर्व उन्हें अवश्य सूचित कर दिया जाय।

लैनी की बात से सहकारी अधिकारी पर्याप्त रूपमें प्रभावित हुआ और उसने वचन दिया कि वह प्रथम सेक्रेटरी का ध्यान इस ओर आकर्षित करेगा। प्रभावपूर्ण स्वर में लैनी ने कहा कि वह इस समय सोरहम होटल में ठहरा हुआ है और कल प्रातःकाल ही उसका विचार मोटर द्वारा न्यूजर्सी में अपने घर की ओर रवाना हो जाने का है। यदि इसके पूर्व ही उसे प्रेसीडेण्ट से कोई आदेश प्राप्त हो जायगा तो वह रुक जायगा।

इतना कह कर लैनी ने टेलीफोन रख दिया और अपने होटल की ओर चल पड़ा। होटल में अपने कमरे में पहुँच कर उसने देखा कि उसकी पत्नी बिस्तर पर लेटे लेटे पाण्डुलिपियों के उस बण्डल को सम्हाल रही है जो वह अपने साथ ले

आयी थी। लैनी ने उससे कहा—"प्रिये, मैं वायुयान द्वारा बर्लिन जाने का वचन दे आया हूं। वहां मुझे एक व्यक्ति को किसी प्रश्न पर कुछ सलाह देनी है। इस यात्रा में कोई खतरनाक बात नहीं है। तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करना। मुझे वहां अधिक दिन न ठहरना पड़ेगा।"

उसने और कुछ न कहा और लारेल ने भी अधिक बातें जानने का कौतूहल न प्रकट किया क्योंकि वह एक समझदार पत्नी थी। किन्तु उसके मनमें चिन्ता अवश्य उत्पन्न हुई क्योंकि लैनी उसी रास्ते से जाने वाला था जिस रास्ते पर वह एक भयानक दुर्घटना का शिकार होकर अपनी दोनों टांगों तोड़ बैठा था। किन्तु लैनी ने हँसी उड़ाते हुए लारेल का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि इन टूटी टांगों की बदौलत ही वह उसे विवाह के लिये राजी कर सकी थी। दाम्पत्य जीवनमें आप इस प्रकारके मजाक कर सकते हैं, शर्त केवल इतनी ही है कि इस प्रकार की बातें करते समय आप मुस्कराते रहें। लैनी बहुधा मुस्कराता रहता था और इस छोटी सी सतर्क स्त्री को सचमुच हृदय से चाहता था जिसने उसकी व्यक्तिगत चिन्ताओंका उत्तरदायित्व स्वयं ले लिया था। वह एक अत्यन्त समझदार स्त्री थी और यद्यपि उसकी ज़बान कुछ तीखी थी तथापि उसने यह नियम बना लिया था कि इस तीखी जबान का प्रयोग केवल युद्ध-पिपासुओं पर हो।

लैनीने एक कुर्सी पर बैठकर अपना मध्यान्हकालीन समाचार पत्र खोला ही था कि टेलीफोन की घंटी घनघना उठी। लाइन पर सहकारी सेक्रेटरी था; वह कह रहा था कि प्रेसीडेण्ट संध्या को नौ बजे ह्वाइट हाउस में मिस्टर लैनी बड से मिल कर प्रसन्न होंगे। लैनी ने उत्तर दिया कि वह निश्चित समय पर ह्वाइट हाउस पहुँच जाएगा।

यह संवाद लारेल से छिपाकर रखना एक कठिन बात थी किन्तु लैनी अभी-तक यह न जान पाया था कि यह बात गुप्त रखना आवश्यक होगा अथवा नहीं। इसलिये वह चुप ही रहा। उसने संध्या के समय लारेल के साथ एक सिनेमा में जाने का वायदा किया था। किन्तु अब इस विचार को त्यागना आवश्यक हो गया। उसने केवल इतना ही कहा, "यह अनिवार्य है" और लारेल ने भी संक्षेप

में यही कहा कि, "इसके फलस्वरूप मुझे कुछ घरेलू काम समाप्त कर लेनेका अवसर मिल जाएगा।"

(७)

बिना किसी सवारी के पैदल ही ह्वाइट हाउस जाना शिष्टाचारसंयत नहीं माना जाता। किन्तु उस संध्या को लैनी की इच्छा पैदल चलने की ही थी। जब वह फाटक के पास पहुँचा, मौके पर तैनात नाविक संतरी ने उसके इस वक्तव्य को स्वीकार कर लिया कि प्रेसीडेण्ट के साथ उसकी मुलाकात का समय निश्चित हो चुका है। किन्तु अचानक संतरी की गुमटी से एक सादी वर्दी वाला व्यक्ति निकल आया और लैनी के पीछे पीछे चलने लगा। इसी प्रकार के दो अन्य व्यक्ति भी निकल आए और सीढ़ियों के पास खड़े हो गए। इस अवसर पर चमड़े के केसमें बन्द अपना वह कार्ड निकालने में लैनी को बड़ा आनन्द आया जो उसी दिन मध्यान्ह के समय टर्नर ने उसे दिया था। वह कार्ड देखकर तीनों व्यक्ति आश्चर्य-चकित हो गए और उन्होंने वचन दिया कि भविष्य में वे इस बात का स्मरण रखेंगे।

ह्वाइट हाउस के अन्दर पहुंचने पर एक प्रौढ़वयस्क नीग्रो ने लैनी का हैट ले लिया और सेक्रेटरी उसे लिफ्ट तक ले गया। यह भव्य और शानदार इमारत डेढ़ सौ वर्षोंसे कुछ कम प्राचीन थी किन्तु वह बड़ी तेजी के साथ नष्ट हो रही थी। प्रेसीडेण्ट के बालरूम का फर्श, चलते समय इस प्रकार शब्द करता था कि लैनी को ऐसा लग रहा था मानो वह निचले कमरे में गिरनेवाला हो। शीघ्र ही इन लोगों को इस इमारत को एकदम भूमिसात करके फिर से बनाने में प्रायः ५५ लाख डालर खर्च करने पड़ेंगे। किन्तु अभी इसका कोई चिन्ह न दिखाई दे रहा था और लैनीको ऐसी कोई बात न मिली जो इन ऐतिहासिक कमरों के सम्बन्ध में उसकी धारणा पर कोई बुरा प्रभाव डालती।

पुराने जमानेमें जब वह यहाँ आया था तब उसे प्रेसीडेण्ट फ्रैंकलिन रूजवेल्ट के शयनकक्ष में ले जाया गया था जो तीसरी मंजिल पर था। वहां उसने प्रेसी-डेन्ट को एक बन्द गले का स्वेटर, जो समयकी गति के साथ साथ जर्जर हो चला था, पहने हुए देखा था। इस बार उसे तीसरी के स्थानपर दूसरी मंजिल में ले जाया गया जहां उसने नये प्रेसीडेण्ट हैरी ट्रूमन को एक बड़ी सी शानदार मेजपर

बैठे हुए देखा। प्रेसीडेण्ट ट्रूमन अमेरिका के दस सबसे अच्छी पोशाकवाले व्यक्तियों में से एक प्रतीत हो रहे थे। उनकी मेज़पर कागजों का एक ढेर लगा हुआ था। उन्हें प्रतिदिन प्रायः छः सौ बार अपने हस्ताक्षर करने पड़ते थे और कभी कभी पिछले दिनका अधूरा कार्य समाप्त करनेके लिये उन्हें प्रातःकाल साढ़े पांच बजे उठ जाना पड़ता था।

प्रेसीडेण्ट ट्रूमन मझोले कदके व्यक्ति थे; लैनीसे प्रायः दो इंच छोटे। हाव भाव से वे काफी चुस्त प्रतीत होते थे और बातें करते समय प्रत्युत्पन्न मति द्वारा परिचालित होते हुए दीखते थे। आगन्तुकको देखकर वे उठ खड़े हुए, उससे प्रेमपूर्वक हाथ मिलाया और कहा कि उससे दुबारा मिलकर वे बड़े सन्तुष्ट हुए हैं। पास में रखी हुई एक कुर्सी पर उसे बैठनेका संकेत करते हुए उन्होंने कहा, "मिस्टर बड, जब कभी मुझे आधे घण्टे का अवकाश मिलता है मैं आपके रेडियो प्रोग्राम सुनता हूँ। आप जिस प्रकार की सुरुचि और विवेक का परिचय देते हैं उसे देख कर मैं आपसे ईर्ष्या करने लगता हूँ। देशके सबसे अच्छे मस्तिष्क आप सामने ला रहे हैं और मैं मन ही मन यह इच्छा रखता हूँ कि मुझे भी ऐसे व्यक्तियोंके साथ काम करने का अवकाश मिलता।"

"सुरुचि और विवेक तो मेरी पत्नी का है। इस प्रोग्राम का सारा काम वही सम्हालती है।" आगन्तुकने उत्तर दिया।

"उन्हें आप किसी समय यहां लाकर मुझसे मिलाइये। उनसे कहियेगा कि मैं उनकी योग्यता तथा शान्तिके प्रति निष्ठा को देखकर मन ही मन ईर्ष्यालु हूं।"

"तब वह मुझसे पूछेगी कि क्या हमारे प्रेसीडेण्ट शान्ति पर निष्ठा नहीं रखते?" आगन्तुक ने मुस्कराते हुए कहा।

किन्तु प्रेसीडेन्ट ट्रूमन न मुस्कराए। "मैं वस्तुतः एक शान्ति प्रेमी व्यक्ति हूँ। मिस्टर बड। एक नये विश्वयुद्ध को रोकनेके लिये मैं अपने प्राणों तक का बलिदान सहर्ष कर सकता हूं। किन्तु मेरे पास जो समाचार आते रहते हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो मेरे जैसे विचार नहीं रखते। आप वह पुरानी कहावत तो जानते ही हैं कि झगड़े के लिये दो व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु वह कहावत सब समय सच नहीं उतरती। नशे में

चूर शराबी अथवा गुण्डा अकेला ही झगड़ा खड़ा कर सकता है; एक पागल भी अकेला ही यह कर सकता है। मेरा विचार है कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि शान्ति की रक्षा के लिये दो की आवश्यकता पड़ती है।

"आप की बात बड़ी बुद्धिमत्तापूर्ण है, मिस्टर प्रेसीडेण्ट।" लैनी ने कहा। "मैं आपसे स्पष्ट कहे देता हूँ कि मैं आपकी चिन्ताओं में हिस्सा लेनेके लिये आया हूं।

"मैं समझता हूं कि आप विदेश यात्रा कर रहे हैं। वहां कब तक ठहरनेकी योजना है आपकी?"

"अभी निश्चय पूर्वक मैं कुछ नहीं कह सकता। यह बात परिस्थितियों पर निर्भर करती है। मैं सरकारी कामसे जा रहा हूँ।"

लैनी ने अपना भेद प्रेसीडेण्ट को भी तब तक बताना उचित न समझा जब तक कि वे स्वयं न पूछें। किन्तु प्रेसीडेण्ट ने कुछ नहीं पूछा।

उन्होंने केवल इतना ही कहा "मैं आशा करता हूं कि इस सरकारी कामको आप मेरा काम भी मान लेंगे। मैं जानता हूं कि आपके पास जानकारी प्राप्त करने के स्रोत हैं और मेरा विश्वास है कि आप अपनी आंखें और कान सब समय सतर्क रखेंगे। आप मुझे बताइयेगा कि आपके विचार में रूसके पोलिटब्यूरो से उसके समझौतों का पालन करानेके लिये मुझे क्या करना चाहिये।"

"मैं यथायोग्य सेवा के लिये सब समय तत्पर रहूँगा, मिस्टर प्रेसीडेण्ट।"

"आपने प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के लिये जो कुछ किया था उसे मैं जानता हूं और इस समय सचमुच मुझे आपकी सहायताकी आवश्यकता है।"

(८)

संयोग से अमेरिका के प्रेसडेण्ट हो जानेवाले मिस्टर ट्रूमन एक सामाजिक व्यक्ति थे और उस भव्य इमारत में उन्हें अधिकतर एकाकी जीवन बिताने के लिये बाध्य होना पड़ता था क्योंकि किसी एक व्यक्तिसे घनिष्ठता करनेपर बीसों अन्य व्यक्ति मन ही मन जलने लगते थे। इस समय उनकी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि वे अपने हृदय का बोझ कुछ हल्का करनेके लिये उत्सुक थे और सौभाग्य से यह

आगन्तुक एक ऐसा व्यक्ति था जिससे समाचार पत्रोंके रिपोर्टर अभी तक विशेष रूप में परिचित न हुए थे।

उन्होंने कहना शुरू किया, "आपसे यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं, मिस्टर बड, कि जिस पदपर मैं इस समय बैठा हुआ हूँ उसके लिये मैंने कोई तयारी न की थी। जब मुझे सीनेटर बनाया गया था तब मैं आश्चर्य में पड़ गया था, इसके बाद जब मुझे वायस-प्रेसीडेण्ट के पद का उम्मेदवार बनाया गया था तो मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया था और अन्त में जब यह भयानक भार मेरे कंधों पर डाला गया तब तो मैं सचमुच आतंकित हो उठा था। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के सम्बन्ध में मेरी जानकारी कम ही थी : मैंने अपना सारा समय एक सीनेटर के रूपमें बड़े बड़े व्यवसायियों की ठगी से सरकार की रक्षा की दिशा में ही लगाया था। किन्तु अब ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो सारे संसार का बोझ मेरे कंधों पर आ गया हो— और वह संसार भी कैसा ? जिसका अधिकांश एक गलत रास्ते की ओर भागा जा रहा हो।

"फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने मुझे यह आशा दिलाई थी कि सोवियत सरकार को १११ करोड़ डालर की सहायता "लेण्ड-लीज' योजना के आधारपर देकर और अपनी सारी सैन्य सहायता द्वारा उसके मार्ग से हिटलर का संकट हटाकर हम यह आशा कर सकते हैं कि रूस हमारे एक मित्र देशके रूपमें परिवर्तित हो जाएगा और हम लोग अपनी सारी समस्याओं का समाधान मैत्रीपूर्ण विचार विनिमय द्वारा कर सकेंगे। मुझे भी यह विश्वास हो गया था कि रूस के साथ शत्रुता अथवा प्रतिस्पर्द्धा करने के लिये हमारे पास कोई वास्तविक कारण नहीं है। मेरी धारणा थी कि याल्टा सम्मेलन के अवसर पर प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने अपने मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण का पूरा पूरा परिचय दे दिया था और मैंने भी पोट्सडम सम्मेलन के समय उस नीति का पूर्ण निर्वाह किया था। किन्तु परिणाम क्या हुआ ? वे लोग उत्तरी ईरान से तब तक नहीं निकलना चाहते जब तक कि वहां एक ऐसी सरकार की स्थापना न हो जाय जिसकी नीति उनके अनुकूल हो, वे लोग समझौते के अनुसार डायरेन और पोर्ट आर्थर छोड़ देने के लिये बाध्य हैं, किन्तु फिर भी वहां से हटने का नाम नहीं ले रहे। उनसे यह आशा की गयी थी कि पोलैण्ड,

हंगरी तथा अन्य राज्यों में वे उत्तरदायित्वपूर्ण गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना की दिशामें सहयोग करेंगे। किन्तु वे अब इन देशों को सीधे हड़प लेना चाहते हैं। वे तुर्कीके कुछ प्रान्तों में खतरा उपस्थित कर रहे हैं और ग्रीस में क्रान्ति कराने की चेष्टा में लगे हुए हैं। और जब मैं कांग्रेस के सामने यह प्रस्ताव रखता हूं कि इन दुर्भाग्यग्रस्त देशों को सामरिक सहायता दी जाय तो मुझे संसार की दृष्टिमें एक युद्ध पिपासु घोषित किया जाता है। अब आप ही बताइये कि इस प्रकार की स्थिति में मैं आखिर क्या करूं ?"

लैनी ने कहा, "मिस्टर ट्रूमन आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिये मैं एडाल्फ हिटलर के साथ होने वाले अपने अनुभव बताऊँगा। आज से प्रायः पचीस वर्ष पूर्व मैंने उसे सर्वप्रथम म्यूनिच के एक बीयर हाल में भाषण देते हुए सुना था। शीघ्र ही मैंने उसके साथ मुलाकात की और इसके बाद मैं उसके कार्यकलाप को बड़े कौतूहल के साथ देखता रहा। धीरे धीरे वह समय भी आया जब वह सत्तारूढ़ होकर शेष संसार को डराने धमकाने लगा। उन दिनों जब मैं फ्रांस अथवा इङ्गलैण्ड में भ्रमण करता था वहां के लोग मुझसे विस्मयपूर्वक ठीक यही प्रश्न करते थे जो आपने किया है। हिटलर का क्या किया जाय ? मेरा उत्तर सदा एक ही रहता था—उसकी पुस्तक पढ़ो। उसने अपनी सारी कहानी 'मीन काम्फ' में कह दी है। इस पुस्तक में उसने अपना व्यक्तित्व, जीवन, आदर्श, उद्देश्य—सभी कुछ लिख दिया है। किन्तु जहां तक मेरा अनुमान है मेरे परामर्श के बावजूद बहुत थोड़े से व्यक्तियों ने उसकी पुस्तक पढ़ने का कष्ट उठाया था। स्टालिन के सम्बन्ध में भी ठीक ऐसी ही बात है। उसने बहुत बड़े पैमाने पर लिखा है और उसकी कोई भी पुस्तक पढ़ कर थोड़ा बहुत अनुमान लगाया जा सकता है। मिस्टर ट्रूमन, आपके विपरीत, स्टालिनको अपने काम के लिये हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त हुई है—उसने अपना सारा जीवन इस पद के लिये आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने में बिताया है—जेल में, गुप्तावास में, और भी कई प्रकार से। उसकी भी एक निश्चित और सुनिर्धारित योजना है और अपनी इस योजना के सम्बंध में उसने सब कुछ बता दिया है। हां यह अवश्य है कि उसने जो कुछ लिखा है वह अपने मतानुयायियों के लिये ही लिखा है : उसका विश्वास

है कि उसके विरोधी उसकी पुस्तकें पढ़ने का कष्ट न उठाएंगे और वे सचमुच ऐसा ही करते हैं।"

"आपको एक भेद की बात बताता हूं, मिस्टर बड", प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने कहा, "मैंने इस प्रश्न पर मास्कोस्थित अपने राजदूतावास से परामर्श मांगा था। हमारे रूसी राजदूत मिस्टर जार्ज केन्नन ने स्टालिन की पुस्तकें पढ़ी हैं। उन्होंने मुझे एक लम्बा चौड़ा तार भेज कर अपना मंतव्य बताया है। बहुत दूर तक उनके विचार भी आप जैसे ही हैं। किन्तु अन्त में उन्होंने यह परामर्श भी दिया है कि मास्को के लिये किसी वस्तु का वाह्य स्वरूप सर्वोपरि महत्व रखता है—चीनियों के लिये भी यही बात है—और इसलिये यदि हम उनके साथ कोई समझौता करना चाहें तो यह आवश्यक होगा कि हम अपनी शर्तें इस प्रकार रखें कि उनके आत्मसम्मान को चोट न पहुंचे।"

"यदि वे समझौता चाहते हों तो यह सब ठीक है, मिस्टर प्रेसीडेण्ट; किन्तु यदि वे समझौता न चाहते हों तब? यदि वे स्वेच्छानुसार चलना चाहते हों तब?"

"यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर खोजनेका प्रयत्न करते हुए मैं रात रात भर जागता रहता हूं। किन्तु मुझे यह देखकर कुछ आश्चर्य हो रहा है, मिस्टर बड, कि आप एक शान्ति प्रचारक होते हुए भी इस प्रकारका दृष्टिकोण रखते हैं।"

"मैं? मैं भी इस प्रश्न पर विचार करते हुए रात रात भर जागता रहता हूँ: मिस्टर ट्रूमन।" लैनीने उत्तर दिया। "शायद आप न जानते हों, मेरी मां के एक पुराने मित्रने मृत्यु के समय अपनी सारी सम्पत्ति इस शान्ति-प्रचार के लिये दान की थी जो मैं कर रहा हूँ। थोड़े ही समय पूर्व युद्ध समाप्त हुआ था, उसमें हमारी विजय हुई थी और इसलिये हम लोगों पर उत्साह का रंगीन नशा सवार था। हम लोगोंका विश्वास था कि भविष्य में सब ठीक हो जायगा, संसार की गति सुधर जायगी। हम लोग स्टालिन का विश्वास करने लगे थे क्योंकि उसका विश्वास करने के लिये हम वाध्य थे। चारों ओर उत्साह का अतिरेक दिखाई पड़ रहा था और यह एक बड़ा सुखद आश्चर्य था—यानी एक नये संसार का निर्माण विश्वबन्धुत्व के आधार पर राष्ट्र संघको चलानेकी बात थी। किन्तु शीघ्र ही एक

के बाद एक, इस प्रकार की घटनाएं घटित हुईं कि हमने यह देख लिया कि राष्ट्र-संघ केवल एक मंच मात्र है जिसके जरिये स्टालिन घृणा का प्रचार करने की सुविधा प्राप्त कर रहा है।"

"हम लोगों की स्थिति तो पौराणिक जरमियां के लोगों की भांति हो रही है— हम लोग शान्ति शान्ति की रट लगा रहे हैं जब शान्ति का नाम निशान तक नहीं है। आप क्या करने का प्रस्ताव करते हैं? अपना शान्ति-प्रचार कार्य बदल देंगे?"

"नहीं, वह एक संस्था है और इसके अतिरिक्त मृतात्मा के साथ अपने वचन की रक्षा का प्रश्न भी है। बचपन से ही एमिली चैटर्सवर्थ मेरी मित्र थी और मैं जानता हूं कि वह कम्युनिस्ट न थी। वह संसार को भयानक क्रान्तिवादियों के हाथों में दे देने के पक्ष में न थी। उसने जो कुछ किया सद्भावना से प्रेरित होकर ही किया। मैंने अभी तक अपने इस विचार को किसी पर प्रकट नहीं किया है किन्तु मन ही मन मैं सोच रहा हूँ कि मैं अपने शान्ति-प्रोगाम तथा पत्र को एक नया स्वरूप देकर ऐसा बना दूं कि विश्व-शान्ति के पक्ष और विपक्ष दोनों ही प्रकार के विचारवालों को अपने अपने तर्क प्रेषित करने का अवसर प्राप्त हो। इस समय समस्या और भी जटिल हो गयी है क्योंकि मेरी पत्नी गर्भवती और अगले दो मासों में मैं उसपर कोई अतिरिक्त भार नहीं डालना चाहता।"

"मैं आपकी स्थिति को समझ रहा हूँ" प्रेसीडेण्ट ने कहा, "मेरी पत्नी स्वयं राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं रखती और यदि हम लोग यह सब छोड़कर मिसूरी में अपने घर लौट जाएं तो उसके लिये इससे बड़े आनन्दकी कोई बात न होगी। वहां वह अपने कुछ मित्रों के साथ, बिना किसी विशेष सामाजिक प्रतिष्ठा के भार का वहन करते हुए, शान्ति पूर्वक रहना पसन्द करेगी। यह सोचकर भी उसे आनन्द होगा कि अब बहुत से लोग उससे कोई अनुचित सुविधा प्राप्त करने की लालसा से उसे घेरे नहीं रहते।"

यहांपर लैनी को एक बात कहनेका उपयुक्त प्रसंग प्राप्त हो गया। उसने कहा "प्रायः आठ वर्ष तक मैंने प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट को हर प्रकार की सहायता पहुँचाने का प्रयत्न किया था और मैंने यह सिद्धान्त बना लिया था कि अपनी सेवाओं के

बदले में उनसे कुछ भी न लूंगा। मेरा यह सिद्धान्त अब भी कायम है; इसपर आप विश्वास कर सकते हैं।"

कार्यभार से पीड़ित प्रेसीडेन्ट ने कहा, "योरोप से लौट कर मुझसे अवश्य मिलियेगा मिस्टर बड।"

लैनीने वापस होटल में आकर देखा कि उसकी पत्नी अभी तक पाण्डु लिपियों और पत्रों के हाशियों पर अपने नोट लिखने में व्यस्त है। उसके पास हर प्रकार के लोग अपने पत्र और वक्तव्य भेजते रहते थे—इस आशा से कि वे रेडियोपर आ जाएंगे। इन सच्चे व्यक्तियों के प्रति वह एक प्रकार के उत्तरदायित्व को अनुभव किया करती थी। इनमें से अधिकांश व्यक्ति शान्तिके प्रश्नपर उसके साथ सहमत थे। यह एक आश्चर्यजनक बात प्रतीत होती थी कि संसार में शान्ति की सम्भावनाएं इतनी कम और युद्ध की आशंकाएं इतनी अधिक हैं।

"मैं प्रेसीडेण्ट ट्रूमन से मिलकर आ रहा हूं।" लैनी ने कहा। उसे यह बात बता देने का अधिकार था क्योंकि प्रेसीडेण्ट ने उसकी पत्नीके लिये एक सन्देश भेजा था। किन्तु उसने प्रेसीडेण्ट का संदेश ठीक उसी रूप में नहीं सुनाया क्योंकि अब उसको विश्वास हो गया था कि प्रेसीडेन्ट विश्व-शान्ति के प्रश्न पर अपना विश्वास खोते जा रहे हैं।

"क्या तुमने उनसे रेडियो पर भाषण देने का अनुरोध किया?" लारेल ने पूछा। लैनी ने कहा कि उसे इस बात का ध्यान नहीं रहा। इसके अतिरिक्त प्रेसीडेन्ट को उसके साथ कुछ गुप्त वार्ता करनी थी। इससे अधिक लैनी ने कुछ नहीं कहा और लारेल ने भी जानने का हठ नहीं किया। उसने बताया कि देखने में प्रेसीडेन्ट कैसे लगते हैं। उन्हें किस प्रकार प्रतिदिन छै सौ कागजों पर अपने हस्ताक्षर करने पड़ते हैं। लैनीने यह भी कहा कि प्रेसीडेण्ट हृदय से एक शान्ति-प्रेमी व्यक्ति हैं और यह सुनकर लारेल को बड़ा सन्तोष हुआ। कारण यह है कि जबसे उसने प्रेसीडेण्ट का वह भाषण सुना था जो उन्होंने कांग्रेस के सम्मुख दिया था और जो "ट्रूमन-सिद्धान्त" के नाम से प्रसिद्ध हो चुका था, वह कुछ चिन्तित हो गयी थी। उसे यह भाषण उग्र सा लगा था यद्यपि उसमें केवल इतना ही कहा गया था कि क्रेमलिन को ग्रीस और तुर्की में अपनी मनमानी करने की अनुमति

न दी जायगी। किन्तु यह स्पष्ट था कि केवल इतनी सी बात के कारण प्रेसीडेण्ट के उस भाषणको "युद्ध पिपासु" न माना जा सकता था। जब तक स्टालिन इन दोनों देशों में कोई शरारत न करें तब तक भय की कोई बात न थी। जो लोग प्रेसीडेण्ट के इस भाषण को उग्र और युद्ध-पिपासु बताते थे वे लोग सम्भवतः उस दल के थे जो इन देशोंमें स्टालिन की शरारत देखने के लिये उत्सुक थे।

लैनी ने बताया कि वह तीन दिन बाद लंदन के रास्ते बर्लिन की हवाई यात्रा करेगा। अभी वह निश्चय पूर्वक नहीं बता सकता कि वहां उसे कब तक ठहरना पड़ेगा किन्तु वह अनुमान करता है कि एक दो सप्ताह से अधिक विलम्ब न होगा। उसने यह प्रस्ताव किया कि यात्रा पर निकलने के पूर्व अपने रेडियो केन्द्र के कर्मचारियों के साथ विचार विनिमय करके भविष्य की कार्ययोजना इस प्रकार निर्धारित कर ली जाय कि लारेल पर आवश्यकता से भी अधिक भार न रहे।

लारेल ने कहा, "मैं काम की अधिकता की शिकायत न करूंगी। तुम अपनी हिफाजत का ध्यान अवश्य रखना।"

दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों मोटर द्वारा एडगरमीयर लौट आए और सन्ध्या के समय 'शान्ति परिवार' की एक बैठक हुई। आप चाहे सांसारिक दृष्टिकोण से देखें चाहे बौद्धिक दृष्टिकोणसे, इस परिवार के सभी सदस्य काफी प्रभावोत्पादक प्रतीत होते थे। इस मण्डली में सबसे अधिक वयोवृद्ध सज्जन एक अंगरेज बैरोनेट थे—सर एरिक विवियन पामेराय नीलसन। लैनी की अपेक्षा आयु में वे एक दो वर्ष बड़े थे और बचपन के दिनों में यह बात दोनों के लिये बड़ी महत्वपूर्ण थी। प्रथम महायुद्ध के पूर्व ये दोनों मित्र कर्ट मेसनर के साथ ग्लक के "आरफियस" में और "डालक्राज" महोत्सव में बड़े उत्साह के साथ नाचे थे। सर नीलसन प्रथम महायुद्ध के समय एक वायुयान दुर्घटना के शिकार होकर अपनी एक टांग तुड़वा बैठे थे और उनका अधिकांश जीवन लंगड़ा लंगड़ा कर चलते हुए बीता था।

एक वर्ष पूर्व "रिक" ने इङ्गलैंडमें लेबर पार्टी को सुगठित करके उसे सत्तारूढ़ करने में सहायता पहुंचाई थी और अब वह इङ्गलैण्ड लौट कर एक उच्चपद प्राप्त कर सकता था। किन्तु उसने अमेरिका में रहकर शान्ति और सामाजिक पुनर्गठन पर

प्रचार कार्य करना ही अधिक श्रेयस्कर समझा था। उसके दृष्टिकोण से ये दोनों बातें एक ही थीं और संसार में अनिर्वाध आर्थिक प्रतियोगिता के कारण ही युद्धों की सृष्टि होती थी। उसका कहना था कि शान्ति कायम रखने के लिये सामाजिक पुनर्गठन अनिवार्य है। वह एक साहित्यिक अभिरुचि का व्यक्ति था और अपना सारा दिन दूर-दूर से आने वाली पांण्डुलिपियों में दुष्प्राप्य प्रतिभा खोजने में लगाता था। इस समय वह अपना पाइप पीते हुए ध्यानपूर्वक दूसरों की बातें सुन रहा था। जब वह बोलता था तो एकदम निर्णयात्मक ढंग से और लोगों पर उसकी बातों का प्रभाव तुरन्त पड़ता था।

उसकी पत्नी नीना भी बैठी हुई थी। युद्ध के समय वह एक नर्स थी और उसने रिक की सुश्रूषा की थी। बाद में दोनों ने विवाह कर लिया था। वह "शान्ति" नामक समाचार पत्र जो रेडियो पर प्रसारित होने वाली वक्तृताओं से तयार होता था, की सम्पादिका थी। इस पत्र में रेडियों पर प्रसारित होने वाली वक्तृताओं के अतिरिक्त वक्ता और श्रोताओं, आलोचकों और प्रशंसकों आदि पर टिप्पणियां भी रहती थीं। उसमें पत्र-संघ से प्राप्त होने वाला कुछ मसाला भी रहता था। यह कार्य अधिक न था और नीना को पाण्डुलिपियां पढ़ने तथा उदीयमान प्रतिभाओं से मुलाकात करने का समय मिल जाता था।

इन दोनों का बड़ा पुत्र भी इस मण्डली में था। उसे प्यार से "स्कबी" नाम दे दिया गया था। पिछले महायुद्ध में वह एक वायुयान चालक था और युद्ध समाप्त होने पर वह एडगेमीयर में अपने माता पिता के पास आ गया था। उसके यहां आने का एक कारण यह भी था कि वह प्रथम विवाह से उत्पन्न लैनी की पुत्री फ्रान्सिस बार्नस् बड के साथ रहना चाहता था। इस समय स्कबी और फ्रांसिस पास बैठे हुए ध्यानपूर्वक बुजुर्गों की विवेकपूर्ण बातें सुन रहे थे। फ्रांसिस अभी स्कूल में पढ़ती थी और स्कबी नियमित रूप में "शान्ति परिवार" का काम करता था। यहूदी बालक फ्रेडी राबिन के सम्बन्ध में भी यही बात थी : उसके पिता की नाजियों ने हत्या कर दी थी। एक अन्य सदस्य हैन्सी राबिन बायलिन बजाने की कला में पटु था और कभी कभी रेडियो पर उसका संगीत प्रसारित होता रहता था।

मण्डली में न्यूयार्क के एक प्राचीन और कुलीन परिवार का लाड़ला गेराल्ड डे ग्रूट्स भी था। उसकी माता को कुलीन समाज में बड़ा आदर प्राप्त था किन्तु गेराल्ड उस जीवन में न रह सका। अब वह इस मण्डली के साथ था। लैनी की अनुपस्थिति में रेडियो पर प्रघोषक का कार्य वही करता था। वह धोबी का कार्य करने वाले एक परिवार के साथ रहता था और उसे इस बात पर बड़ा गर्व था कि वह अपनी जीविका स्वयं चलाता है। इस धोबी दम्पति में, पति अपने आपको एक "अराजकतावादी" बताता था और पत्नी समाजवादी। डे ग्रूट्स के रईस परिवार का लाड़ला इन दोनों के साथ बड़े आनन्द से रहता था।

ऐसा था यह शान्ति परिवार। आवश्यकता पड़ने पर फ्रेडी की मां भी आ जाती थी; इसी प्रकार न्यूयार्क तथा आसपास के उपनगरों से और भी अनेकों व्यक्ति आ जाते थे। शान्ति परिवार में कई सेक्रेटरी तथा वेतन भोगी कर्मचारी भी थे। पिछले दिनों में उन्हें लैनी के बिना अपना काम चलाना पड़ा था और भविष्य में फिर इस प्रकार की स्थिति के लिये वे तयार थे। रेडियो पर वक्ताओं की तालिका कई सप्ताह पहले ही निश्चित हो जाती थी इसलिये लारेल को प्रोग्राम के सम्बन्ध में विशेष चिन्ता न करनी पड़ती थी। उन लोगों ने लारेल की स्थिति को समझ कर उसका कार्यभार हल्का करने का पूरा-पूरा आश्वासन दिया।

स्टूडियो में, जहां से इस शान्ति परिवार का रेडियो प्रोग्राम प्रसारित होता था, माइक्रोफोन के ठीक सामने दीवाल पर एक प्रभावोत्पादक वृद्धा महिला का बड़ा भव्य तैल चित्र टंगा हुआ था। यह चित्र था श्रीमती एमली चैटर्सवर्थ का जो फ्रेन्चरेवेयरा के कैनस नामक स्थान में रहा करती थीं। लैनी की माता ब्यूटी बड ने जब एक पुत्र को जन्म देकर उसका नाम लैनिङ्ग प्रेस्काट रखा था तब यह कोई संयोग की बात न थी। यह प्रेस्काट नाम श्रीमती एमली के पिता का था। एमली एक सुरुचिपूर्ण किन्तु निर्धन परिवार में पैदा हुई थीं और उन्होंने न्यूयार्क के एक बैन्कर से विवाह कर लिया था जो आयु में उनसे काफी बड़ा था। जब इस बात पर प्रकाश पड़ा कि ये महाशय जनता के जीवन-बीमों की रकम से अपना निजी सट्टा खेलते हैं तो ये अमेरिका छोड़ कर फ्रांस चले गए। एमली ने

अपने पति का साथ दिया। किन्तु इस घटना के बाद वह अपने पति की सम्पत्ति के सम्बन्ध में एक अपराधी का सा भाव रखने लगी। दो विश्व युद्धों से गुजरते हुए उसने सम्पत्ति का काफी नुकसान उठाया था और मानसिक शान्ति भी खो दी थी। मृत्यु के समय उसने दस लाख डालर की रकम से यह संस्था स्थापित की थी—इस आशा से कि यह तृतीय महायुद्ध को रोकने की दिशा में सहायक होगी।

शान्ति परिवार की यही कहानी है। उसके रेडियो प्रोग्राम दक्ष लोगों की सम्मति से बड़ी योग्यतापूर्वक निर्धारित होते थे। यह योजना बनायी गयी थी कि आगामी पांच वर्षों तक प्रति वर्ष दो लाख डालर की रकम खर्च की जाय। आशा थी कि योजना इसके बाद भी चलती रहेगी क्योंकि दानों का क्रम अभी तक जारी था। संसार में अब भी ऐसे व्यक्तियों की कमी न थी जो अशान्ति के वातावरण में शान्ति की रट लगाए जा रहे थे!

अध्याय २

—अपने पैसे को पहचानिये—

●

(१)

बड परिवार कनेक्टीकट में काफी प्रसिद्ध था। केवल इतना ही नहीं उसने अच्छी बंदूखे बनाकर अपना नाम सारे संसार में प्रसिद्ध कर दिया था। लैनी को इन बन्दूखों का ज्ञान बचपन के समय ही हो गया था और वह छोटी छोटी बंदूखों के साथ खेलने भी लगा था। उसके पिता रोबी बड अपनी इस बंदूख निर्माता कम्पनी के सेल्समैन थे और अपने कार्य के प्रसंग में योरोप में रहा करते थे। एक समय पेरिस में एक कलाकर की "प्रतिमा" के साथ उनका परिचय हो गया और वे उससे प्रेम करने लगे। वे उसे "ब्यूटी" के नाम से पुकारते थे क्योंकि वह हर प्रकार से इस उपाधि के योग्य थी। वे उससे शादी न कर सके क्योंकि उनके पिता नैतिकता के कट्टर समर्थक थे और किसी व्यक्ति ने एक गुमनाम लिफाफे में ब्यूटी का एक नग्न चित्र उनके पास भेज दिया था। इस चित्र को देखकर वे भड़क उठे थे: उन्होंने अपने पुत्र को स्पष्ट रूप में यह चेतावनी दे दी थी कि यदि वह इस लड़की के साथ विवाह करेगा तो उसे वे त्याग देंगे।

किन्तु रोबी ने ब्यूटी को लोगों से यह कहने की अनुमति दे दी थी कि वह विवाहिता है। उन्होंने उसके लिये फ्रेन्च रिवेयरा में एक शानदार मकान खरीद दिया था और वर्ष में कई बार यहाँ आकर उससे मिल लेते थे। इसके कई वर्ष बाद जब अपने पिता के आग्रह के फलस्वरूप उन्होंने कनेक्टीकट की फर्स्ट नैशनल बैङ्क के प्रेसीडेन्ट की लड़की के साथ विवाह कर लिया तब उन्होंने इस बात की घोषणा कर दी कि उन्होंने चित्रकार की उस "प्रतिमा" को तलाक दे दिया है।

जिस समय वे लैनी को अपने परिवार से मिलाने के लिये ले गये थे उस समय उसकी आयु सत्रह वर्ष की हो चुकी थी और अमेरिका प्रथम महायुद्ध में प्रवेश

कर चुका था। रोबी की पत्नी एस्थर बड कट्टर नैतिक विचार वाले माता-पिता की सन्तान थीं और स्वयं भी बड़ी विवेकशीला महिला थीं। उन्होंने लैनी से प्रेम और आदर प्राप्त करने के लिये विशेष प्रयत्न किया था और इस दिशा में सफल भी हुई थीं। उनके अपनी तीन संन्ताने थीं। इनमें दो पुत्र थे जो अब वयस्क हो गए थे और धीरे धीरे अपने पिता का कारबार सम्हालने लगे थे। एक पुत्री थी—बेसी रेमसेन बड जिसे सबलोग संक्षेप में बेस के नाम से पुकारते थे। जब उसकी आयु केवल सत्रह वर्ष की थी उसकी माता उसे योरोप-भ्रमण के लिये ले गयी थीं। उस अवसर पर पेरिस में श्रीमती चैटर्सवर्थ के घर पर उसने एक प्रतिभाशाली और उत्साही युवक हैन्सी राबिन की वायलिन सुनी थी। उसे यह संगीत अद्भुत प्रतीत हुआ था और वह इस उदीयमान प्रतिभा के सम्पर्क में आकर चमत्कृत हो उठी थी।

एक वर्ष बाद यह युवक अमेरिका के कार्नेगी हाल में अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिये आया और उसे एस्थर के घर में निमंत्रित किया गया। वहां पर संगीत के प्रसंग में जो तीव्र ध्वनि उठी उससे वे घबरा गयीं। वे जानती थीं कि यह एक महान कला है किन्तु उनका विश्वास था कि इसका उपयुक्त स्थान संगीनालय ही है, किसी भद्र घर का बैठकखाना नहीं। किन्तु सारा नगर इस संगीत को सुनकर पागल हो रहा था। और सबमे बड़ी बात तो यह थी कि बेस और हैन्सी एक दूसरे से प्रेम करने लगे थे। इस प्रकार की स्थिति में नैतिक माता-पिता की पुत्री एस्थर भी आखिर क्या करतीं? यद्यपि प्रकट रूप में वे संसार के सामने यह न कह सकती थीं कि वे यहूदियों से घृणा करती हैं तथापि यह बात तो सत्य है ही कि उन्होंने इस बात की कल्पना भी न की थी कि उनकी पुत्री इस प्रकार के व्यक्ति के साथ विवाह करेगी। किन्तु बेस ने रो रो कर यह अनुरोध किया कि वह इतने दिनों तक पियानों पर अपना सारा समय इसी लिये लगाती रही है ताकि वह हैन्स की पत्नी तथा सहचारिका बनने योग्य दक्षता प्राप्त कर सके। ऐसी हालत में बेचारी माँ को घुटने टेकने के लिये बाध्य होना पड़ा और उसने विवाह की स्वीकृति दे दी।

यह घटना प्रायः पचीस वर्ष पूर्व घटित हुई थी और इस लम्बे समय में

भाग्य देवता ने कई खेल इस दम्पति के साथ खेले थे। हैन्सी के छोटे भाई फ्रेडी को नाजियों ने पकड़ लिया था। उसे उन लोगों ने डचाऊ के बन्दी शिविर में बड़ी बुरी तरह सताया था और इसके बाद एकदम मरणासन्न अवस्था में उसे लैनी के हाथों में सौंपा था। उन लोगों ने हैन्सी के पिता को भी पकड़ लिया था और उनकी सारी सम्पत्ति हड़प ली थी। फलस्वरूप अब उन्हें बड अलिन्ग एयरक्राफ्ट कम्पनी में एक सेल्समैन के रूप में काम करना पड़ रहा था। हैन्सी और बेस ने संसार के प्रत्येक सभ्य देश की यात्रा करके बार बार अपनी कला का प्रदर्शन किया था। उनके दो पुत्र थे जो अपने माता पिता की भांति अच्छे संगीतज्ञ बनने की आशा करते थे। ये सब सुन्दर और सुखद बातें थीं जो किसी भी व्यक्ति को आनन्द प्रदान कर सकती थीं। किन्तु इन सबके साथ एक बात और भी थी जो इतनी अच्छी न थी—न्यूकैसेल के रोबी बड और एस्थर रेमसेन बड की पुत्री बेस कई वर्षों से अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या थी और वह दिन दिन कटु से कटुतर और उग्र से उग्रतर होती जा रही थी।

(२)

उन दिन हैन्सी राबिन को "फिलहारमोनिक" के साथ कारनेगी हालमें अपनी कला का प्रदर्शन करना था। यह स्थान लैनी के लिये नाना प्रकार की स्मृतियों से परिपूर्ण था। उसने यहीं पर पाडेरेव्सकी का संगीत सुना था, यहीं पर चालियापिन का गान सुना था और प्रसिद्ध नर्तकी इसाडोरा डन्कन को नंगे पैरों तितली की भाँति वायु में मड़राते हुए देखा था। इन सब बातों की स्मृति उनके मनमें एक प्रकार के अवसाद की सृष्टि करती थी। लैनी की तो वह धारणा थी कि इस विशाल हाल की दीवारें जिन अणु-परमाणुओंसे बनी हुई हैं वे भी इस संगीत चर्चा से मुग्ध हो उठे होंगे! संगीत का प्रभाव बहुत दिनों तक स्थायी रहता है। सम्भव है किसी दिन कोई जादूगर वैज्ञानिक कोई ऐसा आविष्कार कर ले जिसके फलस्वरूप अणु-परमाणुओं पर भी संगीत के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सके। कैसा सुन्दर होगा वह विश्लेषण!

कारनेगी हाल—इस नाम ने लैनी के मन में एक प्रौढ़वयस्क स्काच की स्मृति ताज़ी कर दी जिसे उसने अपनी युवावस्था के समय लंदन में देखा था। वह एक

लघुआयतन व्यक्ति था जिसकी आँखे सदा चमकती रहती थीं और जिसकी छोटीसी सफेद दाढ़ी कैंची से करीने के साथ कटी रहती थी। अपनी जाति के स्वाभाविक गुणके अनुसार वह मितव्ययी था और एक एक पैसा जोड़कर स्टील उद्योग का मालिक बन बैठा था। वह तब तक एक एक डालर जोड़ता रहा जब तक कि उसके पास तीस चालीस करोड़ डालर इकठ्ठे न हो गए। वृद्धावस्था के समय उसने अपनी सारी सम्पत्ति नकद रुपये के बदले में बेच दी। संसारमें केवल एक ही व्यक्ति के पास इतना नकद रुपया था जो इस विशाल सम्पत्ति को खरीद सकता। यह व्यक्ति था जे० पी० मार्गन जो वॉल स्ट्रीट का भाग्य विधाता था और एक स्टील ट्रस्ट बनाकर मूल्यों पर एकाधिकार प्राप्त करने के लिये उत्सुक था।

अब एण्ड्रू कारनेगी ने मृत्यु के बाद अपना नाम बनाए रखने के लिये सोचना शुरू किया। उसने न्यूयार्क में यह विशाल संगीतालय बनवा दिया और इस प्रकार प्रत्येक संगीत प्रेमी को बहुधा अपना नाम लेने के लिये बाध्य कर दिया। उसने संसार के भिन्न-भिन्न भागों में २५०५ पुस्तकालय बनवा दिए और प्रत्येक पुस्तकालय में अपना नाम अंकित करवा कर अपना एक चित्र टंगवा दिया। इस प्रकार यह बात निश्चित है कि यह एण्ड्रू कारनेगी एफेसिया का गुम्बद बनाने-वाले युवक अथवा मिस्र के बादशाह—जिसने अपने पिरामिड बनवाने के लिये सैकड़ों मील लम्बे रेगिस्तान में पत्थर ढो ढोकर लाने के लिये दो लाख दास लगा दिये थे—की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिमान था।

इस जलसे में बहुत से रुचिमान श्रोतागण एकत्रित हुए थे। इनमें से प्रत्येक संगीत के माध्यम से एक आन्तरिक आनन्द की एकाकी अनुभूति का आनन्द लेने के लिए आया था। सब लोग शान्त स्तब्ध भाव से बैठे हुए थे; यदि वे बात भी करते थे तो बड़े ही धीमे स्वर में। संगीतज्ञ लोग भी एक-एक दो-दो करके धीरे धीरे रङ्गमञ्च पर आये और अपने-अपने वाद्य यन्त्रों पर एक धीमी और रहस्य-मयी तान की सृष्टि करने लगे। यह व्यक्तिवाद था; किन्तु थोड़ी ही देर बाद समष्टिवाद के भी दर्शन हुए। संगीत परिचालक आया और तुरन्त वातावरण निस्तब्ध हो गया, परिचालक अपने लिये निश्चित स्थान पर आ कर खड़ा हो गया

और अपने छोटे से डंडे से संकेत किया— और इसके बाद तुरन्त सहयोग के दर्शन हुए जो "ओवरान ओवर्चर" नामक एक अत्यंत श्रुतिमधुर समष्टिगत संगीत में पल्लवित हो गया।

जब इस मधुर संगीत की प्रतिध्वनि धीरे-धीरे वातावरण में विलीन हो गयी तब परिचालक अपने स्थान से हट कर एक ओर चला गया और थोड़ी ही देर में काले वस्त्रों में आभूषित, वायलनधारी एक लम्बे व्यक्ति को लेकर पुनः लौट आया। यह सन् १९४६ था और हैन्सी राबिन की आयु ४१ वर्ष की थी; उसके बाल जो एक समय एकदम काले थे अब कहीं कहीं पर श्वेत हो चले थे। लैनी के साथ हैन्सी राबिन का जब प्रथम परिचय हुआ था तब वह उसे संगीत के संसार में खोए हुए एक बालक के रूप में प्रतीत हुआ था—एक ऐसे बालक के रूप में जो तितली की भांति संगीत रूपी उद्यान में तान की एक कली से उठ कर दूसरी पर उड़ता फिरता हो। उस समय उसका छोटा भाई उसके साथ क्लारियानेट बजाता था और ऐसा प्रतीत होता था मानों दोनों युवक प्राचीन जूडिया के पौराणिक संसार में अपने परम्परागत मन्त्रों का गान करने वाले दो गरड़िये हों। उस गान का तात्पर्य यही प्रतीत होता था—स्वर्ग की शक्तियां आनन्दित हों, पृथिवी मङ्गलमयी हो और भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के लोग एक दूसरे से आह्लादपूर्ण स्वर में कह रहे हों कि ईश्वर का प्रेमपूर्ण शासन चल रहा है! समुद्र की उत्ताल तरंगें आनन्द विभोर होकर नाचें, शस्य श्यामला धरती आनन्द मनावे! चित्र-विचित्र पृथिवी के तरु-लता-गुल्म अपने संगीतमय स्वर में उस लीलामय का जयघोष करें क्योंकि वे पृथ्वी का भाग्य निर्णय करने के लिये आ रहे हैं! अरे, मुक्त कण्ठ से उन जगदीश्वर को धन्यवाद दो क्योंकि वे परम दयामय और कृपालु हैं!

और इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस जर्मन यहूदी हैन्सी राबिन को ईश्वर की दया का परिचय एक विचित्र रूप में प्राप्त हुआ था! उस सभ्य देश पर ईश्वर ने हिन्स पशुओं का एक दल छोड़ दिया था जिसने प्रभु के विशेष प्रिय साठ लाख पुत्रों को पकड़ कर विष द्वारा मारने और उनकी हड्डियों को खाद के रूप में परिवर्तित करने का लोमहर्षक काण्ड शुरू कर दिया था। हत्यारों के उस दल ने हैन्सी के

अधिकांश मित्रों और आत्मीयों के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार किया था और उसके भाई तथा पिता को प्रायः इसी स्थिति में पहुंचा दिया था। इस वीभत्स काण्डने संगीतज्ञ के मुख-मण्डल पर आतंक की गहरी रेखाएं अंकित कर दी थीं। उसकी आँखोंमें विषाद का एक गहरा भाव छाया रहता था और वह मुस्कराते हुए बहुत कम दिखाई देता था। श्रोताओं की अभ्यर्थना को स्वीकार करते हुए वह अपना सिर एक ओर थोड़ा सा झुका कर खड़ा हुआ था और उसका हाव भाव एक पादरी का सा प्रतीत हो रहा था।

संगीतालय में निस्तब्धता छा गयी। परिचालक ने अपने डंडे से मेज पर हल्का सा आघात किया और सारे वाद्ययंत्र एक साथ "बीथोवेन" स्वरयोजना में झन्कृत हो उठे। हैन्सी ने इस महान संगीतका प्रदर्शन बचपन से अब तक सैकड़ों बार किया था। लैनी ने स्वयं उसे बीसों बार सुना था और वह उसकी प्रत्येक स्वर-व्यञ्जना से परिचित था। हैन्सी की दक्षता और स्पष्टता एकदम त्रुटि-शून्य थी। संगीत के स्वर में मानो उसका सारा व्यक्तिगत क्लेश साकार हो उठा था। जो लोग मर्मज्ञ थे उनके लिये यह संगीत हृदय के तन्तु तन्तु को हिलाने में समर्थ था।

किन्तु महा संगीतज्ञ बीथोवेन द्वारा रचित स्वर-लहरी में अवसाद का यह भाव अन्त तक नहीं टिकता क्योंकि वह स्वयं भाग्य को चुनौती देनेवाला महापुरुष था। इस अवसर पर भी ऐसा ही हुआ। थोड़ी ही देर में संगीत गतिमान होकर पुष्प-उद्यान पर तीव्र वायु की भांति दौड़ने लगा और श्रोताओं के हृदय एक महान अनुभूति से झन्कृत हो उठे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह विराट संगीत उन्हें आमंत्रित करते हुए कह रहा हो : "ए युवक युवतियों आओ, मेरे साथ एकाकार होकर नृत्य और गान करते हुए अपने पृथक अस्तित्व को भूल जाओ!" संगीत की शब्द योजना भी ऐसी ही थी और हैन्सी तथा लैनी दोनों ने ही आपस में अनेकों बार इसकी चर्चा की थी। उस संगीत को सुनने का अर्थ था अपने हृदय के अन्दर नये साहस का संचार करना और आध्यात्मिक उत्कर्ष द्वारा नयी नयी अनुभूतियों का अनुभव करना। सङ्गीत समाप्त होने पर श्रोताओं ने तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट की मानो वे इस बात की घोषणा करने पर तुले हुए हों कि वे

हैन्सी और बीथोवेन दोनों के ही भक्त हैं और उनकी दृष्टि में दोनों ही अमर हैं। इस आधुनिक युग में यह दोहरा अमरत्व कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है; बीथोवेन की स्वर योजना छपे हुए कागजों पर सहज रूपमें प्राप्य है और हैन्सी राबिन के रेकर्ड आप कुछ ही पैसे खर्च करके किसी भी दूकान से खरीद सकते हैं।

(३)

संगीत समाप्त होने पर दो मित्रों और एक भतीजे ने हैन्सी को अपनी मोटर पर बैठा लिया और सब लोग एक होटल में पहुँचे। किसी संगीत आयोजन के पूर्व हैन्सी कुछ भी न खाता था किन्तु संगीत समाप्त होने पर वह शिथिल हो जाता था। लम्बी उत्तेजना के बाद यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही थी। एक समय था जब बेस उसे किसी भी संगीत समारोह में अकेले न जाने देती थी। किन्तु आज वह उसके साथ न आ सकी क्योंकि उसे एक कमेटी-मीटिङ्ग में भाग लेना था— और यह निश्चय ही एक उच्चतर कर्त्तव्य था। वह इतनी अधिक कमेटियों की सदस्या थी कि उसका मन एक प्रकार का लाल तिलस्म हो गया था ; उसे देखते ही किसी के मन में यह विचार आता "अहा ! एक और कम्यूनिस्ट मोर्चा !"

न्यूयार्क के एक कोने में स्थित यह छोटा सा होटल यार्क विले के नामसे प्रसिद्ध था। चारों मित्र एक मेज़ को घेरकर बैठे हुए थे। हैन्सी के सामने कुछ नाश्ता तथा एक गिलास दूध रखा हुआ था। कभी कभी वह गुमसुम भाव से नाश्ते का एकाध टुकड़ा मुंह में डाल लेता अथवा एकाध घूंट दूध पी लेता। उस समय वह बड़ा दुखी हो रहा था और इसे छिपाने की कोई चेष्टा न कर रहा था। आपके मित्र यदि आपकी कोई दूसरी सहायता नहीं कर सकते तो वे कम से कम आपको दुखी रहने की स्वतन्त्रता तो दे ही सकते हैं।

"लैनी" उसने धीरे से कहा : "मुझे ऐसा लग रहा है कि मुझे एक अन्य सह-वादक का प्रबन्ध करना पड़ेगा। बेस को अब समय नहीं मिलता और वह कोई नयी चीज नहीं सीख सकती। तुम तो जानते ही हो कि आजकल कोई भी संगीतज्ञ बीथोवेन अथवा मेंडलसन और चाइस्काव्स्की जैसी घिसी घिसाई तानों पर ही नहीं चल सकता।"

"क्या तुमने बेस से बात की है ?" बेस के भाई ने प्रश्न किया।

"अनेकों बार ; किन्तु इससे केवल झगड़ा ही होता है। उसने अपने जीवन का एक ध्येय बना लिया है और वह मेरे जीवन के ध्येय से भिन्न है। मेरी इस स्पष्टता का तुम लोग कोई ख्याल मत करना। तुम लोगों के अतिरिक्त और मैं किसी से इस प्रकार खुलकर बात नहीं कर सकता।"

लारेल ने प्रश्न किया—"क्या तुम समझते हो कि उस पर मेरे अनुरोध का कोई असर पड़ेगा ?"

"बिल्कुल नहीं। वह अब संसार का उद्धार करने पर तुली हुई है और जो लोग उसके इस महान कार्य में भाग लेने के लिये तयार नहीं है उनमें उसे किंचित मात्र दिलचस्पी नहीं है। वह इस बात को जानती है कि मुझे उसके इन नये मित्रों से घृणा है इसलिए वह अब इन लोगों को घर पर अधिक नहीं लाती, बाहर बाहर ही मिल लेती है। और सच तो यह है कि आजकल उसका अधिकांश समय बाहर ही कटता है। मैं अधिकतर अकेला ही रहता हूँ।" हैन्सी थोड़ी देर तक विचारों में खोया हुआ सा बैठा रहा, इसके बाद बोला—"मेरा यह अर्थ नहीं कि उसे किसी दूसरे से प्रेम हो गया है। नहीं, मेरा विश्वास है कि अब उसके लिये प्रेम एक अर्थशून्य वस्तु है ; वह घृणा से ही संतुष्ट है।"

"सभी कम्युनिस्ट घृणा पर पलते हैं।" लैनी ने अनुमोदन करते हुए कहा।

"लैनी, पहले मैं भी बेस के साथ पार्टी के अधिवेशनों में जाया करता था। उस समय वे जन साधारण के लिये बन्द न हुए थे। मैंने किसी पुस्तक में पढ़ा था कि पुराने रूस के किसानों को "काले लोग" के नाम से पुकारा जाता था। किन्तु मैंने इस बात का अनुभव किया कि ये "लाल" लोग ही सचमुच इस विशेषण के अधिकारी हैं। मेरा संकेत उनके चमड़े के रङ्ग की ओर नहीं है; मैं स्वयं बहुत गोरा नहीं हूं। मेरा संकेत उनकी आत्मा की ओर है। उनके हृदय अविश्वास की भावना से ओतप्रोत हैं और किसी भी विषय की चर्चा उठते ही वे तुरन्त उसके काले पक्ष को देखने का प्रयत्न करते हैं। आपस में भी वे एक दूसरे का विश्वास नहीं करते। कदाचित यही कारण है कि रूस में किसी भी समस्या का समाधान अपने विपक्षी को मार कर ही हो सकता है।"

"अथवा उसे दास-मजदूर-शिविर में भेज कर।" लारेल ने कहा।

"वह एक ही बात है। मुझे यह आशंका पीड़ित कर रही है कि तीसरा महायुद्ध आने वाला है और बहुत शीघ्र ही मेरी पत्नी गिरफ्तार होकर किसी बन्दी शिविर में जाने वाली है। तुम्हारी क्या धारणा है लैनी?"

लैनी ने कहा, "कम्यूनिस्ट लोग तो सभी शान्ति के पक्ष में हैं किन्तु संसार के सारे पूंजीपति और साम्राज्यवादी बलात उन्हें युद्ध के लिये बाध्य कर रहे हैं।"

व्यंग्य एक खतरनाक अस्त्र है किन्तु लैनी को विश्वास था कि उसके तीनों मित्र उसका वास्तविक अभिप्राय समझ गए होंगे।

(४)

संघर्ष का चरमोत्कर्ष धीरे धीरे आया था और अन्तिम स्थिति पर आने के पूर्व कई स्तरों से गुजर चुका था। जब हैन्सी अपने छोटे भाई के साथ लैनी से फ्रेन्च रिवेयरा के "वायन वेनू" नामक उसके निवास स्थान में मिलने के लिये सर्व प्रथम आया था तब हैन्सी की आयु केवल सोलह वर्ष की थी। उस अवसर पर उसने विश्वशान्ति के आदर्श पर लैनी के विचारों को ध्यान से सुना था। लैनी का दृष्टिकोण सामाजिक न्याय के सिद्धान्त पर आधारित था। हैन्सी बड़ा प्रभावित हुआ था और इस घटना के बाद वह अपने आप को सोशलिस्ट कहने लगा था। बेसी बड का जब उससे प्रथम परिचय हुआ था तब वह भी अत्यन्त अल्पवयस्क थी और हैन्सी को बातों से बड़ी प्रभावित हुई थी। किन्तु बाद में वह हैन्सी के समाजवादी आदर्श को एक दूसरे सीमान्त पर खींच ले गयी। उसका यह विश्वास दृढ़ हो गया कि पूंजीपति वर्ग उद्योग पर अपना स्वामित्व शान्ति पूर्वक न छोड़ेगा: वह धीरे धीरे कम्यूनिस्ट बन गयी।

लैनी सदा कहा करता था कि इसका उत्तरदायित्व उसके कट्टर माता पिता तथा अनुदार लालन पालन पर है। एक अत्यन्त कट्टर वातावरण में पली हुई होने के कारण उसका ऐसा स्वभाव हो गया था कि वह जिस बात पर विश्वास करती थी उस पर एकदम उग्र दृष्टिकोण रखती थी और किसी प्रकार की उदारता उसके लिये कल्पनातीत थी। वह अपने विरोधियों को किसी प्रकार का भिन्न दृष्टिकोण

रखते हुए न देख सकती थी। हैन्सी उससे प्रेम करता था और वह उसके प्रभाव में आने के लिये एक प्रकार से तैयार भी था। उसने पार्टी की सदस्यता तो स्वीकार न की थी किन्तु उसने पार्टी के लिये अपने संगीत का प्रदर्शन कई बार किया था। वह अपनी आय का एक भाग भी पार्टी को दे देने के लिये तयार था। इसके बाद स्पेन में गृह-युद्ध शुरू हुआ था और इसके फलस्वरूप संसार के सभी क्रान्तिकारी—लाल और गुलाबी दोनों ही—नाजीवाद तथा फासिस्टवाद के विरुद्ध एक संगठित मोर्चा बनाने के लिये वाध्य हो गए थे। किन्तु इस गृह-युद्ध के प्रसंग में हैन्सी ने कम्यूनिस्टों की उग्रता तथा कट्टरता के कुछ कुछ दर्शन कर लिये थे। उसने देखा कि कम्यूनिस्ट लोग किस प्रकार अन्य सभी दलों को हटाकर अपना एकाधिपत्य स्थापित करने के लिये उत्सुक हैं। इसके अतिरिक्त उसने सोवियत रूस में होनेवाले भयानक "विशुद्धीकरण" के समाचार भी इसी समय पढ़े थे।

इसके बाद हिटलर और स्टालिन का सौदा हुआ। लैनी को इसके सम्बन्ध में कुछ पूर्वाभास मिल चुका था। उसने बेस से इसकी चर्चा भी की थी। उस समय बेस इस प्रकार की अकल्पनीय बात के संकेत मात्र से भड़क उठी थी। "तुम एक फासिस्ट का सा बकवास कर रहे हो!" उसने क्रुद्ध होकर लैनी से कहा था। इससे अधिक नीची गाली वह अपने मनमें खोज न पायी थी। किन्तु इसके बाद जब हिटलर और स्टालिन का गठबन्धन हो ही गया तो बेस ने तुरन्त अपना रुख पलट दिया। उसने कम्यूनिस्टों से सीखे हुए बौद्धिक पैंतड़ों में से एक का प्रयोग करते हुए घोषणा की कि स्टालिन की नीति पूर्णतया उचित है; उन्हें इस बात का पता लग गया था कि मित्रराष्ट्र हिटलर के साथ सन्धि करने की सोच रहे हैं इसलिये उन्होंने तत्परता के साथ पहले ही उसके साथ संन्धि कर ली और पांसा पलट दिया।

हैन्सी और बेस के बीच झगड़े का सूत्रपात यहीं से हुआ। हैन्सी का कहना था कि हिटलर एक हत्यारा, हिंस्र पशु है और उसके साथ किसी प्रकार की सुलह का विचार मात्र अचिन्तनीय है। पति पत्नी में तर्क चलता रहा; तब तक चलता रहा जब तक उन दोनों को एक दूसरे की आवाज़ से घृणा न हो गयी। उन लोगों ने देखा कि वे साथ साथ तभी रह सकते हैं जब इस विषय की चर्चा एकदम न

हो, यद्यपि यह विषय दोनों के लिये ही सर्वोपरि महत्व का था। इसके बाद शीघ्र ही एक दूसरी घटना घटी जिसने देखते ही देखते सम्पूर्ण वस्तुस्थिति को बदलकर एक नया रूप प्रदान कर दिया। हिटलर ने स्टालिन पर आक्रमण किया और इसके फलस्वरूप स्टालिन अचानक मित्र राष्ट्रों के पक्ष में आ गये। सोवियट रूस शान्ति और गणतन्त्र का समर्थक बन गया ओर एक बार फिर यह आवश्यक हो उठा कि सभी क्रान्तिवादी—हल्के और गहरे सभी रंगवाले—एक साथ संगठित होकर रूस को हर प्रकार की सहायता प्रदान करें!

हैन्सी और बेस भी रूस को अपनी सहायता देने के लिये वहां गए। उनकी सहायता थी—सुन्दर-संगीत। दोनों वहाँ पर लगभग दो वर्ष रहे किन्तु घटना-क्रम उनकी आशा के अनुकूल न निकला। बेस कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्या थी इसलिये उसका थोड़ा बहुत विश्वास किया जा सकता था। उस समय राष्ट्रीयता और देश भक्ति ही कम्यूनिस्ट पार्टी की नीति थी। सभी मोर्चों पर केवल रूसी! किन्तु सोशलिस्ट का क्या विश्वास? वह मुंह खोलते ही कुछ न कुछ अण्ट सण्ट बकने लगेगा। संगीत गृह में जनता बड़े उत्साह के साथ उसकी अभ्यर्थना करती थी किन्तु कोई भी सामान्य नागरिक उसे अपने घर पर निमंत्रित करने का साहस न बटोर पाता था। विदेशी व्यक्ति के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क स्थापित करने का अर्थ था अधिकारियों के संदेह का शिकार बनना। यह एक अत्यन्त खतरनाक बात हो सकती थी। रात के दो तीन बजे गुप्त पुलिस आकर उस अविवेकी व्यक्ति को सदा के लिये दृष्टि से ओझल कर सकती थी।

हैन्सी ने रूसी भाषा सीख ली थी और अपनी पत्नी के मित्रों तथा पार्टी के सदस्यों का वार्तालाप सुना करता था। परिणाम यह हुआ कि वह इस विश्वास के साथ अमेरिका लौटा कि कम्युनिज्म और नाजी-फासिज्म जुड़वां भाई हैं और इनके बीच अन्तर केवल इनकी कमीज के रंगों में है। इनके आदर्शों में कुछ भेद भले ही हो किन्तु इनकी कार्य प्रणाली एक ही है। और अन्त में यह कार्य प्रणाली ही सर्वोपरि महत्व की वस्तु प्रमाणित होती है।

अपने तीनों मित्रों के सामने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए हैन्सी ने कहा, "पुराने जमाने में रूस के ज़ार लोगों की जो मांगें थी उनका अध्ययन करो और

इसके बाद स्टालिन की मांगों के साथ उनकी तुलना करो। जिन बातों के लिये उन ज़ारों ने युद्ध किये थे ठीक वही बातें स्टालिन चाहता है—बाल्टिक पर बन्दरगाह, एड्रियाटिक तक पहुँचने का रास्ता, डार्डेनेलीज पर रूसी आधिपत्य, ईरान का तेल, प्रशान्त महासागर पर बन्दरगाह, डायेरन और पोर्ट आर्थर—ज़ार लोग इन पर अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। और हम लोगों ने देखा है कि स्टालिन ने किस प्रकार सरगेई आइसेन्सटाइन से एक सिनेमा फिल्म बनवा कर रूस के सबसे अधिक क्रूर और नृशंस ज़ार आइवान दि टेरीबल को गौरवान्वित कर दिया है।"

लैनी ने उत्तर दिया—"ये बातें सचमुच चिन्तनीय हैं।" वह इससे अधिक कुछ न कह सका क्योंकि उसके घर में भी एक समस्या थी। लारेल शान्ति के सम्बन्ध में कुछ कट्टर हो उठी थी। इसका यह अर्थ नहीं कि उसे सोवियट रूस से कोई प्रेम था। नहीं, ऐसी बात नहीं। किन्तु वह रूस से घृणा करने से भय खाती थी—घृणा का विचार ही उसके लिये असह्य था। और लैनी कोई ऐसी बात न कहना चाहता था जो लारेल को उत्तेजित कर दे—कम से कम तब तक नहीं जब तक कि वह गर्भस्थ शिशु सकुशल संसार में प्रवेश नहीं कर जाता। लारेल की आयु ३९ वर्ष हो चुकी थी और इस बात की पूरी सम्भावना थी कि वह दुबारा माता बनने का सौभाग्य न प्राप्त कर सके।

(५)

दूसरे दिन प्रातःकाल फ्रेडी मोटर द्वारा लैनी को लागर्डिया के हवाई अड्डे तक पहुंचा आया। लारेल साथ में न गयी; वह उस वायुयान को जमीन छोड़ कर अधर की ओर जाते हुए देखने के लिए तयार न थी क्योंकि उसमें संसार की सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु जा रही थी। वायुयान जानबूझ कर बिलम्ब करता हुआ प्रतीत हो रहा था। ऐसा लग रहा था कि जमीन छोड़ने के पूर्व वह अन्तिम क्षण तक पशोपेश में पड़ा हो। लारेल के लिए यह दृश्य उपयुक्त न होना—इसमें कोई सन्देह नहीं, क्योंकि इस समय वह अपने पेट में एक और मूल्यवान भार का वहन कर रही थी। उसने यही उचित समझा कि वह अपने होटल के कमरे में पड़े पड़े कल्पना के नेत्रों द्वारा ही इस दृश्यावलि का चित्रण कर ले।

किन्तु विश्व पर्यटक लैनी बड के लिए इसमें कोई नवीनता न थी। वह अपनी सीट पर आराम के साथ बैठ गया और वायुयान के पट्टे से अपने शरीर को बांध लिया। इसके बाद उसने एक बार खिड़की से झांक कर देखने तक की आवश्यकता न समझी। उसे प्रातःकालीन समाचार पत्र में यह पढ़ने का विशेष कौतूहल हो रहा था कि स्टालिन तुर्की और डार्डनेलीज़ के सम्बन्ध में क्या करने जा रहे हैं। समाचारपत्र समाप्त करने के बाद उसने वह पुस्तिका निकाली जो टर्नर ने उसे दी थी। यह पुस्तिका अमेरिका के ट्रेज़री विभाग से प्रसारित हुई थी और इसका शीर्षक था—"अपने पैसे को पहचानिये।" लैनी ने पुस्तिका का मुख पृष्ठ फाड़ कर फेंक दिया था ताकि कोई यह अनुमान न लगा सके कि वह क्या पढ़ रहा है। उसने यह विचार किया था कि पुस्तिका में दिये हुए विवरण को हृदयंगम करके वह उसे भी फेंक देगा। उसके लिये यह विषय एकदम नया था। इसलिये उसने मनोयोग के साथ उसे पढ़ना शुरू किया।

वायुयान का पहला पड़ाव न्यूफाउण्डलैण्ड के गैण्डरलेक नामक स्थान में था। यह स्थान लैनी के स्मृतिपट पर सदा एक लाल चिन्ह से अङ्कित रहेगा। आज से प्रायः पांच वर्ष पूर्व वह यहीं से अपनी उस यात्रा के लिए रवाना हुआ जिसमें वह अपने प्राणों से हाथ धोते धोते बचा था। उसे उस अवसर पर कई रहस्यमयी चेतावनियां प्राप्त हुई थीं और उसके अन्तर्मन ने उसे विचित्र रूप में आगाह किया था। किन्तु उसने इसकी ओर कोई ध्यान न दिया था और यात्रा शुरू कर दी थी। यह सोच कर इस समय उसका हृदय कांप उठा।

वायुयान से निकल कर हाथ पैर सीधा करने के लिये वह बाहर आया। वह उस बड़े हवाई अड्डे के विकास तथा व्यवस्था को देख कर मन ही मन उसकी सराहना करने लगा। इसी समय घण्टी बजी और वह फिर वायुयान में आकर अपने स्थान पर बैठ गया। थोड़ी ही देर में यात्रा फिर शुरू हुई। यह निश्चित हुआ था कि यदि मौसम खराब रहा तो वायुयान एकबार आइसलैण्ड में उतरेगा अन्यथा स्काटलैण्ड के प्रेस्टविक की ओर सीधे चला जायगा। रास्ते में उन्हें एक आंधी मिली किन्तु वायुयान परिचालक चक्कर काट कर उसे बचा ले गया। वह बड़ा सुन्दर दृश्य था। बिजली कौंध रही थी और ऐसा प्रतीत होता था

मानों वह समुद्र के हृदय पर आघात कर रही हो। यथा समय वायुयान प्रेस्टविक पहुंच गया और लैनी ने लन्दन के पास क्रायडन हवाई अड्डे की ओर जाने वाले एक दूसरे वायुयान को पकड़ा।

हवाई अड्डे पर उसकी प्रतीक्षा में पार्लियामेण्ट का सदस्य तथा "नाइट" की पैतृक उपाधि का अधिकारी अलफ्रेड पामेराय-नीलसन खड़ा हुआ था। स्पेन के गृह युद्ध के समय वह जनता की ओर से लड़ने के लिये खड़ा हुआ था और लैनी ने उसे मैड्रिड में अपने कार्यक्षेत्र तक पहुंचाया था। उन दोनों ने साथ साथ और भी कई साहसी कार्य किये थे किन्तु इस प्रश्न पर दोनों एकमत थे कि उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य ब्रिटिश जनता के राजनैतिक संघर्ष के तारतम्य में हुआ था। यह कहा जा सकता है कि अल्फ्रेड जन्म से ही ब्रिटिश लेबर पार्टी की सदस्यता के उपयुक्त गुण लेकर आया था यद्यपि एक वर्ष पूर्व पार्लियामेण्ट के लिये होने वाले चुनाव में उसकी जीत का उत्तरदायित्व कुछ तो उसके पिता की दीर्घकालीन सार्वजनिक सेवाओं पर था और कुछ शाही वायु सेना में उसके अपने शानदार रेकर्ड पर।

लैनी अल्फ्रेड के माता पिता तथा छोटे भाई के समाचार लेकर आया था। उसने अल्फ्रेड को इनकी सारी क्रियाशीलता का विवरण बताया। बदले में अल्फ्रेड ने लैनी को यह सुसवाद सुनाया कि पार्लियामेण्ट में शीघ्र ही एक ऐसा कानून स्वीकृत होने वाला है जिसके अनुसार ब्रिटेन में पैदा होने वाले प्रत्येक बच्चे को भरपेट भोजन प्राप्त होने लगेगा और सबको अपनी अपनी प्रतिभा के विकास के लिये उपयुक्त अवसर मिलने लगेगा। जमींदारों के भार से पीड़ित इस टापू के इतिहास में यह एक सर्वोपरि महत्व की घटना होगी और हम दोनों आदर्शवादियों के लिये यह संसार में एक नयी सभ्यता का प्रादुर्भाव कराने वाला युगान्तर होगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल लैनी बड एक वायुयान द्वारा बर्लिन के लिये रवाना हो गया। उसने अपने नोट हृदयंगम कर लिये थे और कागज को टुकड़ा टुकड़ा करके फेंक दिया था। अब उसके सूटकेस में कुछ अंगरेजी की पत्रिकाएँ थीं और एक डायरी थी जिसमें उसने जर्मनी के कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम लिख लिये थे

जिन्हें अमेरिका की सरकार ने नाजियों द्वारा चुराये हुए उनके बहुमूल्य तैल-चित्र वापस कर दिये थे। सम्भव है अब ये भले आदमी इन चित्रों को बेचने के लिये उत्सुक हों; सम्भव है लैनी को इन का निरीक्षण करने का अवकाश प्राप्त हो जाय।

(६)

एक बार फिर कला विशेषज्ञ लैनी बड जर्मनी के ध्वंस्त नगरों और हरे भरे मैदानों के ऊपर से उड़ा और उस दुर्भाग्यग्रस्त देश की नष्टभ्रष्ट राजधानी में पहुंचा। एक बार फिर उसने अपने वायुयान को टेम्पेलहोफर के हवाई अड्डे पर उतरते हुए देखा। महायुद्ध प्रायः चौदह मास पूर्व समाप्त हो चुका था और अमरीकी सेनाएं सौम्य भाव से एल्ब नदी के तट पर रुक गयी थीं। ये सेनाएँ आसानी से आगे बढ़कर बर्लिन पर अधिकार कर सकती थीं किन्तु ऐसा करने से यह प्रतीत होता कि वे अपने रूसी मित्रों के साथ छीना झपटी कर रही हैं। उधर रूसी सेनाएं नगर में प्रवेश कर चुकी थीं और मित्र राष्ट्रों के एक सम्मेलन में होने वाले निश्चय के अनुसार नगर को चार भागों में विभाजित कर दिया गया था—रूसी, फ्रेन्च, ब्रिटिश और अमरीकी। रूसियों को पूर्वी क्षेत्र मिला था जिसमें अधिकांश कारखाने आ जाते थे; यही वे चाहते भी थे। उन्होंने निर्दयतापूर्वक इनकी मशीनों को खोल कर रूस भेज दिया। किन्तु दुर्भाग्यवश इनको रखने के लिये उनके पास उपयुक्त स्थान न था और इसलिये अधिकांश मशीनें वर्षा में भींग कर नष्ट हो गयीं।

बर्लिन के फ्रेन्च, अमरीकी और ब्रिटिश क्षेत्र एल्ब नदी के पश्चिम की ओर पड़ते थे। इस प्रकर एक विचित्र स्थिति की सृष्टि हो गयी थी। प्रत्येक देश के पास बर्लिन का एक भाग था—एक छोटे से टापू की भांति। ये क्षेत्र एल्ब नदी से लगभग ७० मील दूर पड़ते थे और इन तक पहुंचने के लिये रूसी क्षेत्र को लांघना पड़ता था। जब तक स्टालिन एक मित्र की भाँति रहे तब तक तो कोई बात न थी। किन्तु दुर्भाग्यवश अब उन्होंने एक विचित्र रुख अपना लिया था। उन्होंने यह आदेश जारी कर दिया था कि उनके सैनिक मित्र राष्ट्रों के सैनिकों से मिलने जुलने न पावें। इसके अतिरिक्त बर्लिन की पूर्वी

सीमा को पार करके आने वाले मालों के यातायात के सम्बन्ध में वे दिन दिन काफी कठिनाइयाँ पैदा करते जा रहे थे।

लैनी को बताया गया था कि हवाई अड्डे पर उसकी प्रतीक्षा में एक व्यक्ति तैनात मिलेगा। यह बात ठीक निकली। ज्योंही वह वायुयान से उतरा त्योंही एक चुस्त अमरीकी नवयुवक ने पास आकर उसका अभिवादन किया। "मिस्टर बड ?" उसने जिज्ञासा के भाव से देखते हुए प्रश्न किया। "क्रिस्टाफर कोलम्बस," लैनी ने उत्तर दिया। नवयुवक ने अपना नाम बताया और लैनी को साथ लेकर अपनी मोटर पर दफ्तर की ओर रवाना हो गया। रास्ते में वह लैनी को अपना परिचय देते हुए बोला कि वह अमेरिका के ट्रेजरी आफिस द्वारा भेजे गए कई एजेण्टों में से एक है जो इस समय जर्मनी में "हिमलर की मुद्रा" का पता लगाने के लिये दौड़ धूप कर रहे हैं। जिन क्षेत्रों में वे खुलेआम काम कर सकते हैं वहाँ वे खुले आम काम कर रहे हैं और जहाँ रूसी लोगों ने अनुमति नहीं दी वहाँ छिप कर काम कर रहे हैं। इस प्रकार के क्षेत्रों में कभी कभी विदेशी एजेण्टों के ज़रिये काम कराना पड़ता है जिन पर विश्वास करना एक संदिग्ध बात होती है।

उस नवयुवक ने कई भयानक कृत्यों का वर्णन किया किन्तु लैनी को कोई आश्चर्य न हुआ। वह नाजियों को हिन्स अपराधियों और चतुर मक्कारों के रूप में भली-भाँति पहचान चुका था। यद्यपि वे अपने ये जघन्य कृत्य एक सरकार के भेष में किया करते थे तथापि लैनीकी दृष्टिमें यह बात कोई विशेष महत्व न रखती थी। किसी भी पराभूत देश की मुद्रा को जालसाजी द्वारा तयार करके उस देश की वस्तुओं को लूट लेना उनके लिये एक अत्यन्त स्वाभाविक बात थी। अब रही तटस्थ देशों की बात। किन्तु नाजियों की दृष्टि में कोई भी देश तटस्थ न था। जो उनके साथ न था वह उनके विरुद्ध था। तटस्थ देशों में ब्रिटिश पाउण्ड और अमरीकी डालर को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वीकार कर लिया गया था और इसलिये इन मुद्राओं की जालसाजी ही नाजियों की दृष्टि में आवश्यक कच्चे पक्के माल प्राप्त करने का सबसे सरल और सुविधाजनक उपाय था।

(७)

बर्लिन के दक्षिणी-पश्चिमी अञ्चल में नागरिक जनता निवास करती थी और इसलिये इस पर अधिक बमबाजी न हुई थी। यही कारण था कि इस क्षेत्र में कई अमरीकी कार्यालयों के लिये बड़ी सुन्दर और आलीशान इमारतें प्राप्त हो गयी थीं। इसी प्रकार की एक इमारत में लैनी को ले जाया गया। इस कार्यालय के प्रधान तथा उसके सहकारी के साथ लैनी की वार्ता शुरू हुई और दोनों पक्ष तुरन्त काम की बातों पर उतर आए क्योंकि वे जानते थे कि जिसके साथ बात हो रही है वह एक अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति है और उसके पास व्यर्थ की बातों के लिए समय नहीं है। यहां पर लैनी को ज्ञात हुआ कि जाली मुद्रा के स्रोत का अनुसन्धान करने के प्रसंग में तीन सूराग मिले और तीनों ही पोलैण्ड के स्टूबेनडर्फ नामक ग्राम की ओर संकेत करते हुए प्रतीत हुए। इस बात का पता चला कि पोलिश जाति के कुछ व्यक्ति जो काफी बड़े बट्टे पर यह जाली मुद्रा बेचने का काम करते हुए देखे गये थे उन्हें ए० एम० जी के एक एजेण्ट ने काफी धैर्य और परिश्रम के साथ इस व्यापार में दक्ष किया था। इस समय ये व्यक्ति नयी नकली मुद्रा लाने के लिये स्टूबेनडर्फ गये थे क्योंकि उनका पुराना स्टाक समाप्त हो चुका था। उनमें से एक व्यक्ति गिरफ्तार हो गया था किन्तु वह अपना भेद न खोलने के लिये कृतसंकल्प था।

प्रधान अधिकारी मोरीसन ने लैनी को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कहा, "यह ठीक है कि यदि यह व्यक्ति रूस की खुफिया पुलिस एन० के० वी० डी० के हाथ में होता तो वे लोग भांति भांति के अत्याचार करके उसे अपना भेद खोलने के लिये बाध्य कर देते। किन्तु हम लोग ऐसा नहीं कर सकते। हम लोगों को दूसरे उपायों का अवलम्बन करना पड़ता है; कभी कभी विदेशियों के ज़रिये काम कराना पड़ता है और यद्यपि हम लोग पूरी सतर्कता रखने का प्रयत्न करते हैं तथापि गलतियां हो ही जाती हैं। एक बात और भी है। यदि जाली मुद्रा बनाने वाले इन अपराधियों को खतरे का आभास मिल गया तो वे स्टूबेनडर्फ छोड़ कर कहीं दूसरी जगह चले जाएंगे। थोड़ी सी ताम्बे की प्लेटों और नोट बनाने वाले कागज को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना कोई कठिन

बात नहीं है। आप समझ गए होंगे कि हमारी समस्या कितनी जटिल है।"

लैनी ने सर्वाधिक महत्व की बात पूछी : "क्या आप को इस प्रकार का कोई सूराग मिला है जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि जाली मुद्रा बनाने वाले ये अपराधी कौन हैं—नाजी, कम्युनिस्ट या साधारण जालसाज ?"

"इस सम्बन्ध में हमें अभी तक कोई सूराग प्राप्त नहीं हुआ है। किन्तु इसी प्रकार के अन्य मामलों में हमें तीनों प्रकार के व्यक्ति मिले हैं। यह प्रश्न कोई विशेष महत्व भी नहीं रखता क्योंकि अपराधी चाहे नाजी हो चाहे कम्युनिस्ट, उसकी कार्य प्रणाली एक सी ही रहती है। इस "विचित्र" मुद्रा से पहले माल खरीदे जाते हैं और बाद में इन मालों को काले बाजार में बेच दिया जाता है। हमारे लिये यह प्रश्न भी विशेष महत्व नहीं रखता कि लाभ की रकम कम्युनिस्टों के प्रचार कार्य में खर्च होती है या शराब और वेश्याओं पर।"

लैनी ने उत्तर दिया, "नहीं, यह प्रश्न काफी महत्व रखता है। इसके द्वारा हम अपराधियों की मनोवृत्ति का कुछ अनुमान लगा सकते हैं और फिर उन्हें पकड़ने के लिये उसी प्रकार का रास्ता अपना सकते हैं। हमें अपराधियों को पकड़ने का सूराग प्राप्त करने के लिये ये सब बातें जानना अत्यन्त आवश्यक है। आपने मुझे जो कुछ बताया है उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी एकाध व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे गुट का कार्य है। और योरोप में प्रायः प्रत्येक गुट कोई न कोई आदर्श रखता है। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि इस गुट के लोग व्लासोवाइटवादी हो सकते हैं ?"

"आपने एक महत्वपूर्ण बात उठाई है, मिस्टर बड। मैंने यह नाम सुना तो है किन्तु इसके बारे में मेरी कोई जानकारी नहीं है।"

"व्लासोवाइटवादी उन रूसियों और पोलों को कहा जाता है जो नाजियों के साथ मिलकर उनकी सेना में भर्ती हो गए थे। सम्भव है इनमें से कुछ प्रतिक्रियावादी रहे हों, किन्तु अधिकांश पैसे के लोभ में उधर गए थे। इन व्यक्तियों का पूरा एक डिवीजन था और इस डिवीज़न का सेनापति व्लासोव नामक एक व्यक्ति था। कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि कम्युनिस्टों के लिये तो ये लोग साक्षात शैतान के अवतार थे। सम्भव है इनमें से कुछ साचेनहासेन के बन्दी-

शिविर में संतरियों अथवा दुभाषियों के रूप में रहे हों और यह भी सम्भव है कि ब्लाक बनाने वाले कारीगरों अथवा साधारण अपराधियों के रूप में वहां बन्द रहे हों। हो सकता है इनमें से कुछ लोग अवसर पाकर जाली नोटों के बण्डल और प्लेटें लेकर पोलैण्ड भाग गए हों और वहां अपना नाम बदल कर रह रहे हों। यह भी सम्भव है कि वे लुके छिपे किसी जंगल में कम्युनिस्टों के विरुद्ध अपना यह षड़यन्त्र चला रहे हों। यदि कर्ट मेसनर वहां होगा तो वह इस गुट के प्रति सहानुभूतिशील ही होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं। समस्या सचमुच बड़ी जटिल है।"

"मेरे आदमियों को एक अर्से से इस विषय की शिक्षा मिल रही है। यदि आप चाहें तो इसमें आवश्यक संशोधन परिवर्द्धन कर सकते हैं। बर्नहाड्ट मान्क से मुझे मालूम हुआ है कि आप इन मामलों में जितनी अभिज्ञता रखते हैं उतनी और किसी अमेरिकन के पास नहीं है।"

"मान्क तो सदा बढ़ा चढ़ा कर मेरी प्रशंसा किया करता है। कारण यह है राजनीतिक प्रश्नों पर हम दोनों के विचार मिलते जुलते हैं। मैं स्टूबेनडर्फ से भली भाँति परिचित हूँ क्योंकि मैं बड़े दिन की छुटियों में वहाँ जाया करता था। उस समय मेरी आयु तेरह वर्ष की थी। मैं ने वहीं कर्ट मेसनर के परिवार के साथ परिचय प्राप्त किया था और बादमें ग्राफ से भी मुझे अभिज्ञता हो गयी थी। आप जानते ही हैं कि सन् १९१३ में स्टूबनेडर्फ जर्मनी के अपर साइलेसिया प्रान्त का एक अंग था। इसके बाद प्रथम महायुद्ध आया और मित्र राष्ट्रों ने इसे पोलैण्ड को सौंप दिया। कर्ट का परिवार इस घटना से बड़ा क्षुब्ध हो गया था। सदा से ही जर्मनी तथा पोलैण्ड के निवासी एक दूसरे से घृणा करते आए हैं। इसके बाद हिटलर का अभ्युदय हुआ और स्टूबेनडर्फ एक बार फिर जर्मनी में अन्तर्भुक्त हो गया। अब वह फिर पोलैण्ड में चला गया है; किन्तु मेरा विश्वास है कि अब वह वस्तुतः रूस के आधिपत्य में है।"

"हां, मेरा भी यही विश्वास है, मिस्टर बड। आप तो जानते ही हैं कि यद्यपि रूस ने यह वचन दिया था कि वह पोलैण्ड में गणतांत्रिक शासन व्यवस्था स्थापित करेगा तथापि उसने इसका ठीक उल्टा किया है।"

"क्या वे लोग विदेशियों को वहाँ जाने की अनुमति देते हैं ?"

"वे दिन दिन इस दिशा में कठिनाइयाँ उपस्थित कर रहे हैं। बात यह है कि वे पोलैण्ड को एक पिछलगुआ राष्ट्र बना रहे हैं और वे नहीं चाहते कि कोई बाहरी व्यक्ति इस प्रक्रिया को देखे।"

(८)

मोरीसन ने लैनी को तत्कालीन पोलैण्ड की राजनैतिक स्थिति का एक संक्षिप्त परिचय दे दिया। याल्टा सम्मेलन में रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन के बीच यह समझौता हुआ था कि पोलैण्ड के लोगों को स्वयं अपनी सरकार बनाने की सुविधा प्रदान की जाय। यह निश्चय भी किया गया था कि हर राजनैतिक दल को स्वाधीनता दी जाय। किन्तु हुआ ठीक उल्टा। वहाँ की सोशलिस्ट, डेमाक्रेटिक और लेबर पार्टी को बलात दबा दिया गया और इनके नेताओं को या तो जेल में बन्द कर दिया गया था देश से निर्वासित कर दिया गया।

"मिस्टर बड, याल्टा सम्मेलन में जो समझौता हुआ था उसमें यह वाक्य था—'मुक्त और निर्बाध चुनाव'—किन्तु···" मोरीसन ने लैनी को ओर देखते हुए कहा और लैनी ने अपनी स्वीकृति जनाते हुए बताया कि वह स्वयं याल्टा सम्मेलन के अवसर पर प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के साथ था और उसने समझौते पर तीन महानों के हस्ताक्षर होने के पूर्व उसके प्रारूप को पढ़ा था।

"इस समय स्थिति यह है कि पोलैण्ड का शासन केवल तीन कम्युनिस्टों के हाथ में हैं।" मोरीसन ने कहा—"उन्होंने केवल एक पार्टी को रहने दिया था। कृषक पार्टी। कारण यह था कि इनका विश्वास था कि भूमि के पुनर्वितरण और उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का लोभ दिखा कर वे इस पार्टी को अपनी ओर फोड़ लेंगे। इनका यह विश्वास भी था कि कम्युनिस्टों की स्थिति इतनी तगड़ी है कि किसी भी प्रश्न पर मतदान की व्यवस्था की जा सकती है। फलस्वरूप सीनेट को समाप्त कर देने के प्रश्न पर एक मतदान का आयोजन किया गया और इसका परिणाम क्या हुआ ? कृषक पार्टी के नेताओं के अनुसार ८५ प्रतिशत वोट इस प्रस्ताव के विरोध में आए। किन्तु कम्युनिस्टों ने बारह दिनों तक मतदान का

निर्णय रोक कर रखा और इसके बाद एक दिन अचानक यह घोषणा कर दी कि प्रस्ताव के पक्ष में लगभग ८० लाख वोट आए और उसके विपक्ष में ४० लाख से भी कम। इस प्रकार पोलैण्ड में "मुक्त और निर्बाध" चुनावका उपहास उड़ाया गया।"

मोरीसन ने लैनी को यह चेतावनी भी दी कि उसे पोलैण्ड एकदम अस्त व्यस्त और असंगठित हालत में मिलेगा। सोवियत तोपों ने वहां के नगरों और गांवों के धुर्रे उड़ा दिये थे और कई नगरों में तो यह हालत थी कि सड़कों का मलवा अभी तक न उठाया जा सका था और इसलिये उनपर गाड़ियां चलना असम्भव था। जनता का एक स्थान से दूसरे स्थान में निर्यात का क्रम अविश्वसनीय पैमाने पर चल रहा था। अस्सी लाख से भी अधिक पोल जर्मनी में भाग आए थे। इधर जर्मनी के जिन प्रान्तों पर रूस ने अधिकार कर लिया था वहां प्रायः १५ लाख पोल जर्मनों के पलायन से रिक्त होनेवाले स्थान में बसने के लिए आ गए थे। आस्ट्रिया और पश्चिमी योरोप से भी रूसी आतंक से भयभीत प्रायः दस लाख पोल अपनी मातृभूमि में लौट आए थे। वारसा की जनसंख्या साढ़े बारह लाख से घटकर केवल पांच लाख रह गयी थी। अर्द्धबुभुक्ष लोग सैकड़ों की संख्या में सड़कों पर अपनी बैलगाड़ियों अथवा ठेलों पर बैठे हुए या अपनी सम्पूर्ण ऐहिक सम्पत्ति को दो चार गठरियों में बांधकर बगल में दबाए हुए अवसादपूर्ण भाव से एक ओर जाते हुए दिखाई देते थे। उस प्रकार के दृश्य सचमुच बड़े हृदय विदारक थे; अस्वास्थ्यकर तो थे ही।

मोरीसन ने लैनी से कहा कि भविष्य में उसे अपना सारा प्रबन्ध स्वयं करना पड़ेगा। उसके लिये किसी होटल में ठहरने का प्रबन्ध नहीं कराया गया है ताकि किसी को यह सन्देह न हो जाय कि वह कोई सरकारी अधिकारी है। लैनी ने कहा कि उसे कोई कठिनाई न होगी क्योंकि वह बर्लिन से भली भांति परिचित है और कुछ ही मास पूर्व एक बार यहां आ चुका है। उसने यह भी बताया कि यद्यपि वह स्वयं धूम्रपान नहीं करता तथापि वह अपने साथ अमरीकी सिगरटें लाया है जिनकी सहायता से वह होटल के क्लर्कों, टैक्सी ड्राइवरों तथा अन्य व्यक्तियों की कृपा आसानी के साथ प्राप्त कर लेगा।

(९)

अपनी योजना कार्य रूप में परिणत करने के पूर्व लैनी को दो अत्यावश्यक काम करने थे। पहला काम था रूस के सैनिक अधिकारियों से स्टूबेनडर्फ जाने की अनुमति प्राप्त करना और दूसरा था पोलिश कान्सलेट से आवश्यक प्रवेश-पत्र प्राप्त करना। लैनी ने दोनों प्रश्नों पर काफी गम्भीरता के साथ विचार किया था। उसने मोरीसन से इसकी चर्चा करते हुए कहा था कि "मैं कहूँगा कि मैं स्टालिन से दो बार मुलाकात कर चुका हूँ; पिछली मुलाकात तो गत बसन्त ऋतु में ही हुई थी। मेरा उद्देश्य कुछ कला-कृतियां खरीदना मात्र है।"

लैनी ने विचार करना शुरू किया कि उसने स्टूबेनडर्फ में कौन कौन से चित्र देखे थे। उसे याद आया कि एक चित्र प्रसिद्ध कलाकार क्रनाच का था जिसे गोएरिन्ग खरीदने के लिये उत्सुक था, ड्रेफेगर्स के भी दो चित्र थे जिनकी हिट-लरने बड़ी प्रशंसा की थी। सम्भवतः युद्धकाल में बमबाजी के समय ये चित्र फ्रेमों से निकालकर किसी सुरक्षित स्थान में भेज दिये गए थे। इस समय वे कहां हैं? सम्भव है कर्ट मेसनर इनका सूराग दे सके। हां, यह एक अच्छा बहाना है।

मोरीसन ने कहा कि यदि इन चित्रों का कोई सूराग लग गया तो सम्भवतः सरकार इन्हें ज़ब्त कर लेगी। लैनी ने कहा कि ऐसी स्थिति में वह सरकार से इन्हें खरीदने की बात करेगा। कम से कम उसे स्टूबेनडर्फ जाने का एक बहाना तो मिल जाएगा।

"क्या मैं सरकारी अधिकारियों को घूस का प्रलोभन दूं?" लैनी ने कुछ सोच कर पूछा।

"यदि वे मांगें तो अवश्य दे दीजिए; किन्तु सावधानी के साथ।" मोरीसन ने उत्तर दिया। "जहां तक मेरा अनुमान है यह पोलिश कान्सल कोई गरीब अभागा है जिसे भर पेट भोजन नहीं नसीब होता। किसी अच्छे होटल में उसे भोजन का निमन्त्रण दे दीजिए और उसके सामने शराब की एक बढ़िया सी बोतल रख दीजिए। जर्मनों के सम्बन्ध में उसके साथ कोई चर्चा मत कीजिये। सावधानी के साथ आप उससे यह कह सकते हैं कि आपको पोलैण्ड में कुछ रुपया

ले जाना है और आप इसके लिये आवश्यक मुद्रा विनिमय प्राप्त करना चाहते हैं। सम्भवतः वह स्वयं कहेगा कि वह आपको समुचित दर पर मुद्रा विनिमय दिला सकता है। इस समय ज़लाटी सिक्के का भाव घटकर एक सेण्ट रह गया है किन्तु आप अनजान बन कर उसे सवा सेण्ट की दर लगा लेने दीजिये। यह घूस देने का सबसे अच्छा उपाय है। वह छै साल के इस लम्बे युद्ध-काल से गुजर चुका है और यह निश्चित है कि जो वेतन उसे प्राप्त होता है वह पर्याप्त नहीं है। कदाचित एक लम्बे अर्से के बाद उसे अच्छे कपड़े लत्ते पहने हुए व्यक्ति को देखने का प्रथम अवसर प्राप्त होगा।"

"कहीं वह मेरे अच्छे कपड़ों के कारण मुझसे ईर्ष्या न करने लगे।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा।

"ऊपर से तो वह आपके प्रति घृणा का भाव दिखाएगा किन्तु मन ही मन आपका आदर करेगा। वस्तुतः वह आपकी सेवा के लिये हर प्रकार से तत्पर रहेगा। साधारणतया यह समझा जाता है कि कम्यूनिस्ट लोग घूसखोरी के विरोधी हैं। किन्तु बात ऐसी नहीं है। उनकी क्रान्ति तीस वर्ष पुरानी हो चुकी है और शायद ही कोई सरकारी कर्मचारी ऐसा हो जो इतने लम्बे समय में आधे पेट वेतन पर अपना निर्वाह कर सके।"

लैनी ने मोरीसन से कहा कि स्टूबेनडर्फ की यात्रा पर निकलने के पूर्व वह कई व्यक्तियों से मिलना चाहेगा। "मैं समझता हूं कि कर्ट मेसनर का पता ठिकाना उसके बड़े भाई जेनरल एमिल से मिल जाएगा। क्या आप बता सकते हैं कि इस समय वह कहां है?"

"मैं आपके लिये उसका पता लगाने का प्रयत्न कर सकता हूं।"

"पिछली बार जब मैं उससे मिला था उस समय हम लोगों की सेनाएं फ्रांस में थीं। उस समय मैं जेनरल पैटन के जी २ डिवीजन में काम कर रहा था और मैं एमिल को अपनी ओर फोड़ लेने में सफल हुआ था। उसने मेत्ज की किलेबन्दी के सम्बन्ध में हम लोगों की बड़ी ही महत्वपूर्ण जानकारी दी थी। यह निश्चित है कि कर्ट ने उसे एक नीच विश्वासघाती के रूप में समझा होगा—जैसा कि वह मुझे समझता है। किन्तु एमिल कर्ट की मानसिक दुर्बलताओं से अव-

गत है। वह स्टूबेनडर्फ के और भी कई व्यक्तियों को जानता होगा जिनसे सम्भवतः मुझे बहुत सी जानकारी प्राप्त हो सकेगी। मैं ग्राफ स्टूबेनडर्फ से भी मिलना चाहूँगा—उसकी जायदाद तो अवश्य जब्त हो चुकी होगी।"

"मैंने उसका कुछ पता लगाया है।" मोरीसन ने कहा—"सुना जाता है कि इस समय वह बवेरियन आल्प्स् के लेक डिस्ट्रिक्ट में एक छोटा सा मकान लेकर रह रहा है।"

"निर्धन होना उसके लिये एक सर्वथा नवीन अनुभव हुआ होगा।" लैनी ने कहा।

"धीरे धीरे वे सभी निर्धन होने के लिये बाध्य हैं। अरे हां, मुझे आदेश प्राप्त हुआ है कि आपके लिये एक खर्च खाता खोल दूं। आप दूसरे व्यक्तियों पर दो लाख डालर तक खर्च करने के लिये स्वतन्त्र हैं। यदि अधिक की आवश्यकता पड़े तो मुझे सूचित कीजियेगा।"

"उन लोगों को रुपये का प्रलोभन देना आसान काम न होगा। गरीब होते हुए भी वे लोग बड़े घमण्डी हैं। ठीक वैसे ही जैसे अमेरिका में गृह युद्ध के बाद दक्षिण के लोग थे।" लैनी ने कहा।

"हम लोग आपके विवेक पर निर्भर करेंगे। यदि पैसा खर्च करके आपको आवश्यक जानकारी प्राप्त होने की सम्भावना दिखाई पड़े तो अवश्य खर्च कीजियेगा। किन्तु सदा सतर्कता से काम लीजियेगा क्योंकि आपको बहुत से मक्कारों के साथ भी काम पड़ेगा जो सच्ची झूठी कहानियां गढ़ कर आपको धोखा देने का प्रयत्न करेंगे। हमें इस प्रकार के कई अनुभव हो चुके हैं और हम झूठे संधानों पर बहुत सा रुपया व्यर्थ नष्ट कर चुके हैं।"

(१०)

लैनी का मित्र मान्क बर्नहार्ड्ट अभी तक सी० आई० सी अर्थात् अमेरिका की सैनिक सरकार की "काउण्टर इनटेलीजेन्स कोर" में था। प्रायः बारह वर्ष पूर्व वह लन्दन में लैनी से मिला था और उसने अपने आपको नाजियों के विरुद्ध गुप्त रूप में काम करने वाला एक सोशलिस्ट बतलाया था। इसके बाद वह स्पेन के गृह युद्ध में जन सेना में एक कप्तान के रूप में काम कर चुका था। महायुद्ध के समय उसे अमेरिका के सैनिक गुप्तचर विभाग की ओर से स्टाकहोम में तैनात

किया गया था और इस समय वह ए० एम० जी विभाग में था। उसका काम उन व्यक्तियों के अतीत का पता लगाना था जो अपने आपको नाजियों के विरोधी बताते हुए मित्र राष्ट्रों के अधीन काम करने के लिये आवेदन-पत्र भेजते थे।

लैनी ने टेलीफोन किया और मान्क ने उसे संध्या के भोजन के लिये अपने घर पर आमन्त्रित करते हुए कहा कि वह उसी मकान में अपने किसी मित्र के घर पर उसे रात्रावास के लिये एक कमरा दिला देगा।

मान्क के तीन कमरों वाले घर में लैनी जब पहुंचा तो उसने वहां पर मान्क की दीर्घकाल से पीड़ित पत्नी को भी देखा। उसने लगातार दस वर्षों तक भांति-भांति के कष्ट सहे थे। एक ओर उसका पति लुटेरे नाजियों के विरुद्ध गुप्त क्रिया शीलता में लगा हुआ था, दूसरी ओर वह सुदूर अर्जेन्टाइना में अपने दो बच्चों का लालन पालन कर रही थी। दोनों बच्चे अब अमरीकी अधिकारियों के तत्वावधान में चलने वाले एक हाई स्कूल में पढ़ रहे थे। वे स्पेनिश जर्मन और अंगरेजी ये तीनों ही भाषाएं धारा प्रवाह रूप में बोल लेते थे और अब फ्रेन्च का अध्ययन कर रहे थे। वे पिछली बसंत ऋतु में लैनी बड से मिल चुके थे और इस बात से अवगत थे कि वह अमेरिका की सरकार ने एक गुप्त एजेण्ट के रूप में काम कर चुका है और नूरेन बर्ग के मुकदमों के प्रसंग में हरमान गोयरिन्ग के विरुद्ध गवाही दे चुका है। उनकी दृष्टि में वह एक आश्चर्यजनक व्यक्ति था ; वे समुद्र पार के उस देश की सारी बातें जानने के लिये अत्यंत उत्सुक थे जहां स्वैतन्त्रता देवी का राज्य है और जहां संसार भर के राजनैतिक भगोड़े आश्रय पाने के लिये सदा आशान्वित रहते हैं।

(११)

थोड़ी ही देर में परिवार का मुखिया मान्क भी आ गया। वह एक हट्टा-कट्टा सशक्त व्यक्ति था जिसकी मांस पेशियां पहले प्रकृति के साथ और फिर मनुष्यों के साथ संघर्ष करते करते सुदृढ़ हो चुकी थीं। प्रशियन रीति के अनुसार उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और जो थोड़े बहुत बाल सिर पर थे वे भी सफेद हो गये थे। उसका उच्चारण उत्तरी जर्मनी के निवासियों की भांति था। वह अपने

आपको एक श्रमजीवी के अतिरिक्त और कुछ समझने के लिये तयार न था। वह और लैनी साथ-साथ कई खतरों से गुजर चुके थे और दोनों की मित्रता असंदिग्ध थी। उन लोगों ने अतीत में जो कुछ किया था उसे अब गुप्त रखने की कोई आवश्यकता न थी और उन छोटे बच्चों के लिये उन सब बातों का वृत्तान्त बड़ा आकर्षक था—विशेषकर उन बच्चों के लिये जिनका लालन पालन इस प्रकार के वातावरण में हुआ था कि ये अपने आप को श्रमजीवी जनता के सदस्य मानते हुए अपना सारा जीवन एक ऐसे समाज के गठन की दिशा में विनियोजित कर देने के लिये कृतसंकल्प थे जो न्याय के साथ साथ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आधारित हो।

मान्क का विश्वास था कि अमेरिका के निवासी स्वतन्त्रता के भक्त हैं किन्तु स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उनकी सारी परिकल्पना एक शताब्दी पुरानी है। जबतक उत्पादन के साधन सरल थे और उद्योग धन्धे छोटे पैमाने पर थे तब तक मजदूरों की स्वाधीनता सम्भव थी ; किन्तु इस समय जब कि सामूहिक उत्पादन का बोल बाला है और एक एक कारखाने की लागत अरबों रुपये तक पहुंच जाती है मजदूरों की स्वाधीनता तब तक अर्थशून्य है जब तक कि उद्योग धन्धों का राष्ट्रीयकरण नहीं हो जाता और उनकी व्यवस्था गणतांत्रिक आधार पर नहीं होती। किन्तु किसी अमरीकी को इस बात का विश्वास दिलाना एक कठिन कार्य है क्योंकि वह जानता है कि उसका देश सबसे अधिक समृद्ध है और वह नित्य समाचार पत्रों में यह पढ़ता है कि इस समृद्धि का एक मात्र कारण उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व की परम्परा है।

अमरीकी लोगों ने यहां जर्मनी में आकर नाजियों को पराभूत किया किन्तु इसके बाद वे इस देश के उद्योग धंधों पर व्यक्तिगत स्वामित्व की वही पुरानी प्रथा फिर लादने लगे। उन्होंने इस बात की उपेक्षा की कि नाजियों को सत्तारूढ़ करने की दिशा में वस्तुतः जर्मनी के धनी उद्योगपतियों का ही सब से बड़ा हाथ था। इन लोगों ने नाजियों को इसीलिये प्रोत्साहित किया क्योंकि वे जर्मनी की श्रमजीवी जनता को उद्योग धन्धों के राष्ट्रीयकरण के लिये आन्दोलन करने से रोकना चाहते थे। बर्नहाडट् मान्क को अमरीकियों की ये बातें पसंद न थीं। वह अपना ही

उदाहरण देता था। उसे अमेरिका की सैनिक सरकार ने नौकरी किसलिये दी है? इस बात का पता लगाने के लिये कि अमुक अमुक व्यक्ति अतीत काल में नाजी विचारधारा के तो न थे। वह दत्त चित्त से अपना अनुसंधान भी करता था और बता देता था कि अमुक व्यक्ति विश्वास के योग्य नहीं क्योंकि वह एक अर्से तक नाजी दल का सक्रिय सदस्य रह चुका है। किन्तु आश्चर्य! उसी व्यक्ति को सरकार नियुक्त कर लेती थी—केवल इसलिये कि वह किसी उद्योग धंधे को चलाने की विशेष औपचारिक जानकारी रखता था!

किन्तु आधुनिक युद्ध के सम्बन्ध में अमरीकियों को एक नयी अभिज्ञता प्राप्त हुई थी। वह यह कि किसी देश को पराभूत करने के उपरान्त विजेता को उस देश की जनता को जीवित रखने के लिये सारा प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है। उसे अन्न के उत्पादन की, उपभोक्ता पदार्थों के निर्माण की और इन सब के वितरण की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती है। यदि युद्ध काल में उसने खेतों के घोड़े और ट्रैक्टर छीन लिये थे तो अब यह स्वाभाविक ही है कि वह अन्न के उत्पादनके लिये पराजित देश को नये घोड़े और ट्रैक्टर दे। यदि उसने युद्धकाल में उस देश के कारखानों पर बम वर्षा करके उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था तो अब उनके पुनर्निर्माण का उत्तरदायित्व भी उसी पर रहेगा। यातायात के लिये रेलों, सड़कों और जहाजों की व्यवस्था भी उसी को करनी पड़ेगी। इन सब बातों के प्रसंग में उसे सारा खर्च स्वयं उठाना पड़ेगा—तब तक उठाना पड़ेगा जब तक कि पराभूत शत्रु स्वयं आत्मनिर्भर नहीं हो जाता। और इसका सबसे सीधा और सरल उपाय यही है कि ठीक उसी प्रकार की वस्तुस्थिति के पुनस्संस्थापन का प्रयत्न किया जाय जैसी कि वह युद्ध के पूर्व थी। किसी समाजवादी आदर्श के फेर में पड़ कर समय नष्ट करना केवल मूर्खता की बात है। और फिर इस प्रकार के समाजवादी प्रयोग इसलिये अवांछनीय हैं क्योंकि इनसे शेष संसार के सामने एक खतरनाक आदर्श की स्थापना होगी। यदि जर्मनी के मजदूर देश के उद्योग धन्धों पर अपना अधिकार करके उन्हें सरलतापूर्वक चलाने में समर्थ हो गए तो आप अमेरिका के मजदूरों को यह प्रयोग करने से किस प्रकार रोकेंगे? इससे तो यही अच्छा है कि पुराने उद्योगपतियों को ही फिर से सत्तारूढ़ किया जाय और

उनकी पीठ पर हाथ फेर कर बस यह चेतावनी दे दी जाय कि भविष्य में वे भले आदमियों की तरह रहें और किसी नये हिटलर की सृष्टि करने का प्रयत्न न करें।

मान्क एक जर्मन सोशल डेमाक्रेट था। इस समय वह अपने परिवार के अंदर एक अन्तरंग मित्र के सामने स्वतन्त्रता के साथ बातें कर रहा था। बेशक दफ्तर में वह इस प्रकार की बातें न करता था। वहां तो वह अपने काम से काम रखता था। जिस मामले की छानबीन का भार उसे सौंपा जाता उसके सम्बन्ध में वह जांच पड़ताल करके अपनी रिपोर्ट दे देता। इसके बाद वह इस बात की ओर कोई ध्यान न देता कि उस रिपोर्ट का क्या उपयोग किया गया। अधिक कौतूहल दिखाने में एक खतरा भी था। यदि वह अपने से ऊंचे अधिकारियों के निर्णयों की आलोचना करता तो शायद उन लोगों को यह संदेह हो जाता कि वह एक कम्युनिस्ट है—और कम्युनिस्ट होना नाज़ी होने से भी बुरा है!

उच्च पदस्थ अधिकारी भी स्थूल रूप में इस बात से अवगत थे कि लाल कम्युनिस्ट और गुलाबी कम्युनिस्ट में थोड़ा सा अन्तर है किन्तु इस अन्तर के प्रति वे शंकाशील थे। लाल रंग और गुलाबी रंग एक दूसरे में आसानी से मिल जाते हैं और कभी कभी गुलाबी रंग को लाल रंग की एक आड़ के रूप में प्रयुक्त होते हुए भी उन्होंने देखा था। अमरीकी अधिकारियों की यह शंकाशीलता एक प्रकार से क्षम्य भी थी—क्योंकि वे स्वयं भी तो इस सन्देह से परे न थे। उनके देश में कांग्रेस के सीनेटर उनकी गतिविधि पर तीक्ष्ण दृष्टि रखते थे और जरा सा सन्देह होते ही तुरन्त जांच कमेटियों द्वारा पूरी छान बीन की मांग करने के लिये सर्वदा तयार रहते थे। ब्रिटेन को अपना रंग बदल कर गुलाबी बनते हुए देखना स्वयं एक कष्टप्रद बात थी। किन्तु ब्रिटेन में इस रूपान्तर को रोकना अमरीकियों के लिये भले ही सम्भव न रहा हो, जर्मनी में तो वह निश्चित रूप में सम्भव था—और इसके लिये वे कृतसंकल्प थे।

(१२)

इस प्रकार संसार को एक गलत दिशा की ओर जाते हुए देखकर मान्क मन ही मन क्षुब्ध हो रहा था। वह कहा करता था कि उसने अपने सारे जीवन में

संसार को सदा गलत रास्ते पर चलते हुए देखा है। यह बात ठीक भी थी। उसने मनुष्य की मूर्खता और अन्ध लोभ के कारण होनेवाली भयानक और विराट बर्बादी को देखा था। उसने उन उद्देश्यों को ही धराशायी होते हुए देखा था जिनकी पूर्ति को मानव समाज अपने चरम पुरुषार्थ के रूप में देखता आ रहा है। वह स्वयं एक श्रमजीवी परिवार में पैदा होने के कारण जनसाधारण की स्थिति का प्रवक्ता हो सकता था क्योंकि उसने स्वयं अत्याचारों का भार वहन किया था। वह जानता था कि जनता प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की ओर लौटना स्वीकार न करेगी; वह दरिद्रता और असहायता को फिर से वरण करने के लिये तयार न होगी। उसे प्राचीन समाज व्यवस्था की ओर बलात ठेलने का अर्थ होगा उसे कम्युनिस्टों के जाल में फंसाना। अब अमेरिका को या तो एक सोशलिस्ट योरोप स्वीकार करना पड़ेगा या कम्युनिस्ट योरोप—और अमेरिका को दोनों में से एक को अनिवार्य रूप में चुनना पड़ेगा।

मान्क ने एक के बाद एक कई राष्ट्रों को मूर्खतापूर्ण कदम उठाकर वांछित उद्देश्यों से ठीक उल्टी दिशा की ओर अग्रसर होते हुए देखा था।

जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया था तब रूस की जनता कम्यूनिस्टों के शासन से स्वयं इतनी ऊब उठी थी कि वह प्रसन्नता के साथ जर्मन सेनाओं के साथ मिलकर अपनी स्वाधीनता के लिये संग्राम करने के लिये तयार हो जाती। किन्तु हिटलर के सैनिकों ने उसके साथ ऐसी निर्दयता का व्यवहार किया कि उन्होंने रूसी किसानों को छापामार सैनिकों में परिवर्तित करके अपने कट्टर शत्रुओं का एक ऐसा दल खड़ा कर दिया जो जंगलों में छिपकर जर्मन फौजों और यातायात पर आक्रमण करने लगा। और अब रूसी लोग भी ठीक वही गलती कर रहे हैं जो जर्मनों ने की थी। उन्होंने केन्द्रीय योरोप पर अपना अधिकार कर लिया है किन्तु वे अभी तक इस बात का निश्चय नहीं कर पाए हैं कि वे विजेता हैं या साथी! एक दिन वे सारे संसार की श्रमजीवी जनता को अपना कुटुम्ब मानते हुए लम्बे लम्बे भाषण देते हैं और दूसरे दिन बर्बर लुटेरों की भांति व्यवहार करने लगते हैं!

जर्मन सोशलिस्ट मान्क ने लैनो को बताया कि किस प्रकार रूसियों ने पूर्वी

बर्लिन के सारे कल कारखाने उखाड़ लिये और बाद में इस बात का अनुभव किया कि उनके इस कार्य के फलस्वरूप इस अंचल के निवासी सदा के लिये दरिद्रता के अभिशाप से मुक्त हो गए। उन्होंने इस बात का अनुभव भी किया कि पूर्वी बर्लिन के निवासियों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करनेके फलस्वरूप अब उन्होंने पश्चिमी बर्लिन वालों की सहानुभूति प्राप्त करने की सम्भावना सदा के लिये खो दी। यदि पूर्वी बर्लिन वाले चीथड़े पहने रहें और पश्चिमी बर्लिन वाले सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित रहें तो यह बात दोनों पक्षों में से किसी को भी किस प्रकार समझायी जा सकती है कि कम्युनिज्म का अर्थ है समृद्धि और पूंजीवाद का अर्थ है दारिद्र्य?

लैनी ने मान्क को यह बताने में कोई हानि न समझी कि प्रेसीडेन्ट ट्रूमन के साथ हाल ही में उसकी वार्त्ता हुई थी और प्रेसीडेण्ट ने उसे इस बात का पता लगाने का भार सौंपा है कि क्रेमलिन से अपने समझौते की शर्तों का पालन कराने के लिये किस प्रकार राजी किया जाय। मान्क ने विद्रूप के साथ मुस्कराते हुए कहा "प्रेसीडेण्ट ट्रूमन आप को भारत जाकर इस बात का पता लगाने का आदेश भी दे सकते थे कि किस प्रकार बाघोंको मांस भक्षण का अभ्यास छोड़ने के लिये राज़ी किया जाय।"

"क्या आप समझते हैं कि पोलिटब्यूरो युद्ध चाहता है?"

"नहीं, वे लोग युद्ध नहीं चाहते। वे लोग केवल संसार पर अपना पूर्ण प्रभुत्व चाहते हैं। उन्होंने भविष्य में अपनी सम्पूर्ण योजनाओं को समझाते हुए इतनी पुस्तकें लिख डाली हैं कि उनसे एक अच्छा खासा पुस्तकालय बन सकता है।"

"यही बात मैंने प्रेसीडेण्ट ट्रूमन से कही थी। किन्तु वे पुस्तकें पढ़ने का अवकाश कहां पा सकते हैं? वे संसार के सबसे अधिक कार्य-व्यस्त व्यक्ति हैं।"

"आप को उनके पास केवल एक पुस्तक, महत्वपूर्ण स्थलों को अंकित करके, ले जाना चाहिये। इसी से काम चल जायगा। यह पुस्तक है स्टालिन द्वारा लिखित 'मार्क्सवाद और राष्ट्रीय तथा औपनिवेशिक प्रश्न'। यह पुस्तक प्रत्येक रूसी राजनीतिज्ञ तथा राजदूत की गीता है। इस पुस्तक में स्टालिन ने प्रत्येक महत्वपूर्ण देश को लेते हुए उसकी आन्तरिक स्थिति का विश्लेषण किया है। उसने

बड़ी सावधानी के साथ सारे तथ्यों का संकलन करके बड़े स्पष्ट रूप में अपनी योजना को समझाया है—अर्थात् उस देश पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिये वह क्या क्या करेगा, वहाँ की सरकार को किस प्रकार उलटेगा और शासन शक्ति किस प्रकार अपने दल के लोगों के हाथ में देगा आदि। उसे पूर्ण विश्वास है कि यह सब करने की योग्यता उसमें है। सम्भव है उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में काफी समय लग जाए किन्तु इसके लिये उसमें पर्याप्त धैर्य है। वह अवसर की घात में अनन्तकाल तक बैठा रह सकता है और अवसर पाते ही बिजली की भांति झपट सकता है। वह नाना प्रकार के आश्वासन देता है किन्तु इन आश्वासनों का यदि कोई अर्थ होता है तो केवल इतना ही कि अभी उसे बाज की भांति टूट पड़ने का सुयोग नहीं प्राप्त हुआ। यदि मित्रता उसकी कार्य-सिद्धि के अनुकूल होती है तो वह पालतू बिल्ली की भांति सरल और सीधा बन जाता है किन्तु यह केवल ऊपरी दिखावा ही होता है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो क्षणमात्र की हिचक के बिना एक साथ दस लाख व्यक्तियों की हत्या का आदेश दे सकता है।"

"मैं समझता हूँ वह संसारके लिये हिटलर से भी अधिक भयानक है।" लैनी ने कहा।"

"हिटलर उग्र और मूर्ख था; वह धैर्यशून्य और अर्द्धविक्षिप्त था। किन्तु स्टालिन शान्त, सतर्क और बुद्धिमान है। इसके अतिरिक्त उसका स्वांग भी हिटलर की अपेक्षा अधिक भ्रामक है। हिटलर उग्र राष्ट्रीयतावादी था और जर्मन जाति के अतिरिक्त अन्य सभी जातियों से—यहां तक कि ब्रिटिश और अमरीकी लोगों से भी जिनके प्रति वह मन ही मन ईर्ष्यालु था—घृणा करता था। इसके विपरीत स्टालिन अन्तर्राष्ट्रीयतावादी है, शोषित श्रमजीवी जनता का मित्र है और संसार की सभी पीड़ित जातियों का शुभ चिन्तक है। वह इन शोषित लोगों से प्रेम करता है, इनके लिये उसका हृदय मसोस मसोस कर रह जाता है। वह अपने कवियों से इस शोषित समाज की स्तुति में कविताएं लिखवाता है और संगीतज्ञों से इन्हीं का गान कराता है। वह अत्याचार-पीड़ित किसानों से कहता है कि तुम जमींदारों को मार डालो और उनकी जमीन छीन लो और जब ये लोग ऐसा

कर डालते हैं तो वह इन्हें अपने तत्वावधान में सहकारिता-समितियां बनाने का निमंत्रण देता है। वह इस दिशा में इनको मशीनें तथा अन्यान्य सहायता देनेका प्रलोभन देता है। इसके बाद उपयुक्त अवसर आने पर वह इन पर अपना एक शासक आरोपित कर देता है और पैदावार का एक अच्छा खासा भाग स्वयं ले लेता है। और अब मज़ा देखिये!—किसान लोग जमींदारों को जितना कर दिया करते थे उससे कहीं अधिक स्टालिन को देने लगते हैं! मजदूरों से वह कहता है कि तुम कारखानों पर अपना अधिकार जमा लो और जब वे ऐसा कर डालते हैं तो वह उन पर अपना एक अधिकारी नियुक्त कर देता है, उनकी ट्रेड यूनियन को विघटित कर देता है और हड़ताल का प्रयत्न करने पर मृत्युदण्ड का आदेश जारी कर देता है और मजदूरों के लिये जो वेतन निश्चित करता है वह इतना कम होता है कि बेचारा मजदूर एक मास के परिश्रम से एक जोड़ा जूता भी नहीं खरीद पाता। यदि कोई मजदूर कानाफूसी करते हुए पकड़ा जाता है तो उसे तुरन्त साइबेरिया में निर्वासित कर दिया जाता है। वहां वह आठ सौ कैलरी प्रति दिन के खाद्य पर सोने की खदानों में काम करने के लिये बाध्य हो जाता है। व्यावहारिक स्तर पर मार्क्स-लेनिन-स्टालिनवाद का यह रूप है।"

"शान्ति, भूमि और रोटी", लैनी ने कहा, "यह बोल्शेविक क्रान्ति का नारा था।"

घृणा के साथ मुंह बिचकाते हुए मान्क ने कहा, "अब शान्ति का अर्थ है लाखों रूसी तथा गैर रूसी व्यक्तियों को साइबेरिया की ओर निर्वासित कर देना ताकि तानाशाहों को कोई खतरा न रहे। अब शान्ति का अर्थ है चालीस-पचास लाख सैनिकों की एक विशाल सेना का गठन करना, अब शान्ति का अर्थ है उपभोक्ता पदार्थों का उत्पादन करनेवाले उद्योग धन्धों को टैन्कों, बंदूकों और बमबाज वायुयानों के निर्माण में लगा देना, अब शान्ति का अर्थ है प्रत्येक देश की सीमा पर सशस्त्र सैन्य वाहिनी तयार रखना जो अवसर प्राप्त होते ही तुरन्त उस देश के अन्दर प्रवेश कर जाय—और इस अवसर के लिये प्रत्येक देश में मोटी मोटी रकमें पानेवाले स्टालिन के हजारों सुदक्ष एजेण्ट असंतोष तथा भ्रान्ति के वातावरण की सृष्टि करने में लगे रहते हैं।"

"अमेरिका में उस किसान की कहानी बड़ी प्रसिद्ध है जिसने कहा था कि वह भूमि का लोभी नहीं है बल्कि केवल वही भूमि चाहता है जो उसके खेत के बगल में पड़ती है।"

"ठीक यही बात है।" जर्मन ने कहा, "इससे प्रेसीडेण्ट ट्रूमन को स्टालिन की मनोवृत्ति समझ लेनी चाहिये। और हां, आप प्रेसीडेण्ट ट्रूमन से स्पष्ट रूपमें यह भी कह दीजिएगा कि स्टालिन से मेरा तात्पर्य एक बूढ़े से नहीं जो किसी भी समय मर सकता है बल्कि उस प्रशासकीय व्यवस्था से है जिसका उसने निर्माण किया है और जो उसकी मृत्यु के बाद भी चलती रहेगी। पोलिटब्यूरो और कमीशारों का दल तथा वह विराट प्रशासकीय व्यवस्था स्टालिन के बाद भी ज्यों की त्यों रहेगी। इसका प्रारम्भ एक नये धर्म की भांति हुआ था—ठीक इस्लाम की भांति जो अपने प्रसार के लिये बाहुबल पर विश्वास रखता था। और अब वह एक विराट हिमखण्ड की भांति वेगपूर्वक सारी पृथिवी के अस्तित्व को खतरे में डालते हुए दौड़ा चला आ रहा है। अब ऐसी स्थिति है कि यदि स्टालिन का हृदय परिवर्तन हो जाय और वह इस विभीषिका को रोकने का प्रयत्न करे तो वह स्वयं इसकी चपेट में आकर नष्ट हो जायगा। वे लोग उसे मार डालेंगे और इस बात की घोषणा कर देंगे कि हृदय-रोग के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। और मज़े की बात तो यह है कि उसे स्वयं मार कर वे उसकी अन्त्येष्टि क्रिया बड़े शानदार ढंग से करेंगे और उसकी स्मृति को कायम रखने के लिए सौ मञ्जिलोंवाले एक भव्य स्मारक का निर्माण करेंगे। किन्तु स्टालिन की मृत्यु से ही उसका सर्वनाशी आन्दोलन न रुकेगा; वह चलता ही रहेगा।"

"आपने तो बड़ी निराशाजनक बातें बतायीं। मुझे प्रेसीडेण्ट के पास यह नैराश्यपूर्ण समाचार ही ले जाना पड़ेगा?" लैनी ने मान्क की ओर देखते हुए प्रश्न किया।

"मैंने वस्तु स्थिति का गहरा अध्ययन किया है। हमारे सीमान्त पर से वे जीवित व्यक्तियों को उठा उठाकर ले जा रहे हैं। इस घर से सीमान्त केवल आधे मील की दूरी पर है। मैं रात्रि के समय कभी अकेले नहीं निकलता और सीमा क्षेत्र के पास तो मैं किसी भी अवस्था में जाने के लिये तयार न होऊंगा—आप

दस लाख डालरों की एक गड्डी मेरे हाथ में रख दें तब भी नहीं। पूर्वी जर्मनी में के लोग किसी भी मजदूर में कुछ स्वाधीन मनोवृत्ति अथवा चरित्रगत दृढ़ता देखते हैं तो उसे तुरन्त साइबेरिया भेज देते हैं। अच्छे अच्छे प्रतिभाशाली व्यक्तियों को उन्होंने गोली मार कर समाप्त कर दिया है। शेष मजदूरों से वे युद्धोपयोगी वस्तुएं उत्पादित करवा रहे हैं। सारे शिक्षालयों पर उन्होंने अपना अधिकार कर लिया है और बच्चों को वैसी ही शिक्षा दे रहे हैं जो कम्युनिस्टों की वर्त्तमान नीति के अनुकूल है। किसी भी देश में एक पुश्त तक कम्युनिस्टों का राज्य रह जाने पर जो नयी पीढ़ी आती है वह स्वाधीनता की कल्पना तक नहीं कर पाती। और उनका प्रचार कार्य भी कैसे अनवरत ढंग से चलता है! उन्होंने इस बात को भलीभांति प्रमाणित कर दिया है कि हर अमरीकी गुण्डा, बदमाश और युद्ध-पिपासु है।"

ऐसा था वह संदेश जो लैनी को तोपखाने के उस भूतपूर्व कप्तान के पास ले जाना पड़ेगा जो संयोग से अमेरिका का राष्ट्रपति बन कर स्वयं आश्चर्य-चकित था; और यह भी स्पष्ट था कि इससे उसे कोई सांत्वना मिलने की सम्भावना न थी।

(१३)

जब सारा परिवार सोने के लिये चला गया तब दोनों मित्र उस छोटे से कमरे में बैठकर धीमे स्वर में उस नकली मुद्रा की चर्चा करने लगे जिसका पता लगाने के लिये लैनी को यहां आना पड़ा था। यह कमरा एक समय किसी नाजी के अधिकार में था किन्तु अब वह ए० एम० जी के पास था और वहाँ से मान्क को प्राप्त हो गया था। मान्क ने बताया कि जाली मुद्रा का पता लगाने के लिये किसी उपयुक्त व्यक्ति को खोजने का प्रश्न उठा था तो उसने स्वयं लैनी की सिफारिश की थी क्योंकि वह अपने पुराने मित्र को देखने के लिये उत्सुक था। इस रहस्य का उद्घाटन करने के उपरान्त वह लैनी को अपने निजी अनुभव बताने लगा। उसने बताया कि जिस समय वह नाजियों के विरुद्ध गुप्त रूप में काम कर रहा था उसे इस "हिमलरी मुद्रा" के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त हुई थी। युद्धकाल में उसके एक मित्र ने, जो ऊपर से नाज़ी था किन्तु वस्तुतः

सोशल डेमाक्रेट पार्टी का शुभचिन्तक था, पार्टी को इन जाली ब्रिटिश पाउण्डों का एक बण्डल खर्च के लिये दे दिया था। किन्तु पार्टी के सामने एक नैतिक-प्रश्न उपस्थित हो गया था। जान बूझकर इन जाली नोटों का उपयोग किया जाय या नहीं? अन्त में यह निश्चय हुआ कि यदि नाजियों की यह जाली मुद्रा किसी दूसरे पर नहीं बल्कि स्वयं नाजियों पर ही खर्च की जाय तो कोई हानि न होगी। किन्तु प्रश्न यह था कि इसे नाजियों पर कैसे लादा जाय। यह एक अत्यन्त खतरनाक बात थी। ब्रिटिश पाउण्ड काफी प्रसिद्ध वस्तु है और जो कोई भी इसे चलाने का प्रयत्न करता वह अपने आपको नाजियों की गिद्ध-दृष्टि से छिपा न सकता। यह भी निश्चित था पकड़े जाने पर उसे तुरन्त गोली मार दी जाती। अन्त में पार्टी इतना बड़ा खतरा उठाने के लिये तयार न हुई और जाली नोटों का वह बण्डल जला दिया गया।

मान्क ने लैनी को अन्कारा स्थित ब्रिटिश राजदूत की कहानी भी बतायी। रात को उसके बेहरे ने उसके कुछ महत्वपूर्ण कागज चुरा कर उनके फोटो ले लिये थे। बाद में उस बेहरे ने वे फोटो नाजियों के हाथ बेच दिये थे। बेहरा लालची था और उसने इन फोटो के लिये पन्द्रह बीस हजार पाउण्ड की रकम मांगी थी। नाजियों ने उसकी मांग इन जाली नोटों द्वारा पूरी कर दी थी; हां, इनके साथ थोड़े से असली नोट भी मिला दिये गए थे जिन्हें खर्च करके बेहरा संतुष्ट हो गया था। असली नोट खुले हुए रूप में दिये गए थे और नकली पैक किये हुए बण्डलों में। मान्क को यह समाचार सुदूर स्टाकहोम में मिला था। युद्ध के अन्तिम दिनों में हिमलर के गुप्तचर विभाग का एक सदस्य वहां भाग आया था और उसने मान्क से कुछ असली अमरीकी डालर प्राप्त करके उसे यह समाचार बता दिया था।

उस बेहरे का सांकेतिक नाम सिसरो था। उसने नाजियों के हाथ जो भेद बेचा था वह महत्वपूर्ण था। उसमें सन् १९४३ और १९४४ में मास्को, तेहरान और कैरो में मित्र राष्ट्रों की गुप्त वार्ता की पूरी रिपोर्टें थीं। वस्तुतः यह काम पापेन के संगठन ने किया था। उसका भी एक स्वतन्त्र गुप्तचर विभाग था। उन दिनों नाजियों के कई गुप्तचर विभाग थे जो एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु थे और आपस में

एक दूसरे के प्रति षड्यन्त्र रचा करते थे। हिमलर के गुप्तचर विभाग ने यह मानना अस्वीकार कर दिया कि ये कागजात असली हैं। रिबेनट्राप के गुप्तचर विभाग ने भी यही किया। आपस में यह झगड़ा चल ही रहा था कि युद्ध समाप्त हो गया।

लैनी ने मान्क से जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ का पता ठिकाना पूछा। उसने जेनरल एमिल मेसनर से भी मिलने की इच्छा प्रकट की। मान्क ने बताया कि उसके कार्यालय ने दोनों व्यक्तियों के सम्बन्ध में छान बीन की थी और मेसनर को एक पाठशाला में शिक्षक का कार्य करने के लिये उपयुक्त घोषित कर दिया था। इस समय एमिल नूरेनबर्ग के समीप किसी स्थान में निवास कर रहा था और जेनरल ग्राफ दक्षिणी बैवेरिया में किसी किसान की झोपड़ी में रह रहा था। उसका आलीशान मकान तथा विशाल जायदाद फिर से पोलैण्ड में अन्तर्भुक्त हो जाने के कारण कम्युनिस्टों द्वारा जब्त की जा चुकी थी। अब वह अपना पेट कैसे चलाता है इसका किसी को कुछ भी पता नहीं है। सम्भवतः उसने अपने कुछ जवाहरात कहीं पर छिपा रखे हैं। उसने राजनीति में किसी प्रकार की दिलचस्पी लेना एकदम छोड़ दिया है और इस बात से परम सन्तुष्ट है कि उसे अकेला छोड़ दिया गया है।

लैनी ने पोलैण्ड की यात्रा शुरू करने के पूर्व इन दोनों व्यक्तियों से मिलने का निश्चय किया था। मान्क ने उसे सलाह दी कि वह अपने सूटकेस में केवल उतना ही सामान ले जाय जितना कि अनिवार्य रूप में आवश्यक हो; बाकी चीजें यहीं छोड़ जाए। कारण यह है कि लोगों की नैतिकता पर युद्ध की गहरी प्रतिक्रिया होती है और इस समय जर्मनी में बेकारों और शोहदों की संख्या कम नहीं है। पोलैण्ड में स्थिति और भी खराब है। सम्भव है वहां लैनी की आंख बचा कर लोग उसकी मोटर का एक पुर्जा गायब कर दें! मान्क ने उसे परामर्श दिया कि वह एक किराए की गाड़ी ले ले किन्तु उसने इसकी व्यवस्था स्वयं करने का प्रस्ताव न किया क्योंकि लैनी की यात्रा पूर्णतया व्यक्तिगत दिखाई देना नितान्त आवश्यक था।

अन्त में उसने लैनी को आगाह करते हुए कहा—"खबरदार! राजनीति की

चर्चा एकदम मत कीजियेगा। पोलैण्ड के निवासी नाजियों और कम्युनिस्टों, दोनों से ही घृणा करते हैं। प्रत्येक पार्टी दूसरी पार्टी के विरुद्ध है और हर व्यक्ति दूसरे के प्रति शंकाशील है—विशेषकर विदेशियों के प्रति। यह यात्रा आपके लिये आमोद-प्रमोद की न होगी, इतना मैं अभी से बताए देता हूँ।"

अध्याय ३

● शोणिताक्त युद्धोपाख्यान ●

दूसरे दिन प्रातः काल लैनी बड ने एक टैक्सी ली और बर्लिन के पूर्वी अंचल की ओर चल पड़ा। यह क्षेत्र नगर का कुरूपतम क्षेत्र था और सबसे अधिक बम-बाजी यहीं हुई थी। किन्तु इस भयानक बम वर्षण के बावजूद कुछ सुन्दर इमारतें अब भी बच रही थीं और कार्ल्सघर्स्ट अंचल में सोवियट सेनापति मार्शल सोकोलोव्सकी ने इसी प्रकार की एक आलीशान इमारत को अपना मुख्य कार्यालय बनाया था। लैनी इस स्थान में बड़ी बड़ी कठिनाइयों की आशंका लेकर आया था किन्तु शीघ्र ही उसने देखा कि उसकी आशंकाएं बहुत कुछ अतिरञ्जित थीं।

एक युवक रूसी एड० डी० कैम्प किसी अमरीकी यात्री के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण रखेगा।–यह उस समय एक जटिल प्रश्न था। मन ही मन वह सम्भवतः अमरीकियों को पसन्द करता था—सभी रूसी ऐसा ही करते थे। जब रूसी और अमरीकी सेनाएं एल्ब नदी के तट पर मिली थीं तब उस उत्सव को मनाते हुए दोनों ओर से बड़ा आनन्द प्रकट किया गया था ; सैनिकों ने एक दूसरे की पीठ ठोकी थी और अफसरों ने एक दूसरे से हाथ मिला कर शराब पी थी। उभय पक्षों की ओर से शुभ कामनाएं प्रकट की गयी थीं।

किन्तु अब सब कुछ बदल चुका था। पुरानी वस्तु स्थिति का कोई चिन्ह न रह गया था। अब उस बन्धुत्व का निषेध था। युवक रूसी अफसर ने इस अमरीकी यात्री को देखा तो उसके मन में परस्परविरोधी भावनाएं उठने लगीं। एक ओर तो वह उसके सौम्य तथा सुसंस्कृत हाव-भाव और व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुआ, दूसरी ओर वह उसे एक रहस्यमयी आसुरी शक्ति के रूप में देखते हुए भयभीत भी हुआ। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह उसके प्रति एक उपेक्षामिश्रित उदासीनता का भाव दिखाएगा। यह ठीक भी था—अन्यथा

एक उदीयमान युवक अधिकारी का भविष्य पल्लवित होने के पूर्व ही नष्ट हो जाता !

किन्तु जब इस अमरीकी यात्री ने बातें करनी शुरू कीं तो युवक अफसर का दृष्टिकोण फिर बदला। कारण यह है कि अमरीकी यात्री ने उसे बताया कि वह मार्शल स्टालिन से दो बार मिल चुका है और उसे उनसे क्रेमलिन में आकर फिर मुलाकात करने का निमंत्रण भी मिला है। किन्तु अभी उसका विचार वहां जाने का नहीं है; इस समय तो वह पोलैण्ड के स्टीएल्सज्बज गांव में जाकर एक प्राचीन चित्र का पता लगाना चाहता है जो एक समय स्चलास स्टूबेनडर्फ में था। उसने युवक अफसर को यह भी बता दिया कि वह एक कला-विशेषज्ञ है और यद्यपि इस समय सारे संसार में एक प्रकार का शीत युद्ध चल रहा है तथापि चित्रकला और चित्रों के अतिरिक्त वह और किसी बात में दिलचस्पी नहीं लेता। बात बेतुकी सी थी—किन्तु सम्भवतः वह सत्य हो ! किन्तु युवक अफसर किसी प्रकार का खतरा उठाने के लिये तयार न था; सम्भव है किसी गलत निर्णय के कारण उसका सारा भविष्य मिट्टी में मिल ज़ाय !

उसने कहा कि उसे अपने उच्च अधिकारी के साथ परामर्श करना होगा। थोड़ी ही देर बाद वह लौट कर आया और लैनी को अपने साथ लेकर एक कर्नल के कमरे में गया। यद्यपि सोवियत रूस में कोई भी व्यक्ति चिन्ता से एकदम मुक्त नहीं है यथापि एक लेफ्टीनेन्ट की अपेक्षा एक कर्नल की भाव भंगिमा कुछ कुछ अधिक आश्वस्त रहती है। कर्नल एक प्रौढ़ व्यक्ति था। उसने लैनी की बात शुरू से अन्त तक चुपचाप सुनी—जिसकी कि एक रूसी कर्नल से आशा नहीं की जा सकती। इसके बाद जब उसने प्रश्न पूछने शुरू किये तो लैनी ने बिना किसी द्विधा के अविलम्ब उनके उत्तर दे दिये। उसने कर्नल से कहा कि वह क्रेमलिन को टेलीफोन करके लाइन पर कैप्टन ब्रायन्सकी को बुला ले। जब वह पिछली बसन्त ऋतु में स्टालिन से मिला था तब यह अधिकारी ही उसके पथ-प्रदर्शक के रूप में साथ साथ रहा था। वह उसके वक्तव्य का पुष्टीकरण कर देगा। लैनी ने कर्नल से यह भी कहा कि वह टेलीफोन का खर्च स्वयं दे देगा।

कर्नल ने उसे समझाया कि रूस में टेलीफोन व्यवस्था सरकारी सम्पत्ति है

इसलिये खर्च का प्रश्न ही नहीं उठता। किन्तु आज कल टेलीफोन लाइनों पर बहुत बड़ी भीड़ रहती है। लैनी ने सहानुभूति के स्वर में कर्नल का अनुमोदन किया किन्तु साथ ही साथ यह अनुरोध भी किया कि उसके पास अधिक समय नहीं है और यदि उसे दो तीन दिन के अन्दर ही पोलैण्ड की यात्रा का सुयोग न प्राप्त हुआ तो वह वापस लौट जाएगा। उसे पूर्ण विश्वास है कि मार्शल स्टालिन उसे आवश्यक अनुमति पत्र दिला देंगे और यदि उन्हें इस बात का पता चला कि अनुमति न मिलने के कारण मुझे वापस लौट जाना पड़ा तो वे बड़े खिन्न होंगे। लैनी के इस वक्तव्य में एक छिपी हुई धमकी थी और कर्नल पर उसका प्रभाव पड़ने में किंचित मात्र विलम्ब न हुआ। लैनी ने यह भी कहा कि पिछली बसंत ऋतु में जब वह मार्शल स्टालिन से मिला था उन्होंने कैप्टेन ब्रायन्सकी को आदेश दिया था कि वे मुझे मास्को बैलेट स्कूल में ले जाकर वहां के शिक्षार्थियों के सम्मुख अमेरिका के "डालक्रोज" नृत्य का प्रदर्शन करानेकी व्यवस्था करें। कर्नल ने इस नृत्य का नाम तक न सुना था। उसका विश्वास था कि अमेरिका में केवल "कलट्रा" नृत्य प्रचलित है और इसके नियमों के अनुसार यदि कोई कुलीन व्यक्ति पाइप बजाता है तो उसके लिये नाचना अनिवार्य हो जाता है। जो भी हो, उसने लैनी को आश्वासन दिया कि वह क्रेमलिन से आवश्यक पूछताछ करके, यदि कोई बाधा न हुई तो, आवश्यक अनुमति-पत्र दो दिन के अन्दर बना देगा।

(२)

लैनी पश्चिमी बर्लिन लौट आया। उसने मान्क के परामर्श के अनुसार दक्षिण की यात्रा के लिये एक मोटर गाड़ी किराए पर ले ली। यह वैसी छोटी सी गाड़ी थी जिसे अमरीकी लोग "कूप" कहा करते हैं। उसमें केवल एक व्यक्ति और उसके सामान के लिये स्थान था। उसकी आकृति को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि वह अपने सुदीर्घ जीवन में बहुत से व्यक्तियों को दूर-दूर की यात्रा करा चुकी है। रङ्ग उसका काला था; कदाचित इसी प्रकार की गाड़ी के लिये हेनरी फोर्ड ने एक बार कहा था कि यह गाड़ी ग्राहकों को उनके मन पसन्द रंग में मिल सकती है बशर्ते कि उनकी पसन्द काले रंग की हो।

बर्लिन से बैवेरिया जाने के लिये सोवियत क्षेत्र से पार होना आवश्यक था। ऐसा ही नियम था ; और मोरीसन ने इस यात्राके लिये आवश्यक अनुमति पत्र की व्यवस्था कर दी थी। लैनी इस प्रकार की गाड़ी में इसके पूर्व भी कई बार यात्रा कर चुका था और इन यात्राओं की स्मृति उसके मानस पटल पर अभी तक स्पष्ट रूप में अङ्कित थी। पिछली यात्रा आनन्ददायक न रही थी क्योंकि उस अवसर पर भयानक खुफिया पुलिस "गेस्टापो" उसका पीछा कर रही थी। न जाने कैसे "गेस्टापो" को उस पर सन्देह हो गया था। उस अवसर पर एक जर्मन क्रान्तिकारी ने उसे जर्मनी के बाहर पहुंचा देने का वचन दिया था किन्तु संयोग से कुछ ऐसी भूल हो गयी थी कि उसे रात के समय अकेले ही पैदल यात्रा करनी पड़ी थी। अब "गेस्टापो" का भय नहीं रहा और उस पिछली यात्रा की तुलना में यह यात्रा निश्चित रूप में कहीं अधिक सुखद थी। उसकी गाड़ी में पेट्रोल का एक पूरा पीपा था और अमरीकी अञ्चल में, आवश्यकता पड़ने पर, वह और पेट्रोल खरीद सकता था।

सोवियत सैनिकों ने उसके अनुमति पत्र की जांच करने के उपरान्त उसे अपने क्षेत्र में प्रवेश कर जाने दिया और इसके बाद दूसरे सीमान्त पर उन्होंने यथाविधि उसे बाहर निकाल दिया। इस ओर अमरीकी सैनिकों ने उसे अपने अंचल में आ जाने दिया। बर्लिन में वर्षा होने के कारण मौसम खराब हो गया था। कड़ी सर्दी पड़ने लगी थी। इसलिये लैनी को दक्षिण की यात्रा बड़ी सुखद प्रतीत हुई। सूर्य निकल आया था और आसपास की दृश्यावलि सुनहरी धूप से चमक रही थी। युद्ध के थोड़े बहुत चिन्ह इस अञ्चल में अब भी दिखाई देते थे किन्तु वे अधिक न थे। केवल नगरों पर बम वर्षा हुई थी और कुछ कारखाने नष्ट हुए थे। ग्रामीण अंचल युद्ध की विभीषिका से प्रायः अछूता ही रह गया था। जेनरल पैटन की सेनाएं जिस समय यहां पहुँची थीं उस समय शत्रु भागने लगा था।

लैनी का रास्ता रेगेन्सबर्ग होकर गया था और यह अंचल युद्ध के समय बहुत ही बुरी तरह क्षत विक्षत हुआ था। यहां बाल बियरिन्ग बनाने वाला विशाल कारखाना अमरीकी बमबाजों का प्रिय निशाना रह चुका था और यहां

जितने बमबाज वायुयान नष्ट हुए थे उतने शायद ही किसी अन्य अंचल में नष्ट हुए हों। किन्तु इस समय लैनी का ध्यान युद्ध के इन ध्वंसावशेषों की ओर न था ; वह एक दूसरी बात सोच रहा था। उसके मस्तिष्क में उस बात की स्मृति चक्कर काट रही थी जब इसी स्थान पर नाजियों द्वारा पीछा किये जाने पर उसे माल से लदी हुई एक लारी के ऊपर कनवास के नीचे छिपकर भागना पड़ा था। आगे रास्ते पर नाजियों की पुलिस नाकाबन्दी किये हुए खड़ी थी। उसने लारी को रोक कर उसकी तलाशी ली थी किन्तु रस्सियों को खोल कर ऊपर के कनवास के अन्दर झांकने का कष्ट उसने न किया था। इसीलिये लैनी बड आज भी जीवित था!

जब गाड़ी लैण्डशट नामक स्थान पर पहुँची उसने उसे मोड़ कर आस्ट्रिया के एक गांव बर्चटेसगाडेन की ओर घुमा दिया। इस गांव के पीछे की ओर कुछ ऊंचाई पर एडोल्फ हिटलर के पार्वत्य निवास के खण्डहरों की झलक दिखाई देती थी। लैनी इन खण्डहरों को देख चुका था और अब उसे इनमें कोई दिलचस्पी न रह गयी थी किन्तु घाटीके उस पार ओवरसाल्जबर्ग में उसकी एक पुरानी परिचिता रहती थी। उसका नाम था हिल्डे फर्स्टिन डोनर्सटाइन। एक समय उसने लैनी को "गेस्टापो" के चंगुल से भागकर आस्ट्रिया चले जाने में सहायता पहुंचा कर बहुत बड़ा खतरा उठाया था।

वह एक प्रशियन जमींदार तथा रईस की विधवा थी और उस अत्याधुनिक समाज की सदस्या थी जो बर्लिन, रोम, कैनेस, पेरिस और लन्दन की पारी पारी से यात्रा करता रहता है। वह लैनी की प्रथम पत्नी इर्मा बार्नेस (अब लेडी विकथार्व) से बहुत घनिष्ट हो गयी थी। और भी ऐसे अनेकों व्यक्ति थे जिनके सम्बन्ध में वह लैनी से जानकारी प्राप्त करना चाहती थी। पुराने मित्रों में कौन कहां है, कौन क्या कर रहा है, किसका किसके साथ प्रेम हो गया है, इत्यादि। वह कई भाषाएं जानती थी और असंख्य अन्तर्राष्ट्रीय यात्राओं के फलस्वरूप उसकी भाषा कभी अंगरेजी कभी जर्मन और कभी फ्रेन्च हो जाती थी और उसमें एक पुरानी तथा अधिक आनन्दमय पीढ़ी के अन्तर्राष्ट्रीय मजाकों का प्राचुर्य रहता था।

इस समय वह काले कपड़े पहने हुए थी क्योंकि उसका एकमात्र पुत्र युद्ध के तारतम्य में पौलैण्ड के अन्दर मारा गया था। उसके साथ एक अपाहिज बहन तथा एक चचेरा भाई भी था जो युद्ध काल में अपने माता पिता से हाथ धो चुका था। उसके घर पर एक प्रौढ़वयस्क नौकर था और दिन के समय काम करने के लिये एक कृषक लड़की भी आ जाती थी। वे मकान के तीन कमरों में निवास कर रहे थे और शीत ऋतु की प्रतीक्षा में कमरों की खिड़कियां पहले से ही बन्द कर चुके थे। और बाहर वातावरण पर एक दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता था मानों शीत ऋतु आज रात को ही आने वाली है। एक खाली कमरे में उन लोगों ने लैनी को आलू तथा शकरकन्द का एक ढेर दिखाया जो उन्होंने स्वयं अपने परिश्रम से पैदा किया था। "इन्हें देखो" भद्र महिला ने अपने दोनों हाथ लैनी की ओर उठाकर दिखाते हुए कहा। वे हाथ मिट्टी में मेहनत करते करते भूरे और कठोर हो गए थे, त्वचा सूखकर खुरदरी हो गयी थी। अचानक उसने एक झटके के साथ अपने दोनों हाथ नीचे कर लिये और कहा, "मेरे चेहरेकी ओर मत देखना" किन्तु लैनी उसके चेहरे पर अपनी दृष्टि डाल चुका था और जान गया था कि अब वह पहले की भांति चिकना और मुलायम नहीं रहा, अब वह बूढ़ा और झुर्रीदार हो चका था। किन्तु उसने मुस्कराते हुए वीरतापूर्वक कहा, "इससे क्या हुआ। आज भी तुम्हारे चेहरे पर मित्रता का प्रकाश जगमगा रहा है।"

"लैनी! मेरे लैनी!!" बेचारी प्रौढ़ा बोल उठी। अतीत काल में एक समय वह लैनी से प्रेम करने लगी थी किन्तु अब वह जानती थी कि लैनी विवाहित और कर्तव्यनिष्ठ गृहस्थ है। लैनी ने अपने सभी मित्रों का नाम अपने "शान्ति" नामक पत्र की निःशुल्क तालिका में दर्ज कर लिया था और इसलिये इस महिला को भी वह नियमित रूप में मिलता रहा था। वह उसे बड़े चाव से पढ़ा करती थी। "ओह लैनी! ऐसा लगता है कि तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। तुम इस बात की कल्पना ही कैसे करते हो कि इस अभागे योरोप में शान्ति की स्थापना हो सकती है!"

"क्या तुम समझती हो कि युद्ध से अभी तक लोग ऊबे नहीं?"

"लोग? हे भगवान! लोगों ने कब युद्ध चाहा है? युद्ध तो नेतागण कराते

रहते हैं। सोवियत रूस के विक्षिप्त नेतागण! ये लोग "होटेनटाट" हैं। क्या तुम यह सोचते हो कि ये लोग तुम्हें कभी शान्ति के साथ बैठने देंगे?"

"हिल्डे, तुम गलती कर रही हो। हम लोगोंको उन्हें समझाने बुझाने का प्रयत्न तो करना ही चाहिये।"

"तुम उनके पास तक पहुंच ही नहीं सकते। इसके अतिरिक्त यदि उस देश के किसी व्यक्ति के हाथ में तुम्हारा यह समाचार पत्र पकड़ा गया तो उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जायगा और उससे यह बात स्वीकार करा ली जायगी कि पचास अन्य व्यक्ति भी इस षड्यन्त्र में थे। और वे अभागे पचास व्यक्ति ऐसे होंगे जिन्होंने तुम्हारे उस पत्र का नाम तक न सुना होगा।"

"सोवियत पागलों का दल" ओबरसाल्जवर्ग की जनता के लिये काल्पनिक नहीं बल्कि भयानक रूपमें वास्तविक था। साल्जवर्ग का प्रान्त अमरीकियों के हाथ में था किन्तु इसकी सीमा पार करने के बाद कुछ ही मीलपर आस्ट्रिया था जो कम्युनिस्टों के अधिकार में था। हिल्डे ने कम्युनिस्टों के सम्बन्धमें बड़ी भयानक बातें सुन रखी थीं और वह इन्हें लैनी को बताने के लिये उत्सुक थी। किन्तु उसका मस्तिष्क तितली की भांति किसी एक विषयपर अधिक देर तक ठहर न पाता था। कुछ ही देर बाद वह बोली, "किन्तु लैनी, तुम अमरीकी लोग हम लोगों के साथ कैसा व्यवहार करने की सोच रहे हो? तुमने कहा था कि मैं अपने शेयर आदि न बेचूं। किन्तु उन पर कोई ब्याज या डिवीडेन्ड तो मिल नहीं रहा; उन्हें रखकर क्या लाभ है? क्या तुम लोग इस देश के व्यापारियों को फिर से व्यापार करने और पैसा कमाने की सुविधा दोगे?"

"मेरा विश्वास है कि हम लोग ऐसा ही सोच रहे हैं।" लैनीने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

वह उसे अपनी मोटर तक ले गया। इसके बाद दरवाजा खोलकर उसने एक बन्द सन्दूक निकाली। सन्दूक खोलते ही हिल्डे की दृष्टि एक अच्छे खासे कद के मेमने पर पड़ी। आश्चर्य के साथ वह बोली, "हे भगवान! यह तुम्हें कहां मिला?"

"मैं ए० एम० जी के स्टोर में गया था।" लैनी ने अपना स्पष्टीकरण देते हुए

कहा। उसने पांच पाउण्ड चाकलेट का एक पैकेट तथा नारंगियों से भरा हुआ एक बोरा भी निकाला—ऐसी वस्तुएं जो हिटलरोत्तर जर्मनी में कहीं भी प्राप्य न थीं।

"लैनी, तुम देवता हो।" उसने अपनी आंखों को सजल करते हुए कहा। एक समय वह कितनी समृद्ध थी किन्तु आज वह एकदम दरिद्र थी। उसका बर्लिन वाला विशाल प्रासाद बम वर्षा के तारतम्य में नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। पोमेरानिया में एक जायदाद उसे उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी किन्तु वहां अब रूसियों का राज्य था। और उन्होंने देश का "सामाजिकीकरण" कर दिया था जिसका अर्थ यह था कि वहां के किसानों को जी तोड़कर परिश्रम करना पड़ता था और पैदावार रूसी लोग उठा ले जाते थे।

(३)

हिल्डे ने लैनी को भोजन के लिये निमन्त्रित किया था। भोजन करते हुए वह अनवरत रूप में बातें करती जा रही थी। वह कह रही थी कि यह कैसे सौभाग्य की बात है कि हम लोग इस युद्ध से जीते जागते निकल आए। वस्तुतः उसका नया कृषक जीवन बहुत बुरा नहीं है। पड़ोस में उसके मित्र हैं जो यदा कदा आकर उससे मिलते रहते हैं। इन लोगों से बातें करके उसे पास पड़ोस की और जर्मनी के सारे भूतपूर्व रईसों की खबरें मिल जाती हैं। उसके वार्त्तालाप में कटुता का एक ऐसा भाव था जिसे सुसंस्कृत समाज में "व्यंग्य" के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गयी है कि मानव हृदय की दुर्बलताओं देखकर बड़ा कौतूहल होता है। किन्तु इसके लिये आप क्या कर सकते हैं? आप किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाना चाहेंगे और वस्तु स्थिति को बदलने का भी कोई प्रयास न करेंगे। आप केवल अपने मित्रों को निमंत्रित करके उनके साथ अपना रूखा सूखा भोजन बांट कर खा लेंगे, अतीत की सुन्दर स्मृतियों की थोड़ी बहुत चर्चा कर लेंगे और मंजी हुई फ्रेन्च भाषा में उस पुरानी कहावत को दोहरा देंगे कि "इतिहास एक ऐसी सीढ़ी है जिसपर बहुधा लकड़ी के जूतों के ऊपर चढ़ने और रेशम के चप्पलोंके नीचे उतरने की प्रतिध्वनि गूंजती रहती है।"

यहां रुकने के लिये लैनी के पास पर्याप्त कारण थे। कुछ समय पूर्व हिल्डे ने लैनी को इस बात की खबर दी थी कि नाजियों ने चुरायी हुई बहुमूल्य कला-कृतियों को कहां छिपा कर रखा है। सम्भव है वह हिमलरी मुद्रा के सम्बन्ध में भी कुछ जानकारी रखती हो। वह एक गुप्तचर के रूप में काम कर रहा था और इसका यह अर्थ था कि वह एक मछुए की भांति अपना जाल एक तालाब से दूसरे तालाब और एक नदी से दूसरी नदी में डालता रहे। इस बात का कोई निश्चय न था कि कहां पर उसे सफलता प्राप्त होगी।

उसने चर्चा छेड़ते हुए कहा, "उस दिन एक अंग्रेजी पाउण्ड के नोट को लेकर मुझे बड़ा विचित्र अनुभव हुआ था। मैंने उसे खर्च करना चाहा तो पता चला कि वह जाली है।"

"तब तुमने उसका क्या किया?"

"उसे फाड़कर फेंक दिया।"

हिल्डे की आंखोंमें चांचल्य की वह पुरानी झलक फिर से उद्भासित हो उठी। मुस्कराते हुए वह बोली, "उसे मेरे पास क्यों नहीं ले आए?"

"तुम उसका क्या करतीं? उसे चलाने का प्रयत्न करतीं?"

"मैं उससे अपना टैक्स चुकाने का प्रयत्न करती। चल जाता तो ठीक ही था। नहीं तो मैं एकदम अनजान बन जाती और अपना आश्चर्य प्रकट करने लगती।"

"तुम्हारी नैतिकता काफी निम्न स्तर पर आ गयी है।" लैनी ने कहा।

"मैं राजनीतिज्ञों की परवाह नहीं करती।" उसने उत्तर दिया।

"मैंने सुना है कि इस प्रकार की जाली मुद्रा की यहां बहुतायत है।" लैनीने दूसरा पांसा फेंकते हुए कहा।

"मैंने भी ऐसा ही सुना है। यह जाली मुद्रा नाजियोंने बनायी थी। इसे बनाने की विधि से वे भलीभांति अवगत थे। सम्भव है इस प्रकार की जाली मुद्रा काफी बड़ी तादादमें हम लोगों के हाथों से गुजर चुकी हो और हमें पता ही न चला हो। किन्तु इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।"

लैनी ने यह चर्चा स्थगित करके उसे अपने मित्रों की बातें करते रहने दिया।

उसने अपनी बातों के प्रसंग में ग्राफ स्टूबेनडर्फ की चर्चा करते हुए कहा कि सम्भवतः इस पुराने रईस के पास कुछ कलाकृतियां रह गयी हों जिन्हें वह बेचने के लिये उत्सुक हो।"

"उसके पास क्या क्या बच रहा है, इसका मुझे कोई पता नहीं है।" हिल्डे ने कहा, "लोग कहते हैं कि आजकल वह मौन रहता है। इस समय वह टेगरनसी नामक स्थान में एक वृद्ध दम्पति के साथ रहता है जो पहले उसके नौकर थे। मुझे यह भी नहीं मालूम कि वह उस मकान का स्वयं मालिक है या नहीं।"

"मैंने सुना है कि ए० एम० जी ने उसे सच्चरित्रता का प्रमाण पत्र दे दिया था और वह चाहता तो उसे कोई छोटी मोटी नौकरी मिल सकती थी।"

"वह प्रागैतिहासिक युग की मनोवृत्ति रखता है।" हिल्डे ने कहा, "वह अपने विजेता को क्षमा नहीं कर सकता—विशेषकर एक गणतान्त्रिक विजेता को।

(४)

दूसरे दिन प्रातःकाल लैनी बवेरियन आल्पस् के नीचे फैली हुई सुरम्य दृश्यावलि के बीच से अपनी गाड़ी चलाते हुए यात्रा पर रवाना हुआ। आकाशका रंग उस समय गहरा नीला था और छोटे छोटे बादल के टुकड़े उस पर तैरते हुए से दिखाई दे रहे थे। एक टुकड़े ने लैनी के मार्ग पर थोड़ा सा बर्फ गिरा दिया; मानों उसे चेतावनी देने के लिये कि वह अपनी यात्रा जितनी शीघ्रता के साथ समाप्त कर सके कर ले। वायु में पाइन के वृक्षों की भीनी भीनी सुगन्ध भर रही थी और रास्ता पहाड़ी नाले के साथ साथ चक्कर काटता हुआ फैला हुआ था।

पहाड़ की इस तलहटी में छिपी हुई बहुत सी झीलें हैं। इनमें से कुछ काफी बड़ी बड़ी हैं और कुछ छोटी। रास्ते में आदि से अन्त तक सांकेतिक चिन्ह भली-भांति लगे हुए थे। ज्यों ही लैनी एक साइनबोर्ड के पास आया जिस पर लिखा हुआ था, "टेगरनसी" वह तुरन्त गाड़ी घुमाकर बायीं दिशा की ओर चढ़ने लगा। अब वह पहाड़ी नाला काफी तेज हो गया था और वायु में भी अधिक उग्रता आ गयी थी। थोड़ी ही देर में लैनी की दृष्टि सामने फैली हुई एक विस्तृत

झील पर पड़ी जिसका जल गहरा नीला था और जिसके चारों ओर हरीतिमा का विस्तार अद्भुत प्रतीत हो रहा था।

वह एक छोटी सी सरांय में गया और वहां के लोगों से प्रश्न किया कि क्या वे उसे जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ का पता बता सकते हैं। वे लोग जेनरल का पता अवश्य जानते थे और इसका उन्हें पर्याप्त गर्व भी था। जब लैनी ने नाश्ते की मांग की तो उन लोगों ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसे खिलाया पिलाया क्योंकि उन्होंने देखा कि आगन्तुक विजेता अमरीकी है और उसके पास एक अमरीकी गाड़ी है। यह ठीक है कि गाड़ी बड़ी पुरानी थी किन्तु उन दिनों किसी जर्मन के पास एक बाइसिकिल होना भी गर्व की बात समझी जाती थी। देहात में तो घोड़ा गाड़ी का भी बहुत बड़ा महत्व था।

सरांय में देहाती भोजन पर्याप्त मात्रा में प्राप्य था। "काली" रोटी नामकी की जो वस्तु यहां थी वह लैनी को बड़ी प्रिय थी। इसके अतिरिक्त दूध और मक्खन भी प्रचुर मात्रा में था, शाक शब्जी की कोई कमी नहीं थी। लैनी के लिये इतना पर्याप्त था। भोजन करते समय सरांय की मालकिन ने उसे अपने सम्मानीय पड़ोसी जेनरल ग्राफ के सम्बन्ध में बहुत कुछ बताया। उसके कथनानुसार जेनरल यहां अधिक एकाकीपन था अनुभव न करता था क्योंकि उसके पास पुस्तकें थीं और यदाकदा उसके मित्र उससे मिलने के लिये आते रहते थे। सरांय का व्यापार अच्छा चल रहा था क्यों कि पहले वहां जो लोग केवल ग्रीष्म ऋतु बिताने के लिये आया करते थे वे अब बारहों मास यहीं रहने लगे थे। यहां जाड़े में बर्फ से आच्छादित पहाड़ों के बीच में निवास करना भी उतना बुरा नहीं है जितना कि शहर की उस छोटी सी कोठरी में जिसका एक भाग किसी बम के विस्फोट के कारण उड़ गया हो। सरांय की मालकिन ने लैनी को बताया कि वह एक ऐसे परिवार को जानती है जिसके मकान की सीढ़ी उड़ गयी थी और ऊपर के कमरों तक पहुँचाने के लिये बांस की एक सीढ़ी का व्यवहार करना पड़ता था। आह! यह कितने बड़े संतोष की बात है कि अब बमों का कोई भय नहीं रहा! हां, ये अमरीकी लोग काफी नम्र हैं! इस पहाड़ी अंचल में

उन्होंने केवल नाजियों को निकाल दिया है और स्थानीय जनता को अपनी सरकार चलाने की स्वतन्त्रता दे दी है।

(५)

लैनी ने सरांय में प्राप्त होनेवाले निर्देश के अनुसार अपनी गाड़ी एक छोटी सी घाटी की ओर घुमायी। पहाड़ की एक ढालू सतह पर उसे एक छोटा सा खेत दिखाई पड़ा जिसके चारों ओर पत्थर लगा लगा कर एक प्रकार का बाड़ा बना दिया गया था और जिसके अन्दर भूमि का प्रत्येक इञ्च सतर्क देखभाल का परिचय दे रहा है। वहीं पर पत्थर की बनी हुई एक झोपड़ी थी जिसमें तीन चार कमरे थे। उसने झोपड़ी के दरवाजे को खटखटाया तो अन्दर से एक लम्बा व्यक्ति निकला। वह किसानों की सी सदरी पहने हुए था और उसके पतलून पर वर्षों से लोहा न हुआ था। उसके सिर पर एक टोपी थी जिसपर किसी समय ज़री का सुन्दर काम था किन्तु अब वह नष्ट हो गया था। टोपी के अंदर से सफेद बालों के लच्छे निकले हुए थे। उस व्यक्तिका चेहरा लम्बा था और उसपर गहरी रेखाएं अंकित थीं। लैनी ने एक चेहरे को बहुत समय पहले देखा था किन्तु उसे पहचानने में कोई कठिनाई न हुई। उसने तुरन्त कहा, "नमस्कार! ग्राफ स्टूबेनडर्फ। शायद आप मुझे पहचान गए होंगे। मैं हूँ लैनी बड।"

वृद्ध का चेहरा मुस्कराहट से प्रदीप्त हो उठा। "मिस्टर बड! मैं बेशक आपको जानता हूँ। भीतर आइये।"

लैनी को प्रसन्नता हुई क्यों कि अभी तक उसे इस बात पर संदेह था कि यहाँ उसका स्वागत होगा। नूरेनबर्ग के मुकदमों में उसने गोयरिन्ग के विरुद्ध गवाही दी थी और उस मोटे ताजे नाजी सेनापति को अपराधी प्रमाणित कराने में काफी सहायता पहुँचायी थी। तब से उसका नाम प्रत्येक जर्मन जान गया था।

"मैं यहीं पड़ोस में आया था। मैंने सोचा कि लगे हाथ आप से भी मिलता चलूं।"

"बैठिये।" वृद्ध ने एक आराम कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा। कुर्सी के सामने एक लोहे का स्टोव जल रहा था। लैनी ने कहा, "नहीं, नहीं, इसपर

नहीं।" और एक छोटी सी कुर्सी पर बैठ गया। उसने कमरे के चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखा। एक कोनेपर एक पर्दा लटका हुआ था। वह समझ गया कि इसके पीछे वृद्ध का बिस्तर लगा हुआ है। पास ही में एक मेज रखा हुआ था जिस पर सम्भवतः वृद्ध अपना भोजन करता था।

एक दूसरे मेज़ पर कुछ पुस्तकें रखी हुई थीं। जिनमें से एक खुली हुई थी। ग्राफ ने स्वयं बताया कि वह कार्लाइल द्वारा लिखित फ्रेडरिक महान की जीवनी है। लैनी ने वह बृहदाकार पुस्तक स्वयं न पढ़ी थी किन्तु इसका नाम सुना था। उसने मन ही मन अनुमान किया कि यह वृद्ध सैनिक इस पुस्तक द्वारा अपने देश के गौरवपूर्ण अतीत में निवास करने का प्रयत्न कर रहा है। यह पुस्तक पांच खण्डों में विभाजित है और इसमें उस महान शासक द्वारा लड़ी गयी प्रत्येक लड़ाई का विस्तृत वर्णन मानचित्रों सहित दिया गया है। इन मानचित्रों में युद्ध के प्रत्येक स्तर पर सैनिकों की स्थिति का स्पष्ट और रोचक वर्णन है। युद्ध कला का अर्थ ही यही है कि सेनापति बहुत से व्यक्तियों को इस प्रकार संगठित तथा परिचालित करे कि उन समस्त व्यक्तियों का नाश हो जाए जो दूसरी सरकार के किसी अन्य सेनापति द्वारा संगठित और परिचालित हो रहे हों। आज से पन्द्रह मास पूर्व तक जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ भी यही कर रहा था और चूंकि अब वह यह काम वास्तविकता के स्तर पर न कर सकता था इसलिये वह अपने कल्पना लोक में दो सौ वर्ष पूर्व लड़े गए युद्धों का चित्र खींच कर किसी प्रकार संतुष्ट होने का प्रयत्न किया करता था।

आज से तैंतीस वर्ष पूर्व लनी जब सर्वप्रथम स्टूबेनडर्फ में आया था तब वह एक बालक मात्र था। उस समय वह "वृद्ध ग्राफ"—वर्त्तमान ग्राफ के पिता से मिला था। लैनी की वह मुलाकात केवल शिष्टाचार के रूप में हुई थी। क्रिसमस के अवसर पर एक दिन प्रातःकाल ग्राफ अपने नौकरों तथा आश्रितों का अभिवादन स्वीकार करते हुए उनके सम्मुख भाषण दे रहा था और उसी समय बालक लैनी भी शिष्टाचार के नाते वहां चला गया था। वृद्ध ग्राफ की मृत्यु के उपरान्त उसके ज्येष्ठ पुत्र ने उसका स्थान लिया था और इसके साथ लैनी की मुलाकात काफी समय पूर्व बर्लिन में हुई थी। उस समय लैनी शिकागो के एक प्रसिद्ध

व्यापारी की पुत्री इर्मा बार्नस का पति था। यह निश्चित है कि जर्मन रईस इर्मा की सम्पत्ति की अफवाहों से ही अधिक प्रभावित हुआ था, लैनी के व्यक्तित्व से नहीं। जो भी हो उसने लैनी को सपत्नीक आमंत्रित किया था, और स्चलास में अपने निवास स्थान पर उसकी बड़ी आवभगत की थी। इस घटना के फल-स्वरूप स्टूबेनडर्फ में लैनी की सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी थी। इसके पूर्व भी वह कई बार स्टूबेनडर्फ की यात्रा कर चुका था और प्रत्येक बार ग्राफ के व्यापार व्यवस्थापक हर मेसनर का अतिथि हुआ था।

उन पुरानी बातों को याद करके इस समय आनन्द भी हो रहा था और कष्ट भी। कारण यह है कि ग्राफ का वह आलीशान पांच मंजिला मकान रूसी तोपों द्वारा क्षत विक्षत हो चुका था। उस क्रिसमस के समय वृद्ध ग्राफ का अभि-वादन करने वाले बालकों में अधिकांश मर चुके थे जो बच गए थे वे इस समय रूस अथवा पौलैण्ड की जमीन जोत रहे थे।

ग्राफ ने लैनी से कहा कि व्यक्तिगत रूप में उसके मन में वस्तुस्थिति के प्रति किसी प्रकार की कटुता का भाव नहीं है। शीर्षस्थ नाजी नेतृत्व सर्वथा अयोग्य था और यह स्वाभाविक ही था कि जर्मनी को उस युद्ध में हारना पड़ा जो उसने अत्यन्त मूर्खता पूर्वक छेड़ दिया था। "जैसा कि आप जानते ही हैं, मिस्टर बड, मैं कभी नाज़ी नहीं रहा।"

इस प्रकार की बातें इस समय जर्मनी का प्रत्येक व्यक्ति किया करता था। जर्मनी का प्रत्येक उद्योगपति अपने कारखाने को फिर से प्राप्त करने के लिये कहा करता था कि नाजियों के साथ कभी उसकी सहानुभूति नहीं हुई। होटल का मालिक और बेहरा दोनों ही अमरीकियों की सद्भावना प्राप्त करने के लिये अपनी नाजी-विरोधी चिन्तनधारा व्यक्त करते रहते थे। सारांश यह कि इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि सारा जर्मनी छान मारने पर भी किसी भूतपूर्व नाजी के दर्शन मिलना दुर्लभ था। जो थोड़े बहुत नाजी बच रहे थे वे छिप गए थे और छोटे मोटे होटलों में लुके छिपे मिलकर आपस में बड़े धीमे स्वर में "हार्स्ट वेसेल" गीत गाते हुए यह षड्यंत्र रचते रहते थे कि अमरीकियों के चले जाने पर वे क्या करेंगे।

किन्तु जहां तक लैनी जानता था जेनरल ग्राफ का वक्तव्य असत्य न था। वह कभी राजनैतिक नेता न रहा था। वह जर्मनी की प्राचीन सेना का एक उच्च पदस्थ अधिकारी मात्र था। उसने अपने पेशेका गहरा अध्ययन किया था और धीरे धीरे उन्नति करते हुए इस पद पर पहुंचा था। वह एक पूरे डिवीजन का सेनापति था और एक सच्चे सेनापति के नाते उसे जहां कहीं भेजा जाता था वहां जाकर वह पूरी योग्यता के साथ शत्रु को हराने का प्रयत्न करता था। उसे दो बार गम्भीर रूप में घायल होना पड़ा था। केवल इतना ही नहीं उसे युद्ध की अन्य विडम्बनाओं का सामना भी बड़े धैर्य के साथ करना पड़ा था। यह एक संयोग की बात ही थी कि उसकी सारी जायदाद रूसी सेनाओं के रास्ते में पड़ गयी थी। अब वह जर्मनी के अमरीकी अंचल में आकर शान्तिपूर्वक निवास करते हुए एक स्काट द्वारा लिखित प्रशिया के सबसे महान राजा फेडरिक वि ग्रेट की पांच खण्डों में लिखित बृहत जीवनी का अध्ययन करने में ही संतोष मानता था।

(६)

लैनी ने धीरे से कर्ट मेसनर की चर्चा छेड़ी। जेनरल ग्राफ ने इस संगीतज्ञ की प्रतिभा को मान्यता प्रदान करते हुए अपनी जायदाद के एक वन्य प्रदेश में एक झोपड़ी दे दी थी। बाद में जब नाजी पार्टी प्रभुतासम्पन्न हुई उसने उसके लिये समीप में ही एक सुन्दर स्टूडियो बनवा दिया था। कर्ट युद्ध के समय एक सैनिक के रूप में लड़ा था और उसका बायां हाथ एक घाव के फलस्वरूप बेकार हो गया था। यह बात एक पियानो बजाने वाले के लिये विशेष रूप में दुखद थी। रूसी सेनाओं के आगमन पर उसका विशाल परिवार भाग खड़ा हुआ था और बाद में कर्ट अमरीकी सेनाओं के हाथ में पड़ कर बन्दी हो गया था।

"वहां से छूटने के बाद" ग्राफ ने बताया, "उसने मुझसे कहा था कि वह स्टुबेनडर्फ लौट जाना चाहता है यद्यपि वह अब पोलैण्ड का एक भाग हो गया है। कवि गरहार्डट हाप्टमन को वापस लौटने की अनुमति दे दी गयी थी और कर्ट भी इसी प्रकार की कृपा की आशा कर रहा था। बात यह है कि कम्यूनिस्ट

लोग यह दिखाने का प्रयत्न कर रहे थे कि वे सभ्य हैं और कलाकारों का सम्मान करना जानते हैं।"

लैनी ने कहा—"सम्भव है उन लोगों को कर्ट के साथ हिटलर की मित्रता की बात न मालूम हो। यह भी सम्भव है कि वे लोग कर्ट द्वारा रचित युद्धगीत को भूल गए हों और उन्हें केवल उसके नृत्यगीत ही याद रहे हों। खैर, क्या आप बता सकते हैं कि इस समय वह अपना जीवन यापन किस प्रकार कर रहा है?"

"पिछले कुछ समय से मुझे उसका कोई पत्र नहीं प्राप्त हुआ। किन्तु मैं समझता हूँ वह इस समय बहुत बड़े आर्थिक संकट का अनुभव कर रहा होगा। मैं चाहता हूँ कि उसकी कुछ सहायता करूं किन्तु लाचार हूं।"

"मैं उससे पूछना चाहूंगा।" लैनी ने कहा। भाग्य के इस लाड़ले को कभी किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट न उठाना पड़ा था। वह चेहरे मोहरे से बड़ा सौम्य लगता था क्योंकि उसका लालन पालन संस्कृतिपूर्ण वातावरण में हुआ था। उसके अभिभावकों में मुख्यतः भद्र महिलाएं ही थीं और बचपन में जब कभी उसके मुंह से कोई सुन्दर बात निकल जाती थी तो इनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रहती थी। इस कुलीनतायुक्त सम्पन्न वातावरण में पलने के कारण लैनी के अन्दर एक शक्ति विकसित हो गयी थी, वह जानने लगा था कि किसी को प्रसन्न करने के लिये कब किस प्रकार की बातें करनी चाहिए। इस वृद्ध योद्धा तथा भूतपूर्व रईसके सम्बन्ध में भी उसने ऐसा ही किया। उससे वह अतीत काल के समृद्धिपूर्ण दिनों की चर्चा करने लगा—उन दिनों की जब क्रिस्टूबेनडर्फ में उसके विशाल प्रासाद में बीसों नौकर-चाकरों तथा अतिथियों का जमघट रहता था। इन बातों से वृद्ध ग्राफ को अपने गौरवपूर्ण अतीत की स्मृति करके बड़ी प्रसन्नता हुई। पुराने साथियों में बहुत से दिवंगत हो चुके थे, बहुत से भाग गए थे और कुछ अज्ञात थे। लैनी ने मन ही मन उन व्यक्तियों के नाम दर्ज कर लिये जो अपने पुराने स्थानों में मिल सकते थे।

उसने ग्राफ से यह भी पूछा कि क्या वे ऐसे जर्मनों के बारे में कोई जानकारी रखते हैं जिनके पास प्राचीन तैल चित्र हों और जिन्हें बेचने के लिये वे उत्सुक हों। वृद्ध ने नकारात्मक उत्तर देते हुए कहा कि उसकी चाची जिसने बहुत समय पूर्व

लैनी को एक चित्र बेचा था मर चुकी है और उसकी कला कृतियों के सम्बन्ध में किसी को कोई पता नहीं है। पूर्वी जर्मनी वालों को अपने प्राण बचाने के लिये यत्र तत्र भागने के लिये बाध्य होना पड़ा था। वे लोग पलायन के समय ये भारी भरकम तैल चित्र अपने साथ न ले जा सकते थे। लैनी ने कहा कि बहुधा इन चित्रों को उनके फ्रेमों से अलग करके लपेट लिया जाता था और चौरानयन द्वारा उन्हें रूसी अंचल की सीमा के बाहर कर दिया जाता था। एक पुराने रूसी ड्यूक की चर्चा करते हुए लैनीने कहा कि वह रूस से भागते समय महान कलाकार रेम्बाण्डट् के कुछ चित्र अपने साथ छिपा करके ले आया था और उसका शेष जीवन इन चित्रों को बेचकर प्राप्त होने वाले रुपये से बीता था।

इस प्रकार काफी समय तक इधर उधर की बातें करने के उपरान्त लैनी ने वह मुख्य विषय उठाया जो उसके मस्तिष्क में बड़ी देर से चक्कर काट रहा था। उसने जाली अंगरेजी नोटों की चर्चा शुरू थी। ग्राफ ने कहा कि सचमुच इस समय जर्मनी में जाली नोटों की भरमार है। नाजियों ने जिन जिन देशों पर आक्रमण किया था उनकी मुद्राओं की जालसाजी करना न भूले थे। इसके अतिरिक्त वे जिन देशों पर भविष्य में आक्रमण करने का विचार कर रहे थे उनकी मुद्राएँ भी बना डाली थीं। यहाँ तक की जाली पासपोर्ट तथा अन्य आवश्यक कागज भी उन्होंने बना लिये थे।

"मैं इस प्रकार के युद्ध का समर्थक नहीं हूँ।" ग्राफ ने अन्त में कहा।

लैनी ने इस आशा से कि वृद्ध और कुछ कहेगा मौन धारण करना ही उचित समझा किन्तु वृद्ध ने इस विषय पर और कुछ नहीं कहा। फलस्वरूप लैनी ने प्रसंग को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से कहा, "यह तो बड़ी खतरनाक बात है। इससे जनता को लूटा जा सकता है और किसी भी देश में धीरे धीरे मुद्रा स्फीति की सृष्टि की जा सकती है।"

"आप ठीक कहते हैं। मुझे भय है कि आपकी सरकार को इस खतरे को जड़ से उखाड़ फेकने के लिये काफी परिश्रम करना पड़ेगा।"

"क्या आपका अनुमान है कि कम्युनिस्ट लोग भी इस जाली मुद्रा का उत्पादन ज़ारी रक्खेंगे ?"

"ऐसी आशंका न करने का मैं कोई कारण नहीं देखता। मुझे पता लगा है कि पूर्वी जर्मनी में वे लोग लुके छिपे रूप में हमारी मुद्रा बना रहे हैं और उसे बाजार में डाल रहे हैं।"

लैनी को मोरीसन ने पहले ही इस बात की सूचना दे दी थी। किन्तु उसे यह जानने का कौतूहल था कि ग्राफ को यह बात कैसे मालूम हुई।

"मुझे बताया गया है कि बर्लिन में एक अच्छा खासा चोर बाजार चल रहा है। आप यह जाली मुद्रा थोड़ा सा बट्टा देकर मनचाही तादाद में खरीद सकते हैं।"

"मुझे इस विषयमें कोई संदेह नहीं है। बल्कि मेरा तो विश्वास है कि इस खतरे का सामना करने के लिये आपकी सरकार को अच्छे से अच्छे मस्तिष्क लगाने पड़ेंगे।"

बस बात यहीं समाप्त हो गयी। इस विषय को और आगे बढ़ाने का साहस लैनी न कर सका क्योंकि उसे भय था कि कहीं ग्राफ को संदेह न हो जाय और वह सारे अमरीकियों के प्रति सशंक न हो उठे।

(७)

जब "प्रागऐतिहासिक मनोवृत्ति वाले" उस वृद्ध ने फिर से वार्ता शुरू की तो विषय सर्वथा नवीन था। उसने इस बात पर चिन्ता प्रकट की कि अमरीकी लोग अपनी सेनाओं का विघटन बड़ी तेजी के साथ कर रहे हैं और सैनिकों को वापस घर भेज रहे हैं। "स्टालिन तो अपनी सेनाओं का विघटन नहीं कर रहा।" उसने कहा, "शीघ्र ही आपको उसकी दया पर आश्रित होना पड़ेगा।"

"कदाचित गणतान्त्रिक देशों का यही रास्ता है।" लैनी ने उत्तर दिया। "हमारे देशवाले युद्ध नहीं चाहते। वे उसके विचार मात्र से घृणा करते हैं। माताएं अपने पुत्रों के वापस आने के लिये शोर गुल मचा रही हैं और हमारे सैनिक भी वापस लौटकर अपनी माताओं और प्रेमिकाओं से मिलने के लिये व्याकुल हो रहे हैं।"

"यदि अचानक स्टालिन सारी जर्मनी पर अपना अधिकार करने का निश्चय कर ले तो आप क्या करेंगे?"

"मैं नहीं जानता। सम्भव है हम लोग युद्ध के लिये फिर से तयार हो जाएंगे—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम लोग हिटलर और हिरोहिटो के मुकाबिले के लिये तयार हुए थे। फिलहाल तो हम लोग अपने अणुबम का भरोसा कर रहे हैं।"

"अधिक समय तक आप उसके भरोसे नहीं रह सकते क्योंकि दो दिन आगे अथवा दो दिन पीछे स्टालिन के हाथ में भी अणु बम आ जायगा। इस समय हमारे बहुतसे उच्च कोटि के वैज्ञानिक उसके फन्दे में हैं। यह तो आप जानते ही होंगे।"

"यह एक कष्टदायक बात है, जेनरल ग्राफ,—विशेषकर उस व्यक्ति के लिये जो रेडियो पर विश्वशान्ति के लिये अनवरत रूप में प्रचार करता रहता है। प्रत्येक दिन विश्वशान्ति के सम्बन्ध में मेरा विश्वास शिथिल पड़ता जाता है।"

"यदि आप अपनी बाइबिलमें जरमिया वाला प्राचीन उपाख्यान पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि वह भी शान्ति शान्ति की रट लगा रहा था जब शान्ति का कहीं नाम निशान भी न था। कदाचित एक दिन आपको भी उस प्राचीन मसीहे का सा अनुभव होगा—'Then said I, Ah, Lord God, surely thou hast greatly deceived this people and Jerusalem, saying ye shall have peace, whereas the sword reacheth unto the soul."

जब बादमें लैनी ने इस प्रश्न पर विचार किया तो उसे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हिटलर की सशस्त्र सेनाओं का एक दलपति यहूदियों के धार्मिक ग्रन्थ से उद्धरण देरहा है। किन्तु उसने अपना आश्चर्य प्रकट न किया बल्कि कहा, "मुझे एक सरकारी दूकान पर कुछ वस्तुएं खरीदने का अवसर मिला था। मैं जानता हूं कि देहात में एक ही प्रकार का भोजन खाते खाते मन ऊब जाता है। इसलिये मैंने सोचा कि आपके लिये कोई ऐसी वस्तु ले लूं जो स्वास्थ्यकर भी हो और सुस्वादु भी। मैं अपने साथ एक बोरा नारंगियां ले आया हूं।"

"नहीं, नहीं। मैं आपको यह न करने दूंगा।" वृद्ध जर्मन रईस ने बाधा देते हुए कहा।

"जरा सोचिये तो जेनरल ग्राफ। पुराने जमाने में मैंने न जाने कितनी बार आपका आतिथ्य प्राप्त करने का सौभाग्य पाया था। ज़रा उन बातों को सोचिये तो। आपने न जाने कैसी कैसी चीज़ें मुझे खिलाई थीं। कमसे कम अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये मुझे कुछ तो अवसर दीजिये।"

"अच्छा, अब आप नहीं मानते तो—"

"अपना ओवरकोट पहन लीजिये और मेरे साथ चलिये। देखिये मेरी गाड़ी में और क्या क्या सामान है।"

वृद्धके साथ लैनी अपनी मोटर तक आया और अपनी सन्दूक खोलकर नारंगियों का बोरा निकाला। इसके बाद फिर एक वैसा ही मेमना निकाला जिसे देखकर श्रीमती हिल्डे आश्चर्यचकित रह गयी थीं! वृद्धने फिर आपत्ति प्रकट की किन्तु लैनी ने उसी प्रकार उसे शान्त कर दिया। दोनोंने नारंगियां और मेमना घर के अन्दर पहुंचा दिया। विदा के समय दोनोंने हाथ मिलाया और लैनी ने आश्वासन दिया कि वह अपना साप्ताहिक समाचार पत्र नियमित रूपमें भेजता रहेगा। मोटरका एञ्जिन चालू हुआ और लैनी का काला बक्स सड़कपर गिर कर एक ओर लुढ़क गया!

(८)

नूरेनवर्गको जानेवाली सड़क अच्छी थी और पहाड़ की तलहटी पार करनेके बाद लैनी की मोटर तेजीके साथ आगे बढ़ने लगी। उसे एमिल मेसनर से मिले हुए एक अर्सा हो गया था। दो वर्ष पूर्व जब उसने मेसनर को नाजियों का साथ छोड़कर जेनरल पैटन की सेना को मेत्ज के किले पर अधिकार करनेके प्रसंग में सहायता देने के लिये राज़ी करनेका प्रयत्न किया था तब से फिर उसके साथ मुलाकात न हुई थी। लैनी जानता था कि इन दो वर्षों में उसे बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ी होंगी क्योंकि वह देशद्रोही था और देशद्रोही दोनों पक्षोंमें से किसीका आदर नहीं प्राप्त करता। एमिल ए० एम० जी के सामने किसी छोटी मोटी नौकरी के लिये आवेदन कर सकता था और वह उसे मिल भी जाती। किन्तु उसने ऐसा न किया बल्कि चुपचाप एक नागरिक नौकरी स्वीकार कर ली और

अपने विचारों में तल्लीन सन्यासी की भांति निरे एकाकीपन में एक होटल में रहने लगा।

एमिल मेसनर के साथ सर्व प्रथम लैनीका परिचय उस समय हुआ था जब वह बड़े दिनकी छुट्टियोंमें अपने घर स्टूबेनडर्फ आया था। उस समय वह एक लम्बा चौड़ा, प्रभावोत्पादक नवयुवक था और सेना में भर्ती होने के लिये शिक्षा प्राप्त कर रहा था। बड़ी मेहनत तथा लगन से उसने अपना भविष्य बनाया था। युद्ध में पहले वह रूसियोंके विरुद्ध लड़ा था और बादमें अमरीकियोंके विरुद्ध। पैटन की सेनाएं जब तेज़ी के साथ आगे बढ़ रही थीं वह अमरीकी सैनिकों के हाथों में पड़ कर बन्दी बना लिया गया था। लैनी बड उससे भली भांति परिचित था और इसीलिये उसे एक गुप्तचर के रूप में इस व्यक्ति के पीछे लगाने का निश्चय किया गया था। लैनीके लिये इस बात की कोई आवश्यकता न रह गयी थी कि वह एमिलको समझाने का प्रयत्न करे कि उसका नेता हिटलर पागल और दुष्ट था क्योंकि वह स्वयं इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका था। किन्तु लैनी ने उसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात अवश्य समझा दी। वह यह कि युद्धका अन्त किस प्रकार होगा यह प्रश्न निर्विवाद होने के कारण उसे जितनी शीघ्रता से समाप्त किया जा सके उतना ही अच्छा होगा क्योंकि इससे बहुत से प्रान्तों—जर्मन और अमरीकी दोनों की—रक्षा हो सकेगी। फलस्वरूप एमिल राजी हो गया था और उसने अमरीकी सेनापतियों को मेत्ज की किलेबन्दी का सारा रहस्य बता दिया था। इसके बाद उसे जमानत पर छोड़ दिया गया था। मेसनर के सम्बन्ध में लैनीकी जानकारी बस इतनी ही थी।

शेष बातोंका पता भी शीघ्र ही लग गया। एमिल मेसनर अब एक साधारण मकान की दूसरी मंजिल पर एक कमरे में रहता था जो तापशून्य था। उसने एक स्कूल में शिक्षक का काम स्वीकार कर लिया था जहां वह प्रतिदिन प्रातःकाल जाता था और अपने छात्रों को पढ़ाकर चला आता था। संध्या के समय घरपर वह अपने छात्रों की कापियां जांचता रहता था। वह अकेला ही था क्योंकि उसकी पत्नी की मृत्यु युद्धकाल में हो गयी थी और उसके पुत्र अपने पिता के कार्यकलाप के सम्बन्ध में कोई जानकारी न रखते थे। वह किसी के साथ बात

चीत न करता था; बस अपने एकाकीपन में ही डूबा रहता था। लैनी के मस्तिष्क में कवि होरेस द्वारा रचित एक कविता घूम गयी जो उसने वर्षों पूर्व न्यूकैसेल के स्कूल में पढ़ते समय सुनी थी। इस कविता में कवि ने उस सच्चे, स्वाधीन और न्यायप्रिय व्यक्ति की प्रशंसा की है जो अपने विचारों में सदा दृढ़ रहता है, जिसे न अत्याचारी की तलवार विचलित कर पाती है न भीड़ का शोर गुल। सारा संसार टूक टूक हो जाय तो भी वह विचलित नहा हो सकता !!

(९)

लैनी ने उसका पता लगा लिया और उसे अपनी मोटर में बैठा कर शहर में ले आया। शहर इस समय ध्वंसावशेषों से पूर्ण था और उसके चारों ओर एक अवसादपूर्ण वातावरण छाया हुआ था। एक गणतांत्रिक देश के राष्ट्रपति के गुप्तचर के लिये भी यह स्थान बहुत सी दुखद स्मृतियों से पूर्ण था। एक समय वह भी था जब लैनी इस नगर में नाजी पार्टी का समारोह दिवस देखने आया करता था। यह समारोह सप्ताह में एक दिन मनाया जाता था और उस अवसर पर लगभग दस लाख अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति शोरगुल मचाते हुए नगर के अन्दर दाखिल हो जाते थे। ये लोग नगर के वाह्य क्षेत्र में तम्बू डाल कर रहते थे, युद्ध गीत गाते हुए सड़कों पर कवायद करते थे, शोरगुल मचाते थे और सौ सौ माइक्रोफोनों से सुसज्जित एक विशाल मैदान में एकत्रित होकर अपनी पार्टी के नेताओं के भाषण सुनते थे। यह हान्ससाक्स और वागनर के "मेस्टर सिन्गर" का प्राचीन नगर था। किन्तु पिछली बार लैनी जब यहां आया था उसने देखा था कि नगर का प्राचीन भाग नष्ट भ्रष्ट होकर ध्वंसावशेषों और धूल धक्कड़ में परिणत हो गया है। अब यह नगर युद्ध के लिये अपराधी व्यक्तियों पर जगत्प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय मुकदमों के स्थान के रूप में परिवर्तित हो चुका था। वाह्य संसार के लिये नूरेनवर्ग सदा इसी रूप में प्रसिद्ध रहेगा।

नगर में एक भोजनालय अभी तक नष्ट भ्रष्ट होने से बचा रह गया था। लैनी अपने पुराने मित्र को यहीं लाया और उसे भली भांति खिलाया पिलाया। उसने एमिल से कहा कि वह मूल्यवान तैल चित्रों की खोज में है और स्ट्रेनडर्फ जाकर कर्ट से मिलने का इच्छुक है। सम्भव है कर्ट उस पुराने मतभेद को भूल कर

फिर से उसके साथ मित्रता स्थापित करने के लिये राज़ी हो जाए। अतीत काल में कर्ट के साथ उसकी गहरी मित्रता थी और इन दिनों जिस कटुता का समावेश हो गया है वह लैनी के मन को रह रह कर क्षुब्ध करती रहती है। एमिल का इस सम्बंध में क्या विचार है? क्या वह समझता है कि उसका भाई कर्ट पिछली बातों को भूल कर लैनी के साथ पुनः मित्रता स्थापित कर लेगा?

एमिल ने कहा कि वह निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता। पिछले दो वर्षों से उसे कर्ट का कोई पत्र नहीं मिला है। उसे यह भी नहीं मालूम कि बन्दी शिविर से उसकी रिहाई कब हुई। उसे केवल संयोग से ही यह बात ज्ञात हो गयी थी कि कर्ट स्टूबेनडर्फ लौट जाने के लिये उत्सुक है। जहां तक लैनी के साथ उसकी शत्रुता का सम्बंध है, सम्भव है इतने दिनों में वह कुछ मुलायम पड़ गया हो और पिछली बातें भूल जाने के लिये तयार हो। एमिल ने बताया कि कर्ट ने हिटलरी अभियान में अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी थी, उसने अपनी सारी प्रतिभा उसी ओर विनियोजित कर दी थी। किन्तु वह अभियान असफल होने के कारण वह कहीं का न रहा। और सबसे बड़ी बात यह है कि हिटलर की योजनाओं की असफलता के लिये लैनी बड भी बहुत दूर तक उत्तरदायी है; इस बात को कर्ट आजीवन न भूलेगा।

"मैं एक दूसरी बात सोच रहा हूं।" लैनी ने कहा, "कर्ट पोलों से घृणा करता है। और अब वह यह समझ गया होगा कि स्टूबेनडर्फ का स्वामित्व ऐसे व्यक्तियों के हाथ में चला गया है जो पोलों से भी अधिक घृणित हैं। वह एक कम्युनिस्ट देश में अपने बच्चों का लालनपालन कैसे करेगा? वह यह चाहेगा कि उसके बच्चे आदर्श जर्मन बनें। किन्तु कम्युनिस्ट लोग उन बच्चों को अपने पिता पर जासूसी करना सिखाएंगे। यह सब वह कैसे सहन करेगा?"

"मुझे नहीं मालूम।" एमिल ने स्वीकार किया। "यह उसके लिये आसान न होगा। उसके बड़े पुत्र के मस्तिष्क में नाजियों के विरुद्ध गम्भीर प्रतिक्रिया हुई है। वह इस समय पूर्वी बर्लिन के एक स्कूल में पढ़ रहा है। कर्ट अपने बच्चों को नियंत्रण में रखने का कितना ही प्रयत्न क्यों न करे सम्भवतः वह वातावरण के प्रभाव को रोक न सकेगा। मैं तो कभी कभी ऐसा सोचने लगता हूं कि कहीं

वह स्वयं कम्युनिस्ट न हो गया हो। हजारों नाज़ी इस समय केवल इस विचार से कम्युनिस्ट बन गए हैं कि इससे उन्हें अमरीकियों से प्रतिशोध लेने का अवसर प्राप्त होगा।"

"हे भगवान !" लैनी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। "मैं कर्ट के सम्बंध में इस प्रकार की कल्पना तक नहीं कर सकता।"

"इस प्राचीन योरोप में बहुत सी बातें ऐसी हुई हैं जिनकी कोई कल्पना तक न कर सकता था और मुझे आशंका है कि भविष्य में भी बहुत सी अनहोनी बातें होंगी।"

एमिल मेसनर ने जिस समय अपनी यह आशंका प्रकट की उसके स्वर में एक प्रकार के अवसाद का पुट था। उसने कहा कि अब उसे योरोप के भविष्य के सम्बंध में कोई आशा नहीं रही। उसकी आयु पचास से कुछ ही अधिक थी किन्तु उसके चेहरे पर चिन्ता थी गहरी रेखाएं अंकित हो चुकी थीं और उसकी भाव-भंगिमा गम्भीर हो गयी थी। लड़कपन में उसके सिर के बालों का रंग भूरा था किन्तु अब वह सफेद था। वह प्रशिया की रीति के अनुसार छोटे छोटे बाल रखने लगा था। और वह जो काला सूट पहने हुए था उसे देख कर ऐसा लगता था मानों वह बीस वर्ष पहले उसके पिता की अन्त्येष्टि क्रिया के समय खरीदा गया हो। यद्यपि ब्रश से उसे सावधानी के साथ साफ किया गया था तथापि कुहनियों के पास उसका रंग काले के स्थान पर हरा हो गया था। और सन् १९४६ में ऐसे जर्मन थोड़े से ही थे जो अच्छे कपड़े पहनते हों।

(१०)

लैनी ने "हिमलरी मुद्रा" की चर्चा उठाई।

"वह तो है ही।" एमिल ने कहा। यहां नूरेनबर्ग में जाली मुद्रा का व्यापार करने वाला एक अच्छा खासा चोर बाजार है। मेरे शिष्यों ने मुझे इसके सम्बन्ध में बताया है। उन्हें ये नकली नोट चलाने के लिये प्रलोभन दिया गया था। इस समय जर्मन युवकों के लिये यह पेशा बड़ा आकर्षक भी है क्यों कि शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ उनके सामने पेट भरने की समस्या भी है।"

लैनी ने कहा कि अमेरिका की सरकार में उसका एक मित्र है जो बच्चों को गुमराह करने वाले इस दल को पकड़ना चाहता है। क्या एमिल की यह धारणा है कि वह एक ऐसा साहसी बच्चा खोज सकता है जिसे ऐसा प्रलोभन दिया गया हो और जिसमें इतना साहस हो कि वह इन बदमाशों की शनाख्त कर सके? यदि वह ऐसा करेगा तो उसे पर्याप्त पुरस्कार मिलेगा और जीविका चलाने के लिये यह एक सम्मानीय मार्ग होगा। अवकाशप्राप्त जेनरल ने क्षण भर तक सोचा और फिर लैनी को वचन दिया कि वह ऐसे दो शिष्यों का नाम उसे दे देगा। लैनी ने उसे आश्वासन दिया कि यद्यपि उसकी यात्रा का उद्देश्य कुछ दूसरा ही है तथापि जर्मन युवकों के नैतिक पतन के प्रश्न पर भी उसके मनमें बड़ा कौतूहल है और इसलिये वह यह बेगार भुगतने के लिये तयार है। उसने कहा कि एमिल के एक शिष्य को लेकर वह स्टूबेनडर्फ जा सकता है बशर्ते कि शिष्य इसके लिये राज़ी हो और इस बात की भी पर्याप्त सम्भावना है कि जाली मुद्रा का व्यापार करने वाला गिरोह स्वयं उसे स्टूबेनडर्फ भेजने के लिये उत्सुक हो।

एमिल ने जर्मनों की नयी पीढ़ी के सम्बंध में जो बातें बतायीं उनमें लैनी को बड़ी दिलचस्पी थी। यह नयी पीढ़ी वर्त्तमान परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण रखती थी? लैनी ने यह मत प्रकट किया कि सम्भवतः प्रत्येक जर्मन युवक अपनी पितृभूमि, जो कई खण्डों में विभक्त हो चुकी थी, को फिर से एकरूप होते देखना चाहता होगा। किन्तु किस प्रकार? पूर्वी जर्मनी का पश्चिमी जर्मनी में विलयन होकर अथवा पश्चिमी जर्मनी का पूर्वी जर्मनी में विलयन हो कर? एमिल ने कहा कि जर्मन युवक इस समय इस प्रश्न पर शंकाशील हैं। यह ठीक है कि कम्यूनिस्टों ने हूणों की भाँति नृशंस व्यवहार किया है किन्तु उनका प्रचार कौशल अद्वितीय है।

"आप को यह समझ लेना चाहिये कि पिछले बारह वर्षों से जर्मन जनता ने पश्चिमी संसार के बारे में कुछ भी नहीं सुना। इस समय मैं जिन जर्मन युवकों को पढ़ा रहा हूँ उनके मस्तिष्क में स्वतंत्र समाज व्यवस्था की कोई कल्पना तक नहीं है। वे नहीं जानते कि एक ऐसा समाज भी हो सकता है जहां विचारों की पूर्ण

स्वाधीनता रहती है। वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर पाते कि किसी बात के दो पक्ष भी हो सकते हैं और दोनों पर निष्पक्ष रूप में विचार करके सत्यासत्य का निर्णय किया जा सकता है। यह परिकल्पना उनकी अभी तक की शिक्षा के ठीक विपरीत है। उन्हें तो यह बताया गया था कि उनके नेता जो कहें वह ध्रुवसत्य है। जो भी हो, ब्रिटिश और अमरीकियों का मामला रूसियों की तुलना में कहीं अधिक अच्छा है। किन्तु रूसी लोग प्रचार कार्य में बड़े निपुण हैं। उन्हें अपनी विचारधारा का प्रचार करने के अतिरिक्त और काम भी क्या है? इधर अमरीकी लोग इस दिशा में मौन धारण किये हुए बैठे हैं।"

लैनी ने समझाया कि उसकी सरकार का यह विश्वास है कि इस प्रकार का प्रचार उसकी परम्परा के अनुकूल नहीं है। वह समझती है कि सरकार को प्रचार की कौन कहे समाचार तक प्रसारित न करना चाहिये। उसके अनुसार यह कार्य व्यक्तिगत प्रतिष्ठानों का है।

"यदि वह यह नहीं चाहती कि पूर्वी जर्मनी एकदम लाल रंग में रंग जाय तो उसे अपनी यह धारणा बदलनी पड़ेगी। शायद वह इस बात को समझ भी गयी है। इसीलिये उसने भी अपना एक छोटा सा रेडियो स्टेशन यहां खोल लिया है, उसे "रिआस" कहते हैं।"

"मैंने उसके बारे में सुना है।" लैनी ने कहा "पहले यह बहुत सी टेलीफोन लाइनों का एक प्रसार-केन्द्र था। किन्तु अब एक हजार वाट का ट्रान्समिटर लगाकर उसे एक सामरिक लारी पर लाद कर रेडियो स्टेशन के रूप में परिवर्त्तित कर दिया गया है। उसे "रियास" कहते हैं—र से रेडियो।"

"वह अपने प्रोग्राम पूर्वी जर्मनी के लिये प्रसारित करता है किन्तु हम लोग यहां पश्चिमी जर्मनी में उसे बड़े चाव के साथ सुनते हैं। बात यह है कि इस समय जनता इतनी निर्धन हो गयी है कि वह अमरीकी पत्र-पत्रिकाएं अथवा पुस्तकें नहीं खरीद सकती, रेडियो पर समाचार सुनकर ही संतुष्ट हो जाती है। और इस समय जनता को सबसे अधिक आवश्यकता है समाचारों की—यह जानने की कि संसार में कहां क्या हो रहा है।"

(११)

वे लोग कुछ समय तक कर्ट की बातें करते रहे। इस बात पर विचार होता रहा कि वह पुरानी शत्रुता भूल कर लैनी के साथ पुनः मैत्री स्थापित करेगा या नहीं। एमिल ने कहा कि इस समय उसके भाई के सामने ग्रीक देवता हरक्यूलिस की भांति दो बातों में से एक को चुन लेने की समस्या है। प्रश्न है : वह गणतांत्रिक संसार को चुने या स्वयं कम्युनिस्ट होकर विरोधी दल में चला जाय।

"आप वह पुरानी कहावत तो जानते ही होंगे कि उग्र चिन्तन धाराएं अन्त में एक सी हो जाती हैं। इस समय ठीक वही हो रहा है। कर्ट अंगरेजों और अमरीकियों से घृणा करता है; कम्युनिस्ट भी उनसे घृणा करते हैं। और यह घृणा का तत्व ही बहुत से जर्मनों को कम्युनिस्टों के साथ मिल जाने के लिये प्रोत्साहित कर रहा है। मैं अपने शिष्यों में इसी प्रकार की चिन्तनधारा देख रहा हूँ।

"किन्तु कर्ट तो एक प्रौढ़ व्यक्ति है। वह यह तो समझता ही होगा कि रूसियों का प्रचार एक बात है और उनके कार्य एकदम दूसरी बात। वे कहते कुछ हैं और करते कुछ।"

"यह बात तो बहुत से ईसाइयों पर भी लागू पड़ती है। किन्तु इसके बावजूद बहुत से लोग ईसाई धर्म में दीक्षित होते रहते हैं। अब कर्ट का घर पौलैण्ड में हो गया है और यह स्पष्ट है कि वह वहां रहते हुए बहुत समय तक कम्युनिस्टों से घृणा नहीं कर सकता। यदि वह उनके मतमें दीक्षित हो जाता है अथवा दीक्षित हो जाने का बहाना करता है तो उसे फिर से यश और धन की प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति में उसे मास्को में आमंत्रित किया जायगा और एक महान कलाकार के रूप में उसका स्वागत होगा। जर्मनों में कम्युनिस्ट विचारधारा फैलाने के लिये उसका नाम काफी महत्वपूर्ण होगा। मुझे तो बड़ी चिन्ता हो रही है कि कर्ट कहीं सचमुच कम्युनिस्ट न हो जाय। मैं प्रातःकाल समाचार पत्र उठाते ही इस प्रकार के समाचार की आशंका से कांप उठता हूँ।"

लैनी ने आश्वासन दिया कि वह इस प्रकार के सर्वनाश को रोकने का भरसक

प्रयत्न करेगा और उसे जो सफलता इस दिशा में प्राप्त होगी उसकी सूचना एमिल को देगा। उसने एमिल को कुछ खाद्य पदार्थ स्वीकार करने के लिये राज़ी कर लिया और दूसरे दिन प्रातःकाल बर्लिन लौट कर अपनी यात्रा की दूसरी तथा अपेक्षाकृत अधिक कठिन मंजिल के लिये तयार होने लगा।

अध्याय ४

● समस्याओं का जाल ●

(१)

बड-अलिन्ग परिवार का लाड़ला पुत्र लैनी बड सैवाय होटल में लौट आया और अपने कमरे से मार्शल सोकोलोव्स्की के कार्यालय को टेलीफोन किया। उसे उत्तर मिला कि उसका अनुमति-पत्र तयार हो गया है और कार्यालय में पड़ा हुआ है। जिस युवक अधिकारी से लैनी बातें कर रहा था उसके स्वर में श्रद्धा-मिश्रित भय का पुट था। लैनी ने टेलीफोन रख दिया और मार्शल के कार्यालय से अपना अनुमति-पत्र लेने के लिये गया। उसे एक रसीद पर हस्ताक्षर करना पड़ा। अनुमति पत्र एक लम्बे चौड़े कागज पर भांति भांति की खानापूर्ति तथा विभिन्न हस्ताक्षरों से युक्त था और उसके एक छोर पर अत्यंत शीघ्रतापूर्वक तीन चार पंक्तियां लिखी हुई थीं और उनके नीचे एक लम्बा हस्ताक्षर था। लैनी ने अनुमान लगाया कि यह हस्ताक्षर सम्भवतः सोकोलोव्स्की का था। लैनी उस लिखावट को पढ़ न सकता था और उसके मन में विचार आया कि यह लिखावट उसके मृत्युदण्ड का आदेश भी हो सकती है। किन्तु उसने विश्वास के साथ अनुमति पत्र स्वीकार कर लिया और यह आशा की कि सोवियत सैनिक भी इस कागजके टुकड़े पर वैसी ही श्रद्धा प्रदर्शित करेंगे जैसी कि उसने की है। उसका अनुमान ठीक निकला।

पोलिश सीमान्त पर पहुंच कर लैनी ने अपना पासपोर्ट दिखाया। पासपोर्ट के साथ साथ उसने अपनी आह्लाददायिनी मुस्कान और सिगरेट के डब्बे का प्रदर्शन भी किया। उसे सीमान्त पर किसी प्रकार की कठिनाई न हुई और भीतर जाने की अनुमति प्राप्त हो गयी। वह ओडर नदी के किनारे किनारे दक्षिण पूर्व की ओर बढ़ने लगा। उसे प्राचीन युद्ध-ध्वंस्त नगर ब्रेसलाउ, जो अब ब्रोकलाड के पोलिश नाम से प्रसिद्ध हो गया था, तक पहुंचने के लिये डेढ़ सौ

मील की यात्रा करनी थी। समतल मैदान पर तेज़ बर्फीली हवा बह रही थी और वर्षा भी शुरू हो गयी थी। लैनी के पास एक गर्म ओवरकोट था और जिसे वह पहने हुए था। वह इस निर्जन प्रदेश की ओर विचारपूर्ण दृष्टि से ताक रहा था; दो चार मैले कुचैले व्यक्ति सड़क पर अपने थके हुए पैर घसीटते हुए पश्चिम की ओर जा रहे थे। इन्हें देख कर उसका हृदय भर आया। वह फिर से विश्वशान्ति का कट्टर समर्थक बन गया। किन्तु इस बार वह उतना आशापूर्ण न था।

वह रास्ते भर कर्ट मेसनर की बात सोचता रहा था और जब उसका मस्तिष्क कर्ट के विचार से खाली होता उसमें यह समस्या उत्पन्न हो जाती कि उसे अपनी गाड़ी के लिये पेट्रोल कहाँ मिलेगा! मोरीसन ने उसे पहले ही आगाह कर दिया था कि सम्भवतः उसकी यात्रा लम्बी होगी और वह अपनी मोटर में पेट्रोल पूरा रखे। किन्तु पेट्रोल चोर बाजार में ही प्राप्य था और उसका मूल्य भी काफी ऊँचा था। परन्तु लैनी बड इस समय अमेरिका के प्रतिनिधि के रूपमें काम कर रहा था और यह बात पहले से ही निश्चत थी कि अमेरिका को इस युद्ध-ध्वंस्त योरोप में पैसा पानी की भाँति बहाना पड़ेगा। इसके लिये कई कारण थे। अमेरिका ने शत्रु को पूर्ण रूप में आत्म समर्पण करने के लिये वाध्य कर दिया था और इसके बाद उसने देखा कि अब पराभूत शत्रु स्वयं उसके कन्धों का भार वन बैठा है! एक मजेदार बात यह थी कि अमेरिका इस पराभूत शत्रु को भोजन वस्त्र देकर जीवित रखने के लिये वाध्य था, दूसरो ओर शत्रु इस उदारता के बावजूद उससे घृणा कर रहा था। और अमेरिका के लिये कोई दूसरा उपाय भी न था क्योंकि पराभूत जर्मनी को ज्यों का त्यों छोड़ देने का अर्थ था उसे कम्युनिस्ट बना डालना!

(३)

ब्रोकलाउ किसी समय एक अच्छा खासा नगर था और लैनी स्टूबेनडर्फ जाते समय यहाँ गाड़ी बदला करता था। किन्तु इस बार लैनी अपने इस सुपरिचित मार्ग पर मोटर द्वारा ही बढ़ा। रास्ते में दोनों ओर खदानें पड़ती थीं जो युद्धकाल में नष्ट भ्रष्ट हो चुकी थीं! कुछ आगे बढ़कर उसे वह स्थान दिखाई दिया जो आज प्रत्येक पुरातत्व प्रेमी की आँखों में आँसू ले आता था। एक समय यह

स्थापत्यकला का एक गौरवपूर्ण स्थल था किन्तु अब वह थोड़े से ध्वंसावशेषों और ईंट पत्थरों के मलवे के रूप में परिवर्तित हो गया था। स्वलास स्टूबेनडर्फ अब पहले जैसा न रह गया था। लैनी ने चौदह वर्ष की आयु में इसे जब पहले पहल देखा था तब वह इसके भव्य सौन्दर्य को लक्ष्य करके अवाक रह गया था। क्रिसमस का समय था। मकानों की छतों पर बर्फ की चादर बिछी हुई थी। उस समय आस पास के पर्वतों पर प्रातःकालीन सूर्य की चमक और संध्या की लालिमा देख कर वह अवाक रह गया था। यहां उसने अपने जीवन के सुन्दरतम् क्षण बिताए थे ; अच्छा से अच्छा सुस्वादु भोजन किया था, आनन्ददायक खेल खेले थे और चारों ओर प्रेम और सहृदयताके दर्शन किये थे। और अब उसे एक दूसरा दृश्य दिखाई दे रहा था। तीन चार मजदूर कुदाल और फावड़े लेकर ध्वंस्त मकानों का मलवा उठा रहे थे। यह मलवा दूसरे मकान बनाने के काम में आयेगा। पुरातत्ववेत्ताओं के लिये इस प्रकार के दृश्य एकदम अपरिचित नहीं होते।

एक समय स्टूबेनडर्फ एक सुन्दर और सुरम्य ग्राम था। किन्तु अब वहाँ एक भी समूची इमारत न रह गयी थी। लोग जिन मकानों में वास कर रहे थे उनमें अधिकांश की छतें अधूरी थीं और खुले हुए भाग को कनवास से ढक दिया गया था। कुछ लोग शीघ्रतापूर्वक बनायी गयी कोठरियों में रह रहे थे और प्रवेश द्वार पर टाट आदि लगा कर वर्षा से रक्षा कर ली गयी थी।

कर्ट की कुटीर प्रायः एक मील की दूरी पर थी। वह जिस स्थान में थी वह पश्चिमी जर्मनी में लौटकर उसने पहले अपने लिये कुछ खाद्य पदार्थों का संग्रह कर लिया क्योंकि युद्धध्वंस्त पोलैण्ड में क्या खाद्य प्राप्य होगा इसका कोई अनुमान लगाना सम्भव न था। इसके बाद वह पोलिश कान्सलेट के कार्यालय में गया। इस पोलिश कान्सलेट का कार्यालय पश्चिमी जर्मनी में ही था—गुप्त क्रिया शीलता के लिये ही कदाचित उसे पश्चिमी अंचल में रखा गया था। वहां एक बूढ़ा क्लर्क जिसके कपड़े लत्ते फटे पुराने थे और जिसके चेहरे पर दारिद्र्य की स्पष्ट छाप थी, घूरकर लैनी की ओर देखा। लैनीने तुरन्त एक पैकेट सिगरेट निकाल कर मेज पर रख दिया। "इन्हें आप ले लीजिये।" उसने मुस्कराते हुए कहा और बूढ़े क्लर्क ने तुरन्त पैकेट को अपनी जेब के हवाले किया।

लैनी ने नम्रतापूर्वक कहा कि वह एक अमरीकी कला-विशेषज्ञ है और कुछ तैल चित्रों की खोज में पोलैण्ड की यात्रा करना चाहता है। वह अपने पासपोर्ट पर "प्रवेश पत्र" चाहता है। उसका विचार पोलैण्ड के उस नगर की यात्रा करने का है जो पहले स्टुबेनडर्फ के नाम से प्रसिद्ध था किन्तु अब जिसका नाम बदलकर स्टील्सज़क्ज़ कर दिया गया था। जब लैनी को आवश्यक "प्रवेश-पत्र" मिल गया और उस पर नियमानुसार सील आदि लगा दी गयी तब उसने उस वृद्ध कर्मचारी से पूछा कि उसे पोलिश मुद्रा विनिमय प्राप्त करने के लिये कहां जाना चाहिये। उसने तुरन्त सबसे समीप पड़नेवाले चोर बाजार का पता बता दिया। लैनी ने उसे इस जानकारी के लिये धन्यवाद दिया, हाथ मिलाया और चाकलेट का एक पैकेट देकर बिदा ली।

चोर बाजार में आकर लैनी ने पोलिश मुद्रा "ज्लाटी" की पूछताछ की। उसे भाव बताया गया किन्तु उसने आपत्ति की कि यह भाव बहुत ऊँचा है। मोल तोल हुआ और भाव दस प्रतिशत कम हो गया। उसने अपने सारे डालर नहीं बदले क्योंकि वह जानता था कि अमरीकी डालर कहीं भी स्वीकार कर लिये जायेंगे। यद्यपि यह बात कानूनके विरुद्ध थी तथापि यह गैर कानूनीपन अमरीकी डालरों को और भी अधिक मूल्यवान बना देता था।

लैनी अपना कुछ दुर्लभ खाद्य मान्क के घर पर ले गया और वहां उन लोगों के साथ भोजन किया। वह रात के समय यात्रा न करना चाहता था। उसका विचार था कि वह दिनके समय ही यात्रा करे और सीधे स्टूबेनडर्फ (वह अब भी इस नगर को इसी नाम से पुकारता था, रूसियों द्वारा दिये गए नये नाम से नहीं) की ओर जाए। भोजन करते हुए मान्क ने लैनी को उन दो जर्मन सेनापतियों की कहानी बतायी जिन्होंने मंजिल के समीप पहुंचकर अपने घोड़े बदलने मूर्खता की थी। लैनी और मान्क ने कर्ट के सम्बन्ध में भी बातें की। मान्क का कर्ट के साथ परिचय न था किन्तु उसने उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ सुन रखा था। मान्क ने यह मत प्रदर्शित किया कि कर्ट के हृदय में भी वही द्वन्द्व चल रहा होगा जो इस समय केन्द्रीय योरोप के लाखों करोड़ों व्यक्तियों के हृदय में चल रहा है।

(२)

युद्ध समाप्त होने पर विजेता राष्ट्रों के बीच जो समझौता हुआ था उसके अनुसार बर्लिन के चारों क्षेत्रों में मुक्त यातायात कायम रखने का निश्चय किया गया था। बर्लिन के हजारों व्यक्ति ऐसे थे जो नगर के पश्चिमी अंचल में रहते थे और पूर्वी अञ्चल में काम करते थे अथवा पूर्वी अंचल में रहते थे और काम के लिये पश्चिमी अंचल में आते थे। ये लोग नगर के एक भाग से दूसरे भाग की यात्रा रेल द्वारा, बाइसिकिल द्वारा अथवा पैदल भी किया करते थे। रोकटोक और पूछताछ तो तब होती थी जब कोई बर्लिन नगर को छोड़कर वास्तविक रूस की सीमा को पार करता था। किन्तु लैनी के पास वह शानदार अनुमति पत्र था। इसके अतिरिक्त उसका सौम्य व्यक्तित्व और दो चार रूसी शब्द जो उसने रूस की यात्रा के समय सीख लिये थे भी उसके सहायक थे।

उसका रास्ता पूर्वकी ओर पोलैण्ड के उस नये सीमान्त की ओर सीधा जाता था जो फ्रैन्क फर्ट-अन डेर ओडर के समीप था। जिस मोटर में वह यात्रा कर रहा था वह एक जर्मन माडेल था और युद्ध काल में बुरी तरह घिस चुका था। उसकी मरम्मत स्त्री-मजदूरों द्वारा हुई थी। रास्ते के दोनों ओर सब कुछ रूसी तोपों द्वारा नष्ट भ्रष्ट हो चुका था और मरम्मत का कार्य भी बड़ी लापरवाही के साथ किया गया प्रतीत होता था। ध्वस्त मकानोंके मलबे से किसी प्रकार छोटी मोटी झोपड़ियां बना कर किसान लोग उनमें निवास कर रहे थे। घोड़े बहुत कम बचे थे और इसलिये अधिकांश किसानों को अपने हलों में अपने परिवार के सदस्यों को ही जोतना पड़ता था। कुछ किसान हलों के स्थान पर फावड़े से उतनी भूमि किसी प्रकार खोद लेते थे जितनी उन्हें जीवित रखने लायक फसल के लिये अनिवार्य रूप में आवश्यक होती थी। न जाने कितनी शताब्दियों से ये बेचारे अपनी भूमि को सजाने संवारने में लगे हुए थे किन्तु प्रत्येक बार युद्ध की विभीषिका उनके सारे परिश्रम को विफल कर देती थी और अब तो ऐसी स्थिति आ गयी थी कि उनकी आत्मा एकदम विजड़ित हो उठी थी। कमसे कम लैनी को ऐसा ही प्रतीत हो रहा था।

कर्ट की कुटीर प्रायः एक मील की दूरी पर थी। वह जिस स्थान पर थी वह

एक समय ग्राफ की जायदाद के अन्तर्गत पड़ता था। लैनी रास्ते से भली भांति परिचित था और इसलिये बिना किसी द्विधा के चल पड़ा। वर्षा बन्द हो गयी थी किन्तु रास्ते में कीचड़ था और मोटर सावधानी के साथ चलाने की आवश्यकता थी। इस जंगल में भी युद्ध के समय बमबाजी हुई थी क्योंकि अधिकांश पेड़ कटे हुए थे। किन्तु ध्वंस्त पेड़ों की लकड़ियां कहीं भी न दिखाई देती थीं। लोग इन्हें आग जलाने के काम में लाने के लिये उठा ले गये थे। ज्यों ज्यों लैनी कर्ट के मकान के पास आता जाता था त्यों-त्यों किसी अज्ञात आशंका के कारण उसका हृदय बैठा जाता था। शीघ्र ही उसने देखा कि उसकी आशंका निराधार न थी। उस मकान के दो भाग थे—एक बड़ा और एक छोटा और दोनों ईंट के काले काले ध्वंसावशेषों के में परिणत हो गए थे। बमबाजी से नष्ट भ्रष्ट होने के बाद मकान का सामान भी लोग लूट ले गए थे। आस पास लम्बी घास उग आई थी जो कमसे कम दो वर्ष पुरानी प्रतीत होती थी। इस दुखद दृश्य को देखकर लैनी कांप उठा।

वह कर्ट के संगीत-गृह के अन्दर घुसा। यह उसके लिये अत्यन्त बहुमूल्य स्मृतियों का आगार था। उसने यहां पर घण्टों तक विशुद्ध आनन्द का अनुभव किया था। बाहर नष्ट भ्रष्ट सीढ़ियों पर खड़ा होकर वह उस जंगली घास को देखने लगा जो चारों ओर अगाध रूप में उग रही थी। और अचानक उसकी दृष्टि एक ऐसी वस्तु पर थी जिसने उसकी स्मृतियों को जगाकर उसके हृदय में अपार कष्ट की सृष्टि कर दी। सामने घास पर एक लम्बा पतला और टेढ़ा मेढ़ा तार पड़ा हुआ था—उस महान कलाकार के पियानो का एकमात्र अवशिष्ट चिन्ह! जिस पियानों से किसी समय बीथोवेन के "एवैसनाटा" का सुमधुर संगीत झन्कृत होकर लैनी को आत्महारा अवस्था में पहुंचा देता था और उसकी आत्मा को एक अचिन्तीय आनन्दका रसास्वादन करा देता था उसका बस यही एक चिन्ह रह गया था !!

लैनी की आखों में आंसू भर आए। किन्तु उसने अपने आप को संयत कर लिया। अब उसने समस्या के व्यावहारिक पक्षपर विचार करना शुरू किया। कर्ट मेसनर अथवा उसके किसी साथी, जो अभी तक जीवित रह गया हो, का पता कैसे

लगाया जाय ? वह इस विचार में निमग्न ही था कि सामने जंगल में उसे कुल्हाड़ी चलानेका शब्द सुनाई पड़ा। वह तुरन्त अपनी मोटर पर सवार होकर उस ओर चल पड़ा जिधर से कुल्हाड़ी का शब्द आ रहा था। वहां पहुँच कर उसने देखा कि एक पोल मजदूर काम कर रहा है। वह वृद्ध था—युद्ध में सदा युवक और मध्यवयस्क लोग ही मरते हैं और बच्चे तथा बूढ़े बच जाते हैं।

वह वृद्ध मजदूर टूटी फूटी जर्मन बोल लेता था। जब इसे लैनी ने अपना परिचय दिया तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। वह अपना काम रोककर सुन्दर अतीत के दिनों की बातें करने के लिये उत्सुक हो उठा। लैनी ने उससे पूछा कि पुराने परिचितों में कौन कौन जीवित रह गया है तो उसने एक पोलिश स्कूल मास्टर का नाम बताया। यह व्यक्ति काफी सुसंस्कृत था और लैनी कर्ट के घर पर इससे मिल चुका था। लकड़हारे ने कहा कि वह इस ग्राम में ही रहता है और अमुक स्थान पर उसका पता लगाया जा सकता है। यह जानकारी प्राप्त करके लैनी ने लकड़हारे से बिदा ली। किन्तु जाने के पूर्व वह उसे सिगरेटों का एक डब्बा देना नहीं भूला।

(४)

ग्राम में वापस आकर लैनी को रात्रावास की चिन्ता हुई। वह ग्राम की मुख्य सड़कपर चला। उसे स्मरण हो रहा था कि उसने इस सड़क पर एक छोटा सा होटल देखा था। किन्तु समीप आकर उसने देखा कि अब उसका आधा भाग ही बच रहा है। उसका साइनबोर्ड भी जर्मन के स्थानपर पोलिश भाषा में हो गया था और उसकी लिखावट भी बड़ी भद्दी थी। उसने होटल के अन्दर प्रवेश किया।

होटल अब भी चालू था। पिछवाड़े में बिना तराशी हुई लकड़ियों से एक काम चलाऊ कमरा बना लिया गया था। कवि की सी दृष्टि रखनेवालों को कदाचित् यह अकृत्रिमत्ता सुन्दर लगे! होटल की मालकिन एक अवसादग्रस्त मुखमुद्रावाली स्त्री थी जो कदाचित विधवा थी। वह एक सम्पन्न ग्राहक को अन्दर आते हुए देख कर इतनी उत्तेजित हो उठी कि टूटी फूटी जर्मन में न जाने क्या क्या बकने लगी। उसने कहा कि उसके पास घर में पकायी हुई बड़ी सुस्वादु रोटियां हैं। किन्तु

मक्खन नहीं है। हां, मक्खन के स्थान पर छेना वह दे सकती है। उसने यह भी कहा कि वह तीन सुन्दर अण्डों से अत्यन्त रुचिकर आमलेट तयार कर सकती है। लैनी ने संक्षेप में कहा—"अच्छा वही सही।" और एक कोने में अपनी कुर्सी खींच कर बैठ गया।

उसे यह चेतावनी दे दी गयी थी कि इस युद्ध ध्वंस्त देश में जल न पीये। उसने पेय पदार्थ से भरी हुई एक बोतल सब समय अपने साथ रखने का अभ्यास बना लिया था। शीघ्र ही होटल की मालकिन रोटी और छेना ले आयी और लैनी ने आनन्दपूर्वक खाना शुरू किया। आमलेट आने में देर थी। तब तक वह अपनी भावी योजनाओं पर विचार करने लगा। उसने मन ही मन विचार किया कि वह होटल की मालकिन से उस स्कूल मास्टर का पता ठिकाना पूछेगा। वह सोच रहा था : यह स्कूल मास्टर एक ईमानदार व्यक्ति है। यदि मैं उससे कहूँगा कि किसी ने मुझे ठगकर एक जाली नोट दे दिया है तो वह अवश्य उस बदमाश पर बिगड़ उठेगा और उसे दण्डित होते देखना चाहेगा। उत्तेजित होकर वह हिमलरी मुद्रा की चर्चा छेड़ देगा और सम्भवतः इस काले व्यापार से संबन्धित व्यक्तियों की ओर संकेत करेगा।

हर प्रकार की सम्भावनाओं के लिये तयार रहना लैनी का पेशा था और उसका सक्रिय मस्तिष्क काल्पनिक परिस्थितियों तथा वार्त्तालापों का अनुमान करके अपना मार्ग निश्चित करता रहता था।

(५)

दार्शनिक आदर्शवाद के नाम से एक विचारधारा विख्यात है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस के दार्शनिक प्लैटो से हुई थी। जर्मनी में यह हेगेल के माध्यम से आयी और ब्रिटेन में बिशप बर्कले के माध्यम से। अमेरिका में इसने एमर्सन तथा अन्य दार्शनिकों को प्रभावित किया। इन दार्शनिकों का कहना है कि अन्तिम सत्य मन है और घटना अथवा वस्तु की अपेक्षा विचार ही अधिक वास्तविक है। कुछ चिन्तकों ने इस विचारधारा को सीमान्त तक पहुंचा दिया है। उदाहरण के लिये अमेरिका के न्यूइङ्गलैण्ड नामक प्रान्त की विख्यात महिला दार्शनिक मेरी बेकर एडी ने लैनी से मुलाकात होने पर यह कहा होता कि उसका मस्तिष्क ही

भविष्य में घटित होने वाली उन घटनाओं के लिये उत्तरदायी है जिनका वह चिन्तन मनन किया करता है। संक्षेप में इस सिद्धान्त का अर्थ केवल इतना ही है कि विचार वस्तु अथवा घटना का जनक होता है। यदि यह सिद्धान्त सच होता तो संसार की वर्त्तमान स्थिति और प्रकृति का एक सरल स्पष्टीकरण प्राप्त हो जाता।

जो भी हो, इस समय जो कुछ हुआ वह इस प्रकार है। होटल का दरवाज़ा खुला और एक व्यक्ति अन्दर आया। लैनी ने देखा कि वह एक छोटे कद का युवा पुरुष है, ग्राम के अन्य व्यक्तियों की भांति उसके कपड़े-लत्ते भी काफी मैले-कुचैले और भीगे-भीगे से हैं मानों वह वर्षा में भीगता हुआ आया हो। होटल के कमरे में कम से कम छै खाली कुर्सियां पड़ी हुई थीं। और वह किसी भी कुर्सी पर बैठ सकता था। किन्तु वह सीधे लैनी की कुर्सी के पास आया और बगल की मेज़ पर बैठ गया।

उसने पोलिश भाषा में बात-चीत शुरू की किन्तु लैनी ने सिर हिला कर संकेत किया कि वह कुछ भी नहीं समझ पा रहा। इस पर वह जर्मन में बोलने लगा।

लैनी को बात-चीत करने के लिये एक व्यक्ति पाकर प्रसन्नता हुई। वह स्वभाव से ही सामाजिक मनोवृत्ति का था। इस ग्राम के लोगों के सम्बन्ध में तो उसे विशेष कौतूहल था क्योंकि वह बचपन से ही इस स्थान से परिचित था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि युद्ध के कारण थोड़े से समय में ही उसका इतना बड़ा रूपान्तर कैसे हो गया। लैनी ने वार्त्तालाप शुरू करने के उद्देश्य से कहा कि मौसम बहुत बुरा है। फिर उसने आगन्तुक के व्यापार के सम्बन्ध में जिज्ञासा की। उत्तर मिला कि वह भी मौसम की भांति बुरा ही है। आगन्तुक बातें तो जर्मन भाषा में कर रहा था किन्तु उसका स्वर एक विदेशी जैसा था। लैनी उसकी जाति के सम्बन्ध में ठीक ठीक निश्चय न कर पा रहा था।

होटल की मालकिन आयी और आगन्तुक ने भी अपने लिये रोटी तथा छेना मंगाया। इसी बीच में लैनी का आमलेट आ गया। कदाचित लैनी की सम्पन्नता का यह प्रमाण पाकर आगन्तुक और भी प्रभावित हुआ। उसने प्रश्न किया, "क्या आप अमरीकी हैं?" लैनी ने स्वीकार किया कि वह अमरीकी है। इस पर

आगन्तुक ने अपनी रोटी खाते खाते लैनी से एक प्रश्न पूछा जिसे सुन कर उसका हृदय आनन्द से नाच उठा।

"महाशय, क्या आपको अमरीकी मुद्रा की आवश्यकता है?"

लैनी के चेहरे पर उत्तेजना का कोई भाव न आने पाया। उसने शान्त कण्ठ से ही उत्तर दिया—"अवश्य, अमरीकी मुद्रा की किसे आवश्यकता नहीं है?"

"मेरे पास थोड़ी सी है। इस दरिद्र देश में उसे बेचना कठिन है। आप ले लें तो मैं अच्छा बट्टा आपको दे सकता हूं। बदले में आप मुझे पोलिश मुद्रा दे दीजिये।"

"आपको यह अमरीकी मुद्रा कहां मिली?" लैनी ने प्रश्न किया क्योंकि वह आवश्यकता से अधिक तत्परता दिखाकर आगन्तुक के मन में संदेह की सृष्टि न करना चाहता था।

"अमेरिका से मेरा एक चचेरा भाई आया है। उसे यहां आकर अपने व्यापार के लिये एक मोटर की आवश्यकता का अनुभव हो रहा था। मैंने उसे अपनी गाड़ी बेच दी और बदले में उसने मुझे ये अमरीकी डालर दे दिये। ये उसे बर्लिन बैंक से मिले थे।"

"क्या आपके भाई अमरीकी हैं?" लैनी ने प्रश्न किया। आगन्तुक ने स्वीकृतसूचक रूप में सिर हिलाया। यदि सरकारी अधिकारियों को पता चल गया कि मेरे पास अमरीकी मुद्रा है तो वे मुझ से छीन लेंगे। मुझे इसको खर्च करने के लिये अमरीकी क्षेत्र में जाना पड़ेगा और यह मेरे लिए एक दुरूह कार्य होगा क्योंकि मैं बाल-बच्चेदार आदमी हूँ। आप इसे ले लें; मैं अच्छा बट्टा दूंगा।"

"क्या आपके पास नमूना है?" लैनी ने प्रश्न किया।

"अवश्य।" उसने उत्तर दिया और अपने पुराने घिसे घिसाए कोट की जेब में हाथ डालकर एक बिना मोड़ा हुआ पाँच डालर का नोट बाहर निकाला। नोट पर अब्राहम लिन्कन की छाप थी।

लैनी ने ध्यानपूर्वक उसकी परीक्षा करने का बहाना किया। वह यह बात भली-भाँति जानता था कि बिना दुर्बीनके वह असली और नकली का अन्तर नहीं

पकड़ सकता। उसकी जेब में इस प्रकार की परीक्षा के लिये एक दुर्बीन पड़ी भी थी किन्तु वह उसे निकाल कर अपना खेल न बिगाड़ना चाहता था। परिस्थितियों से यह बात स्पष्ट थी कि यह नोट जाली है। दार्शमिक मेरी बेकर एड्डी तो शायद यही कहतीं कि लैनी के विचारों की तीव्रता और गहनता ने इस जाली नोट की सृष्टि कर दी किन्तु लैनी जानता था कि यह हिमलर की मुद्रा है।

"नोट तो ठीक ही लगता है।" कुछ देर बाद उसने कहा, "आपके पास कितनी अमरीकी मुद्रा है?"

"मेरे पास एक हजार डालर से कुछ अधिक है।" उस व्यक्ति ने धीरे से कहा, "किन्तु आप किसी अन्य व्यक्ति से इसकी चर्चा मत कीजियेगा!"

"सब पाँच पाँच डालर के नोट हैं?"

"बैंक से जैसे मिले वैसे ही हैं—अभी तक दस दस के बण्डल में ज्यों के त्यों लपेटे हुए हैं। मेरे भाई ने जान बूझ कर बड़े नोट नहीं लिये क्योंकि इनको भुनाना बड़ा कठिन हो जाता है।"

"किन्तु इस समय मेरे पास इतनी पोलिश मुद्रा नहीं है। मैं यात्रा पर उतना रुपया लेकर ही निकलता हूं जितना कि नितान्त रूप में आवश्यक होता है। अधिक रुपया लेकर चलना खतरनाक होता है। आप भी यह तो मानते ही होंगे?"

"आप ठीक कहते हैं। किन्तु कब तक पूरा रुपया मंगा सकते हैं?"

"मैं निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कह सकता।"

"यहाँ पर आप की साख होगी ही। उधार ले लीजिये किसी से।"

"पहले मैं ऐसा ही करता था। किन्तु अब वस्तु स्थिति बदल गयी है। लोग अमरीकियों का विश्वास नहीं करते। मुझे सोचने दीजिये।"

(६)

लैनी ने अपने मस्तिष्क में एक योजना बना ली थी किन्तु वह उसे इतनी जल्दी खोलना न चाहता था। दोनों समस्या पर विचार विनिमय करते रहे। लैनी ने उसे बताया कि वह एक कला-विशेषज्ञ है और यहां ऐसे तैलचित्र खरीदने के लिये आया है जो अमेरिका में लाभ के साथ बेचे जा सकें। यदि उसे

इस प्रकार के चित्र कहीं मिले तो वह उन्हें खरीद लेगा। किन्तु उनके मूल्य का भुगतान बर्लिन के अमरीकी क्षेत्र में होगा। क्या हर जजमान—उस व्यक्ति का यही नाम था—बता सकते हैं कि ऐसे तैलचित्र कहां मिल सकते हैं? हर जजमान ने कहा कि उसे इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं हैं किन्तु वह पता लगाने का प्रयत्न करेगा।

लैनी जानता था कि यदि यह व्यक्ति प्रयत्न भी करेगा तो भी कोई विशेष लाभ न होगा। इसीलिये उसने व्यर्थ में समय नष्ट करना उचित न समझा। उसने यह प्रस्ताव किया कि जजमान अपने एक हजार अमरीकी डालर उसे विश्वास पर दे दें और वह बर्लिन पहुँच कर किसी बैंक में उसके नाम में उतनी पोलिश मुद्रा जमा कर दे! यह प्रस्ताव सुनते ही वह व्यक्ति भयभीत हो उठा—और लैनी ने यह देखने के लिये ही ऐसा प्रस्ताव किया था।

जजमान ने अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया, "मैं एक दरिद्र व्यक्ति हूं। यह समझा जाता है कि मेरे पास पैसा बिल्कुल नहीं है। बैंक में इतनी बड़ी रकम मेरे नाम में जमा करने पर लोगों को संदेह होगा।·· मैं अपनी मोटर न बेचता किन्तु मुझे भय था कि कहीं वे लोग मुझे गरीब समझ कर मुझसे बलात् छीन लेने का प्रयत्न न करें।"

"छीनना होगा तो वे आपके भाई से भी छीन लेंगे।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। "मुझे ऐसा लगता है कि आप झंझट में पड़ गए हैं। मैं समझ नहीं पा रहा कि आप के लिये क्या करूं।"

यह केवल मोल तोल था जैसा कि सदा से होता आया है। और ज्यों ज्यों आप पूर्व की ओर बढ़ते जायेंगे आपको मोलतोल की वह प्रवृत्ति अधिकाधिक दिखाई देने लगेगी।

भोजन करते करते लैनी ने वार्त्ता जारी रखी। होटल की मालकिन आयी और उसका बिल चुकाने के लिये लैनी ने अपना बटुआ निकाला। उसमें साधारण परिमाण में पोलिश मुद्रा थी। लैनी ने दोनों बिल चुका दिये और जजमान ने कोई विशेष आपत्ति नहीं प्रकट की। जब होटल की मालकिन चली गयी तब लैनी ने कहा, "आपको थोड़ी बहुत सहायता देने के लिये मैं आपसे दो अमरीकी

नोट इसी समय खरीद लूंगा।" वह आवश्यकता से अधिक उदार बन कर संदेह न पैदा करना चाहता था इसलिये भाव पर काफी देर तक मोल तोल करता रहा। अन्त में पाँच पाँच डालर के दो अमरीकी नोटोंके लिये उसने सात सौ "ज्लाटी" दे दिये। उस समय ज्लाटी एक सेण्ट से भी नीचे था और भिन्न भिन्न चोर बाजारों में भिन्न भिन्न भाव प्राप्त होता था।

अचानक लैनी के मस्तिष्क में एक विचार घूम गया। उसने जजमान से कहा, "आप मेरे साथ बर्लिन क्यों नहीं चलते? वहाँ अमरीकी क्षेत्र में आप इस भाव पर मुझे जितने भी अमरीकी नोट देंगे मैं खरीद लूंगा और बदले में आपको पोलिश मुद्रा दे दूंगा। किसी को इस सौदे का पता न लगने पाएगा। आप अपने रुपये का जो चाहें कर सकते हैं–चाहे उसे छिपा कर रख दें चाहे किसी बैंक में जमा कर दें।"

"किन्तु महाशय, मैं बर्लिन कैसे जा सकता हूँ? उस व्यक्ति के स्वर में विस्मय का भाव था।

"आप मेरी मोटर में यात्रा कर सकते हैं! उसमें एक सीट खाली है। मैं आज रात को ही बर्लिन जाने का विचार कर रहा हूं।"

"किन्तु"—उसने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा। यह स्पष्ट था कि वह घबरा गया है। उसने पहले तो यह आपत्ति प्रकट की कि उसके कपड़े भींगे हुए हैं और उसे सर्दी लग रही है। किन्तु जब लैनी ने कहा कि गाड़ी में इसका कम्बल रखा हुआ है जिसे लपेट कर वह निश्चिन्त हो सकता है तब उसने कहा कि रात के समय यात्रा करना ठीक न होगा। लैनी ने कहा कि सड़कें ठीक हैं और किसी प्रकार की असुविधा न होगी।

"किन्तु महाशय, सारे नोट हमारे पास नहीं हैं। मुझे घर जाकर लाना पड़ेगा।"

"कोई हर्ज नहीं। मेरी गाड़ी में बैठ जाइये। हम लोग पहले आप के घर चलेंगे और फिर वहाँ से बर्लिन के लिये रवाना हो जाएगें।"

जजमान को अपना निश्चय करने में कुछ समय लगा। किन्तु अंत में काफी सोच विचार के बाद वह राजी हो गया और आकर लैनी की गाड़ी में बैठ गया

थोड़ी देर बाद वे एक पुरानी झोपड़ी में पहुंचे। जजमान चुपचाप अंदर चला गया। उसने अपने परिवार के सम्बन्ध में कुछ न कहा। लैनी भी मन ही मन समझ गया कि परिवार की बातें काल्पनिक थीं। कुछ देर बाद वह व्यक्ति बाहर आया। उसके हाथों में नोटों के दो पुलिन्दे थे।

लैनी ने कहा, "महाशय, अब मैं जरा साफ साफ बातें करना चाहता हूं। कृपया बुरा न मानें। आप मेरे लिये एक अपरिचित व्यक्ति हैं। एक पूर्णतया अपरिचित व्यक्ति को अपनी गाड़ी में बैठा कर रात्रि के समय यात्रा करना एक खतरनाक बात है। सम्भव है रास्ते में आप मुझे पिस्तौल दिखाकर मेरी गाड़ी छीन लें अथवा मुझे गोली मारदें और मेरा माल असबाब लेकर चम्पत हो जायं।"

"नहीं नहीं, मिस्टर बड। मैं ऐसा कोई काम नहीं कर सकता। मैं एक ईमानदार आदमी हूं।"

"मैं ऐसी ही आशा करता हूं। किन्तु इसका मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है। मैं आपको अपनी गाड़ी में बैठा कर यात्रा करने का साहस तभी कर सकता हूं जब आप मुझे अपनी तलाशी ले लेने दें। बदले में आप भी मेरी तलाशी ले सकते हैं क्यों कि मैं भी आपके लिये पूर्णतया अपरिचित हूं।"

"नहीं, नहीं महाशय। मैं जानता हूं कि आप एक भद्र व्यक्ति हैं—एक अमरीकी सज्जन हैं, चोर डाकू नहीं।"

"मैं अपने आप को भी तलाशी के लिये प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकि आप किसी प्रकार के अपमान का अनुभव न करें। परिस्थितियों के कारण यह आवश्यक हो गया है।"

फलस्वरूप वह व्यक्ति तलाशी के लिये राज़ी हो गया और लैनी ने सावधानी के साथ उसकी तलाशी ली। उसने उसके गीले कोट और पैण्ट की जेबों में हाथ डालकर ही संतोष न किया बल्कि बगल की भी तलाशी ली क्यों कि उसे यह बात मालूम थी कि यहां भी हथियार छिपाए जा सकते हैं। जहाँ तक नोट के बण्डलों का प्रश्न था वे बंधे हुए थे और यह लैनी का काम था कि रास्ते में वे उसी प्रकार बंधे हुए न रहने पावें। लैनी ने अपना काम समाप्त करने के बाद उस व्यक्ति को अपनी तलाशी लेने के लिये कहा किन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। अन्त में

दोनों मोटर में आकर बैठ गए और लैनी ने उसे अपना कम्बल दे दिया। गाड़ी अपने गंतव्य पथ पर रवाना हो गयी।

(७)

पथ लम्बा था—युद्ध-ध्वंस्त सड़कों पर सात आठ घण्टे की यात्रा थी। किन्तु यह उस व्यक्ति के लिये एक साधारण बात थी जिसने पाँच दिन के अन्दर अमेरिका के एक छोर से दूसरे छोर की यात्रा कर ली हो। उसे मन ही मन इस बात से प्रसन्नता हो रही थी कि रात के समय इस अभागे देश में जहाँ सदियों से मनुष्य मनुष्य का शिकार करता आया है और जहां अब खटमल, पिस्सू और मक्खियाँ मनुष्य का शिकार कर रही हैं, किसी अटपटे स्थान में सोने का प्रयत्न करने की अपेक्षा उसने यात्रा करने का निश्चय किया। उसकी गाड़ी साफ सुथरी थी और उसे नींद भी न सता रही थी। उसने ब्रोक्काऊ में चोर बाजार के भयानक मूल्य पर कुछ पेट्रोल खरीद लिया था और उसे आशा थी कि इस बार भी उसे वहीं पर कुछ और पेट्रोल प्राप्त हो जाएगा।

वह मन ही मन सोच रहा था कि वह इन सात आठ घंटों में हर जजमान के सम्बन्ध में कुछ अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा। यह तो स्पष्ट ही था कि वह हिमलरी मुद्रा को चलाने वाले गिरोह का सदस्य है। किन्तु वह किसकी ओर से यह काम कर रहा है—नाज़ियों की ओर से, कम्युनिस्टों की ओर से या साधारण गुण्डों की ओर से? उसने सोचा कि वह अपने सम्बन्ध में बातें करना शुरू करेगा और अमेरिका की समृद्धि तथा सौंदर्य की भव्य कहानियाँ सुना सुना कर इस व्यक्ति को आश्चर्य से अभिभूत कर देगा। इसके फलस्वरूप सम्भवतः वह उसे अपने सम्बन्ध में बातें करने के लिये प्रोत्साहित होगा। यदि वह झूठ बोलने का प्रयत्न करेगा तो लैनी उसके विरोधाभासों की ओर संकेत करके उसके मुंह से सत्य को उगलवा लेगा। यह भी सम्भव है कि वार्त्तालाप के तारतम्य में वह "सीधे रास्ते पर" आ जाय और सारी बातें बता दें। अन्यथा उसे गिरफ्तार करना पड़ेगा। जो भी हो लैनी ने यह निश्चय कर लिया कि उसका यह प्रयत्न असफल न रहने पाएगा।

खड-अलिन्ग परिवार का लाड़ला लैनी अपने आप को आकर्षक बनाना जानता था। यह कला उसने बचपन में अपनी मां के अन्दर देखी थी और बाद में उसने स्वयं इसका अभ्यास किया था। वह लोगों के चेहरों को देखकर उनके मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचारों को पढ़ने में पटु हो चुका था। इस समय वह अपने सहयात्री के मस्तिष्क को किसी न किसी चर्चा में व्यस्त रखने के लिये उत्सुक था ताकि उसे संदेह करने का अवसर न प्राप्त हो। राजनीति की चर्चा छेड़ना एक खतरनाक बात थी क्योंकि यह व्यक्ति नाजी भी हो सकता था और कम्युनिस्ट भी। किन्तु एक बात निश्चित थी। वह यह कि उसके मन में पैसे के लिये बहुत बड़ी दुर्बलता थी।

लैनी ने अपने पेशे के सम्बन्ध में बातें शुरू कीं। उसने बताया कि किस प्रकार स्पेन के एक अत्यन्त प्राचीन मकान में उसे कलाकार गोया का एक प्रसिद्ध चित्र मिल गया था। वह यह चित्र खरीद कर अमेरिका ले गया था और उसे वहां पचीस हजार डालर में बेचा था। उसने बताया कि किस प्रकार उसने जेनरल आफ स्टूबेनडर्फ की चाची से वान आइक का एक तैलचित्र खरीदा था और उसके बेचने पर दस प्रतिशत कमीशन के रूप में उसे एक बहुत बड़ी रकम प्राप्त हुई थी। उसने बताया कि किस प्रकार एक वायुयान दुर्घटना में पड़ कर उसकी दोनों टांगे टूट गयी थीं। उसने चीन में अपनी सद्य-विवाहिता पत्नी के साथ किस प्रकार यात्रा की थी, किस प्रकार योरोप में घूम घूम कर प्रसिद्ध चित्रों की खोज की थी। उसने अपने सहयात्री को अमेरिका के दक्षिणी पश्चिमी प्रदेश की सुन्दर सड़कों का हाल बताया जहाँ साठ सत्तर मील की गति से मोटर चलायी जा सकती है। सैकड़ों मील लम्बे रेगिस्तान पर सड़क एकदम तीर की भाँति सीधी चली गयी है और इसके बाद अचानक घूम कर एक घाटी में पहुंच गयी है जहां लाल पीली चट्टानों और सफेद तथा काले पत्थरों के संयोग से ऐसा दृश्य उपस्थित हो जाता है मानों आप किसी मध्ययुगीन हवेली के खण्डहरों को देख रहे हों।

"आश्चर्यजनक देश है अमेरिका" लैनी ने कहा, "आप वहीं क्यों नहीं आ जाते, हर जजमान ? वहाँ जीविकोपार्जन का प्रश्न कितना सरल है। और वहां कोई आतंक का वातावरण भी नहीं है जैसा कि इस देश में दिखाई देता है।"

हर जजमान ने कहा कि वह अमेरिका जा सके तो अत्यन्त प्रसन्न होगा। किन्तु उसने सुना है कि अमेरिका जाने के लिये आवश्यक अनुमति पत्र मिलना बड़ा कठिन है। लैनी ने कहा कि कुछ कठिनाई तो अवश्य है किन्तु यदि कोई प्रभावशाली मित्र हो तो अनुमति मिल सकती है।

लैनी अपने सहयात्री के प्रति बड़ी से बड़ी उदारता और सहानुभूति का परिचय दे रहा था। उसने इस बात की पूरी व्यवस्था कर दी कि हर जजमान उसके कम्बलके अन्दर आराम का उपभोग करे और उसे सर्दी न सतावे ; उसने उसे थकावट का अनुभव करने पर सो जाने का परामर्श भी दिया। जब गाड़ी ब्रोक्लाउ के पास पहुंची और लैनीने पेट्रोल खरीदा तो चोर बाजार के भयानक मूल्यों पर उसने एक मजाक किया। यह जजमान के लिये एक संकेत मात्रा था और लैनी को आशा थी कि अब वह भी चोर बाजार के रहस्यों पर कुछ कहेगा और इससे कुछ भेद की बातें मालूम होंगी। उसने दो एक बातें बतायीं भी किन्तु वे कोई विशेष महत्व की न थीं। धीरे धीरे लैनी ने समझ लिया कि उसका साथी देखने में सीधा सादा होने पर भी काफी सतर्क है और उसके मुंह से कोई महत्वपूर्ण बात निकलने की सम्भावना नहीं है। उसने अपने जन्म और जीवन के सम्बन्ध में कोई चर्चा न की। उसने अपनी उस गाड़ी की भी कोई बात न की जो उसने अपने रहस्यमय भाई के हाथ बेच दी थी! वह चुपचाप लैनी की बातें सुन रहा था और बीच बीच में प्रशंसात्मक स्वर से हाँ में हाँ मिला देता था। अपनी ओर से प्रशंसा तथा कृतज्ञता व्यक्त करने के अतिरिक्त वह पूर्णतया मौन था।

(८)

अंधकार क्रमशः घनीभूत होता जा रहा था। वर्षा फिर शुरू हो गयी थी और इस मौसम में मोटर चलाना दूभर हो रहा था। लैनी नींद को भगाने का प्रयत्न कर रहा था। कभी कभी कोई बड़ी सी लारी सामने की ओर से गरजती हुई आती और निकल जाती और उसके हेडलाइट का प्रकाश वर्षा की झड़ी के कारण अगणित कणों में खण्ड खण्ड होता हुआ प्रतीत होता। वे लोग अब ओडर नदी के समीप पहुंच गए थे और पूर्वी जर्मनी में प्रवेश करने के लिये

सीमान्त पार करने की समस्या थी। जजमान ने कहा कि सीमा पार करते समय कठिनाई हो सकती है। क्योंकि यद्यपि पोलैण्ड और पूर्वी जर्मनी दोनों ही कम्यूनिस्टों द्वारा शासित देश हैं तथापि दोनों के बीच मुक्त यातायात नहीं है। कड़ी तलाशी ली जाएगी। उसकी बातों से ऐसा लगा कि वह इसके पूर्व भी सीमा पार करके आना जाना रहा है। लैनी ने इस बात को अपने ध्यान में रख लिया। किन्तु उसे मार्शल सोकोलोव्सकी से प्राप्त होने वाले अपने विशाल-काय अनुमति पत्र पर विश्वास था। इस अनुमति पत्र के सहारे वह अंदर आया था और इसी के सहारे वह बाहर भी होगा।

वे लोग सीमान्त के पुल के पास पहुंचे। पोलिश सीमा पर तैनात सिपाही ने लैनी को रोक कर अनुमति पत्र मांगा। लैनी ने अपने कागज दिखा दिये जो पूर्णतया नियमानुकूल थे। जजमान अपना कम्बल लपेटे हुए करुणा की साक्षात् मूर्ति की भाँति बैठा हुआ था। लैनी ने सिपाही से कहा कि वह बीमार है और उसे उसके परिवार के पास पहुँचा देने के लिये वह अपने साथ ले आया है। लैनी ने अपनी संदूक खोल दी और दो सिपाहियों ने आकर तलाशी ली। संदूक में खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त और कुछ न था। हाँ, "कैमेल" छाप की अमरीकी सिगरेटों के दो डब्बे अवश्य पड़े हुए थे। लैनी ने दोनों सिपाहियों को एक एक डब्बा दे दिया और सब ठीक हो गया।

पुल पार करके पूर्वी जर्मनी की सीमा पर फिर यही प्रक्रिया दोहराई गई। यहाँ से निकल कर लैनी ने अपनी गाड़ी फ्रैन्कफर्ट की ओर मोड़ी। दोनों अपनी चालाकी पर प्रसन्न हो रहे थे। गाड़ी सीधे बर्लिन की ओर चली।

किन्तु इसी बीच में जजमान का साहस जवाब देने लगा। पूर्वी बर्लिन की सीमा पर सोवियत सिपाहियों का कड़ा पहरा है। उसे पार करके वह कैसे जा सकता है? वह लैनी के शानदार प्रस्ताव से पूर्णतया आत्महारा होकर इस महत्वपूर्ण बात को तो भूल ही गया था। गाड़ी की इस बार बड़ी सतर्कता के साथ तलाशी ली जाएगी। लैनी की गाड़ी में जो खाद्य पदार्थ हैं उनके सम्बन्ध में वह कह सकता है कि वे अमरीकी अंचल में खरीदे गए थे। अधिक से अधिक यही होगा कि ये खाद्य पदार्थ जब्त कर लिये जाएंगे। किन्तु जजमान के पास

जो नोटों के बण्डल हैं उनका क्या होगा ? अब उसने बताया कि वे दो हजार डालर हैं; एक हजार नहीं। लैनी ने आश्वासन दिया, "एक अमरीकी के नाते क्या मैं अमरीकी मुद्रा अपने पास नहीं रख सकता ?" किन्तु जजमान आश्वस्त न हुआ। उसने कहा कि, "वे लोग यह जानना चाहेंगे कि आप इतनी बड़ी रकम लेकर क्यों गए थे। कदाचित वे सारा रुपया जब्त कर लेंगे और संसार में मेरे पास जो कुछ है यही है।"

चिन्तित जालसाज ने लैनी को गाड़ी धीरे धीरे चलाने के लिये कहा ताकि समस्या पर विचार करने का समय मिल जाए।

"मिस्टर बड !" उसने कहा, "आप एक धनी अमेरिकन हैं और आपके पास आवश्यक अनुमति पत्र है। किन्तु मेरे पास कोई अनुमति पत्र नहीं है। मुझे इस गाड़ी में यात्रा करने का कोई अधिकार नहीं हैं। वे लोग मुझे खींच कर बाहर निकाल लेंगे और तलाशी लेंगे। मुझे यहाँ गाड़ी से उतर कर चोरी से पैदल ही सीमा को पार करना होगा। मैं इसके पूर्व भी ऐसा कर चुका हूँ।"

लैनी ने इस बात का अनुमान पहले ही कर लिया था। उसे कोई आश्चर्य न हुआ। वह जानता था कि ३४० वर्गमील के क्षेत्र में फैला हुआ बर्लिन एक विशाल नगर है और सारे क्षेत्र पर कड़ा पहरा रखना सम्भव नहीं है।

"अच्छा, ऐसा ही कीजिये।" उसने कहा, "मैं सैवाय होटल में एक कमरा ले लूंगा। आप वहीं पर आकर मुझ से मिलिये।"

(९)

किन्तु जजमान का मन फिर डांवाडोल होने लगा। बात यह है कि जजमान एक पुराना पापी था और उसके अपराधों की तालिका सम्भवतः काफी लम्बी थी। उसे भांति भांति की शंकाएं हो रही थीं। सम्भव है सीमा पार करते हुए उसके सहायक ही उसे लूट लें या मार डालें। रात्रिके समय सीमान्तपर डाकुओं का भी काफी डर रहता है। इसके अतिरिक्त अब सीमान्तपर पहलेकी तुलना में अधिक कड़ा पहरा रहता है। सोवियत क्षेत्रसे हजारों व्यक्ति पलायन के इच्छुक हैं इसलिये पहरेमें कड़ाई होना स्वाभाविक ही है।

"मिस्टर बड" उसने भयातुर कण्ठसे कहा, "क्या आप ऐसा नहीं समझते कि यह रुपया आपके पास अधिक सुरक्षित रहेगा ? आप एक धनी अमेरिकन हैं और आप को अपने पास अमरीकी मुद्रा रखने का अधिकार है।"

"अच्छी बात है।" लैनी ने कहा, "आप चाहें तो नोटों के ये बण्डल मुझे दे सकते हैं।"

"इन्हें आप कहां छिपाइयेगा ? अपनी सीट के नीचे ?"

"मैं इन्हें छिपाऊँगा नहीं। अमरीकी मुद्रा अपने पास रखनेका मुझे पूर्ण अधिकार है। मैं एक कला-विशेषज्ञ हूँ और बहुमूल्य चित्रोंको खरीदनेके लिये मुझे कभी कभी हजारों रुपये अपने साथ ले जाने पड़ते हैं। मैं अपने हम-पेशा व्यक्तियों के साथ भलीभाँति परिचित हूं और मुझे अपनी भद्रता तथा सच्चरित्रताका प्रमाण देनेमें कोई कठिनाई न होगी।"

इससे बाद काफी देरतक सन्नाटा छाया रहा। जजमानके मस्तिष्कमें जो तर्क वितर्क चल रहा था उसकी लैनी मन ही मन कल्पना कर रहा था। क्या यह इस भद्र प्रतीत होनेवाले अमरीकी का विश्वास करे ? कहीं ऐसा न हो कि वह पश्चिमी बर्लिन में पहुँचकर चम्पत हो जाए ! सम्भव है वह मेरा रुपया लेकर एक वायुयान द्वारा जर्मनी से ही विदा हो जाए। सम्भव है वह जैसा दिखाई दे रहा है वैसा न हो अर्थात् मेरी ही भांति एक धूर्त हो !

अन्त में सन्नाटा तोड़ते हुए उसने कहा, "आप मुझे धोखा तो न देंगे, मिस्टर बड ?"

लैनीने मुस्कराकर कहा, "आप निश्चिन्त रहिये।"

"यह रुपया ही संसार में मेरा सर्वस्व है, मिस्टर बड।" उसने कांपते हुए स्वर में कहा। यह स्वर किसीका भी हृदय द्रवित कर सकता था—बशर्ते कि यह रुपया जाली न होता !

लैनी ने क्षण भर चुप रहकर कुछ गम्भीर स्वर में कहना शुरू किया, "देखो जजमान" इस बार उसने नामके आगे से श्री जानबूझ कर हटा दिया था क्योंकि वह अपनी सामाजिक तथा आर्थिक उत्कृष्टता भलीभांति प्रस्थापित कर देना चाहता था। "मेरे लिये इस सौदेका कोई विशेष मूल्य नहीं है। तुम मुझे

जितने डालर बेच रहे हो उससे दसगुना अधिक मुझे कभी कभी एक चित्र पर कमीशनके रूपमें देना पड़ जाता है। एक बार मैंने एक चित्र एक हजार डालर पर खरीदा था और बाद में उसे पचीस हजार डालर पर बेचा था। मुझे तुम्हारे इन डालरों में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है। तुम इनका जो चाहो कर सकते हो। यदि तुम चाहो तो इन्हें मेरे हवाले कर सकते हो। मैं इन्हें लेकर सीधे बर्लिन के सेवाय होटल में चला जाऊँगा। वहां आकर तुम मुझसे मिल सकते हो। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो इन्हें अपने पास ही रखो और जो उचित समझो करो। अपना निश्चय शीघ्रता पूर्वक करो।"

"मुझे भय है कि कहीं धोखा न खा जाऊँ। सोवियत सैनिक मेरी तलाशी अवश्य लेंगे और यदि वे मेरे पास इतनी बड़ी रकम देखेंगे तो मुझे गोली मार देंगे। मैं एक गरीब आदमी हूँ और अमरीकी मुद्रा रखनेका मुझे कोई अधिकार नहीं है।"

"क्या तुम उनसे यह नहीं कह सकते कि तुमने अपनी गाड़ी अपने चचेरे भाई के हाथ बेचकर यह रुपया प्राप्त किया है?"

"कह क्यों नहीं सकता, किन्तु वे मेरा विश्वास न करेंगे। मैं एक विदेशी हूं—आधा स्पेनिश और आधा रूमानियन। वे मुझे गुप्तचर समझ बैठेंगे। वे मुझसे इजहार करा लेंगे—मनचाहा इजहार।"

स्पष्ट था कि यह व्यक्ति एक बार इस प्रकार की मुसीबत में पड़ चुका था और अब दुबारा उसमें न पड़ना चाहता था!

अन्तमें उसने हिचकिचाते हुए कहा, "अच्छा मिस्टर बड, यह रकम आप अपने पास रखिये। आप इसे कहां छिपायेंगे?"

लैनी ने कहा, "मैं इसे छिपानेका प्रयत्न न करूंगा। इससे सन्देह उत्पन्न होना है और मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहता जिससे सन्देह उत्पन्न हो।"

जजमान ने नोटों के पुलिन्दे निकाले और ऊपर का कागज फाड़कर फेंक दिया। लैनीने देखा कि दोनों पुलिन्दों में लगभग चार सौ नोट थे और अच्छी खासी गड्डी हो गयी थी। जजमान बण्डल से एक एक इञ्च कागज निकालकर लैनीकी ओर बढ़ा देता और लैनी एक हाथ से स्टीयरिन्ग सम्हालते हुए दूसरे से

उसे लेकर अपने ओवरकोट की जेब में डाल लेना। धीरे धीरे सारे नोट लैनीकी जेबमें चले गये। लैनीको विश्वास था कि रूसी सैनिक उसकी तलाशी न लेंगे और यदि लिया भी तो वह समुचित शान के साथ मार्शल सोकालोव्सकी को टेलीफोन कर देगा जिनका भव्य अनुमति पत्र उसके पास था।

किन्तु जजमान के लिये यह प्रक्रिया एक अच्छी खासी अग्नि परीक्षा थी। जब यह समाप्त हुई उसके गलेसे आवाज निकलना भी कठिन हो गया था। अब उसे एक नयी चिन्ता सताने लगी थी। "यदि मैं सीमा पार करने में असफल हुआ तो क्या होगा, मिस्टर बड ?"

लैनी ने कहा, "मैं कल ही बर्लिन छोड़कर चला जाऊंगा। किन्तु यदि तुम निश्चित समय पर होटल में मुझ से न मिल सके तो मैं तुम्हारे नोट एक लिफाफे में रख कर उस पर सील लगा कर होटल वालों को इस आदेश के साथ दे दूंगा कि जब तुम आओ तो तुम्हे वह लिफाफा सही सलामत मिल जाए।"

इस प्रकार यह मामला तय हो गया। सीमान्त जब प्रायः आधे मील की दूरी पर रह गया तब जजमान ने कहा, "मेरा ख्याल है कि मुझे यहीं उतर जाना चाहिये।" लैनी ने गाड़ी रोक दी। जजमान ने नीचे उतर कर कहा, "आप एक अत्यन्त उदार और भद्र पुरुष हैं, मिस्टर बड।" लनी ने संक्षेप में अभिवादन स्वीकार किया और उसे उस निर्दय वर्षा में भींगते हुए छोड़कर गाड़ी आगे बढ़ायी। इस मौसम में यहाँ बड़ी धुआंधार वर्षा होती है—ऐसी वर्षा जो खेतों को झीलों में परिवर्तित कर देती है। यही कारण है कि इस प्रदेश पर आक्रमण करने वाली सेनाओं को बसन्त ऋतु में होनेवाली इस वर्षा का जल सूखते ही अपना काम शुरू कर देना पड़ता है। हिटलर ने २२ जून तक प्रतीक्षा करने की भूल की थी और कैसर ने जुलाई के अन्त तक की। दोनों के लिये यह भूल भयानक प्रमाणित हुई थी।

(१०)

लैनी उस स्थान पर पहुंचा जो जर्मनी के सोवियत अंचल को सोवियत बर्लिन से विभक्त करता था। यह एक विचित्र व्यवस्था थी किन्तु तलाशी यहीं पर होती थी। कारण यह है कि एक बार नगर के अंदर प्रवेश करने पर यात्री बर्लिन के

किसी भी क्षेत्र में आ जा सकता था। लैनी अपनी गाड़ी से उतर गया क्योंकि "जनता के सैनिकों" के साथ समानता के स्तर पर मिलना उसे अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। उसने दो चार टूटे फूटे रूसी शब्दों में जो उसने सीख लिये थे सैनिकों का अभिवादन किया और अपना अनुमति पत्र निकाल कर दिखाया। सैनिकों की टुकड़ी का दलनायक फटे पुराने कपड़े पहने हुए था। वह टूटी फूटी अंगरेजी बोल लेता था। लैनी ने जब तलाशी के लिये अपना संदूक खोलकर उसे विभिन्न सुस्वादु खाद्य पदार्थ दिखाए तब वह मित्रता स्थापित करने के लिये अधीर हो उठा। लैनी ने कहा कि वह यह खाद्य पदार्थ पोलैण्ड इसीलिये ले गया था क्योंकि उसे इस बात में शंका थी कि वहाँ अमरीकी खाद्य प्राप्त होगा या नहीं। दलनायक ने लैनी की टूटी फूटी रूसी पर अपना मंतव्य प्रदर्शित किया और लैनी ने उसे बताया कि वह सन् १९२१ में लेनिनग्राड की, दो तीन वर्ष बाद ओडेसा की और इसके बाद तीन बार मास्को की यात्रा कर चुका है।

लैनी ने नोटों से भरी हुई अपनी जेब की ओर संकेत करते हुए बताया कि वह एक कला विशेषज्ञ है और पोलैण्ड में कुछ बहुमूल्य तैलचित्र खरीदने के उद्देश्य से गया था। किन्तु दुर्भाग्य से उसे खरीदने योग्य कोई चित्र न मिल सका। दल नायक के साथ और इधर उधर की दो एक बातें हुई। सैनिकों ने उसकी सिगरेटें स्वीकार कीं और इसके बाद उसे आगे बढ़ने की अनुमति दे दी। वह एक बार फिर उस युद्ध-ध्वंस्त नगर में पहुँच गया।

अल्टर डेन लिण्डेन होते हुए वह हिल्डे वान डोनर्सटाइन के विशाल महल के पास से गुजरा जो बमबाजी के कारण नष्ट भ्रष्ट हो गया था। वहाँ से आडलन नामक स्थान को पार करके वह उस सीमान्त प्रदेश पर पहुँचा जो बर्लिन के रूसी और अमरीकी अंचलों को एक दूसरे से विभक्त करता था। यहीं वह विशाल फाटक था जो ब्रैण्डनवर्ग के नाम से प्रसिद्ध था। यदि वह पैदल होता तो बिना किसी बाधा के फाटक पार करके अमरीकी क्षेत्र में चला जाता। किन्तु चूंकि वह मोटर में यात्रा कर रहा था इसलिए एक बार फिर तलाशी हुई। इस बार तलाशी लेने वाले सैनिक जर्मन थे जो "सोवियत जर्मन" के नाम से प्रसिद्ध थे। उनकी वर्दी का रंग गहरा नीला था। उनका एक नाम "मार्कग्राफ पुलिस" भी था।

इस नामकरण था कारण यह था कि इनका अध्यक्ष कर्नल मार्कग्राफ नामक एक व्यक्ति था जो पहले एक कट्टर नाजी था और सोवियत सेनाओंके विरुद्ध स्टालिनग्राड तक पहुंचा था। किन्तु अब वह एक आज्ञाकारी सोवियत अधिकारी हो गया था। इससे यह प्रमाणित होता है कि उग्र धाराएं अन्तमें एक हो जाती हैं!

तलाशी लेनेका काम पुलिसके दो सिपाही कर रहे थे ताकि वे एक दूसरे पर नजर रख सकें। एक सिपाही का स्वरोच्चारण सैक्सन पुट लिये हुए था। तलाशी समाप्त करके उसने लैनी को शुद्ध जर्मन बोलने के लिये बधाई दी। वह लैनी का विशालकाय अनुमति पत्र देखकर काफी प्रभावित हुआ था यद्यपि वह स्वयं उसका एक अक्षर भी न पढ़ सकता था। उसने अत्यंत नम्रता के साथ लैनी को आगे बढ़ने की अनुमति दे दी।

होटल पहुँचकर लैनीने अपनी मोटर गैरेजमें बन्द कर दी और होटल रजिस्टर में नाम लिखाकर अपने कमरे में चला गया। उस समय पौ भी न फटी थी, साढ़े चार बजे थे। किन्तु लैनी के पास मोरीसन के घर का टेलीफोन नम्बर था और वह जानता था कि इस समय भी मोरीसन उसके साथ बात करके प्रसन्न होगा। इसके अतिरिक्त लैनी को काम की बातें करनी थीं, गप न लड़ानी थी और काम की बातों के लिये हर समय उपयुक्त है।

टेलीफोन की घंटी थोड़ी देर तक बजती रही। इसके बाद लैनी ने रिसीवर के अन्दर एक उनींदी आवाज सुनी। उसने तुरन्त शिष्टाचार के साथ कहा, "इतनी रात के समय आपको जगानेके लिये मैं क्षमा चाहता हूं। मैं क्रिस्टाफर कोलम्बस हूं। ध्यान पूर्वक मेरी बातें सुनिये। एक महत्वपूर्ण व्यक्ति मेरे हाथ लग गया है। आप एक काम करिये। आप अपने दो आदमी सैवाय होटल में भेज दीजिये और उन्हें वहां बैठे रहने के लिये कह दीजिये। मुझे नहीं मालूम कि वह व्यक्ति मेरे पास कब तक पहुँचेगा। किन्तु ज्यों ही वह आएगा मैं उसे लेकर सैवाय होटल में आ जाऊंगा। यदि उसे गिरफ्तार करना आवश्यक समझूंगा तो मैं आपके आदमियोंके साथ उसका परिचय करा दूंगा, अन्यथा उन्हें संकेत कर दूंगा कि वे कोई छेड़खानी न करें। समझ गए न आप?"

"समझ गया।" टेलीफोन पर उतर आया। अब वह आवाज तंद्रिल न थी।

"धन्यवाद। एक सूराग तो मिला। अच्छा यह तो बताइये कि आपने उस व्यक्ति से कुछ खरीदा या नहीं?"

लैनी ने कहा? "अभी तक तो नहीं खरीदा किन्तु अब खरीदूंगा।"

"इसका ध्यान रखियेगा क्योंकि जब तक अमरीकी अंचलमें आप उससे कुछ सौदा न करेंगे तब तक मामला हमारे न्यायालयोंके विचाराधीन न होगा।"

लैनीने कहा, "अच्छा, अब मैं कुछ झपकी ले लूं। सारी रात मोटपर पर बीती है। सैवाय होटल की बात मत भूलियेगा। नमस्कार।"

उसने नोटोंसे भरा हुआ अपना कोट उतारा और बिस्तर पर लेट कर तुरन्त निद्रा देवीकी गोद में पहुँच गया।

(११)

जिस समय टेलीफोनकी घण्टी से उसकी नींद खुली सबेरा हो चुका था और धूप निकल आयी थी। उसने टेलीफोन का चोंगा उठाया। होटल का क्लर्क कह रहा था। "मिस्टर जजमान नामक एक व्यक्ति आपसे मिलना चाहते हैं।" होटल के क्लर्क की आवाज से ऐसा प्रतीत होता था मानों वह आगंतुक व्यक्ति को एक संदिग्ध चरित्रके रूप में देख रहा हो। किन्तु बर्लिन में इस समय ऐसे व्यक्तियों की कोई कमी न थी। लैनीने संक्षेपमें कहा, "उसे ऊपर भेज दीजिये।" उसने दो व्यक्तियोंके नाश्ते का आदेश भी दे दिया।

जब बेचारा जजमान ऊपर आया तब लैनी ने देखा कि उसके सारे कपड़े तर बतर हो रहे थे, शीत के कारण उसके होठ नीले पड़ गये थे! और वह कांप रहा था। लैनी ने कहा। "वे भीगे कपड़े उतार कर बिस्तरपर चले जाइये।" जजमान ने पलंग पर बिछे हुए शुभ्र धवल चादरोंकी ओर इस प्रकार देखा मानों इस प्रकार की वस्तु वह जीवन में प्रथम बार ही देख रहा हो। किन्तु वह लैनी के परामर्श के अनुसार बिस्तरपर लेट गया और लैनी ने दो कम्बल खींचकर उसका शरीर ढक दिया। इसके बाद लैनी ने होटलके बेहरे को बुलाकर जजमान के सारे भीगे कपड़े सुखाकर लोहा कर देनेके लिये दे दिये। इस प्रकार वस्त्रोंसे विहीन होकर जजमान पूर्णतया लैनीके कब्जे में आ गया—ठीक वैसे ही जैसे कि उसके हाथ पैर लोहे की जंजीरों से बांध दिये गये हों!

जब नाश्ता आया लैनीने गर्म काफी का एक प्याला जजमानकी ओर बढ़ाया। वह तुरन्त उठ बैठा और बड़ी तत्परता के साथ उसे पीने लगा। लैनी ने दरवाजा बन्द कर दिया और अपने कोट की जेब से नोटोंका पुलिन्दा निकालने लगा। सारे नोट निकाल कर उसने मेजपर रख दिये और कहा, "जल्दी की कोई बात नहीं। आप इत्मीनान के साथ इन्हें गिन लीजिये।"

"नहीं, नहीं, मिस्टर बड। गिनने की कोई आवश्यकता नहीं।" उसने एक कृतज्ञ कुत्तेका सा भाव दिखाते हुए कहा, "मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है। मुझे बड़ी लज्जा है कि मैंने आप जैसे सज्जन व्यक्ति पर सन्देह किया।"

"कोई बात नहीं। हमारे इस संसारमें बेईमानों की कमी नहीं। आपको सीमा पार करने में कोई अड़चन तो नहीं हुई?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। यदि आप मुख्य सड़क छोड़कर गलियों से यात्रा करें तो कोई बाधा नहीं उपस्थित होती।"

उसके गालों पर रक्त की लालिमा फिर से आने लगी थी और उसका मुखमण्डल कृतज्ञता से उद्दीप्त हो रहा था। लैनी ने खाद्यपदार्थों से भरी हुई तश्तरी को उसकी ओर बढ़ाते हुए खाने के लिये संकेत किया। ऐसा सुस्वादु भोजन अभागे जजमानने कदाचित पिछले कई वर्षों में न किया था। उसका रुपया मेज पर सुरक्षित अवस्था में रखा हुआ था दस दस की गड्डियों में कागज से लपेटा हुआ, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बैङ्कोंमें मिलता है। चालीस बण्डल थे। जजमान की दृष्टि उन पर दौड़ रही थी, मानों वह इस बात का निश्चय न कर पा रहा था कि उन बण्डलों को गिने अथवा नहीं।

"आपका रुपया ज्यों का त्यों रखा हुआ है। लैनी ने अश्वासन के स्वर में कहा, "आपसे मैंने बिना गिने हुए ले लिया था किन्तु आप इसे सम्हाल लीजिये।"

लैनी एक बार फिर मुस्कराया और जजमान आश्वस्त हो गया। वातावरण बड़ा आनन्दमय था। होटल का यह शानदार कमरा, वाष्पकी सुमधुर गर्मी, सुस्वादु नाश्ता और काफी - सब कुछ आनन्ददायक था। वह मन ही मन सोच रहा था कि ये अमरीकी युद्धके बाद भी कितने आराम मे रहते हैं!

थोड़ी देर बाद लैनीने कहा, "मैं समझता हूँ कि आपको एक उष्ण स्नान की आवश्यकता है।"

"हे ईश्वर!" जजमानने आश्चर्य चकित होकर कहा, "क्या आपने कभी टीन की झोपड़ी के अन्दर, जाड़े के मौसम में एकदम ठंडे जल से स्नान किया है? स्नान के बाद जल शरीर पर बर्फ की भांति जम जाता है।"

(१२)

भोजनके बाद लैनी ने काम की बात शुरू की। उसने कहा, "आपसे मैंने जो अमरीकी नोट खरीदे थे वे मैंने खर्च कर डाले हैं। मुझे होटल के बेहरे को इनाम देनेके लिये इसी समय एक नोट की आवश्यकता है। क्या उसी भाव पर आप एक और नोट मुझे दे सकते हैं?"

"मैं एक नोट यों ही उपहारके रूप में आप को दे दूंगा।" जजमान ने कृतज्ञता के स्वर में कहा। किन्तु लैनी ने कहा कि वह खरीद कर ही लेना चाहता है, मुफ्त नहीं। उसने अपने जेब से साढ़े तीन सौ डालरकी निकाल कर जजमान के हाथ में रख दिये।

"अब मैं एक नोट उठा लूं?" उसने पूछा और ऊपरवाले बण्डल से एक नोट निकाल कर अपनी जेबमें रख लिया।

"ठीक है न? यह सौदा पक्का हो गया न?" उसने कौतुकमिश्रित स्वर में कहा।"

"हां, यह सौदा पक्का हो गया।" जजमान ने गम्भीरतापूर्वक कहा!

लैनीने कहा, "अच्छा, अब मैं आपको बताता हूं कि रुपया किस प्रकार छिपाया जाता है।" वह अपना पतलून लाया और बिस्तर पर बैठकर उसने जजमान के सामने बेल्ट बांधने के स्थान के ठीक नीचे एक गुप्त जेब दिखाई। एक कैंची से उसने बाहर मिलते हुए एक धागे को काट कर खींचा और तुरन्त जेब दिखाई देने लगी। इस गुप्त जेब से लैनीने सौ डालरवाला एक चिकना हरा नोट निकाला। इस समय उसकी मुखमुद्रा अब्राहम लिन्कन के अवसादग्रस्त भाव की भांति नहीं बल्कि बेन्जामन फ्रैन्कलिन के चातुर्यमिश्रित सतर्क भाव की सी थी। वह अपनी गुप्त जेब से सौ सौ डालरवाले नोट निकालकर अपने आश्चर्यचकित

मित्र के सामने रखने लगा। धीरे धीरे इस प्रकार के पांच नोट उसने निकालकर मेज पर रख दिये।

"अब देखो जजमान।" उसने कहा, "यह असली रुपया है जो न्यूयार्क की एक वास्तविक बैंक से मुझे मिला था। यह तुम्हारे नोटों के भांति काल्पनिक मुद्रा नहीं है।"

लैनी की दृष्टि जजमान के चेहरे पर गड़ी हुई थी। उसने देखा कि इतना सुनते ही जजमान की आँखें विस्मयके भाव से फैल कर रह गयीं और वह एकदम किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया।

"नहीं नहीं मिस्टर बड।" वह इतना ही कह सका।

"मुझे चकमा देने का प्रयत्न करना व्यर्थ है, जजमान। तुम्हारे नोट हिमलरी मुद्रा हैं। यह बात तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ। जिस समय तुमने सर्व प्रथम इसका जिक्र मेरे सामने किया था उसी समय मुझे यह विश्वास हो गया था।"

उस व्यक्ति ने कुछ कहने का प्रयत्न किया किन्तु उसके गले से आवाज न निकली। उसका मस्तिष्क काम न कर रहा था।

"अब सीधी बात करो, जजमान। तुमने तीन नोट मुझे पोलैण्ड में बेचे थे और मैं तुम्हे पोलिश कानून के अन्तर्गत वहीं गिरफ्तार करा सकता था। किंतु यह मेरे लिये सुविधाजनक न होता। इसीलिये मैं तुम्हें अमरीकी अंचल में ले आया। यहाँ तुमने मुझे एक नोट बेचा है और इस प्रकार तुम्हारा मामला अमरीकी सैनिक न्यायलय के विचाराधीन हो गया है।"

वह व्यक्ति बिस्तर पर उठ बैठा और क्षण भर के लिये ऐसा प्रतीत हुआ मानों वह नग्नावस्था में ही भाग जाने की सोच रहा है। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपने आप को संयत कर लिया और करुण भाव से बोला, "मिस्टर बड। मेरे ऊपर दया कीजिये। यह आप मेरे साथ क्या कर रहे हैं?"

"तुम मेरे साथ क्या कर रहे थे, इसका विचार करो। किन्तु उत्तेजित होने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारे सामने एक प्रस्ताव रखता हूँ। बिस्तर पर आराम से लेट कर उस पर विचार करो।"

(१३)

जजमान लेट गया। तकिये पर उसका सिर इस प्रकार रखा हुआ था कि उसकी बड़ी बड़ी भयातुर आँखें लैनी की ओर एकटक ताक रही थीं।

"तुमने पाँच सौ डालर के ये नोट देखे जो मैंने अभी अपनी जेब से निकाल कर तुम्हारे सामने रखे हैं? ये तुम ले सकते हो। किन्तु इसके बदले में तुम्हें मुझको यह बताना पड़ेगा कि तुम ये नकली नोट कहां से प्राप्त करते हो और इस मामले में किन किन लोगों का हाथ है।"

लैनी की बातों से वह आश्वस्त होने के स्थान पर और भी भयभीत प्रतीत होता था। 'हे भगवान!" उसने चीत्कार करते हुए कहा, "यदि मैं आपको यह बता दूंगा तो वे लोग मुझे एक दिनभी जीवित न रहने देंगे। मुझे तुरन्त मार डालेंगे।"

"मैं तुम्हारी सुरक्षा की व्यवस्था कर दूंगा।" लैनी ने कहा, "मैं यह आश्वासन तुम्हें नहीं दे सकता कि मैं तुम्हें अमेरिका भेजा दूंगा क्योंकि हमारे यहाँ बाहर से आनेवाले व्यक्तियों की कड़ी जांच होती है। किन्तु तुम मेक्सिको अथवा दक्षिणी अमेरिका के किसी अन्य प्रान्त में जा सकते हो। मैं तुम्हें ईमानदारी के साथ जीवन यापन करने के लिये आवश्यक पूंजी भी दे दूंगा।"

'वे लोग संसार के अंतिम छोर तक मेरा पीछा करेंगे। आप नहीं जानते वे लोग कितने भयानक हैं। यह दल 'वेमगरिन्ट' की भाँति है! आप जानते हैं इसका अर्थ?"

"जानता हूँ। मैंने जर्मनी का इतिहास पढ़ा है। किन्तु तुम मूर्ख मत बनो। गुण्डों का एक दल किसी भूतयुगीन गुप्त संस्था, जो अपनी निर्दयता के लिये कुख्यात थी, का नाम रख कर तुम्हें भयभीत करना चाहता है। बस इतनी सी बात है।"

"वे लोग बड़े निर्दय हैं। वे मेरा पता अवश्य लगा लेंगे और बड़ी निर्दयता के साथ मेरी हत्या कर डालेंगे, मिस्टर बड।"

"सावधानी के साथ मेरी बात सुनो। इस समय तुम्हारी स्थिति यह है कि सम्भवतः तुम्हें जेल की एक लम्बी सजा मिलेगी। सम्भव है दस अथवा बीस वर्ष

का कारावास दण्ड तुम्हें दिया जाय। और यह भी समझ लो कि जिस जेल में तुम्हें रखा जाएगा उसका निरीक्षण अमरीकियों के हाथ में रहेगा, जर्मनोंके हाथ में नहीं। दूसरी ओर तुम अपने दल की जानकारी मुझे देकर मजे में जा सकते हो। तुम्हें न्यायलय में हाजिर न होना पड़ेगा, यह आश्वासन मैं तुम्हें अपनी ओर से दे सकता हूं। तुम केवल दल के मुखियों के नाम मुझे बता दो। बाकी काम मैं स्वयं कर लूंगा। तुम अपना नाम बदल कर जहाँ चाहो चले जा सकते हो। संसार में इस सड़े गले पोलैण्ड के अतिरिक्त अधिक अच्छे स्थानों की कोई कमी नहीं है।"

"लेकिन मिस्टर बड, यदि मुझे इस बात का विश्वास हो जाय कि—"

"तुम चिन्ता न करो। मैं अमेरिका के गुप्तचर विभाग का एजेण्ट हूँ और मुझे कुछ अधिकार प्राप्त हैं। हम लोगों को छोटे मोटे उठाईगीरों की कोई आवश्यकता नहीं हैं। हम लोग इस गुप्त संगठन के मुखियों को पकड़ना चाहते हैं। इनको पकड़े बिना यह संगठन छिन्न भिन्न न होगा। तुम मुझे इस संबन्ध में जो कुछ जानते हो बता दो। हमलोग तुम्हारी बातों की जाँच करते समय तुम्हें आराम के साथ निरापद रखने की पूरी पूरी व्यवस्था कर देंगे। इतना समझ लो कि तुम हम लोगों को चकमा नहीं दे सकते। यदि तुम ईमानदारी के साथ सारी बातें बता दोगे तो तुम संसार के जिस कोने में जाना चाहोगे उसके लिये तुम्हें स्टीमर अथवा वायुयान का टिकट तुम्हें दे दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त तुम्हें ये पाँच सौ डालर भी प्राप्त हो जाएंगे। इसके जरिये तुम नया नाम रख कर अपना नया जीवन प्रारम्भ कर सकोगे—और तुम्हारी "वेमगरिन्ट" किसी प्रकार भी तुम्हारा सूराग न प्राप्त कर सकेगी।"

"हां मिस्टर बड। लेकिन मुझे इस बात का आश्वासन"—

"क्या तुम्हारी बुद्धि में यह बात नहीं आती कि हमलोग इसबात की पूरी सावधानी रखेंगे कि गुण्डे तुम्हारी हत्या न करने पावें? इससे तो हमारी ही हानि होगी। हम लोग हर प्रकार से तुम्हारी रक्षा करेंगे। हम लोग कैदियों के साथ नाजियों और कम्यूनिस्टों का सा व्यवहार नहीं करते; हम लोग उन्हें सताते नहीं और वचन देकर उसे भंग नहीं करते। अब बताओ तुम इस संगठन

के मुखियों के बारे में क्या जानते हो ? क्या तुम उनके आदर्शों से एकमत हो और आगे चल कर स्वयं मुखिया का पद प्राप्त करने की आशा रखते हो ?"

"नहीं, मिस्टर बड ।"

"तो तुमने यह काम केवल जीविकोपार्जन के लिये पकड़ा था ?"

"हाँ, मिस्टर बड । यह कोई अच्छा काम नहीं है ।"

"अच्छी बात है । मैं तुम्हें जीविकोपार्जन के लिये इससे अच्छा साधन देता हूँ । मुझे आशा है कि तुम में इतना विवेक है कि इसे स्वीकार कर लोगे । यह तो तुम जानते ही हो कि जाली मुद्रा चलाने का प्रयत्न करके तुम समाज की बहुत बड़ी हानि करते रहे हो । तुम जितनी जाली मुद्रा बाजार में पहुंचा देते हो असली मुद्रा का मूल्य उतना ही घट जाता है, चीजों के दाम उसी अनुपात में बढ़ जाते हैं और गरीब लोगों के लिये जीवनयापन की समस्या और भी जटिल हो जाती है । यदि तुम मनचाहे परिमाण में जाली मुद्रा चला सको तो सारे संसार को खरीद लो और गरीब लोग बेमौत मर जाएं । यह तो एक सीधी सादी बात है, है न ? तुम गुण्डों के एक दल जिसके प्रति तुम किसी भी रूप में कृतज्ञ नहीं हो, को बचाने लिये स्वयं जेल क्यों जाओ ? जरा इस प्रश्न पर विचार करो और बुद्धि से काम लो ।"

"आप एक चतुर व्यक्ति हैं, मिस्टर बड ।" जजमान ने अचानक कहा ।

"मेरी चापलूसी करने का प्रयत्न मत करो ।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा । "मेरी पीछे एक शक्तिशाली संगठन है और मैं वही कह रहा हूं जो करने के लिये मुझ से कह गया है । हम लोग कानून की रक्षा करते हैं और स्वयं उस कानून द्वारा बाध्य रहते हैं । यदि हमें इस दिशा में कुछ करना होता है तो हम उसे कर लेते हैं ।"

"मुझे आपकी बात मानना ही पड़ेगा, मिस्टर बड । दूसरा कोई उपाय मेरे सामने नहीं है ।"

(१४)

लैनी ने अपने सूटकेस से कागज निकाला और अपनी जेब से फाउण्टेन पेन निकाल कर बैठ गया । "अब तुम मुझे सारी बातें बता दो ।" उसने जजमान से

कहा, "किन्तु मैं तुम्हें एक बार फिर सावधान किये देता हूं; ऐसी कोई बात न कहना जो सत्य न हो। यदि तुम कोई झूठ बात कहोगे तो मुझे उसका पता लग जाएगा और फिर तुम्हें दोहरा दण्ड भोगना पड़ेगा।"

"अच्छा मिस्टर बड। मैं झूठ न बोलूंगा। जो कुछ जानता हूं वही कहूँगा।

"पहले तो मुझे इस गुप्त संस्था के संम्बन्ध में बताओ जिसे तुम वेमगरिन्ट के नाम से पुकारते हो।

"यह संसार की सबसे अधिक गुप्त संस्था है। इसका नाम है वोलकिस्चरबण्ड; यह एक खूनी संगठन है। किसी सदस्य के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति के सामने इसका नाम तक लेने पर मृत्यु दण्ड दे दिया जाता है।"

"इसका तो यह अर्थ हुआ कि ये लोग नाज़ी हैं।"

"एक समय ये सब उच्च पदस्थ नाजी थे। इस संस्था के संस्थापकों में से प्रत्येक युद्ध क्षेत्र में घायल होने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका था! संस्थापक छै जन थे और इनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने यह शपथ ली थी कि वह तीन नये सदस्य बना लेगा। किन्तु इन तीन नये सदस्यों के नाम केवल एक व्यक्ति को मालूम रहते हैं और ये तीनों अपनी अपनी पारी से तीन तीन नये सदस्य बनाते हैं। इस प्रकार सदस्यों की संख्या बढ़ती रहती है। इन लोगों का कहना है कि सदस्योंकी संख्या पनाले के कीटाणुओं की भाँति बढ़ती रहेगी और एक दिन ये सारी जर्मनी में फैल जाएंगे। अन्तिम विस्फोट के पूर्व किसी को इसका पता भी न लग सकेगा।"

"यह सब तो पुरानी कहानी है।" लैनी ने कहा, "क्या इन लोगों के कोई आदर्श हैं और इनके प्रचार की व्यवस्था है?"

"ये सूत्र रूप में अपने आदर्शों का प्रचार करते हैं। प्रत्येक सप्ताह एक वाक्य प्रसारित किया जाता है। इस वाक्य को प्रत्येक सदस्य अपने तीन व्यक्तियों तक इसे पहुँचा देता है और वे तीनों अपनी पारी से तीन अन्य व्यक्तियों तक पहुँचा देते हैं। इस प्रकार यह क्रमशः फैलता रहता है।"

"क्या तुम इस संगठन के सदस्य हो?"

"नहीं, मिस्टर बड। मैं तो अपना कमीशन लेकर इनके जाली नोट चलाने का काम करता हूं। मुझे पाँच डालर वाला एक नोट कम से कम तीन डालर में

बेचने का आदेश है। इस पर एक डालर स्वयं रखकर दो डालर मैं उन्हें दे देता हूँ।"

"तब तुम्हें इस संगठन की इतनी बातें कैसे मालूम हो गयीं ?"

"उसकी एक भयानक कहानी है। स्टूबेनडर्फ में एक गोदाम थी जो युद्ध काल में ध्वंस्त हो गयी थी। इस टूटी फूटी गोदाम के एक कोने की छत किसी प्रकार सही सलामत बच रही थी और मैं जाली नोट लेने के लिये वहीं जाया करता था। एक रात को मैं शीत में कांपता हुआ वहाँ पहुंचा। उस स्थान पर कुछ गलीचे पड़े हुए थे जो युद्ध के समय एक जलते हुए मकान से खींच लिए गए थे। मुझे इसका पता था। इसलिये सर्दी से बचाव के लिए मैं इन गलीचों के अंदर घुस गया और मुझे नींद आ गयी। कुछ देर बाद इस संगठन के दो मुखिया आए। उस समय तक मैं जागृत था। किन्तु उन लोगों को मेरी उपस्थिति का पता न था। वे धीरे धीरे बातें करने लगे। भय से मेरी बुरी हालत हो रही थी क्यों कि मैं जानता था कि यदि उन्हें मेरी उपस्थिति का पता लगा तो वे मुझे तुरन्त मार डालेंगे। मुझे घबराहट हो रही थी कि मुझे कहीं छींक या खाँसी न आजाए। किन्तु भाग्यवश यह कुछ न हुआ और वे लोग अपनी वार्त्ता समाप्त करके चले गए तब मैं चुपचाप वहाँ से निकल कर भाग आया।"

"इस संगठन का मुखिया कौन है ?"

"वह ब्रिन्कमान नाम का एक व्यक्ति है ; हाइनरिक ब्रिन्कमान। गोयरिन्ग की वायुवाहिनी में वह कोई उच्च पदस्थ अधिकारी था। वह एक दीर्घकाय और सांवला व्यक्ति है। वह स्टाइल्कज् के पास एक जंगलमें छिपकर रहता है।"

"मेरी धारणा थी कि वहां के सारे जर्मनों को भगा दिया गया है।"

"ऐसे जर्मनों की कमी नहीं जो वस्तुतः जर्मन होते हुए भी पोलिश भाषा बोलते हैं और अपने आप को पोल कहते हैं। ये लोग कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होकर कम्युनिस्टोंकी सी बातें करते हैं किन्तु वस्तुतः वे उसे जड़ से नष्ट करने के लिये गुप्त रूपसे प्रयत्नशील रहते हैं। वे एक दूसरे की सहायता करते रहते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति पूर्वी जर्मनी में अपने आपको कम्युनिस्ट कहने लग जाते हैं और पश्चिमी जर्मनी में गणतन्त्रवादी। इनके वास्तविक आदर्श का पता लगाना बड़ा कठिन है।

"क्या तुम्हें मालूम है कि ये अपना रुपया कहां रखते हैं ?"

"मुझे इस बात का पता नहीं। मेरे लिये एक स्थान निश्चित कर दिया गया था। वहां आते ही नोटों का बण्डल दे दिया जाता था। मुझे उसे खोलकर गिनने तक न दिया जाता था। किन्तु नोट सदा ठीक ही निकले। मुझे इस बात की कड़ी हिदायत थी कि इन नोटों को पौलैण्ड अथवा पूर्वी जर्मनीके अन्दर चलाने का प्रयत्न न करूं। किन्तु आपको एक परदेशी समझकर मैंने इस आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस कर लिया था। जब आपने मुझसे बर्लिन चलने का प्रस्ताव किया था तब मुझे प्रसन्नता हुई थी क्योंकि मेरा असली कार्यक्षेत्र यहीं है। इस प्रकार के काम बड़े नगरों में ही किये जा सकते हैं जहां एक बार किसी को ठगकर दुबारा उससे भेंट होने की कोई सम्भावना न रहे।"

"तुम्हारी कठिनाई मैं समझता हूँ !" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा, "जिनको तुम एक बार ठगोगे वे तुम्हें खोजते फिरेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। अच्छा, यह तो बताओ कि तुम इन जाली नोटों के ब्लाकोंके सम्बन्ध में क्या जानते हो ?"

"ब्लाक ? वह क्या है ?"

लैनीने उसे समझाया कि नोट छापने के लिये ताम्बे की प्लेटोंकी आवश्यकता पड़ती है।

"मैंने इनके सम्बन्ध में कुछ नहीं सुना। सम्भव है उन्हें निकट भविष्यमें नये नोट छापने की कोई आवश्यकता न पड़े क्योंकि उनके पास अभी पुराने नोट ही अनाप शनाप तादाद में पड़े हुए हों।"

"तुम्हारे अनुसार यह रुपया कम्युनिस्टों का सर्वनाश करनेके लिये खर्च हो रहा है। और इस संगठन के सदस्य फिलहाल उसी पर निर्भर करते हैं। है न यही बात ?"

"मेरी तो यही धारणा है मिस्टर बड। वे इस रुपये को यात्रा पर तथा अपने "शब्द" के प्रचार पर खर्च कर रहे हैं।"

"यह "शब्द" क्या है ?"

"मुझे कुछ पता नहीं। मैं तो कमीशन पर उनके जाली नोट चलाने वाला एक अभागा व्यक्ति हूं; मुझे इन बड़ी बड़ी बातों की कोई जानकारी नहीं।"

"और तुमने मुझसे अपने जिस परिवार की चर्चा की थी वह वास्तविक है या काल्पनिक ?"

"वह तो मैंने योंही कह दिया था, मिस्टर बड। मेरे एक पत्नी थी किन्तु वह एक दूसरे व्यक्ति के साथ भाग गयी। मुझे आशा थी कि मैं किसी लड़की के साथ शादी कर लूंगा। किन्तु इस प्रकार का काम करते हुए इसकी सम्भावना एक प्रकार से बिल्कुल ही नहीं है। मैं पुलिस की नजर से बचने के लिये एक स्थान पर टिक नहीं पाता। इधर से उधर भागता रहता हूँ।"

"इस वोल्किश्चरबण्ड' के जिन व्यक्तियों का तुमने नाम लिया है उनके अतिरिक्त अन्य किसी को भी जानते हो ?"

"हां, एक व्यक्ति और है जो इन लोगों का "शब्द" लिखने का काम करता है। मैं उसके "शब्द" तो कभी न सुन पाया किन्तु उसका नाम सुन लिया है। वह है मेसनर।"

(१५)

लैनी बड एक कार्यकुशल व्यक्ति था और उसे बचपन से ही उस कला की शिक्षा मिली थी जिसे व्यावहारिक बुद्धि कहा जाता है। इसलिये जब जजमान ने मेसनर का नाम लिया तब उसने किसी प्रकारके आश्चर्य का भाव न दिखाया। बल्कि सच तो यह है कि उसे इस बात से कोई विशेष आश्चर्य हुआ भी न हुआ था। वह पिछले दो सप्ताहोंसे कर्ट मेसनर के बारे में सोच रहा था और उसे स्वयं इस बात का सन्देह था कि कर्ट मेसनर हिमलरी मुद्रा के सम्बन्धमें कुछ न कुछ जानकारी अवश्य रखता होगा और सम्भवतः इसको उपयोग भी करता होगा। हां इतना अवश्य है कि लैनी को यह विश्वास बराबर रहा कि यदि मेसनर इस जाली मुद्रा का कोई उपयोग करता होगा तो दार्शनिक आदर्शवाद के अनुसार किसी उच्च आदर्श के लिये ही करता होगा।

उसने बिना विशेष कौतूहल प्रदर्शित किये हुए प्रश्न किया। "इस मेसनर के बारे में तुम क्या जानते हो ?"

"मैं जानता हूँ कि वह एक संगीतज्ञ है और उसका पूरा नाम कर्ट मेसनर है।

स्टुबेनडर्फ में लोग उसकी काफी चर्चा करते हैं। किन्तु मुझे संगीत के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं है।"

"मैंने शायद एक बार उसका संगीत सुना है।" लैनी ने कहा क्यों कि वह अनावश्यक रूपमें असत्यभाषण का पक्षपाती न था।

"अब वह पियानो नहीं बजा सकता। युद्धमें वह अपना हाथ खो बैठा। वह अपने परिवार के साथ जिस मकान में रहता था वह भी नष्ट-भ्रष्ट हो गया है।'

"क्या तुम जानते हो कि इस समय वह कहाँ है?"

"मैंने सुना है कि यह पूर्वी जर्मनी के वेन्डेफुर्थ नामक ग्राममें रहता है।"

"शायद इस समय वह हिमलरी मुद्रा पर ही गुजर बसर करता है?"

"हां, मैं नकली नोट चलाकर जो कुछ लाता हूं उसका एक भाग उसके जीवनयापन में खर्च होता है। वह संस्था के लिये "शब्द" लिखता है। यह कोई अत्यन्त पवित्र शब्द है जो प्रति सप्ताह जर्मन जनतामें प्रसारित किया जाता है इस "शब्द" को कण्ठस्थ करके जर्मन लोग अपनी पितृभूमि के प्रति हिटलर द्वारा प्रस्थापित कर्त्तव्यपथ का स्मरण करते हैं और अपनी निष्ठा को बल प्रदान करते हैं किन्तु मेरा विश्वास है कि यह सब बकवास है और शायद ही कोई जर्मन इस ओर ध्यान देता होगा।"

लैनी यह जानना चाहता था कि जजमान की बातोंमें सत्य कितना है। किन्तु मेसनरके सम्बन्ध में उसने जो कुछ बताया उससे उसका संदेह दूर हो गया। कर्ट मेसनर की नैतिक कट्टरता ऐसी ही थी। स्पष्ट था कि यह सम्पूर्ण योजना उस समय बनी थी जब नाजी नेताओं को अपनी पराजय का निश्चय हो गया था और उन्होंने बवेरिया के पहाड़ों में छिपकर भविष्य के सम्बन्धमें अपनी क्रिया-शीलता जारी रखने की योजना बनायी थी। उन्होंने बवेरिया के पहाड़ोंमें अपने लिये भोजनादि और अस्त्र शस्त्रों का इतना बड़ा भण्डार छिपा दिया था कि वह आजीवन समाप्त न होता। किन्तु जेनरल पैटन ने उनकी सारी योजनाओं को छिन्न भिन्न कर दिया था। उन्होंने अप्रत्याशित तेजी से जर्मनी के अन्दर प्रवेश करके अधिकांश नाजी नेताओं को पकड़ लिया था। लैनी को ऐसा लगा कि अब प्रेसीडेण्ट ट्रूमन भी जर्मनी में गणतन्त्रीय शासन पद्धतिकी स्थापना अप्रत्याशित

तेजीके साथ करके नाजियों की महत्वाकांक्षाओं पर तुषारापात कर रहे हैं।

"और यह मेसनर भी कम्युनिस्ट हो गया है ?"

"मुझे कुछ पता नहीं, मिस्टर बड। किन्तु कम्युनिस्टों के साथ उसका कोई न कोई समझौता अवश्य हो गया होगा क्योंकि ऐसा न होता तो उसे वहाँ रहने न दिया जाता और उसके बच्चे स्कूल में भर्ती न हो सकते।"

लैनी ने कहा, "मुझे आशा है कि तुम झूठ नहीं बोल रहे। मैं चाहता हूँ कि तुमने मुझे जो कुछ बताया है वही हमारे गुप्तचर विभाग के प्रधान अधिकारी मिस्टर मोरीसन के सम्मुख भी कहोगे। इस बात से भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारा गुप्तचर विभाग नाजियों के गुप्तचर विभाग से भिन्न है। हमलोग तुम्हारे साथ भद्रताका व्यवहार करेंगे और तुम्हें निरापद रखेंगे। तुम्हारी बातोंकी जांच करने में हम लोगोंको अधिक समय न लगेगा। तब तक तुम यात्रा सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन करके इस बात का निश्चय कर डालो कि तुम किस देश में जाना पसन्द करोगे। अब उठो और चटपट एक उष्ण स्नान कर डालो। तुम्हारे कपड़े सूख गए होंगे।"

लैनी ने टेलीफोन उठाकर होटल-क्लर्क को आदेश दिया कि नीचे जो दो व्यक्ति उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं उन्हें ऊपर भेज दिया जाय। इसके बाद उसने बेहरे को जजमानके कपड़े लाने का आदेश दे दिया। वह यह चेतावनी देना नहीं भूला कि उन कपड़ों पर डी० डी० टी० अवश्य छिड़क दिया जाय। कदाचित इस फैशनेबल होटल के कर्मचारियों को यह आश्चर्य हो रहा था कि इस अमरीकी भद्र पुरुष ने वर्षा से तर बतर एक भिखारी को अपने कमरे में क्यों बुलाया और उसके साथ क्या किया। किन्तु लैनी ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। इस समय बर्लिन के चारों अंचलों में आश्चर्यजनक घटनाएं हो रही थीं और यह भी उन असंख्य घटनाओं में से एक थी।

जजमान स्नानागार में था। इसी समय मोरीसन द्वारा भेजे गए दोनों व्यक्ति लैनी के सम्मुख आ उपस्थित हुए। लैनी ने उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया और आदेश दिया कि इस कैदी के साथ नम्र व्यवहार किया जाय किन्तु पूरी

सतर्कता रखी जाय। लैनी ने कहा कि वे दोनों व्यक्ति कैदी को अपनी गाड़ीमें ले जायं और वह अपनी गाड़ी में आ जाएगा।

उसने पांच सौ डालर के वे नोट फिर से अपनी गुप्त जेब में रख लिये। इसके बाद क्षौरकर्म और स्नान आदि से निवृत्त होकर वह यथासमय मोरीसन के कार्यालय में उपस्थित हो गया। इस समय तक वहां जजमानको लेकर वे दोनों व्यक्ति भी पहुँच चुके थे। मोरीसन जर्मन भाषा जानता था और उसके कार्यालय में एक जर्मन स्टेनोग्राफर भी था। इसलिये जजमान ने अपनी कहानी जर्मन भाषा में ही शुरू की। लैनी उसे ध्यान पूर्वक सुनता रहा और अपनी डायरी के साथ उसका मिलान करता रहा। जजमान ने मोरीसन के सम्मुख भी वही बातें कहीं जो उसने लैनी से कही थीं। लैनी को विश्वास हो गया कि वह सच बोल रहा है।

प्रश्नोत्तर समाप्त हो जानेके उपरान्त जजमान को ऊपरी मंजिल के एक कमरे में पहुंचा दिया गया। वहां एक व्यक्ति को उसके साथ रहने और पहरा रखने की व्यवस्था कर दी गयी। जजमानसे कह दिया गया कि जब तक उसके वक्तव्य की जांच हो तब तक वह 'चेकर्स" का खेल सीखे और यात्रा-साहित्य का अध्ययन करके इस बात का निश्चय करे कि यहां से छूटने के बाद वह किस देश में जाना पसंद करेगा। मोरीसन ने भी लैनी द्वारा किये गये समझौते का पुष्टीकरण कर दिया। उसने लैनी को इस सफलता के लिये बधाई दी और यह मत प्रदर्शित किया कि जजमान की कहानी सम्भवतः सत्य है। सेना के गुप्तचर विभाग, जो "जी २" के नामसे प्रसिद्ध था, का भी यही कहना था कि इस प्रकार के षड़यन्त्रकारियों के अनेकों दल सारी जर्मनी में फैले हुए हैं। किन्तु जब तक वे कोई राजद्रोहात्मक कार्य का परिचय नहीं देते तब तक उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इन्हें मोरीसन "बीयरहाल के षड़यन्त्रकारी" कहा करता था। लैनी ने चेतावनी दी, "इनपर कड़ी नजर रखो। मैंने एडल्फ हिटलर की प्रथम वक्तृता बीयर हाल में शुरू होते हुए देखी थी।"

अध्याय ५

● एक मित्र के घाव ●

(१)

लैंनी ट्रेजरी विभाग के प्रधान मिस्टर मोरीसन के साथ विचार विनिमय करने लगा। प्रश्न यह था कि जजमान से जो सूराग प्राप्त हुआ है। उसका उपयोग किस प्रकार किया जाय। "मामला टेढ़ा है।" मोरीसन ने कहा, "ये लोग सन्देहशील हैं और हत्या करने में भी इन्हें किंचित मात्र हिचक नहीं होती। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम लोग इनका पता कर्ट मेसनर के माध्यम से ही लगा सकते हैं। किन्तु मेसनर एकाकी जीवन बिता रहा है। क्या आप उससे मिलेंगे, मिस्टर बड ?"

"यदि आप चाहें तो मैं प्रयत्न कर सकता हूँ। किन्तु मेरा विश्वास है कि अब मैं कर्ट मेसनर को चकमा नहीं दे सकता। आप जानते ही हैं मैं उसे दो बार धोखा दे चुका हूं और अब वह मेरे भुलावे में न आएगा।"

"आप प्रयत्न कीजिए, मिस्टर बड। किन्तु पहले आप एक गुप्त एजेण्ट के रूप में उसकी सम्पूर्ण क्रियाशीलता की कहानी मुझे बता दीजिये।"

"सबसे पहले मुझे प्रथम महायुद्ध के बाद उसकी राजनैतिक क्रियाशीलता का परिचय प्राप्त हुआ। यह पेरिस में जर्मन सेना के एक गुप्त एजेन्ट के रूप में नियुक्त था। युद्ध के समय वह जर्मन सेना में तोपखाने के एक कप्तान के रूप में काम कर चुका था। किन्तु इस समय वह पेरिस में मजदूरों को भड़काने के लिये एक एजेन्ट के रूप में भेजा गया था। यह आशा थी कि पेरिस के मजदूरों में असंतोष फैलने से जर्मनी को संधि के प्रसंग में अपेक्षाकृत अच्छी शर्तें प्राप्त हो जाएंगी। यदि वह पकड़ लिया जाता तो उसे तुरन्त गोली मार दी जाती। किन्तु उस समय वह मेरा मित्र था और मैंने उसे पेरिस से भागने में सहायता पहुँचाई थी। लगभग बारह-तेरह वर्ष बाद वह फिर पेरिस पहुंचा। इस बार उसको निस्सीम

रूप में रुपया खर्च करने का अधिकार था। उसकी इस यात्रा का उद्देश्य था पेरिस के प्रतिक्रियावादियों को हिटलर के पक्षमें ले आना। उस अवसर पर भी मैंने उसकी सहायता की थी क्यों कि मेरे लिये यह छल आवश्यक था। उन दिनों मैं प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट के गुप्त एजेण्ट के रूप में काम कर रहा था। इसके बाद इस महायुद्ध में जब हमारी सेनाएं राइन की ओर बढ़ रही थीं, कर्ट ट्रूल में बैठा हुआ हम लोगों के विरुद्ध जासूसी कर रहा था। इन सब बातों से आप समझ सकते हैं कि यह एक पक्का षड़यन्त्रकारी है।"

"जो भी हो, आप जाकर उससे एक बार मिलिये।" मोरीसन ने कहा, "उसके साथ मित्रता स्थापित करने का पूरा पूरा प्रयत्न करिये। अधिक से अधिक वह इतना ही कर सकता है कि आप को निकाल दे। तब भी आपको उसकी मानसिक स्थिति और निवास स्थान के सम्बन्ध में कुछ न कुछ जानकारी तो मिल ही जाएगी। सम्भव है उसके गिरोह के कुछ व्यक्ति वहीं कहीं आसपास रहते हों। इस बात की भी सम्भावना है कि वे लोग अपने जाली नोटों का अधिकांश भाग वहीं ले गए हों। उनके नोट छापनेके ब्लाक और छापाखाना भी सम्भवतः वहीं कहीं हो सकता है। आप को वहां जाने के लिये आवश्यक अनुमति प्राप्त करने में भी कोई कठिनाई न होगी क्यों कि रूसी लोग अब आपसे परिचित हो गए हैं।"

मोरीसन ने अपने मेज की दराजसे उत्तरी जर्मनी का एक मानचित्र निकाला और उसमें वेण्डेफुर्थ ग्राम ढूंढ़ निकाला।

लैनी एक टैक्सी लेकर पूर्वी जर्मनी के कार्ल्सहोर्स्ट जिले की ओर रवाना हुआ और एक बार फिर मार्शल सोकोलोव्सकी के कार्यालय में पहुँच कर युवक पदाधिकारी के साथ भेंट की। इस बार उसे अनुमतिपत्र प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हुई क्योंकि वह स्टालिन के एक पुराने मित्र के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। हारज्राइस नामक स्थान की यात्रा के लिये उसे अनुमति पत्र हाथोहाथ प्राप्त हो गया। यह पार्वत्य प्रदेश जर्मनी के रूसी अंचल में पड़ता है। लैनी ने अपना स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि स्टूबेनडर्फ में उसे कोई चित्र न मिल सका, सारा नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गया है, किन्तु उसे एक पुराने मित्र का पता लगा है जो इन चित्रों

के सम्बन्ध में कुछ जानकारी दे सकता है, यह मित्र हारब्राइस अंचलमें रहता है।

अनुमति पत्र लेकर लैनी बर्लिनके ब्रिटिश अंचल को पार करते हुए जब पुनः रूसी अंचल की सीमा पर आया उसने सैनिकों को अपना नया अनुमति पत्र दिखा दिया और उसे अविलम्ब आगे बढ़ने की आज्ञा प्राप्त हो गयी। वह जिस सड़क पर यात्रा कर रहा था वह मागडेबर्ग नामक नगर से कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर घूमकर गयी थी। यह नगर बमबाजी के कारण पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। मार्ग में ओसचर्सलोबेन और हालबर्सटाड्ट नामक दो नगर और भी पड़ते थे। ये भी एकदम क्षत विक्षत हो चुके थे।

इसके बाद क्वेडलिन्गबर्ग नामक नगर आता था जो जर्मनी की प्रथम राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। आज से प्रायः एक हजार वर्ष पूर्व राजा हाइनरिक प्रथम ने इस नगर को ही अपनी राजधानी बनाया था। इस नगर के साथ अनेकों दन्तकथाएं और जनश्रुतियां फैली हुई हैं। एक हजार वर्ष प्राचीन किला तथा उपासना मंदिर अब भी खड़ा हुआ है। एक आश्चर्य जनक संयोग की बात है कि हाइनरिक हिमलर ने भी अपने "स्चूट्ज टाफेल" और "हिटलर यूथ" के संगठन के लिये इस स्थान को ही चुना था। प्रति वर्ष यहां पर बड़ा भारी महोत्सव मनाया जाता था और हिमलर स्वयं आकर हाइनरिक प्रथम की जन्मतिथि के जलसे का उद्घाटन करता था। उसने यह इच्छा प्रकट की थी कि मृत्यु के बाद उसे राजा हाइनरिक की समाधि के पास ही दफनाया जाय और उसने वहां पर अपना स्थान चुन कर एक भव्य समाधि बनवा भी ली थी। किन्तु दुर्भाग्यवश उसकी मृत्यु पूर्वकल्पित योजना के अनुसार न हुई। जब उसने साइनाइड विष की छोटी सी शीशी चबाकर आत्महत्या कर ली थी तब ब्रिटिश सैनिक उसकी लाश को एक जंगल में घसीट ले गए थे। वहां उन्होंने उसके शव पर थोड़ी बहुत लकड़ी खर्च करने की आवश्यकता भी न समझी थी; जमीन में एक गढ़ा खोदकर हिमलर की लाश को यों ही दफना दिया गया था। उस समय ब्रिटिश सर्जेण्ट ने कहा था। "कीड़े को कीड़ों में मिल जाने दो! जर्मन लोग अपने हजार वर्ष प्राचीन ऐतिहासिक राजाओं का सम्मान करना चाहें तो करें, किन्तु वे एक नाजी कीड़े का सम्मान नहीं कर सकते!"

(२)

अपने सुदीर्घ यात्रा-पथ का अतिक्रमण करने के पश्चात लैनी उस छोटी सी घाटी में पहुंचा जिसकी पहाड़ी चट्टानों और सदा हरे रहनेवाले वृक्षकुञ्जों के बीच वेन्डेफुर्थ नामक छोटा सा ग्राम स्थित था। वह अपनी गाड़ी के लिये पेट्रोल खरीदनेके लिये रुका। पेट्रोल लेकर उसने कर्ट मेसनर का पता पूछा तो एक निर्जन स्थान में छोटी सी झोपड़ी की ओर संकेत किया गया। वह उस झोपड़ी के समीप पहुँचा तो देखा कि वह एक सुन्दर मकान है। मन ही मन उसने अनुमान लगाया कि उसमें लगभग छै कमरे होंगे। मुख्य मकान से कुछ हट कर एक छोटी सी झोपड़ी दिखाई पड़ी। लैनी ने मन ही मन समझ लिया कि यह स्थान कदाचित कर्ट का संगीतगृह है। स्पष्ट था कि हिटलर के तृतीय साम्राज्य का दरबारी गायक तकलीफ में न था।

लैनी अपनी गाड़ी एक ओर खड़ी करके नीचे उतरा तो उसका दिल धड़क रहा था। उसने दरवाजे पर कराघात किया और प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में दरवाजा खुला और एक महिला उसके सामने उपस्थित हुई। इस महिला से लैनी भलीभांति परिचित था किन्तु इस समय उसके रूपान्तरको देखकर वह अवाक रह गया। उसकी आयु वस्तुतः चालीस के आसपास थी किन्तु वह साठ वर्ष की सी प्रतीत हो रही थी। उसके बाल जो एक समय पाण्डु वर्ण थे इस समय एकदम श्वेत प्रतीत हो रहे थे। पहले वह कुछ स्थूलकाय थी किन्तु अब दुबली पतली प्रतीत हो रही थी और उसके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएं अंकित थीं। वह मानव इतिहास के सात सबसे अधिक अभिशापग्रस्त वर्षों से गुजरी थी और अपने आठ बच्चोंकी मृत्यु से रक्षा करने में व्यस्त रही थी। इस दिशा में उसे कितनी सफलता मिली इसकी लैनी को कोई जानकारी न थी।

महिला ने अपने सामने सुन्दर वस्त्रों से अलंकृत एक विदेशी सज्जन को देखा तो कुछ ठिठकी। आगंतुक उसके पतिकी भाँति ही लम्बा था, उसके छोटी-छोटी मूछें थीं, उसके शरीर पर इंगलिश ट्वीड का एक सुन्दर ओवरकोट और हैमबर्ग हैट शोभायमान था। वह कुछ देर तक आगंतुक को ध्यानपूर्वक देखती रही। अचानक आश्चर्य से उसकी आँखे फैल गयीं और वह कम्पित स्वर में बोल उठी, "मिस्टर बड!"

लैनी ने प्रत्युत्तर में अभिवादन किया।

किन्तु महिला उसी प्रकार आँखे फाड़े हुए खड़ी रह गयी। "वह आप से न मिलेगा, मिस्टर बड!" उसने धीमें स्वर में कहा। महिला ने अपने पति का नाम न लिया। उसके लिये संसार में एक ही व्यक्ति था और उसके लिये 'वह' को सम्बोधन पर्याप्त था।

लैनी ने इसी प्रकार की स्थिति की कल्पना की थी। वह अप्रतिभ न हुआ और दृढ़तापूर्वक एक कदम आगे बढ़कर बोला," मुझे भीतर जाने दो, एलसा।" भीतु महिला ने कोई प्रतिरोध न किया।

भीतर प्रवेश करते ही लैनी ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। कमरे की सजावट कर्ट की रुचि के अनुसार न थी और यह स्पष्ट था कि वह यहां किराये पर रहता था। "डोरोथी, तुम मुझ से नाराज क्यों हो?" उसने महिला की ओर मुड़कर कहा। महिला का वास्तविक नाम डोरोथी न था किन्तु लैनी ने एक समय उसे जर्मनी के महान कवि गेटे की इस काल्पनिक नायिका के नाम से पुकारना शुरू कर दिया था।

"वह तुम से घृणा करता है।" महिला ने उत्तर दिया।

"मैंने उसे क्षमा कर दिया है डोरोथी।" लैनी ने कहा, "कहाँ है वह?"

"वह संगीतगृह में है। इस समय वह संगीत की रचना में व्यस्त है।"

"मैं इस समय उसे परेशान न करूंगा। यहीं पर बैठकर प्रतीक्षा करूंगा। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है?"

"उसे यह बात पसन्द न आएगी, मिस्टर बड।" उसने दबे हुए कण्ठ स्वर में कहा, "वह मुझ पर क्रुद्ध होगा।"

'अच्छा तब मै यहाँ न बैठूंगा। मैं संगीतगृह में चला जाता हूं। चिन्ता न करो, मै कोई बाधा न डालूंगा। मैं सुदूर अमेरिका से चलकर इतनी लम्बी यात्रा करके केवल उससे भेंट करने के लिये आया हूं। पुराने मित्रों में झगड़ा होना सदैव एक दुखद बात होती है। मुझे उसके साथ मनोमालिन्य होने का बड़ा दुख है और मैं जानता हूं कि इससे उसके हृदय को भी काफी चोट पहुंची है। मैं उसके साथ सुलह कर लेना चाहता हूँ।"

"मैं समझती हूं कि आपको यह आशा व्यर्थ है।"

"कम से कम मुझे प्रयत्न तो कर लेना चाहिये। बच्चे कैसे हैं?"

"एक को छोड़कर और सब सकुशल बच गए हैं। इससे अधिक की मैं आशा भी न करती थी।"

"तुम लोगों का खर्च कैसे चलता है?"

"बस किसी प्रकार चल रहा है। बच्चे कुछ मदद कर देते हैं।"

"अच्छा, मैं उससे मिलने जाता हूँ। मेरी सफलता के लिये प्रार्थना करना एल्सा।" लैनी जानता था कि एल्सा एक धार्मिक महिला है और वह उसके इस अनुरोध को गम्भीरता पूर्वक लेगी।

(३)

वह सस्ते ढंग से सफेद पुते हुए संगीतगृह की ओर चला। भीतर से पियानो का स्वर आ रहा था। लैनी इस बात से अवगत था कि गत महायुद्ध में कर्ट अपना बांया हाथ बेकाम कर चुका है और इसलिये उसे इस स्वर लहरी में दुःख और निराशा की अमिट छाप का अनुभव हो रहा था। कर्ट अपनी सम्पूर्ण रचना को सुव्यवस्थित रूप में दोनों हाथों से न बजा सकता था; उसे एक ही हाथ से दोनों भाग अलग अलग बजाने पड़ते थे। किन्तु चूंकि वह एक कुशल संगीतज्ञ था इसलिये उसके मस्तिष्क में सम्पूर्ण रचना एकाकार हो जाती थी।

लैनी दरवाजे के पास आकर ठिठक गया। इस प्रकार बिना बुलाए आकर चोरी से खड़ा रहना अनुचित था, किन्तु लैनी ने इस समय भद्रता के नियमों की ओर ध्यान न दिया। वह जानता था कि इस समय कर्ट अपना संगीत ही नहीं बल्कि अपनी सम्पूर्ण आत्मा का अनावरण कर रहा है। यह वही पुराना कर्ट था जिससे लैनी वर्षों पूर्व परिचित हुआ था—गम्भीर, तपस्वी, अनुशासनप्रिय और आदर्शवादी।

वह पियानो पर भिन्न भिन्न प्रकार के प्रयोग कर रहा था। कभी वह एक लय उठाता कभी दूसरी, सुनने वाले के सामने उसकी प्रतिभा साकार होकर गतिमान होती हुई प्रतीत होती थी। एक समय उसने हिटलर के युद्धगीत की रचना की थी और उसकी बड़ी प्रशंसा हुई थी। किन्तु अब वह जिस गीत की रचना कर

रहा था वह युद्धगीत नहीं मृत्युगीत था। वह गौरव मण्डित जर्मनी के विजय अभियान का गीत सुनाते हुए यह स्पष्ट रूप में कहना चाहता था कि विश्व विजय के पथ पर बढ़ते हुए अचानक उसे वन्य पशुओं के आक्रमण का सामना करना पड़ा और वह धराशायी हो गयी। वह उस दुर्भाग्य का गीत गा रहा था जिसे शब्दों में व्यक्त करना बड़ा कठिन है। उसका गीत एक भव्य सभ्यता के तिरोधान का गीत था।

लैनी दरवाजे के पास चुपचाप मौन भाव से कब तक खड़ा रहा इसका कोई पता नहीं; सम्भवतः एक घण्टे से भी अधिक! उसके लिये यह एक विलक्षण अनुभव था। वह पांच छः हजार मील की यात्रा करके कर्ट से मिलने के लिये आया था। यदि उससे बिना बातचीत किये उसे योंही लौट जाना पड़ता तो भी वह अपनी पुरानी मित्रता को सार्थक मान लेता। उसके जीवन की कितनी ही सुखद घड़ियां इसी प्रकार उसके साथ महान संगीत की चर्चा करने में बीती थीं।

(४)

अन्त में कर्ट ने पियानो बजाना बन्द किया और लैनी ने दरवाजे पर कराघात किया। उसे उसकी पदध्वनि समीप आती हुई सुनाई दी। दरवाजा खुला और दोनों व्यक्ति एक दूसरे के आमने सामने हुए। "कहो कर्ट, क्या हाल है!" लैनी ने कहा। कर्ट किसी भी अवस्था में आश्चर्य का भाव दिखाने वाला व्यक्ति न था। वह लैनी की ओर एक टक भाव से देखता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। लैनी के पास अधिक समय न था। उसने शीघ्रतापूर्वक कहा, "कर्ट, मैं न्यूयार्क से इतनी लम्बी यात्रा करके तुमसे मिलने आया हूं।"

"मैं तुमसे मिलना नहीं चाहता।" उसने उत्तर दिया।

"तुम्हारी मित्रता टूट जाने का मुझे बड़ा दुःख है। मैं कैसे कहूं कि तुम्हारी मित्रता मेरे लिये कितनी मूल्यवान वस्तु थी। तुम मेरे गुरु थे।"

"किन्तु तुम एक अच्छे शिष्य प्रमाणित नहीं हुए।"

"हम दोनों मित्र थे और मित्रता का बंधन इतनी आसानी से नहीं टूटता। मैं बहुधा तुम्हारे सम्बन्ध में सोच सोच कर उस घटना के लिये पश्चाताप करता रहता हूँ।"

"अब उसके सम्बन्ध में कुछ करना सम्भव नहीं है।" कर्ट ने उदासीनता-पूर्वक कहा। "मेरे देश का सर्वनाश हो गया है और तुम्हारा देश विजयी हुआ है। अब तुम मालिक हो और हम लोग दास। यह बात तुम्हें संतुष्ट करने के लिये पर्याप्त है।"

"मुझे इससे कोई संतोष नहीं होता कर्ट। मुझे तुम्हारा स्वामी बनने की किंचित मात्र अभिलाषा नहीं है। मैंने यह कभी नहीं चाहा।"

"तुमने अपनी सद्भावना विचित्र रूप में व्यक्त की थी। मैंने संसार के सबसे महान् व्यक्ति के साथ तुम्हारा परिचय कराया और तुमने उसे धोखा दिया। उसके साथ-साथ तुमने मुझे भी धोखा दिया।"

"महायुद्ध समाप्त हो चुका है कर्ट; उसकी पुनरावृत्ति की कोई आवश्यकता नहीं। यह एक दुर्भाग्य की बात है कि युद्ध के प्रसंग में तुम्हारे देश ने एक रास्ता पकड़ा और मेरे देशने दूसरा। तुम्हें अपने देश का साथ देना था और मुझे अपने का। किन्तु वह सब बीत चुका है और अब विश्व स्थिति बदल गयी है।"

"हाँ इसीलिये अब तुम हमारी मित्रता के इच्छुक हो! तुम बीती बातों को भूल जाना चाहते हो!"

"मैं तुमसे राजनीति के अतिरिक्त अन्य विषयों पर बातें करने आया हूँ। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारे सम्बन्ध में मेरी धारणा कभी नहीं बदली मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि अपने हृदय से कटुता को निकाल दो। क्या तुम मुझे भीतर न आने दोगे?"

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। किन्तु कर्ट ने दरवाजा पूरी तरह खोल दिया और एक कदम पीछे हट गया। लैनी ने अन्दर आकर देखा कि पुराने संगीतगृह का कोई चिन्ह अब अवशिष्ट न था। पुराने भव्य पियानो के स्थान पर एक सस्ता और छोटा सा पियानो रखा हुआ था। पास ही एक मेज पर स्वर संकेतों से चिन्हित कुछ कागज के ताव पड़े हुए थे। पुराने संगीतगृह की दीवारों पर तीन चित्र थे—बीथोवेन, ब्राह्मस्, और वाग्नेर। किन्तु यहाँ दीवारें सूनी थीं।

कर्ट पियानो के सामने रखी हुई एक छोटी सी मेज़ पर बैठ गया और लैनी को कमरे की एकमात्र कुर्सी की ओर संकेत किया। राजनीति और युद्ध की चर्चा से

बचने के लिये लैनी ने तुरन्त कहा, "कहो कर्ट, तुम्हारे साथ कैसी बीत रही है ? मुझे तुम्हारे बारे में बड़ी भारी चिन्ता रही है।"

"हम लोग विलासिता का जीवन नहीं बिता रहे। किन्तु उसके तो हम लोग कभी अभ्यस्त भी न थे। किसी प्रकार गुजर बसर हो रही है।"

"बच्चे कैसे हैं, कर्ट ?"

"बेचारा एडोल्फ जाता रहा। शेष सभी स्कूल में पढ़ते हैं। केवल फ्रित्ज बर्लिन में है। वह मेरा ज्येष्ठ पुत्र है। सत्रह वर्ष का हो गया है वह।"

"मैं मन में यह आशा दबाये हुए था कि शायद तुम्हारे किसी काम आ सकूं।"

"धन्यवाद ! किन्तु उसकी कोई आवश्यकता नहीं ! हमें दान नहीं चाहिये।"

"सम्भव है तुम कुछ पैसा बना सको। मैं अभी अपना पुराना व्यापार ही कर रहा हूं। शायद तुम मुझे कुछ चित्रों का पता बता सको।"

"मुझे किसी प्रकार के चित्रों की कोई जानकारी नहीं और मुझे अमरीकी पैसे की भी इच्छा नहीं।"

"राजनीति की चर्चा से बचने के लिये लैनी ने बात टालते हुए कहा, "मैंने फिर शादी कर ली है, कर्ट ! मेरे एक बच्चा है और दूसरे की आशा है। मैं अपनी पत्नी के साथ न्यूयार्क में रेडियो पर एक शान्ति-वार्ता चला रहा हूँ। मैं अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर शान्तिपूर्वक विचार करता रहा हूँ और संसार को एक तीसरे महायुद्ध की विभीषिका से बचाने के लिये जो कुछ सम्भव है करने का प्रयत्न करता हूं।"

"मैंने उसके सम्बन्ध में सुना है।" कर्ट ने कहा। उसके स्वर में अब भी उदासीनता का भाव था। "मैं समझता हूं कि इस प्रश्न पर किसी प्रकार का मत प्रदर्शित करने की योग्यता तुम में नहीं है। मेरा विश्वास है कि तुम अमरीकी लोग योरोप के मामलों में व्यर्थ ही अपनी टाँग अड़ा रहे हो। तुम लोगों को समुद्र पार अपने देश को लौट जाना चाहिये और यहाँ के मामले यहाँ वालों के लिये छोड़ देने चाहिये।"

लैनी ने देखा कि राजनीति की चर्चा से बचने का कोई उपाय नहीं। फल-स्वरूप उसने कहा, "यह तो तुम जानते ही होगे कर्ट कि ज्यों ही अमरीकी लोग योरोप छोड़कर चले जायेंगे त्यों ही रूस की कम्युनिस्ट सेनाएं आगे बढ़ने लगेंगी। कम से कम तुम यह तो न चाहोगे कि सारा योरोप रूस को समर्पित कर दिया जाय। रूस सारे संसार पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिये कितनी दूर तक तैयार है, इस सम्बन्ध में मैं तुम्हारा मत कई बार सुन चुका हूँ।"

"रूसियों के सम्बन्ध में मैंने अपनी राय नहीं बदली और दूसरी ओर अमरीकियों के सम्बन्ध में मेरी धारणाएं भी पहली जैसी ही हैं। मैं कहता हूं कि अमरीकियों को योरोप छोड़कर चला जाना चाहिये और स्वयं अपने सुधार की ओर ध्यान देना चाहिये।"

"तुम्हारे मन की कटुता तुम्हें वस्तु स्थिति पर निष्पक्ष रूप में विचार नहीं करने देती, कर्ट। इस समय संसार की जो स्थित है उसमें तुम्हें दो में से एक मार्ग अपनाना ही पड़ेगा। या तो तुम्हें पश्चिमी संसार की गणतांत्रिक व्यवस्था के साथ होना होगा या पूर्व की एकतांत्रिक व्यवस्था के साथ। हम लोग राष्ट्र संघ के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय शासन व्यवस्था की दिशा में एक प्रारम्भिक प्रयोग कर रहे हैं। मैं जानता हूं कि यह प्रयोग अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही है। किन्तु हम लोग चाहें तो शनैः शनैः इसका विकास हो सकता है। जर्मनी का हित राष्ट्र संघ के साथ रहने में ही है।"

"जर्मनी का वास्तविक हित जर्मन है। सारे जर्मन एक ही जाति के सदस्य हैं। हम अपने देश को टुकड़े टुकड़े होते नहीं देख सकते। और हम किसका साथ देंगे इसका निर्णय भी हम ही करेंगे।"

कर्ट के चेहरे पर उसी प्रकार की कठोरता का भाव था और वह लैनी की ओर इस प्रकार देख रहा था मानों वह कोई अपरिचित व्यक्ति हो जिससे कोई बड़ी भारी उद्दण्डता हो गई हो।

लैनी के हृदय में धीरे धीरे विस्मय का भाव जाग रहा था। आश्चर्य से अभिभूत होकर उसने कहा, "कर्ट! क्या तुम यह करना चाहते हो कि तुम्हें एक निर्दय तानाशाही के साथ मित्रता करने में कोई हिचक न होगी?"

"मैं जर्मनी में पैदा हुआ था और मैं यहीं रहूँगा तथा आवश्यकता पड़ने पर यहीं अपने प्राणों का त्याग करूंगा।"

"किन्तु कर्ट, तुम्हारे बच्चों का क्या होगा? ये लोग इन्हें तुम से छीन लेंगे और कट्टर कम्युनिस्टों के रूप में परिवर्त्तित करके स्वयं तुम पर जासूसों के रूप में तैनात कर देंगे। तुम्हारे मुंह से निकलने वाला प्रत्येक शब्द ये बच्चे ही वहां तक पहुंचाया करेंगे। वे तुम्हारे बच्चों को ही तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देने के लिये खड़ा करेंगे।"

"मैं तुम से इस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहता। मैं तुम अमरीकियों से केवल एक बात कहता हूं। वह यह की हमारा देश छोड़ कर चले जाओ और हमें अपनी समस्याओं का समाधान अपने ढंग से करने दो। यदि तुम लोग यहां न आए होते तो हम लोग स्वतन्त्र बने रहते, योरोप हजार वर्षों तक शान्त रहता और सब कुछ वैसा ही होता जैसा कि हमारे महान् नेता हिटलर ने कहा था।"

लैनी के सामने वस्तु स्थिति स्पष्ट थी। कर्ट अभी कट्टर नाजी था और इस बात की पूरी पूरी सम्भावना की कि आगे चलकर वह कम्युनिस्ट हो जाए। वह लैनी के साथ सारे अमरीकियों का सत्यानाश देखने के लिये कृतसंकल्प था।

किन्तु लैनी निराश न हुआ। वह इस प्रकार की स्थिति के लिये पहले से ही तैयार होकर आया था। "सुनो कर्ट" उसने अनुरोध के स्वर में कहना शुरू किया, "बचपन में मैंने एक तमाशा देखा था। एक छोटे से कॉंच से देखने पर अन्दर एक रंग बिरंगा दृश्य दिखाई देता था, इसके बाद कॉंच को थोड़ा सा हिलाते ही एक नया दृश्य दिखाई देने लगता था। संसार की वही हालत हुई है, कर्ट। पुराना दृश्य अब दुबारा दिखाई न देगा। इस समय हमारे सामने केवल दो मार्ग हैं और हमें इन में से किसी एक को आन्तिक रूप में चुनना ही पड़ेगा। एक ओर है गणतांत्रिक संसार जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाग्य निर्णय के लिये पूरी-पूरी स्वाधीनता रहती है; दूसरी ओर है एकतांत्रिक तानाशाही का संसार जिसमें मनुष्य एक कठपुतली बन जाता है। पश्चिमी जर्मनी में हम लोग एक गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना कर रहे हैं। पूर्वी जर्मनी में स्वतन्त्र विचार रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को या तो गोली मार दी जाएगी या साइबेरिया की खदानों में

काम करने के लिये निर्वासित कर दिया जाएगा। बच्चों को कम्युनिज्म के धर्म में दीक्षित कर लिया जाएगा और इस सम्बन्ध में उनके माता पिता की इच्छा को कोई महत्व न दिया जाएगा। आवश्यकता हुई तो माता-पिता का काम तमाम कर दिया जाएगा। तुम्हें ऊपर से यह आदेश प्राप्त हुआ करेगा कि तुम किस प्रकार का संगीत लिखो–ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बेचारे शोस्टाकोविच को आदेश दिया जाता था। क्या तुम इस प्रकार के संसार में रह सकोगे? मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे तुम्हारे परिवार को पश्चिमी जर्मनी में ले आने की व्यवस्था करने दो। वहां तुम्हारा प्रभाव अक्षुण्ण रहेगा, तुम एक महान संगीतज्ञ के रूप में प्रसिद्ध बने रहोगे और शायद पहले की भांति पियानो भी बजाने लगोगे।'

"तुम इस बात को भूल गए हो कि मेरा बायां हाथ बेकार हो गया है।"

"मैं इसे भूला नहीं हूँ, कर्ट। कुछ ही समय पूर्व मुझे सेप्ट—साएन्स के सम्बन्ध में थोड़ी सी जानकारी मिली थी। उसके एक संगीतज्ञ मित्र युद्ध के प्रसंग में अपना एक हाथ खो बैठे थे। अपने इस मित्र के लिये सेप्ट-साएन्स ने एक ऐसी भव्य स्वर लहरी रचित की जो केवल एक हाथ से बजायी जा सकती है। यह एक असाधारण वस्तु है।"

"मैंने उसकी स्वर लिपि देखी है किन्तु वह मेरे मस्तिष्क में एक अपंग व्यक्ति का चित्र उपस्थित कर देती है। यह अपंग संगीत है और मैं किसी भी परिस्थिति में इस प्रकार के प्रदर्शन के लिये तयार नहीं हो सकता।"

लैनी ने कहा, "खैर कोई बात नहीं। किन्तु यदि तुम पश्चिमी जर्मनी आना चाहो तो मैं हर प्रकार से तुम्हारी सहायता करके प्रसन्न होऊंगा। मुझे तुमको एक कम्युमिस्ट के रूपमें परिवर्त्तित होकर उस निर्दयता तथा असत्य का पक्ष लेते हुए देखकर बड़ा कष्ट हो रहा है, कर्ट।"

"मैं एक जर्मन हूँ और जर्मनी का हित साधन ही मेरा कर्तव्य है। इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ नहीं कहना है। मैं अपनी धारणाओं के लिये किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हूँ।"

"नहीं, नहीं, तुम अपने विचारों के लिये स्वतन्त्र हो।" लैनी ने उठते हुए कहा। "मुझे दुख है कि तुम मुझसे किसी प्रकार की सहायता नहीं लेना चाहते।

अच्छा, कमसे कम इतना तो करो कि भविष्य में कभी मेरी याद आवे तो मुझपर उदारतापूर्वक विचार करना !"

"अच्छा मैं इसका प्रयत्न करूंगा। किन्तु मैं तुम्हारे देश को क्षमा नहीं कर सकता।"

लैनी ने देखा कि इस विषय पर कुछ कहना सुनना व्यर्थ है। इसलिये वह चुप साध गया।

"मैं तुम्हें अपनी बात बताता हूं। हृदय से मैं अब भी वही हूं जिसे तुम वर्षों पूर्व एक बालक के रूप में देखा करते थे और मेरे लिये तुम अब भी संसार के सबसे अधिक बुद्धिमान पुरुष हो। क्या तुम पुरानी बात बिल्कुल भूल गए! जरा सोचो तो हम लोग किस प्रकार नोट्रे डेम चर्च के पास वाले टीले पर बैठते थे और मैं कितने दत्तचित्त से तुम्हारी बातें सुनता था। तुम किस प्रकार मुझे बीथोवेन, गेटे तथा जर्मन दार्शनिकों का आदर्शवाद समझाया करते थे! उन पुरानी बातों को याद करो और हाल ही में हम दोनों के बीच जिस कटुता की सृष्टि हो गयी है उसे अतीत के गर्भ में समा जाने दो।"

"अच्छी बात है। ऐसा ही होगा।" कर्ट ने कहा। उसके स्वर में निर्णय का भाव था। लैनी ने बिदा लेते हुए अपना हाथ बढ़ाया और कर्ट ने प्रत्युत्तर में अभिवादन किया। चलते चलते लैनी ने कहा, "मैं तुम्हें अपना साप्ताहिक समाचार पत्र भेजता रहूंगा। इससे तुम रुष्ट तो न होगे?"

(६)

लैनी अपनी मोटर में बैठकर रवाना हुआ। वह अपने उद्देश्य में पूर्णतया विफल हुआ था। उसने कर्ट के सम्मुख जाली नोटों के प्रश्न की चर्चा तक न उठाई थी क्योंकि वह जानता था कि इस प्रकार की मनोस्थिति में कर्ट से कोई लाभप्रद बात प्राप्त होने की कोई आशा नहीं। वह अब पहले जैसा व्यक्ति न रह गया था। उसे लैनी तथा संसार के प्रति गहरा मलाल था और वह पिछली बातों को भूलने के लिये तयार न था। एक तो उससे स्पष्टवादिता की आशा करना ही व्यर्थ था तिस पर एक मुसीबत यह भी थी कि उसकी बातों का भरोसा करना अत्यंत संदिग्ध बात थी। किन्तु एक बात पूर्णतया स्पष्ट थी। वह यह कि कर्ट ब्रिटेन

तथा अमेरिका की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखने के प्रश्न पर किंचित मात्र उत्साह न ले सकता था।

लैनी को अब इस बात पर पूर्ण विश्वास हो गया कि कर्ट ने कम्युनिस्टों के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता कर लिया है। अन्यथा एक कट्टर नाजी का "लाल क्रान्ति" के बीच इस प्रकार निरापद रहना असम्भव होता। कर्ट के पुराने राजनैतिक विश्वास ज्यों के त्यों रह गए होते तो वह कम्यूनिस्टों को अपने देश पर आक्रमण करनेवाले लुटेरोंके अतिरिक्त और किसी रूप में सम्बोधित न करता। आज वह अपना मुंह बन्द किये हुए इन कम्युनिस्टों के बीच में अपने परिवार के साथ बैठा हुआ था!

लैनी ने बर्लिन वापस आकर ट्रेजरी आफिस में अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। उसने अपनी रिपोर्ट में बताया कि कर्ट मेसनर वहां बैठा हुआ है और वह अत्यंत कटु, उग्र तथा प्रतिशोधपूर्ण भावनाओं से आक्रान्त प्रतीत होता है। कम्युनिस्टों के विरुद्ध वह एक शब्द भी नहीं कह रहा। जजमान का कथन कि वह नये नाजियों का नेता है कमसे कम आंशिक रूप में सत्य प्रतीत होता है। किन्तु साथ ही साथ इस बात की भी सम्भावना है कि वह कम्युनिस्टों से प्रतिशोध लेने के लिये व्यग्र है और उसका वाह्य व्यवहार एक छल मात्र है।

"मामला बड़ा टेढ़ा है।" मोरीसन ने अपनी सम्मति बताते हुए कहा। "हम लोगों को एक ऐसा व्यक्ति खोजना पड़ेगा जो ऊपरसे एक नाजी की भूमिका निभा सके और जो इन लोगों के रंग ढंग से भली भांति अवगत हो।"

"कर्ट असली नाजियों को पहचानता है। और उसके पास जानकारी प्राप्त करने के गुप्त साधन भी हैं। हम लोगों से मिल जाने वाले प्रत्येक नाजी की जानकारी उसे है और इसके अतिरिक्त वह बड़ी आसानी से इसका पता लगा सकता है। किन्तु मेरे मस्तिष्क में एक और विचार आया है—हम लोगों को उसके पास एक ऐसा व्यक्ति भेजना चाहिये जो कम्युनिस्ट होने का अभिनय कर सके। जिस गांव में कर्ट रहता है वहां कोई न कोई लाल अधिकारी अवश्य होगा। आपका आदमी वहां जाकर उसकी कृपा प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा। इसके बाद वह कर्ट तथा उसके गुट के विरुद्ध हो हल्ला मचाना शुरू करेगा—इतना नहीं

कि उन्हें गिरफ्तार करने की नौबत आ जाए किन्तु इतना अवश्य कि कर्ट आदि भयभीत हो उठें। भयभीत होकर कर्ट अपने गिरोह वालों के साथ भागने की सोचने लगेगा क्योंकि कम्युनिस्ट अंचल में वह अपने आपको निरापद न समझेगा। सम्भव है वह अपने जाली नोटों के बन्डल तथा प्लेट आदि लेकर पश्चिमी जर्मनी में चला आवे। यदि ऐसा हुआ तो आपका काम आसान हो जाएगा।"

"आपकी योजना सुन्दर है। हमें एक नाजी नहीं बल्कि एक कम्युनिष्ट की आवश्यकता है।"

"मेरे मस्तिष्क में एक और विचार भी है। एमिल मेसनर ने मुझसे कहा था कि कर्ट का एक लड़का पूर्वी जर्मनी के किसी स्कूल में है। कर्ट ने भी इस बात की पुष्टि की थी। उसका नाम फ्रित्ज है। मुझे उसकी याद है। मेरे सम्बन्ध में उसकी बड़ी ऊँची धारणाएं हैं। पुराने ज़माने में मैं जब उन लोगों के घर जाया करता था तो बच्चों के लिये उपहार ले जाता था और कर्ट तथा फ्रित्ज के साथ बहुधा पियानो बजाया करता था। संक्षेप में उस परिवार के साथ मेरा पुराना सम्बन्ध है। फ्रित्ज मुझे भूला न होगा। मैं सोच रहा हूं कि यदि उसने नाजी-वाद के आदर्शका त्याग कर दिया है तो उसके स्थान पर कौन सा आदर्श ग्रहण किया है? सम्भव है वह पक्का कम्युनिस्ट बन गया हो। यह भी सम्भव है कि वह मेरी भांति सोशलिस्ट हो। मैं उससे मिलकर बातें करना चाहता हूं। मुझे आशा है कि इससे कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा।"

"तब आप अवश्य इसका प्रयत्न कीजिये। एक बच्चे से कोई विशेष आशा नहीं की जा सकती। तब भी कुछ न कुछ लाभप्रद जानकारी प्राप्त होना असम्भव नहीं।"

(७)

प्रश्न यह था कि फ्रित्ज मेसनर से भेंट किस प्रकार की जाय। लैनी रूसी अंचल में जाकर उसके सम्बन्ध में पूछताछ कर सकता था किन्तु इससे संदेह उत्पन्न होनेकी सम्भावना थी। इसके अतिरिक्त यह बात उस तरुण विद्यार्थीके लिये भी कुछ असुविधाजनक हो सकती थी। लैनी उसके नाम एक पत्र डाल सकता था क्योंकि इस समय पत्र बिना सेन्सर हुए रूसी अंचल में जाने लगे थे।

किन्तु भय था कि कहीं स्कूल के अधिकारीगण अधिनायकों के अधिकार का प्रयोग करते हुए उसे खोलकर पढ़ न लें। फ्रित्ज एक कट्टर नाजी का पुत्र था और उस पर सतर्क दृष्टि रहना स्वाभाविक ही था। मोरीसन ने कहा कि उसके कार्यालय में एक युवक जर्मन काम करता है और वह ऐसे फटे पुराने कपड़े पहनता है कि अन्य जर्मनों के साथ मिलने जुलने में उसे कोई बाधा नहीं होती। वह लैनी का पत्र ले कर उस स्कूल में जाकर फ्रित्ज को दे सकता है और हाथोहाथ उसका उत्तर भी ला सकता है।

फ्रित्ज का पूरा नाम एमिल फ्रायडरिच मेसनर था। यह नामकरण उसके दो चाचाओं के आधार पर हुआ था। एक चाचा फ्रायडरिच गत महायुद्ध में पूर्वी सीमान्तपर लड़ते हुए हत हुआ था। प्रायः तीन वष पूर्व हिटलर से एक विशेष अनुमतिपत्र पाकर लैनी जब स्टबेनडर्फ गया था तब उसने युवक फ्रित्ज के साथ भेंट की थी। उस समय वह एक ऊंचे पूरे कद का, नीली आंखों वाला, स्वस्थ सबल चौदह वर्षीय युवक था। लैनी ने मन ही मन अनुमान लगाया कि इस समय वह और भी लम्बा हो गया होगा!

लैनी ने एक छोटा सा पत्र लिखा। "मुझे तुम्हारे चाचा एमिलसे एक संदेश प्राप्त हुआ है। क्या तुम संन्ध्या को ६ बजे यहां सैवाय होटल में आकर मेरे साथ भोजन कर सकते हो?" पत्रवाहक को उसने आदेश दे दिया कि वह फ्रित्ज के सम्बन्ध में स्कूल के अधिकारियों से कोई पूछताछ न करे बल्कि विद्यार्थियों से पूछ कर ही उसका पता लगा ले।

लैनी अपने होटल को लौट गया। वहाँ पहुंचकर उसने एक झपकी ली, स्नान किया और फिर अतीत के शानदार बर्लिन की स्मृति ताजी करने के लिये टहलने को निकल पड़ा। बर्लिन के इस भव्य नगर का निर्माण सैनिक गौरव, शक्ति और प्रभुत्व के प्रतीक के रूप में हुआ था और आज वह "दुष्ट संसार के अर्थ शून्य दम्भ के खण्डहर" के रूप में प्रतीत हो रहा था। संध्या के छः बजे वह सेवाय होटल में लौटकर बरामदे में बैठ गया और सन्ध्याकालीन समाचार पत्र पढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में सुन्दर बालों और नीली आँखों वाला एक युवक आया। इस समय उसका कद ठीक लैनी के कद के बराबर था—पाँच फीट दस इञ्च।

इन युवकों का विकास कितनी द्रुत गति से होता है ! यह भी एक आश्चर्यजनक बात है कि हर प्रकार के कष्टों के बावजूद जीवन के प्रति इनकी आस्था अक्षुण्ण रहती है। फ्रित्ज पर एक दृष्टि डालते ही यह स्पष्ट हो गया था कि वह एक भावुक और संवेदनशील प्रकृति का युवक है। वह अपने फटे पुराने कपड़ों में इस शानदार होटल में आकर कुछ कुण्ठित सा हो रहा था। वह उस आश्चर्यजनक हर बड से मिलने आया था जिसके प्रति यह बचपन से श्रद्धालु था—मालदार हर बड जो बिना शानदार उपहार लिये स्टूबेनडर्फ में प्रवेश न करते थे।

यह स्पष्ट था कि फ्रित्ज को पिछले कुछ समय से सात्विक भोजन न प्राप्त हो रहा था। इस समय उसके गालों पर जो रक्ताभ आभा दिखलाई दे रही थी वह सुन्दर स्वास्थ्य की नहीं बल्कि उत्तेजनाकी आभा थी। लैनी उसे होटल के शानदार भोजनालय में ले गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह इस युवक को ऐसा दिव्य भोजन खिलाएगा कि वर्षों तक वह उसे भूल न सकेगा। धीरे धीरे मेज़ पर सुन्दर सुस्वादु भोजन की असंख्य तश्तरियां आने लगी। फ्रित्ज आश्चर्य से अभिभूत हो गया। उससे दो एक बार प्रतिरोध भी किया किन्तु लैनी ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। भोजन के तारतम्य में लैनी ने उसे जेनरल ग्राफ और जेनरल एमिल के साथ अपनी मुलकात की बात बतायी। उसने कहा कि जेनरल एमिल ने उसे फ्रित्ज से मिलकर समाचार भेजने का विशेष आग्रह किया था। फ्रित्ज ने कहा कि वह सकुशल है और परिश्रम के साथ पढ़ रहा है ताकि शीघ्र ही अपने परिवार की कुछ सहायता कर सके। दोनों अंगरेज़ी में बातें कर रहे थे और इसलिये फ्रित्ज के विद्याप्रेम का एक स्पष्ट प्रमाण लैनी को मिल रहा था।

(८)

लैनी फ्रित्ज को लेकर कमरे के भीतर चला आया। यहाँ दोनों इच्छानुसार स्वतन्त्र रूप में बातें कर सकते थे। लैनी ने कहा कि पूर्वी जर्मनी के स्कूलों की स्थिति जानने के लिये उसके मन में बड़ा कौतूहल है। फ्रित्ज ने बताया कि रूसियों ने उसके स्कूल पर एक कम्युनिस्ट अधिकारी बैठा दिया है, किन्तु सारे शिक्षक अभी तक नहीं बदले जा सके हैं। इनमें से कई एक स्वतन्त्र विचार वाले व्यक्ति हैं और शिक्षा के क्षेत्र में निष्पक्षता की प्राचीन परम्परा को कायम रखने के

लिये यथासम्भव प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु उन्हें सतर्क रहना पड़ता है। वे कम्युनिज्म के विरुद्ध खुलेआम कुछ नहीं कर सकते क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जा सकता है। फिर भी, प्रत्यक्ष रूप में न सही, अप्रत्यक्ष रूप में वे विद्यार्थियों के सामने अपनी चिन्तन धारा रखते रहते हैं। विद्यार्थी अधिक स्पष्टवादिता से काम लेते हैं।

"विद्यार्थियों का क्या विचार है?" लैमी ने प्रश्न किया।

"वे कई दलों में विभक्त हैं और इन भिन्न भिन्न दलों के बीच काफी तर्क वितर्क चलता रहता है। कुछ पुराने देशभक्त अब भी बच गए हैं किन्तु वे मौन साधे हुए हैं। इस समय विद्यार्थियों में एक दल राष्ट्रीय समाजवादियों का है और एक दल गणतांत्रिक समाजवादियों का। कुछ कट्टर कम्युनिस्ट भी हैं। ये लोग अपने व्यक्तिगत जीवन के कष्टों से उत्पन्न होने वाली निराशा और प्रति हिंसा की भावनाके कारण ही कम्युनिज्ममें दीक्षित हुए हैं। अब ये लोग रूसियों की हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं किन्तु कुछ कम्युनिस्ट विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो अन्त तक जर्मन बने रहने के लिये कृतसंकल्प हैं। वे किसी भी अवस्था में रूसकी दासता स्वीकार करने के विरोधी हैं।"

"मुझे भय है कि रूस के एन० के० वी० डी० के चक्कर में आकर उन्हें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ेगी।"

"मैं जानता हूं", फ्रित्ज ने कहा, "और वे लोग भी जानते हैं। मेरे एक शिक्षक ने मुझे जान स्टुअर्ट मिल का "लिबर्टी" नामक लेख पढ़ने के लिये कहा था। मैंने उसे पढ़ा। इसके अतिरिक्त मैंने मिल्टन का "आरियोपागीटिका" भी पढ़ डाला। मैं विचारों की स्वतन्त्रता का समर्थक हूं। मेरा विश्वास है कि भाषण, चिन्तन और लेखन की पूर्ण स्वतन्त्रता रहनी चाहिये।"

फ्रित्ज, यदि तुम्हारे विश्वास इस प्रकार के हैं तो मुझे भय है कि तुम अधिक दिनों तक सोवियत क्षेत्र में न रह सकोगे। इस समय वहाँ सब कुछ अस्त व्यस्त है। किन्तु धीरे धीरे कम्युनिस्ट लोग वस्तुस्थिति को अपने ढंग से नियंत्रित करने का प्रयत्न करेंगे। वे तुम्हारे स्कूल के पुस्तकालय में मिल और मिल्टन जैसे लेखकों की पुस्तके न रहने देंगे। वे ऐसे शिक्षकों को न रहने देंगे जो विद्यार्थियों

के साथ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की कानाफूसी करते हैं। इन्हें पकड़ कर साइबेरिया की किसी खदान में काम करने के लिये भेज दिया जाएगा।"

"मैं जानता हूँ, मिस्टर बड। मैं इन सब बातों के लिये तयार भी हूँ। सम्भव है एक दिन मुझे चुपचाप अमरीकी अंचल में भाग आना पड़े। किन्तु मैं सोच रहा हूं कि यहाँ आकर जीविकोपार्जन के लिये मैं क्या करूंगा? मैं शरणार्थी शिविर में रहना पसंद नहीं करता।"

"इस समय तुम कैसे रहते हो?"

"बर्लिन के जिस अंचल में हम लोग रहते हैं वहां मकानों का बड़ा अभाव है। युद्ध के समय रूसियों के भारी भरकम तोपखानों ने इसी अंचल को सबसे अधिक क्षत विक्षत किया था। इस समय केवल एक कमरे में हम छै विद्यार्थी रह रहे हैं। हम लोगों ने एक से विचार रखने वाले साथियों को चुनकर अपना एक दल बना लिया है। फलस्वरूप हम लोगों में झगड़ा नहीं होता और कोई एक दूसरे की चुगली नहीं खाता। किन्तु जैसा कि आप कहते हैं सम्भवतः यह अधिक दिन न चल सकेगा।"

"तुम्हें खर्च के लिये रुपया कहां से मिलता है?"

"पिता जी प्रति मास सौ मार्क भेज देते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने कुछ रुपया बचा लिया था। थोड़ा बहुत मैं इधर उधर के काम करके कमा लेता हूं।"

"क्या तुम्हारे पिता तुम्हारे मन की वर्त्तमान स्थिति से अवगत हैं?"

"मुझे यह कहते हुए लज्जा होती है, मिस्टर बड, कि मैं उन्हें यह सब बताने के लिये साहस न बटोर पाया। कारण यह न था कि मैं इस बात से भय करता था कि वे रुपया भेजना बन्द कर देंगे। नहीं, इसकी मुझे चिन्ता न थी। किन्तु मुझे यह आशंका थी कि मेरी बातें सुनकर उनके हृदय को बहुत बड़ा आघात पहुंचेगा। मेरे राजनैतिक विश्वासों को जानकर कदाचित वे मुझे घर से निकाल देंगे। आप समझ रहे हैं न कि मामला कैसा है? मेरे मन में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की जो धारणाएं हैं वे "अंगरेज और अमरीकी" धारणाएं हैं और उनकी दृष्टि में यह भयानक राज द्रोह है।"

"कर्ट ने अपने विचार अभी तक नहीं बदले?"

"मुझे इस बात की चर्चा करने में बड़ी परेशानी होती है, मिस्टर बड। किन्तु आपको यह बताना आवश्यक है मेरे पिता जी के विचारों में परिवर्तन अवश्य हुआ है किन्तु वह परिवर्त्तन अच्छाई की ओर नहीं बल्कि बुराई की ओर हुआ है। मेरा विश्वास है कि वे कट्टर कम्युनिस्ट हो गए हैं—मेरा तात्पर्य स्टालिनवादी कम्युनिस्ट से है।"

"फ्रित्ज ! मुझे इस पर विश्वास नहीं होता !"

"यह सच है, मिस्टर बड। आप उनके दृष्टिकोण से विचार कीजिये। एक अपाहिज व्यक्ति जिसके सिर पर परिवार का भार हो, कर भी क्या सकता है ? उसे अपने परिवार के लिये दो बीता जगह तो चाहिये ही। पिता जी ने स्पष्ट रूप में मुझे कुछ भी नहीं बताया है—शायद किसी को नहीं बताया है। किन्तु वे आजकल रहस्यमयी भाषा में बातें करते हैं। भविष्य की लहर, समय की गति, अतीत का लोप—इसी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करते हैं।"

"क्या तुमने कभी इस प्रश्न पर भी विचार किया है कि सम्भवतः तुम्हारे पिता जी को गुजर बसर का खर्च कम्युनिस्टों से मिलता हो ?"

"मैंने इस सम्भावना पर विचार किया है और इसीलिये मैं अपनी शिक्षा समाप्त करके उपाधि प्राप्त करने के लिये इतनी शीघ्रता कर रहा हूँ।"

"फ्रित्ज, मुझे भय है कि एक कम्युनिस्ट नियंत्रित स्कूल की उपाधि बर्लिन के अमरीकी अथवा ब्रिटिश अंचल में अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणित न होगी।"

लैनी ने देखा कि युवक के तीव्र स्पन्दनशील चेहरे पर चिन्ता की छाया दौड़ गयी है।

(९)

लैनी को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न पर आना था और इसलिये उसने बड़ी सावधानी के साथ अपनी भूमिका बाँधनी शुरू की !

"फ्रित्ज, यह समस्या केवल तुम्हारे सामने नहीं है सारे संसार के सामने ठीक यही प्रश्न उपस्थित है। इसी कारण गृहयुद्ध इतने भयानक हो जाते हैं। हमारे देश अमेरिका में भी लगभग एक शताब्दी पूर्व इसी प्रकार समस्या उपस्थित हुई थी। गृह-युद्ध के फलस्वरूप सीमान्त प्रदेश के राज्यों में जनता दो दलों में विभक्त हो

गयी थी। एक ही परिवार में कुछ सदस्य उत्तर का पक्ष लेते थे और कुछ दक्षिण का। पिता एक ओर और पुत्र दूसरी ओर, एक भाई एक ओर दूसरा दूसरी ओर। ये लोग युद्ध क्षेत्र में एक दूसरे के शत्रु के रूप में मिलते थे। एक भाई पर दूसरा भाई जासूसी करने और उसे गिरफ्तार करने के लिये बाध्य हो जाता था, कभी कभी स्वयं उसका निर्णय करके मृत्यु दण्ड देने के लिये विवश हो जाता था।"

"मैं जानता हूं, मिस्टर वड। स्कूल के पाठ्य-क्रम में एम्ब्रोस ब्रायस की एक छोटी सी कहानी थी और इसे पढ़ कर मैंने अमेरिका के गृह-युद्ध के सम्बन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त की थी।"

"तुम्हारी समस्या मेरे हृदय को इसलिये और भी उद्वेलित कर रही है क्योंकि मेरे अपने जीवन में भी ठीक इसी प्रकार की समस्या उपस्थित हो गयी है। मेरे एक सौतेली बहन है—नाम है बेस। मैं उसे बचपन से ही जानता हूं। बचपन में वह बहुत ही सुन्दर, शिष्ट और प्रतिभा सम्पन्न थी। मेरे जरिये वायलिन-वादक हैन्सी राबिन के साथ उसकी भेंट हुई। और दोनों की शादी हो गई। कुछ वर्षों तक दोनों सुखी रहे और उनका कौटुम्बिक जीवन प्रेमपूर्ण बना रहा। किन्तु अब वह कम्युनिस्ट बन गयी है—पार्टी की सदस्या है। उसका दृष्टिकोण अत्यन्त कटु, प्रतिहिंसापूर्ण और उग्र हो गया है। मैंने और हैन्सी ने उसे समझाने का हर सम्भव प्रयत्न कर लिया किन्तु कोई लाभ न हुआ। वह हमारे देश की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उपभोग करती है और बदले में उस स्वतंत्रता की जड़ काटने के लिये प्रयत्नशील है। वह हमारे संविधान में स्वीकृत व्यक्तिगत अधिकारों का उपभोग करती है और बदले में अन्य नागरिकों से इन अधिकारों को छीन लेने के लिये कृतसंकल्प है। अभी तक तो वह पार्टी की प्रचारक ही रही है किन्तु अब चूंकि सोवियत रूस का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक उग्र हो गया है वस्तु स्थिति क्रमशः गम्भीर होती जा रही है। वे लोग अपने आप को अन्तर्राष्ट्रीयतावादी कहते हैं किन्तु वस्तुतः इनमें अन्तर्राष्ट्रीयता की छाया तक नहीं है। ये लोग वास्तव में पुराने जारों की भांति साम्राज्यवादी मनोवृत्ति रखते हैं और येन केन प्रकारेण अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। अभी तक तो शीत-युद्ध की स्थिति रही है किन्तु धीरे धीरे वह उष्ण युद्ध की ओर बढ़ रही है।

अब मेरे सामने एक समस्या खड़ी हो गयी है। यदि किसी दिन मुझे इस बात का पता लगा कि बेस राजद्रोहात्मक कार्य कर रही है—अर्थात् हम लोगों के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रही है अथवा महत्वपूर्ण सरकारी कागजात चुराने का प्रयत्न कर रही है—तो मैं क्या करूंगा? क्या मैं अपनी बहन के विरुद्ध कदम उठा सकूंगा? उसे जेल भेज सकूंगा? अथवा उसे मृत्यु दण्ड दिला सकूंगा? ऐसी स्थिति में तुम क्या करते फ्रिज?"

"मैं निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकता, मिस्टर बड। यह एक भयानक निर्णय होगा। किन्तु सम्भव है अपना कर्त्तव्य समझ कर मैं यह सब कर डालूं।"

"बेस मुझे अपने कार्यकलाप के सम्बन्ध में कुछ नहीं बताती बल्कि वह मुझसे ये बातें बड़ी सतर्कतापूर्वक छिपाने का प्रयत्न करती है! किन्तु एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि मैं इसे अपना कर्त्तव्य मान कर बेस के कार्यकलाप का पता लगाना शुरू कर दूं। बस उसी दिन मेरी मानसिक शान्ति समाप्त हो जायगी। लाख चेष्टा करके भी मैं इस बात को भूल नहीं पाता।"

लैनी क्षण भर चुप रहा, इसके बाद फिर कहना शुरू किया, "मैं इसी प्रकार का एक दूसरा मामला तुम्हें सुनाता हूँ। यह पिता और पुत्र का मामला है। न्यूयार्क में मेरा एक जर्मन मित्र था। उनका नाम था फारेस्ट क्वाड्राट। प्रथम महायुद्ध के समय वह न्यूयार्क में कैसर के एक गुप्तचर के रूप में तैनात था। इसके बाद वह हिटलर का प्रचारक बन बैठा। युद्ध काल में उसे पकड़ लिया गया और कई वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। संयोगवश उसके एक पुत्र का और उसका दृष्टिकोण ठीक वैसा ही था जैसा कि तुम्हारा है। वह एक प्रमुख कवि तथा शिक्षक था और उसने अपने पिता के विरुद्ध खड़े होकर स्वाधीनता तथा गणतंत्र का पक्ष लिया था। मुझे ठीक से मालूम नहीं कि उसके पिता को कारावास का जो दण्ड मिला था उसमें उसका कितना हाथ था किन्तु इतना निश्चत है कि उसके हृदय में भयानक संघर्ष चला होगा। मैं तुम्हें ये बातें केवल इसीलिये बता रहा हूं ताकि तुम यह न समझो कि इस प्रकार की समस्या केवल तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुई है। तुम्हें इस समस्या पर विचार करके शीघ्र ही अपने मार्ग का निश्चय करना चाहिये।"

"मैं अपने मार्ग का निश्चय कर चुका हूं, मिस्टर बड ! मैं स्वतंत्र संसार का पक्ष लूंगा—इसके लिये भले ही मुझे भयानक मूल्य चुकाना पड़े। मैंने हिटलर का अधिनायकवाद देखा है और मैं जानता हूं कि उसके फलस्वरूप लाखों जर्मनों को अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी थी, यहूदियों की जो दुर्दशा हुई थी वह अलग। मैं यह भी जानता हूं कि स्टालिन के अधिनायकवाद के फलस्वरूप लाखों रूसियों तथा सीमा प्रान्तों के अन्य लोगों को मौत के घाट उतरना पड़ा। मैं इस बात से भली भांति अवगत हूँ कि इस समय भी रूस में लाखों व्यक्ति दास मजदूर शिविरों में पड़े हुए हैं। मैं इस स्थिति का कदापि समर्थन नहीं कर सकता इसके लिये मुझे अपने प्राणों की बलि भी देनी पड़ी तो मैं तैयार रहूंगा।

लैनी ने युवक की उज्ज्वल आँखों को देखा और उसकी अन्तरात्मा के मर्म को समझ गया।

"और तुम्हारे पिता का जीवन, फ्रित्ज ?"

"उनका जीवन भी। यदि कोई व्यक्ति मानव जाति की अब तक की सम्पूर्ण प्रगति को मेट कर साफ करने का हट पकड़ ले तो उसे इसका फल भुगतने के लिये भी तैयार रहना पड़ेगा। मुझे इस बात का पूर्ण निश्चय हो गया है कि कम्यूनिस्टों ने सामाजिक क्रान्ति के आदर्श का गला घोंट दिया है और वे उसका नाम निशान मिटा देने के लिये कृतसंकल्प हैं।"

"मैं भी वस्तु स्थिति पर उसी रूप में विचार कर रहा हूँ फ्रित्ज। मेरे लिये इस निश्चय पर पहुंचना अपेक्षाकृत कठिन हो रहा है। मैं तुम्हारी भांति आशा और विश्वास के मोह से अविलम्ब न छूट सका था। तीस साल तक अपनी आशाओं को शनैः शनैः शून्य में विलीन होते देखने के बाद ही मैं अपने निश्चय पर पहुँच सका हूँ। इस मामले में तुम मुझसे अधिक भाग्यशाली हो।"

(१०)

दोनों क्षण भर तक एक दूसरे की ओर ताकते रहे। इसके बाद लैनी ने कहा, "फ्रित्ज, मैं तुम्हारा विश्वास करूंगा। मैं तुम्हें कुछ ऐसी बातें बताने जा रहा हूँ जिन पर सम्भवतः तुम्हारा सम्पूर्ण भविष्य निर्भर करेगा। किन्तु पहले मुझे यह

वचन दो कि बिना मेरी अनुमति प्राप्त किये तुम इस रहस्य को किसी अन्य व्यक्ति के सम्मुख प्रकट न करोगे।"

"मैं वचन देता हूँ, मिस्टर बड।"

"मैं तुम्हारे पिता के बारे में कुछ ऐसी बातें जानता हूँ जिन्हें सुनकर शायद तुम्हें अपार कष्ट होगा। यदि तुम उत्सुक हो तो मैं बताऊं अन्यथा रहने दूं। सोच कर देख लो।"

"मैं अपने पिता के सम्बन्ध में सब कुछ जान लेना चाहता हूं। मुझे उनके साथ रहना है। अथवा उनके साथ अपना सम्बन्ध सदा के लिये तोड़ लेना है। बुद्धिमत्तापूर्ण निश्चय करने के लिये मुझे सारी बातें जान लेना अत्यंत आवश्यक है।'

"अच्छा जब तुम स्वयं जानना चाहते हो तो मैं तुम्हें बताता हूं। कल मैं तुम्हारे पिता के साथ था। मैंने उनसे कहा कि पिछली बातों को लेकर मेरे मन में बड़ी ग्लानि है और मैं पुराना झगड़ा रफा दफा करके फिर से मित्रता स्थापित करने के लिये आया हूं। अन्त में वे इस बात के लिये राजी हो गए कि भविष्य में वे मेरे सम्बन्ध में कोई कटु भावना न रखेंगे! अवश्य ही उनका यह आश्वासन नीतिपूर्ण था क्योंकि इससे उन्हें किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना न थी।"

"मुझे तो इस बात पर आश्चर्य है कि उन्होंने आपके साथ मुलाकात करना स्वीकार कर लिया, मिस्टर बड।"

"तुम्हारे पिता ने अपनी कार्य प्रणाली बदल दी है; वे स्वयं भी बदल गए हैं। अब वे वह व्यक्ति नहीं रहे जिसको मैं हृदय से चाहता था और श्रद्धा करता था। मुझे उनके बारे में कुछ जानकारी मिली है और मुझे भय है कि वह पूर्णतया प्रामाणिक है। तुम्हारे पिता कम्युनिस्ट नहीं हुए हैं और भविष्य में भी कम्युनिस्ट बनने का उनका कोई विचार नहीं है, यह एक चाल मात्र है। वे पहले की भांति एक कट्टर नाजी हैं। प्राचीन गुप्त संस्था वेहमगेरिच्ट की भांति वे षड़यन्त्रकारियों के एक नये दल का नेतृत्व कर रहे हैं। यह संगठन कुछ भयानक व्यक्तियों का है जिन्होंने मृत्यु की शपथ लेकर इस षड़यन्त्र का सूत्रपात किया है।

वे लोग अपने इस संगठन को लकिश्चरबन्ड के नाम से पुकारते हैं। तुमने कभी इसका नाम सुना है ?"

"नहीं मिस्टर बड। किन्तु मुझे इस समाचार से कोई आश्चर्य नहीं हुआ है।'

"किन्तु अब मैं तुम्हें जो कुछ बताऊंगा उससे कदाचित तुम्हें बहुत बड़ा आश्चर्य होगा। जिस रुपये से इस गुप्त संस्था का काम चल रहा है वह वही हिमलरी मुद्रा है जो नाजियों ने इंगलैन्ड और अमेरिका को जीतने की योजना के प्रसंग में छापी थी। तुम्हारे पिता और उनके मित्रों के हाथ में जाली नोट पड़ गए हैं। इनकी तादाद के सम्बन्ध में हमें कोई जानकारी नहीं है। यह भी सम्भव है कि ये लोग और नोट भी छाप रहे हों क्योंकि इसके लिये आवश्यक प्लेटें और कागज इनके पास हैं। ये नोट कुछ दलालों के हाथ बट्टे पर बेच दिये जाते हैं और ये लोग इन्हें पश्चिमी जर्मनी में लाकर चलाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार हजारों सीधे सादे निर्दोष व्यक्ति ठगे जाते हैं। इस योजना का अन्तिम उद्देश्य मित्र राष्ट्रों की मुद्रा का पतन करा कर स्फीति और भ्रम की सृष्टि करना है। प्रत्येक जाली नोट पश्चिमी संसार के प्रत्येक व्यक्ति की जीविका का कुछ न कुछ भाग क्रीन लेता है।"

गुलाबी गालों वाले जर्मन युवक का चेहरा उतर गया। "तो मेरे भत्तेका रुपया वहां से आता है!" उसने कुछ विस्मय के स्वर में कहा। "मैं अब इसे नहीं ले सकता, मिस्टर बड।"

"यदि तुम भत्ता लेने से इन्कार करोगे तो इसका यह अर्थ होगा कि तुम सब कुछ जान गए हो। तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि इस समय तुम्हारे पिता बहुत ही शक्की हो गए हैं। वे जानते हैं कि तुम शत्रुओं के बीच में रह रहे हो और उन्हें सब समय यह आशंका रहती है कि कहीं उनका स्पर्श तुम्हारे मन को भी विषाक्त न कर दे। वे तुम्हारे प्रत्येक शब्द, प्रत्येक हावभाव और प्रत्येक कार्य का बड़ी सावधानी के साथ निरीक्षण कर रहे होंगे।"

"ऐसा लगता है कि अब वे मेरे पिता ही नहीं रह गए!"

"जब मैं उनसे मिला था मेरे मन में भी उसी प्रकार की भावना उत्पन्न हुई थी। मैं भी अपने मनमें यह सोचता हुआ बाहर आया था कि पुराना कर्ट मेस-

नर मर गया। उसके स्थान पर जो नया व्यक्ति बैठा है वह एक अत्यंत विचित्र और भयानक प्राणी है। मुझे बाइबिल के सैमसन की याद आ गयी जिसने मन्दिर को स्वयं अपने ऊपर गिराकर मर जाना पसंद किया—केवल इसलिये कि जिनसे वह घृणा करता है उन्हें भी साथ में मरना पड़ेगा। इस समय जब कि हम संसार में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं हमारा सबसे बड़ा शत्रु उग्र राष्ट्रीयता ही है। आज हिटलर को फिर से जीवित करनेकी कोई सम्भावना नहीं रही और इसी प्रकार उसके उग्र राष्ट्रीयतावाद को भी फिर से जीवित करना अब एकदम असम्भव है। तुम्हारे पिता भी इस बात को जानते हैं और इसीलिये कम्युनिज्म के साथ मैत्री की चाल चल रहे हैं। किन्तु धीरे-धीरे वे स्वयं अपने ही जाल में अधिकाधिक उलझते चले जाएंगे। वे आगे चल-कर सचमुच कम्युनिस्टों के इशारों पर नाचने लगेंगे। इस प्रकार की स्थिति में यह बात कोई विशेष महत्व नहीं रखती कि वे वस्तुतः कम्युनिस्ट हैं अथवा उन लोगों की एक कठपुतली मात्र।"

"कोई विशेष अन्तर नहीं है, मिस्टर बड। दोनों बातें एक सी ही हैं।"

"वे एक भयानक पथ की ओर बढ़ रहे हैं। रूसी लोग उनका पूर्ण विश्वास कभी न करेंगे। वे सदा उन पर कड़ी दृष्टि रखेंगे। यदि किसी समय वे अपनी इस गुप्त संस्था के लिये जर्मन राष्ट्रीयता का लेशमात्र भी परिचय देंगे तो उन्हें गोली मार दी जायगी। तुम तो जानते ही हो कि कम्युनिस्ट शासक अपनी प्रजा के अंदर विचार स्वातंत्र्य का लेशमात्र नहीं रहने देते। स्वयं अपने ही देश में उन्होंने लाखों किसानों को दास मजदूर शिविरों की ओर निर्वासित कर दिया था। पोलैण्ड, जेकोस्लोवाकिया और हंगरी में आज भी वे यह सब कर रहे हैं—जर्मनी में भी।"

"मैं जानता हूं मिस्टर बड। मुझे यही कहना पड़ता है कि मेरे पिता पागल हो गए हैं।"

(११)

लैनी ने अपने मन में यह निश्चय कर लिया था कि वह इस युवक पर कोई दबाव न डालेगा; उसे अपना निर्णय स्वयं करने का अवसर देगा। उसने बड़ी सावधानी के साथ कहना शुरू किया :

"इस बात को भली भांति समझ लो फ्रित्ज कि मैं तुम पर कोई बोझ नहीं डाल रहा हूं। मैं वस्तुस्थिति तुम्हारे सामने रखे देता हूँ। तुम अपना निर्णय स्वयं करना। मैं यह सोच रहा था कि वेण्डेफुर्थ में मैं किसी ऐसे व्यक्ति को भेजूं जो इस षड्यन्त्र का उद्घाटन कर सके और जाली नोटों के भण्डार का पता लगा सके। मैं स्वयं यह कार्य नहीं कर सकता क्योंकि कर्ट मुझे अच्छी तरह जानता है। तुम जाकर उससे कह सकते हो कि स्कूल में तुमने भिन्न भिन्न राजनैतिक मतमतान्तरों को सुना है और उनपर विचार किया है और इस निश्चय पर पहुंचे हो कि हिटलर का तृतीय साम्राज्यवाला आदर्श ही सच्चा आदर्श है। तुम यह बहाना रच सकते हो कि तुमने इस पुनीत आदर्श के लिये अपने जीवन को उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया है। इस प्रकार तुम अपने पिता के विश्वासभाजन बन सकते हो। किन्तु इतना होने पर भी वे तुम्हें अपने भेद से अवगत करायेंगे या नहीं, यह एक संदिग्ध बात है।

तुम इस बात की कोई चर्चा न करना कि मेरे साथ तुम्हारी मुलाकात हुई है। मैं यहाँ किसी अन्य व्यक्ति के साथ तुम्हारा परिचय करा दूंगा। तुम अपनी रिपोर्ट उसे देते रहना। यह व्यवस्था भी की जा सकती है कि इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ होने पर अपराधियों के विरुद्ध जो भी निर्णय किये जाएं, तुम्हारे पिता पर कोई आँच न आए। मैं समझता हूं कि उन्होंने स्वयं कोई अपराध किया भी नहीं है। किन्तु वे इस गुप्त संगठन के मस्तिष्क और आत्मा हैं। सम्भव है इसके बाद भी वे किसी नये षड्यन्त्र पर उतर आवें। किन्तु वह कोई महत्वपूर्ण बात न होगी। इस समय गली गली में इस प्रकार के षड्यंत्र होते रहते हैं। मुख्य बात है जाली नोटों के भण्डार का पता लगाना।"

"अमरीकी अधिकारियों से मुझे जो आश्वासन प्राप्त होगा, क्या उस पर मैं निर्भर कर सकता हूँ?"

"उसका मैं आश्वासन देता हूँ। किन्तु मैं नहीं जानता की तुम इतने बड़े भार को किस प्रकार सहन कर सकोगे। मैं स्वयं लगभग दस वर्ष तक इस प्रकार का कार्य कर चुका हूं और जानता हूं कि यह कितना कठिन है। यह मेरे स्वभाव के एकदम विपरीत था। मुझे समय समय पर झूठ बोलना पड़ता था, धूर्तता करना

पड़ता था, चोरी करनी पड़ती थी। कभी कभी मुझे संदेह होने लगता था कि मेरी नैतिकता नष्ट हो रही है और स्वभाव बिगड़ रहा है। किन्तु यह सब मैं स्वतन्त्र संसार की रक्षा के लिये करता था। मेरे नेता थे फ्रैंन्कलिन रूजवेल्ट और वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक गणतन्त्र और स्वतन्त्रता के कट्टर समर्थक बने रहे थे। प्रेसीडेण्ट ट्रूमन भी उन्हीं आदर्शों से अनुप्राणित हैं-इसका मैं तुम्हें आश्वासन दे सकता हूं। मैं जानता हूँ कि जर्मनी में एक स्वतन्त्र गणतान्त्रिक प्रजातन्त्र की स्थापना के लिये वे हर सम्भव प्रयत्न करेंगे। मेरा विश्वास है कि इससे अधिक तुम भी कुछ न चाहोगे; चाहिये भी नहीं।"

"मैं अपनी अन्तरात्मा से केवल इतना ही चाहता हूं, मिस्टर बड।"

"यदि तुम यह कार्य करने का भार लोगे तो तुम्हें एकाकी जीवन बिताना पड़ेगा। तुम्हे शत्रुओं के बीच में जाकर रहना होगा और अवसर के अनुकूल स्वांग रचना होगा। तुम्हें अपने प्रत्येक कदम, प्रत्येक शब्द, प्रत्येक हावभाव पर कड़ी दृष्टि रखनी पड़ेगी। तुम्हें अपने स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति की कल्पना कर लेनी पड़ेगी और तुम्हें उस व्यक्ति का अभिनय करनो पड़ेगा। तुम सचमुच वही व्यक्ति बन जाओगे, उसी का जीवन अपना लोगे और अपने वास्तविक रूप को भूल जाओगे। केवल तुम्हारी आत्मा के एक कोने में तुम्हारा वास्तविक स्वरूप स्थिर रहेगा। तुम अपने आपको नितान्त एकाकी अनुभव करोगे क्योंकि तुम्हारे वास्तविक हितचिन्तक तुमसे घृणा करने का अभिनय करेंगे और जिन नकली मित्रों से तुम अपना सम्बन्ध स्थापित करोगे उनके साथ कोई वास्तविक मित्रता हो ही नहीं सकती। वे ऐसे व्यक्ति होंगे जिनसे तुम मन ही मन घृणा करोगे। मैं यह नहीं चाहता कि तुम चटपट कोई निर्णय कर डालो। मैं बर्लिन में कुछ दिन ठहर कर वस्तुस्थिति की कुछ और जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करूंगा। तुम यदि मुझ से मिलना चाहो तो बिना किसी द्विधा के चले आना। जाओ औ समस्या पर गम्भीरता के साथ विचार करो। अपने विवेक और सामाजिक कर्त्तव्यबोध के अतिरिक्त तुम अन्य किसी दबाव का अनुभव न करना। यदि तुम्हें अपनी शक्ति पर विश्वास न हो तो इस कार्य में हाथ न डालना। किन्तु यदि तुम मानव स्वातन्त्र्य के लिये कुछ भी करने की शक्ति रखते हो तो अवश्य आगे बढ़ना। निर्णय का अधिकार पूर्णतया

तुम्हारा है। किन्तु एक बार निश्चय करके पीछे मत हटना। एक बात और—यदि तुम मेरे विपक्ष में निर्णय करो तो इस बात को मत भूलना कि तुम इस वार्त्ता को गुप्त रखने के लिये वचनबद्ध हो।"

"ठीक है।" युवक ने उत्तर दिया।

युवक के जाने के बाद लैनी मान्क के पास गया और उसे सारी बात बता दी। यदि फ्रित्ज यह काम करने के लिये तयार हो गया तो मान्क उसके और लैनी के बीच मध्यस्थ का काम करेगा और आवश्यक परामर्श भी देता रहेगा। लैनी स्वयं गुप्तचर रह चुका था किन्तु मान्क अनेकों गुप्तचरों का निर्देशक और नियंत्रक रहा था। वह गत महायुद्ध के समय स्वेडेन में गुप्तचर विभाग का प्रधान अधिकारी रह चुका था। इसके अतिरिक्त वह जर्मन और समाजवादी था। वह फ्रित्ज की भाषा बोलता था—केवल शाब्दिक रूप में ही नहीं बल्कि वृहत्तर और प्रतीकात्मक रूप में भी। दोनों के आदर्श एक से थे और इसलिये आशा थी कि यह जोड़ी सफल रहेगी।

अध्याय ६

(१)

लैनी जोहान सीड्ल नामक एक पुराने घड़ीवाले से मुलाकात करने के लिये उसके घर पर गया। इस वृद्ध कारीगर ने उस समय लैनी को अपने घर में छिपा कर रखा था जब हिटलर की भयानक खुफिया पुलिस "गेस्टापो" उसका पीछा कर रही थी। जोहान बर्लिन के नांघवीट अंचल में रहता था जो कि श्रमिकों का मोहल्ला था। उसके घर का ऊपरी हिस्सा युद्धकाल में होनेवाली बमबाजी के कारण नष्ट भ्रष्ट हो गया था और फलस्वरूप परिवार को निचली मंजिल के अवशिष्ट भाग में निवास करने के लिये बाध्य होना पड़ा था। इस हिस्से में दो और परिवार भी रहते थे—दो कमरों और एक छोटे से रसोईघर में सात व्यक्ति! बमबाजी मे होने वाली क्षति की पूर्ति भी केवल उतनी ही दूर तक की गयी थी कि वर्षा के जल से किसी प्रकार बचाव हो जाय।

तीनों परिवारों ने तड़क-भड़कदार वस्त्रों में लैस लैनी को देखा तो आश्चर्य चकित रह गए। ऐसा भव्य पुरुष उनके जीवन में पहली बार ही आया था। इस बार भी लैनी अपने साथ सुस्वादु खाद्य पदार्थों का एक बण्डल लाना न भूला था! ये ऐसी वस्तुएं थी जो जर्मनी के इस श्रमिक अंचल में सरलता से न प्राप्त होती थीं। लैनी ने इन लोगों से कहा कि वह उनके पास केवल बातचीत करने के अभिप्राय से आया है। उसे 'देवपुरुष' ट्रूमन की ओर से यह आदेश प्राप्त हुआ है कि वह इस बात की जांच करे कि जर्मनी के जन साधारण किस प्रकार रह रहे हैं और उनकी आशाएं, आकांक्षाएं तथा धारणाएं क्या हैं। लैनी ने यह बात भी भली भाँति स्पष्ट कर दी कि प्रेसीडेण्ट ट्रूमन सचमुच दरिद्र जनसाधारण के प्रति जागरूक रहते हैं और उनकी आन्तरिक इच्छा यही है कि किसी प्रकार जर्मनी में एक सच्चा और स्वतंत्र गणतंत्र स्थापित किया जाय।

किन्तु दुर्भाग्यवश अब वे सर्व शक्तिमान नहीं रह गये। उस दिन बेतार के तार द्वारा यह समाचार प्राप्त हुआ था कि नवम्बर १९४६ के चुनाव में हाउस आफ

रिप्रेजेनटेटिव्स में रिपब्लिकन पार्टी को बहुमत प्राप्त हो गया है। इसका यह अर्थ हुआ कि अब कानून बनाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर उनके विरोधियों का नियंत्रण रहेगा। इन जर्मन परिवारों के सामने वस्तुस्थिति को स्पष्ट करने में लैनी को कुछ कठिनाई का अनुभव हुआ। उसने उन्हें समझाया कि रिपब्लिकन पार्टी की जर्मनी के साथ कोई शत्रुता नहीं है किन्तु चूंकि वह प्रेसीडेन्ट ट्रूमन का विरोध करती है इसलिये सम्भवतः उनकी प्रत्येक बात को काटने के लिये वह प्रयत्नशील होगी।

जोहान सीड़ल बहुत अधिक बातूनी था। वह सोशल डेमाक्रेटिक पार्टी का एक पुराना सदस्य था और उसे "जेनोसे" का आदर सूचक विशेषण प्राप्त हुआ था जो "कामरेड" का पर्यायवाची शब्द है। उसने अपनी शिक्षादीक्षा स्वयं प्राप्त की थी और राजनैतिक गतिविधि में वह अच्छी दिलचस्पी लेता था। उसने लैनी को बताया कि इस समय जर्मनी के समाजवादी दो परस्पर विरोधी दलों के बीच में पड़कर हतबुद्धि से हो गए हैं। पूर्व में कम्युनिस्टों का बोलबाला है और पश्चिम में बड़े बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों के अरबपति मालिकों का। सोशल डेमाक्रेट पार्टी कम्युनिस्टों का कट्टर विरोध करने के लिये कृतसंकल्प है किन्तु कम्युनिस्टों के चतुर प्रचार कार्य और लम्बे चौड़े आश्वासनों के फलस्वरूप पार्टी के बहुत से सदस्य डांवाडोल हो गए हैं।

दुर्भाग्यवश अमेरिका का प्रचार कार्य उतना अधिक चातुर्यपूर्ण नहीं है। ज्यों-ही अमेरिका की सरकार अपने यहाँ के उद्योगपतियों की सहायता के लिये कुछ करती है त्योंही कम्युनिस्ट लोग उस पर चीख पुकार शुरू कर देते हैं और अपने समाचारपत्रों में मुखपृष्ठ पर बड़े बड़े शीर्षकों के साथ उसे छापते हैं। परिणाम यह होता है कि कुछ जर्मन फूटकर उनसे जा मिलते हैं। किन्तु यदि प्रेसीडेण्ट ट्रूमन वास्तव में जर्मनी के अन्दर गणतांत्रिक शासन व्यवस्था के लिये इच्छुक हैं तो उन्हें प्रत्येक समाजवादी का समर्थन प्राप्त होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। हाँ, यह एक दुखद बात अवश्य है कि इसके फलस्वरूप जर्मनी एक लम्बे समय के लिए दो भागों में विभाजित हो जायगा। कारण यह है कि सोवियत रूस पूर्वी जर्मनी में कभी मुक्त और वास्तविक चुनाव न होने देगा—कम से कम तब तक नहीं जब

तक कि वह एक नई पीढ़ी इच्छानुसार तैयार करके यह आश्वासन नहीं प्राप्त कर लेता कि चुनाव में उसकी विजय होगी।

लैनी ने प्रेसीडेण्ट ट्रूमन को जो वचन दिया था उसे वह भूला नहीं। वह कुछ अरबपति व्यवसाइयों से भी मिला। इनमें से अधिकांश के साथ वह युद्ध के पूर्व भी मिल चुका था। लैनी को बड—आर्लिंग एयरक्राफ्ट कम्पनी के मालिक का पुत्र समझ कर उन लोगों ने उसके साथ जी खोलकर बातें की। इनका यह कहना था कि सबसे बड़ी मुसीबत इस बात की है कि जर्मनी के मजदूर समाजवादी सरकार की स्थापना के पक्ष में हैं और चुनाव हुआ तो उनके वोट इसी ओर जाएंगे। हिटलर भी इसी प्रकार सत्तारूढ़ हुआ था—इन लोगों ने लैनी को यह न बताया कि हिटलर इनके पैसे तथा अस्त्र शस्त्रों के बल से सत्तारूढ़ हुआ था। इनकी दृष्टि में समस्या यह थी कि जर्मनी के मजदूरों को इस बात के लिये राज़ी किया जाए कि वे अमरीकी ढङ्ग के गणतंत्र के पक्ष में अपने वोट दें—अर्थात् उद्योग व्यापार में पूंजीवाद और शासन के मामले में गणतंत्र। अमरीकी लोग इसे कैसे चला लेते हैं? लैनी ने उन्हें बताया कि कुछ तो शिक्षा द्वारा और कुछ मजदूरों को ऊँचे वेतन द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था सफलतापूर्वक चला ली जाती है। अरबपतियों ने कहा, "परन्तु हम लोग मजदूरों को उतने ऊँचे वेतन तो दे नहीं सकते जितने की आप लोग देते हैं! हमारे पास उतना बड़ा घरेलू बाजार नहीं है। इसके अतिरिक्त हमें इंगलैण्ड, फ्रांस, इटली, यहाँ तक कि भारत और शीघ्र ही जापान की प्रतियोगिता के प्रश्न को दृष्टिगत करना पड़ता है।" किन्तु इस बात पर सब सहमत थे कि गणतंत्र को एक अवसर अवश्य मिलना चाहिये - और किसी कारण नहीं तो इसलिये ही जर्मनी इस समय अमेरिका के अधीन है। यदि अमेरिका ने हाथ खींच लिया तो लाखों जर्मन भूखों मर जाएंगे और लाखों स्टालिन की ओर चले जाएंगे।

लैनी ऊँचे से ऊंचे और नीचे से नीचे, हर प्रकार के व्यक्ति से मिला। उसने होटल के चपरासी और बेहरे तथा समाचारपत्र बेचने वाली बुढ़िया तक से बातें कीं। सभी इस सम्बन्ध में एकमत थे कि अमरीकियों का व्यवहार बड़ा अच्छा रहा है और सबने यह आशा प्रकट की कि अमरीकी लोग जर्मनी में कुछ दिन और

ठहरेंगे। किन्तु साथ ही साथ उन्होंने यह आशंका भी प्रकट की कम्युनिस्ट लोग शायद ही उन्हें ठहरने दें। समाचारपत्र बेचने वाली बुढ़िया ने जर्मनी की तुलना उस बटेर के साथ की जिसे दो हाथ दो दिशाओं की ओर खींच रहे हों। खींचने वाले दोनों व्यक्ति अपने अपने स्वार्थ की ओर देख रहे थे ; पक्षी के प्राणों की ओर नहीं।

(२)

लैनी एक टेलीफोन काल की प्रतीक्षा कर रहा था और वह आ गयी। बिना नाम की एक आवाज तार के अन्दरसे कह रही थी, "मैंने निश्चय कर लिया है। मैं वह काम करूंगा।" लैनीने पूछा, "क्या तुम मेरे साथ भोजन करने के लिये आ सकते हो ?"

जब वह सत्रह वर्षीय युवा षड़यन्त्रकारी लैनी के होटल में पहुंचा उसका हाव-भाव बड़ा गम्भीर सा लगा और चेहरे पर कुछ पीलापन सा प्रतीत हुआ। कदाचित वह नींद भर सोया न था। होटलके भोजनालयमें उन लोगोंने अपने विषय की कोई चर्चा न छेड़ी बल्कि अमेरिकामें होनेवाले चुनाव पर बातें करते रहे। लैनीने अमरीकी सरकार के गठन की विचित्रताको समझाया। ऐसा बहुधा होता रहता है कि प्रेसीडेण्ट और कांग्रेस केवल राजनैतिक प्रभावके दृष्टिकोणसे एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं। किन्तु इससे प्रशासकीय कार्य में कोई बाधा नहीं उपस्थित होती, सारा काम ज्यों का त्यों चलता रहता है। कांग्रेस अवश्य सरकार को पैसा स्वीकृत करनेकी दिशा में खींचतान करके अड़चनों की सृष्टि करने का प्रयत्न करती रहती है और जांच कमेटियां नियुक्त करके सरकारी अधिकारियों को परेशान करती रहती है।

कम से कम अगले दो वर्षों के लिये अमेरिका में इसी प्रकार की परिस्थिति रहने की सम्भावना हो गयी है क्योंकि प्रेसीडेण्ट ट्रूमन की पार्टी का दक्षिणी पक्ष रिपब्लिकन पार्टी का सा ही दृष्टिकोण रखता है और वह अधिकांश प्रश्नोंपर रिपब्लिकन पार्टीका साथ देगा। लैनीने फ्रित्ज को यह भी समझा दिया कि डेमाक्रेट पार्टी और रिपब्लिकन पार्टीमें कोई आधारभूत विरोध नहीं है और मुख्यतः अन्तर केवल नाम का ही रहता है।

"मेरी तो धारणा थी कि एक ही प्रकारके राजनैतिक विश्वास रखने ाले लोग एक ही पार्टी में मिलकर काम करना अधिक पसंद करते हैं।" फ्रित्जने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

लैनी ने उसे बताया कि अमेरिका में "बाबा का वोट" नामक एक विचित्र परम्परा है। लोग किसी पार्टी का साथ केवल इसलिये देते हैं कि उनके बाबा ने अपने समय में उस पार्टी का साथ दिया था। बहुधा व्यक्ति का जन्म होने के वर्षों पूर्व इस बातका निश्चय हो जाता है कि उसका वोट किस पार्टी को मिलेगा।

ऊपर अपने कमरे में जाकर दोनों दरवाजा बन्द करके धीमे स्वरमें बात करने लगे। फ्रित्ज ने कहा, "मैंने अपने पिता को एक पत्र लिख दिया है कि मैं स्कूल में होनेवाले राजनैतिक विषयों को ध्यान पूर्वक सुनता रहा हूं और इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि उनका दृष्टिकोण ही ठीक है। इससे उन्हें बड़ा सन्तोष होगा और जब मैं बड़े दिनकी छुट्टियों में घर जाऊँगा तो वे प्रेमपूर्वक मेरा स्वागत करेंगे। उस समय मैं उनसे कहूंगा कि स्कूल की पढ़ाई बड़ी विकृत होती जा रही है और मैं घरमें रहकर पढ़ना अधिक पसंद करूंगा। यदि उन्होंने अनुमति दे दी तो मेरा काम आसान हो जाएगा।"

फ्रित्जने स्कूल में अपने सहपाठियों को भी यह बात बता दी थी कि उसके राजनैतिक विश्वासों में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। "वे लोग यह सुनकर बड़े क्रुद्ध हुऐ और मुझे बुरा भला कहने लगे। मेरी आंखों में आंसू आ गए। किन्तु जब उन्होंने मुझे कोमल-हृदय बताकर मेरा मज़ाक उड़ाया तो मन ही मन मुझे संतोष हुआ। कोमल-हृदय होना कोई बुरी बात नहीं।"

"क्या तुम्हारी क्लास में हिटलरी विचारधारा के विद्यार्थी भी हैं?"

फ्रित्ज ने कहा कि ऐसे विद्यार्थियों के साथ ही वह रहता था। वे लोग खुलेआम तो नहीं किन्तु अन्दरसे कट्टर हिटलरवादी थे। उन्हें फ्रित्ज का विश्वास करनेमें कोई कठिनाई का अनुभव न हुआ था क्योंकि वे जानते थे कि वह हिटलर के युद्धगीत के रचयिता कर्ट मेसनर का पुत्र है।

(३)

लैंनी ने मोरीसन से परामर्श कर लिया-था। उसका भी यही विचार था

कि फ्रित्ज अपनी रिपोर्ट मान्कको भेजे। कारण यह है कि फ्रित्ज को इस मामले की छान बीन करते समय हिटलरी मुद्रा के अतिरिक्त और भी बहुत से भेदोंका पता चल सकता है। फलस्वरूप लैनीने फ्रित्ज को मान्क का एक संक्षिप्त परिचय दे देना उचित समझा। उसने कहा कि मान्क जर्मनी की स्वतन्त्रता का एक कट्टर समर्थक है। वह समाजवादी दृष्टिकोण रखता है और स्पेन में जनता के गणतन्त्र की स्थापना के लिये उसने अपने जीवनके बलिदान का खतरा उठाया था। जर्मनी में भी गेस्टापो के साथ बुद्धि-युद्ध करते समय उसे कई बार जान की बाजी लगानी पड़ी थी। लैनीने युवक फ्रित्ज को वह मनोरञ्जक कहानी भी बतायी जिसमें मान्क ने प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर प्लोटजेन का बेहरा बनकर रात के समय उनके बहुत से महत्वपूर्ण कागजों के नोट ले लिये थे—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि अंकारा में ब्रिटिश राजदूत के कागजों के फोटो उनके बेहरे "सिसरो" ने ले लिये थे। दोनों में अन्तर केवल इतना ही था कि सिसरो ने इन कागजों को दो लाख पाउण्ड के जाली नोट लेकर जर्मनी के हाथ बेच दिया था और मान्क उस छोटे से वेतनसे ही संतुष्ट था जो उसे अमरीकी सरकार के एक गुप्तचर के रूप में प्राप्त होता था।

मान्क आया। उसके व्यक्तित्व का युवक फ्रित्ज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने फ्रित्ज को गुप्तचर-कला के अनेकों भेदोंसे अवगत कराया। मान्क ने उसे एक सांकेतिक नाम दे दिया और इसके बाद बताया कि गुप्तचर लोग अपने पत्र किस प्रकार भेजते हैं, पत्र खोलकर पढ़ लेने के बाद उन्हें ज्यों का त्यों फिर से बन्द किस प्रकार किया जा सकता है, मामले की छान बीन करते समय कड़ी सतर्कता कैसे रखी जाती है, लोगों से भेद की बातें कैसे कबूल करवाई जाती हैं आदि। फ्रित्ज ने इन बातों को संक्षेप में एक कागज पर लिख लिया और यह वचन दिया कि इन्हें कण्ठस्थ करके वह कागज फाड़कर फेंक देगा।

जिस समय फ्रित्ज अपनी खतरनाक यात्रा के लिये विदा होने लगा लैनी का हृदय भर आया। वह इस युवक के प्रति एक प्रकार के ममत्व का अनुभव करने लगा था। इसके अतिरिक्त लैनी स्वभाव से ही छल प्रपंच का विरोधी था। उसे असत्यभाषण से बड़ी घृणा थी। उसने बारह वर्षों तक नाजियों के सुव्यवस्थित

असत्य भाषणका अध्ययन किया था और अब वह कम्युनिस्टों के मिथ्या प्रचार का अध्ययन कर रहा था। उसे दोनों से घृणा थी। उसे उस संसार से घृणा थी जिसमें लोगों को एक दूसरे से झूठ बोलने के लिये बाध्य होना पड़े। किन्तु इस भयानक स्थिति से छुटकारा पानेका कोई उपाय भी तो न था। नाजियों ने सभ्य संसार को नष्ट-भ्रष्ट करने का एक विराट षड़यन्त्र रचा था और उन्हें पराभूत करना आवश्यक हो गया था। अब कम्युनिस्ट भी वही कर रहे थे और वे अपने काम में नाजियों की अपेक्षा अधिक चतुर प्रतीत होते थे। इन्होंने हिटलर, गोबेल्स आदि की भूलोंसे अच्छा पाठ सीख लिया था।

लैनी चाहता तो इस प्रकार के विषाक्त संसार से अपना नाता तोड़कर एक आत्म तुष्ट और सुखी जीवन बिता सकता था। उसके पास पैसे की कोई कमी न थी। वह अपना शेष जीवन सुन्दर चित्रों के निरीक्षण और महान संगीत तथा कविताकी चर्चा में व्यतीत कर सकता था। किन्तु वह किसी और ही धातु का बना हुआ था।

(४)

मोरीसन ने लैनी से कहा कि जजमान ने जो जानकारी दी थी उसकी उसने जाँच कर ली है और वह पूर्णतया संतुष्ट है। फलस्वरूप लैनी ने जजमान के साथ जो समझौता किया था उसे पूरा करना आवश्यक हो गया था। जजमान ने गुआटमाला में जाकर बसने का निश्चय किया था क्योंकि उसके अनुसार पोलैण्ड में शीत का आधिक्य था और अब वह किसी गर्म देशमें बसना अधिक अच्छा समझता था। उसे वे पाच सौ डालर दे दिये गए जिनका आश्वासन लैनी ने दिया था। उसने वचन दिया कि गुआटमाला जाकर वह एक सच्चरित्र नागरिक की भाँति रहेगा और किसी प्रकार का अनैतिक काम न करेगा। वह अपने वचन का पालन करेगा या सारा रुपया जहाज के नाविकों के साथ जुआ खेलने में नष्ट कर देगा—इसका अनुमान लगाना कठिन था। किन्तु यह उसका निजी मामला था। लैनी ने समझौते के अनुसार उसे ब्रेमेन में एक ब्रिटिश जहाज पर बैठा दिया।

लैनी ने बर्लिन छोड़ने के पूर्व मोरीसन से मुलकात की और उस सरकारी

अधिकारी को धन्यवाद दिया। उसने बताया कि वह मार्सीलीज के मार्ग से अमेरिका जाएगा ताकि रास्ते में उतर कर अपनी मां से मिल सके।

ब्यूटी बड अब पिछले कई बर्षोंसे श्रीमती पार्सीफाल डिन्गल के नाम से प्रसिद्ध थीं। वे अपने पुत्र से मिलने के लिये हवाई अड्डे पर आयी थीं। वे एक शानदार चमचमाती हुई मोटर में बैठी हुई थीं। इस प्रकार की भव्य मोटरें ऐसे अभाव ग्रस्त समय में योरोप की कौन कहे अमेरिका तक में दुष्प्राप्य थीं। किन्तु बड अलिन्ग एयरक्राफ्ट कम्पनी के चेयरमैन एक सम्पन्न व्यक्ति थे और उनके लिये सब कुछ प्राप्य था। यह मोटर उन्होंने इसी सप्ताह जहाज द्वारा ब्यूटी के पास भेज दी थी। ब्यूटी के चेहरे पर प्रसन्नता नाच रही थी। उनकी आयु साठ के ऊपर थी किन्तु वे किसी से इसका जिक्र न करती थीं। उनके बाल सफेद हो चुके थे किन्तु न जाने कैसे इस समय वे आकाशी नील वर्ण के लग रहे थे। उनके साथ उनकी पुत्री मार्सेलीन थी जिसका विवाह फ्रेन्च चित्रकार मार्सेल डेटाज से हुआ था। मार्सेलीन के साथ उसका सातवर्षीय एक पुत्र भी आया था। नाजियों के आधिपत्य के समय में मार्सेलीन को एक दास-मजदूर शिविर में कैद कर दिया गया था और उस पर बड़े अत्याचार हुए थे। लैनी को उसका पता लग गया था और उसने किसी प्रकार उसे वहाँ से भाग निकलने में सहायता पहुँचाई थी।

सदा की भांति इस समय भी ब्यूटी के मन में बड़ा कौतूहल था। किन्तु लैनी ऐसे अवसरों पर एकदम अल्पभाषी बन जाता था। उसने केवल इतना ही कहा कि वह प्रेसीडेण्ट ट्रूमनके लिये कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिये आया था। हां अपने परिवार और "शान्ति दल" के सम्बन्ध में उसने विस्तारपूर्वक बातें की। एमिली चैटर्सवर्थ द्वारा प्रदत्त रुपये का क्या उपयोग हो रहा है—यह प्रश्न ब्यूटी के लिये व्यक्तिगत महत्व का था। कारण यह है कि वह लैनी के जन्म के पूर्व से ही एमिली चैटर्सवर्थ तथा उसके रुपये से भली-भांति परिचित थी।

वह शानदार मोटर प्रायः सौ मील की यात्रा करके उन्हे फ्रेन्च रिवेयरा के सुन्दर तट से लगी हुई वियेनवेगू नामक जायदाद पर ले गई जिसे रोबी बड ने अपनी युवावस्था में अपनी प्रियतमा को उपहार के रूप में दिया था। यहां पर लैनी ने अपने बचपन के दिन बिताए थे। यहीं के ऊँचे ऊँचे सुन्दर टीलों पर

बैठ कर उसने कर्ट मेसनर से जर्मन आदर्शवाद की शास्त्रीय चर्चा सुनी थी। और यहीं से उसने केवल दो वर्ष पूर्व अमरीकी युद्ध पोतों को जर्मन किलेबन्दी पर गोले बरसाते हुए और अमरीकि सैनिकों को भूमि पर उतरते हुए देखा था। उस समय लैनी ने एक स्वतः निर्मित "कर्नल" के रूप में इन अमरीकी सैनिकों के साथ रोन घाटी तक यात्रा की थी। वह युद्ध बन्दियों से मुलाकात करके उनके वक्तव्यों का अंगरेजी में अनुवाद करने के लिये नियुक्त किया गया था।

अब इस अञ्चल में पुनः शान्ति स्थापित हो गयी थी। किन्तु—हे भगवान्! क्या यह शान्ति स्थायी प्रमाणित होगी? ब्यूटी के मन में सबसे अधिक जिज्ञासा इसी बात की थी। लैनी अपनी मां को पूर्ण आश्वासन न दे सका। उसने कहा कि विश्व शान्ति का प्रश्न इस समय क्रेमलिन के थोड़े से व्यक्तियों के एक गुट पर निर्भर करता है और यह गुट इस समय भय और महत्वाकांक्षा की दो परस्पर विरोधी शक्तियों के बीच कोई निश्चय नहीं कर पा रहा।

"मुझे तो ऐसा लगता है कि हमें उनके भय की मात्रा को कुछ और बढ़ाना पड़ेगा।" लैनी ने कहा।

इस परिवार में ब्यूटी के द्वितीय पति पार्सीफाल डिन्गल सफेद बालों वाले एक सत्तर वर्षीय वृद्ध थे। वे उस चिन्तन धारा के प्रचारक थे जिसे अमेरिका में "नया विचार" कहा जाता है। वे चिकित्सा शास्त्र में भी असाधारण योग्यता रखते थे और यह कार्य एकदम निःशुल्क रूप में करते थे। वे बड़े सज्जन और परोपकारी व्यक्ति थे। ब्यूटी उन्हें सचमुच एक आश्चर्य मिश्रित श्रद्धा की भावना से देखती थीं—सफल विवाह का यही एकमात्र आधार है। लैनी को उनके सिद्धान्तों और व्यावहारिक कार्यों, दोनों में ही बड़ी भारी दिलचस्पी थी और वह उनके साथ घण्टों बातें कर सकता था। ब्यूटी इस प्रकार के अवसरों पर चुपचाप अपनी बुनाई जारी रखते हुए दोनों की बातें ध्यान पूर्वक सुनती रहती थीं। अपनी जायदाद की देखरेख उन्होंने मार्सेलीन के नये पति बिली को दे दी थी। बिली के साथ भी लैनी का पुराना परिचय था। युद्ध काल में दोनों साथ साथ कई स्थानों में गए थे और इसलिये अपने संस्मरणों की चर्चा करते हुए बातें करने के लिये उनके पास पर्याप्त मसाला था। संक्षेप में, सारा परिवार बड़ा

आनन्दमय था और संध्या के समय कनास्ता नामक ताश का एक नया खेल खेलना सचमुच मनोरंजक था।

(५)

किन्तु लैनी इस आनन्दमय परिवार के साथ दो दिनसे अधिक न ठहर सका। उसका कर्त्तव्य उसे बुला रहा था। वह वायुवान द्वारा लिस्बन पहुंचा और वहाँ से न्यूयार्क के लिये रवाना हुआ। संध्या के समय जब वह ला गर्डिया के हवाई अड्डे पर उतरा उसे याद आया कि आज बृहस्पतिवार है, शान्ति-प्रोग्राम का दिन। वह मन ही मन सोचने लगा कि वहाँ प्रोग्राम सुनने के लिये समय पर पहुँच सकेगा या नहीं। केवल दस मिनट की देर थी। हवाई अड्डे के बाहर आकर उसने एक टैक्सी पकड़ी और ड्राइवर से कहा कि वह सबसे समीप वाली बस्ती की ओर चले। थोड़ी ही देर में टैक्सी एक मकान के सामने आकर खड़ी हो गयी। लैनी ने उतर कर ड्राइवर को उसका किराया दे दिया और फिर उसे विदा कर के दरवाजे की घण्टी बजायी। वह मजदूरों का मोहल्ला था। दस दस पन्द्रह पन्द्रह फीट के अन्तर पर छोटे छोटे मकानों की एक कतार खड़ी हुई थी। देखने से ही स्पष्ट हो जाता था कि इन मकानों में रहनेवाले व्यक्ति धनी नहीं हैं। किन्तु तब भी यह आशा की जा सकती थी कि उनमें से अधिकांश के पास रेडियो होंगे।

केवल कमीज पहने हुए एक व्यक्ति ने आकर दरवाजा खोला। लैनी ने कहा, "मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं अभी अभी योरोप से हवाई जहाज द्वारा आया हूं और रेडियो पर प्रसारित होनेवाले शान्ति प्रोग्राम—शायद आप इस नाम से परिचित होंगे – सुनना चाहता हूँ। प्रोग्राम का समय हो गया है। क्या आप मुझे अपने रेडियों पर इसे सुनने का अवसर देंगे? मेरा नाम है लैनी बड।"

"अवश्य अवश्य। अन्दर आइये।" उस व्यक्ति ने लैनी का स्वागत करते हुए कहा। उसने अपने जीवन में किसी रेडियो प्रघोषक को न देखा था और भविष्य में भी इसकी कोई सम्भावना न थी। इसलिये वह अनायास इस प्रकार की सुविधा पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह लैनी को अपने छोटे से कमरे में ले गया। गृहस्वामिनी भी रसोई घर से निकल आयी और घर की अस्त व्यस्त हालत के लिये क्षमा मांगने लगी।

थोड़ी देर बाद रेडियो पर शान्ति प्रोग्राम शुरू हुआ। एक आवाज कह रही थी; रेडियो डब्लू वाई ज़ेड। यह एक मूल्य-प्राप्त प्रोग्राम है और कार्यालय इसके अन्तर्गत व्यक्त होनेवाले विचारों के लिये उत्तरदायी नहीं है।" इसके बाद गेराल्ड डे ग्रूट की प्रभावोत्पादक आवाज सुनाई दी। "शान्ति प्रोग्राम। हम लोगों को शान्ति चाहिये। इस प्रोग्राम का अयोजन शान्ति संगठन नामक संस्था द्वारा हुआ है। इस समय हमारे वक्ता हैं कालथ्रोप विश्वविद्यालय के समाज-विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जेम्स एलबर्सन फिलिप्स। प्रोफेसर फिलिप्स मानव जाति के एक मित्र तथा उदार चिन्तक के रूप में प्रसिद्ध हैं। आज आप युद्ध के मनोवैज्ञानिक कारणों पर प्रकाश डालेंगे।·प्रोफेसर फिलिप्स"—

प्राफेसर की वक्तृता से ऐसा प्रतीत होता था कि रेडियो पर भाषण देने की कला में वे पटु हैं और इसके पूर्व भी कई बार बोल चुके हैं। उनके बोलने का ढङ्ग सरल, सुव्यवस्थित और अत्यन्त प्रभावोत्पादक था।

वे कह रहे थे कि युद्ध का प्राथमिक कारण मानसिक है। जब लोग एक दूसरे के प्रति कटुता का भाव पैदा कर लेते हैं तब शंका की सृष्टि होती है और शंका से भय उत्पन्न होता है। भय घृणा का कारण बनता है और इस प्रकार इस विषम चक्र से भौतिक संघर्ष की सृष्टि होती है। प्रोफेसर ने इतिहास के कई दृष्टान्त देते हुए अपने तर्क का पुष्टीकरण किया। उन्होंने यह परामर्श दिया कि प्रत्येक शान्ति-प्रेमी व्यक्ति के लिये सबसे पहले यह बात आवश्यक होती है कि वह अन्य व्यक्तियों के प्रति अपने मानसिक और भावुक दृष्टिकोण को उपयुक्त स्तर पर संतुलित करे। उसे इस बात को भली भाँति समझ लेना चाहिये कि विदेशी लोग भी आखिर मनुष्य ही हैं और प्रेम, भय, घृणा आदि के तत्त्वों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया भी वैसी ही होती है जैसी कि स्वयं उसकी होती है।

प्रोफेसर यह दलील दे रहे थे कि संसार में एक आध्यात्मिक पुनरुत्थान की आवश्यकता है किन्तु अध्यात्मवाद आज पुराना शब्द हो गया है; वह सुसंस्कृत लोगों के बीच लोकप्रिय नहीं रहा। इसलिये वे उसे एक व्यावहारिक स्तर पर प्रस्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे कह रहे थे कि इस समय उनके देश में रूसियों के प्रति घृणा का भाव भरा जा रहा है। उन्होंने इस प्रकार के प्रचार

कार्य में लगे हुए व्यक्तियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि घृणा का प्रचार करके शान्ति की नहीं युद्ध की ही प्राप्ति हो सकती है—भयानक युद्ध की जिसका आधार है अंध कट्टरता।

वे कह रहे थे कि रूसी लोगों ने अपने देश में एक विशालकाय रूप में कुछ नये आर्थिक प्रयोग शुरू किये हैं। उन्हें अपने यहाँ इस प्रकार के प्रयोग करने का पूरा पूरा अधिकार है। यह प्रयोग प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के अवसर पर शुरू हुआ था। उस समय ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने इस बात का प्रयत्न किया था कि रूसियों को यह प्रयोग न करने दिया जाय; आरम्भ में ही उसे दबा दिया जाय। विन्सटन चर्चिल ने पेरिस शान्ति सम्मेलन में आकर मित्र राष्ट्रों को इस प्रकार की दमनात्मक क्रियाशीलता में भाग लेने के लिये राजी करने का प्रयत्न किया था। वहीं पर रूसियों के मन में मित्र राष्ट्रों के प्रति घृणा का भाव पहले पहल उत्पन्न हुआ था। अभी हाल में भी विन्सटन चर्चिल ने मिसूरी आकर तथा कथित "लौह यवनिका" की निन्दा और भर्त्सना की थी और रूसियों के पुराने सन्देह को और पुष्ट कर दिया था। अब इनको रूसियों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल कर एक उपयुक्त वातावरण की सृष्टि करनी चाहिये और रूसियों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करना चाहिये कि हम लोग एक ऐसे संसार में रहना चाहते हैं जिसमें प्रत्येक राष्ट्र को अपने अपने ढङ्ग से सामाजिक प्रयोग करने का पूर्ण अधिकार रहे और किसी वाह्य आक्रमण का खतरा न रहे।

अपने प्रभावोत्पादक भाषण के तारतम्य में प्रोफेसर ने यह दलील दी कि संसार के सभी व्यक्तियों और राष्ट्रों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना चाहिये। उन्होंने रेडियो पर होनेवाले इस शान्ति प्रोग्राम की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि कुछ व्यक्तियों ने अपने विचार बदल दिये हैं और दूसरोंको भी इसके लिये तैयार कर रहे हैं। आपने यह विश्वास प्रकट किया कि यह आन्दोलन क्रमशः बढ़ता जाएगा और एक दिन योरोप होते हुए लौह यवनिका पार करके स्वयं रूस के अन्दर भी पहुँच जाएगा। वहाँ के लोग इस बात का अनुभव करने लगेंगे कि विदेशों में भी उनके शुभ चिन्तक हैं। वे अपने नेताओं को अपना दृष्टिकोण बदलने के लिये वाध्य कर देंगे।

इसके लिये आवश्यकता है श्रद्धा और विश्वास की—केवल ईश्वर पर नहीं बल्कि उस नैतिक शक्ति पर जो हम सबके अन्दर विद्यमान है और जिसके आधार पर ईसाई धर्म खड़ा हुआ है। आज संसार के सारे व्यक्ति इस धर्म को मान्यता प्रदान नहीं कर रहे तो इसका एकमात्र कारण यह है कि इसके प्रचारकों ने मनुष्य की आध्यात्मिक भावनाओं के स्थान पर अणुबम पर भरोसा रखना अधिक उपयुक्त समझ लिया है। हम चाहे जिस धर्म का अवलम्बन करें यह बात अनिवार्य रूप में आवश्यक है कि हमारे मन में भय, शंका और घृणा के स्थान पर प्रेम का साम्राज्य रहे। बाइबिल में यह सिद्धान्त बड़े सुन्दर रूप में प्रतिपादित हुआ है—पृथ्वी पर शान्ति और मानव मात्र से प्रेम! प्रोफेसर ने कहा कि वे इस वाक्य को थोड़ा सा परिवर्त्तित करके यह कहना अधिक पसंद करेंगे कि मानव मात्र से प्रेम पहली और पृथिवी पर शान्ति दूसरी मान्यता है और प्रथम के बिना दूसरी की कोई सम्भावना नहीं है।

(६)

शान्ति प्रोग्राम समाप्त हो गया। रेडियो बन्द करके छोटा सा परिवार उस पर विचार विनिमय करने लगा। श्रीमती मैपल ने कहा कि वार्त्ता बड़ी सुन्दर रही। उसने लैनी से कहा कि उन्होंने आकर बड़ा अच्छा किया। हेनरी मैपल ने कहा कि उसकी पत्नी का एक भाई युद्ध के समय फ्रांस में मारा गया था और दूसरा भाई अभी हाल में ही लौट कर आया है। वह भी युद्ध का बड़ा विरोधी हो गया है। लैनी ने मन ही मन इस बात का अनुभव किया कि वह अब एक सीधे सादे अमरीकी परिवार के साथ बातें कर रहा है। उसने परिवार का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि वह उनके विचारों को जानने के लिये बहुत उत्सुक है; वे जो कुछ कहना चाहते हों खुलकर कहें।

श्रीमती मैपल ने कहा कि वे कोई कारण नहीं देखतीं कि हम लोग संसार के अन्य देशों के मामलों में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न करें। संसार में इतने अधिक देश हैं कि सबके नाम याद रखना भी सम्भव नहीं है। हम लोग उन्हें अपना काम अपने ढङ्ग से चलाने की छूट क्यों न दे दें? हाँ, यदि कभी अकाल आदि का संकट उपस्थित हो जाय तो हम लोग सच्चे ईसाइयों की भाँति उन्हें थोड़ा बहुत

गल्ला भेजकर अपनी सहायता प्रदान कर सकते हैं। किन्तु उनके घरेलू मामलों के कारण हमें युद्ध करने की भला क्या आवश्यकता है ?

मिस्टर मैपल ने कहा कि उसके कारखाने में एक कारीगर है जो रूसियों के विरुद्ध हर प्रकार से विष वमन करता रहता है। किन्तु यह ठीक नहीं। यहां अमेरिका में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका सुधार आवश्यक है। हमें इनकी ओर अपना ध्यान लगाना चाहिये। दूसरों की निन्दा करते रहने से कोई लाभ नहीं। श्रीमती मैपल ने कहा कि उसका जो भाई योरोप से लौट कर आया है उसका कहना है कि वह बहुत से जर्मनों से मिला था और वे उसे बड़े सज्जन व्यक्ति प्रतीत हुए थे। उसका विचार है कि उनके साथ लड़कर हमने भूल की।

लैनी ने उनसे प्रश्न किया कि जापान के साथ होने वाले युद्ध के सम्बन्ध में उनका क्या विचार है। मिस्टर मैपल ने कहा कि यह एक दूसरी बात है। उन लोगो ने पर्ल हार्बर पर जिस प्रकार का आक्रमण किया था वह युद्ध को क्षम्य बना देता है। किन्तु हम लोग चाहते तो बहुत पहले उन्हें हरा सकते थे। उन्हें इतने अधिक हवाई जहाज प्राप्त करने का अवसर न मिलता तो युद्ध इतने लम्बे समय तक न चलता।

इस प्रकार लैनी ने देखा कि अमरीकी जन साधारण के मन में परराष्ट्रीय प्रश्नों के सम्बन्ध में बड़ी भ्रान्ति है। स्त्रियाँ दूसरे देशों के मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं चाहतीं और पुरुष यह दलील देते हैं कि उनके साथ युद्ध करना ही हो तो वह उस समय किया जाय जब उनकी शक्ति कम हो और उन्हें हरा देना आसान हो।

लैनी ने टैक्सी के लिये टेलीफोन किया। टैक्सी आ जाने पर उसने गृह स्वामी तथा उसकी पत्नी तथा बच्चों से हाथ मिलाया और सबको धन्यवाद दिया। उसने एडगेमीयर को टेलीफोन न किया क्योंकि वह जानता था कि इस समय वहाँ की सभी लाइनें व्यस्त होंगी। वह टैक्सी द्वारा पेनसिलवानिया स्टेशन पर पहुँचा और वहां एडगेमीयर की ओर जाने वाली रात की गाड़ी पकड़ी। सारे रास्ते वह उस अमरीकी श्रमिक परिवार के साथ होने वाली बातों पर विचार करता रहा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी

के साथ इस विषय पर गम्भीर परामर्श करेगा। वह जानता था कि उसकी गर्भवती पत्नी इस समय ऐसी स्थिति में होगी जिसे वयोवृद्ध लोग "नाजुक" कहते हैं। किन्तु इसके कारण उसके संकल्प में कोई शिथिलता न आयी।

(७)

आकस्मिक रूप में अपने कार्यालय में पहुंच कर लैनी ने सबको आश्चर्य-चकित कर दिया। प्रोफेसर अपनी मोटर में आए थे और उसी में बैठकर वे चले गये थे। लैनी को उनके साथ गम्भीर वार्ता करने का अवसर न मिला। उसने लारेल से कहा कि यह यात्रा बड़ी आनन्दमयी रही और विदेश में उसके सारे मित्र स्वस्थ और प्रसन्न प्रतीत हुए। उसने लारेल को यह भी बता दिया कि उसने पेन्सिलवानिया स्टेशन से प्रेसीडेण्ट ट्रूमन को एक तार देकर यह सूचना दे दी है कि वह अपनी यात्रा समाप्त करके लौट आया है और अपनी रिपोर्ट दे सकता है। सम्भवतः कल प्रातःकाल तक प्रेसीडेण्ट का उत्तर प्राप्त हो। यदि ऐसा हुआ तो वह लारेल को एक बार फिर मोटर में सफर के लिये अपने साथ ले जाएगा।

उसने जाली सिक्कों अथवा कर्ट मेसनर और बर्नहाड्ट मान्क के सम्बन्ध में लारेल को कुछ न बताया। किन्तु उसने उसे यह बात बता दी कि प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने उसे जर्मनी के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलकर यह जानकारी प्राप्त करने के लिये कहा था कि वहां मित्र राष्ट्रों की सैनिक सरकार की सफलता की क्या सम्भावनाएं हैं और इस सम्बन्ध में क्रेमलिन का क्या दृष्टिकोण है। शेष बातें मोटर में यात्रा करते समय बताने का आश्वासन देकर उसने एक झपकी लेने की इच्छा प्रकट की। यह आवश्यक भी था क्योंकि रेडियो प्रोग्रामकी रात को लारेल बड़ी उत्तेजित हो जाती थी और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार विनिमय करने के लिये आधी रात तक जागने के लिये तयार रहती थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल लैनी ने न्यूकासेल में अपने पिता को टेलीफोन किया और अपने सकुशल लौट आने का समाचार बताया। इसके बाद वह अपनी डाक पढ़ने के लिये बैठ गया। वह मुश्किल से आधे पत्र पढ़ पाया था कि ह्वाइट हाउस से टेलीफोन पर यह संवाद आया कि संध्या के समय प्रेसीडेन्ट ट्रूमन उससे मिलकर प्रसन्न होंगे। लैनी ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि एकदम आकस्मिक रूप

में अमेरिका का प्रेसीडेण्ट बननेवाला यह व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को समझता है और उनकी पूर्ति के लिये सब समय सतर्क रहता है।

(८)

लैनी ने अपना सामान सम्हाला और मेज से एक विशेष कागज निकाल कर सावधानी के साथ रख लिया। उसने यह कागज इस यात्रा के लिये विशेष रूप से तयार किया था। उसने लारेल के पैरों पर एक कम्बल डाल दिया और इसके बाद स्वयं मोटर चलाने के लिये बैठ गया। उसी पुरानी सड़क "यू० एस० १" पर यात्रा फिर शुरू हुई। नवम्बर का उत्तरार्ध था, प्रातःकाल का समय था। सड़क पर प्रायः एक इञ्च मोटी बर्फ की तह जम गयी थी। मोटर चलाने में कोई विशेष असुविधा न हो रही थी।

"अच्छा, यह बताओ कि कल रात के प्रोग्राम के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या धारणा है?" लैनीने लारेल से प्रश्न किया।

"मेरा ख्याल है कि प्रोफेसर कुछ गोल मटोल ढंगसे बोल रहे थे। वे सीधे ढंग से अपने विषय पर नहीं आए।"

"क्या तुमने इस बात की ओर ध्यान दिया कि उनके दृष्टिकोण से सारा दोष हम लोगों के देश का है और सारा नैतिक उत्तरदायित्व भी हमारा ही है?"

"नैतिक उत्तरदायित्व के प्रश्न पर सदा वही स्थिति रहती है। हमें अपना सुधार करना है और वे लोग अपना सुधार स्वयं कर लेंगे।"

"ठीक है। किन्तु यदि वे लोग अपना सुधार न करना चाहें? मान लो वे लोग केवल इस बात से ही सन्तुष्ट हों कि सारा दोष उनके विपक्षी का है?"

"लैनी, तुम शंकाशील हो रहे हो! क्या तुम यह कहना चाहते हो कि वे वृद्ध सज्जन कम्युनिस्टों के सहयात्री हैं?"

"नहीं मुझे इसका कुछ पता नहीं। किन्तु इतना स्पष्ट है कि यदि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होता और अपने बुर्जुआ श्रोताओं पर कोई अनुकूल प्रभाव डालने के लिये उत्सुक होता तो उसका काम अवश्यही बड़ा आसान होता। सारा दोष अमेरिका का है, सारा नैतिक उत्तरदायित्व भी अमेरिका का ही है और स्टालिन तो ईसामसीह की भांति दया और नम्रता का अवतार है!!

मैं तुम्हें बताता हूँ कि कल का यह प्रोग्राम मैंने किस प्रकार की परिस्थिति में सुना था।"

उसने मैपेल परिवार का वर्णन किया और उस पर उस प्रोग्राम की प्रतिक्रिया का चित्रण किया। "मैं अमेरिका के एक साधारण धार्मिक परिवार के साथ बातें कर रहा था। इस प्रकार के सम्भवतः बीस लाख परिवार अमेरिका में हैं। इनमें से प्रत्येक के मन में केवल एक ही बात चक्कर काट रही है। सभी अपने पति अथवा पुत्र को सेना से निकलवा कर घर में बन्द रखनेके लिये व्यग्र हैं। स्टालिन विदेशों में अपनी विजय यात्रा जारी रखे, अमेरिका के इन परिवारों को इसकी कोई चिन्ता नहीं। इनका कहना है कि उन देशों के लिये युद्ध करने में क्या लाभ जिनके नाम तक हमें याद नहीं रहते? हम लोग विदेशों में लड़ने के लिये क्यों जाएं? इससे अच्छा तो यह है कि हम घर में अपना काम देखें और आनन्द पूर्वक जीवन यापन करें।"

उसने लारेल को अपनी यात्रा के सम्बन्ध में उतनी बातें बता दीं जितनी बताने के लिये वह स्वतन्त्र था। उसने जाली मुद्रा के सम्बन्ध में कोई चर्चा न की किन्तु जर्मनों और फ्रेन्चों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें की। उसने बताया कि योरोप में जहां जहां वह गया उसे जनता के मनमें इस भय की झलक मिली कि अमेरिका उनसे किनारा काटने की सोच रहा है। अमेरिका अपनी सेनाएं विघटित कर रहा है जब कि रूस वाले नयी सेना तयार कर रहे हैं। स्टालिन एक विशालकाय हिमखण्ड की भांति अपनी सुनिर्धारित योजना के अनुसार धीरे २ किन्तु दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता जा रहा है। उसने सारे पोलैन्ड को हड़प लिया, आधी जर्मनी और आस्ट्रिया को छीन लिया और जेकोस्लोवाकिया, हंगरी रुमानिया, और बल्गेरिया को लाल साम्राज्य में अन्तर्मुक्त कर लिया। इन देशों में उसने गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना का वचन दिया था। किन्तु अब वह गणतांत्रिक शासन की एक नयी परिभाषा गढ़ रहा है। इस परिभाषा के अनुसार "गणतांत्रिक" शासन का अर्थ है कम्युनिस्टों का कठोर नियंत्रण।

और अब ग्रीस तथा तुर्की के पूर्वी क्षेत्र में स्टालिन कम्युनिस्ट "शान्ति" करवानेके लिये कृतसंकल्प प्रतीत हो रहा है। उसने अजर्बेजान को हड़प लिया है

अलमानिया के जरिये उसे अड्रियाटिक तक पुहुंचने का रास्ता मिल गया है। फल-स्वरूप वह बाल्टिक समुद्र को एक रूसी झील के रूपमें परिवर्तित कर सकता है। चीन पर अधिकार करने के बाद तिब्बतको निगल लेने की उसकी योजना है। भारत के लिये वह एक गम्भीर खतरा उपस्थित कर रहा है। उसे डायरन और पोर्ट आर्थर के वे उष्णजलीय बन्दरगाह प्राप्त हो गए हैं जिनके लिये रूस को जापान से युद्ध करके पराजित होना पड़ा था : जिन बातोंको प्राप्त करने में प्राचीन जार लोग असफल रहे थे उन्हें स्टालिन ने आसानी के साथ प्राप्त कर लिया है। और इधर हमारे कालेज-प्रोफेसर रेडियो पर भाषण देते हुए हमें यह परामर्श दे रहे हैं कि हमें अपने नैतिक स्तरको ऊपर उठाना चाहिये और अपनी परराष्ट्र नीति का आध्यात्मीकरण करना चाहिये।

"तब हम लोग क्या करें?" लारेल ने कुछ अधीरतापूर्वक प्रश्न किया। "क्या हम लोग कट्टर लाल-विरोधी बन जाएं?"

"लारेल, मैं इन कम्युनिस्ट मोहावरों से ऊब गया हूं और अब इनका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यदि स्टालिन के कार्य ऐसे हैं कि उनका वर्णन करने मात्र का अर्थ लालविरोधी होना है तो मैं लाल विरोधी ही हूँ। मैं प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के साथ याल्टा गया था और वहां मैंने स्टालिन को उनके साथ समझौता करके वचनबद्ध होते हुए देखा था। स्टालिन को वे सभी बातें प्राप्त हो गयी थीं जिनकी उसने मांग की थी—यहां तक कि वे बातें भी जिन्हें देने का हमें कोई अधिकार न था। उसने हम लोगों को अच्छी तरह मूर्ख बनाया था। बाद में प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट को इस बात का पता चल गया था और मरनेके पूर्व उन्होंने मुझसे इसकी चर्चा भी की थी। मैंने जर्मनी में जर्मनों तथा अमरीकियों दोनों से बातें की, उनमें जो सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति समझे जाते थे उनसे भी मुलाकात की। सब एक बात पर सहमत थे। वह यह कि स्टालिन ने पश्चिमी जर्मनी को अछूता इसलिये नहीं छोड़ दिया कि वहां हमारी छोटी मोटी सेना पड़ी हुई है! नहीं, उसे केवल अणु बम का भय है जो उसे निकट भविष्य में मिलने की कोई सम्भावना नहीं है : विशिन्स्की का कहना है कि हम लोग इस अणु बम को डेमाक्लस की तलवार की भांति उसके सिर के आसपास घुमा रहे हैं। यह ठीक है। हम

लोग यही कर भी रहे हैं। यदि हमारे पास यह अणु बम न होता तो आज रूसी सेनाएं फ्रांस को रौंदती हुई दिखाई पड़तीं और लंदन पर उन नये राकेटों की वर्षा होने लगती जो आज उच्च कोटि के जर्मन वैज्ञानिक रूसियों के लिये बना रहे हैं। यदि यह अणु बम हमारे पास न होता तो स्टालिन छः मास के अन्दर ही स्पेन की राजधानी मैड्रिड में पहुँच कर फ्रैंको की लाश पर बैठा हुआ दिखाई देता।"

"हे ईश्वर! तुम कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो!"

"मैं चिन्तित हूं और इस बातको छिपाना नहीं चाहता। मैं इन बातों की चर्चा तब तक न करना चाहता था जब तक कि गर्भस्थ शिशु का जन्म न हो जाय। किन्तु अब मैंने अपना विचार बदल दिया है। हमें अमेरिका की जनता की सुरक्षा के साथ खेलने का कोई अधिकार नहीं है।"

"लैनी तुम्हारे विचारों में यह परिवर्तन एकदम आकस्मिक रूप में हुआ है!"

"नहीं, यह परिवर्तन धीरे धीरे ही हुआ है किन्तु मैंने इसकी चर्चा करने में जानबूझ कर देरी की है। दो वर्ष पूर्व जब हम लोगों ने रेडियो पर अपना शान्ति प्रोग्राम शुरू किया था भविष्य के सम्बन्ध में हमारी धारणाएं बड़ी सुन्दर थीं। रूजवेल्ट कहा करते थे कि सोवियत रूसके साथ मित्रता के लिये उन्होंने एक पचास वर्षीय योजना बनायी है। मैंने स्टालिन से इसकी चर्चा की थी तो वह हंस पड़ा था। उस समय उसने अपनी इस हंसी को सौम्यता का रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया था किन्तु आज मैं इस बात को समझ रहा हूं कि वह हंसी व्यंग की हंसी थी। स्टालिन की एक सुनिर्धारित योजना है जो उसके लेखकों द्वारा पुस्तकों के रूप में लिपिबद्ध हो चुकी है। किन्तु उसे यह बात मालूम थी कि रूजवेल्ट ने कभी ये पुस्तकें देखने का कष्ट न किया था। हम लोगों के प्रति स्टालिन का एक ही भाव है—गहरी घृणा का। और ये वृद्ध प्रोफेसर महोदय रेडियो पर स्टालिनके आध्यात्मिकीकरण की दलील देते हैं!! बर्नहाड्ट मान्क ने जर्मनी में मुझसे कहा था कि इससे अच्छा यह है कि हम लोग भारत जाकर वहां के बाघों को मांस भक्षण छोड़ने के लिये राजी करने का प्रयत्न करें!"

"तुम जो कुछ कह रहे हो वह क्या बर्नहाड्ट का कथन है?"

"यह जर्मनी के उस प्रत्येक व्यक्ति का कथन है जिसे सोवियत रूस की थोड़ी बहुत जानकारी है। यह मत भूलो कि इस समय लगभग एक तिहाई जर्मन रूसियों के हाथ में हैं और वे लोग आसानी के साथ पूर्वी जर्मनी से पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी से पूर्वी जर्मनी में आते जाते रहते हैं। वे लाल हत्कण्डों से भली भाँति अवगत हैं।"

"लैनी, एमली के रुपये का क्या होगा?"

"हम लोग एमली का रुपया ठीक उसी रुप में खर्च करेंगे जिस रूप में वे जीवित होतीं तो करतीं। मैं एमली के विचारों से अवगत हूँ। मैं उनके साथ बहुत घनिष्ट था। कैसर की सेनाओं ने बेल्जियम में जो कुछ किया था उससे वे भयभीत हो उठी थीं। वे रेडक्रास के कार्य में अग्रणी थीं। हिटलर के प्रति भी वे बड़ी आतंकित थीं—यह तो तुम भी जानती हो। यदि वे जीवित होतीं तो योरोप को सोवियत तानाशाही के सम्मुख आत्मसमर्पण करते हुए कदापि न देख पातीं। शान्ति के संबन्ध में उनकी परिकल्पना ऐसी न थी। वे हम लोगों को शान्ति के नाम पर आत्मसमर्पण की दलील न देने देतीं। मैं युद्ध की दोहाई नहीं दे रहा। किन्तु मेरा विश्वास है कि युद्ध को रोकने का एकमात्र उपाय यह है कि हम लोग तेज़ी के साथ सशस्त्रीकरण करें और स्टालिन को यह विश्वास दिला दें कि वह बिना युद्ध किये अब शेष संसार को नहीं हड़प सकता। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्टालिन युद्ध के लिये साहस न बटोर पाएगा क्योंकि उसे अमेरिका की औद्योगिक शक्ति का परिचय मिल चुका है और उसने यह भी देख लिया है कि हमारे अणुबमों ने जापान में क्या किया।"

(९)

लारेल ने लैनी का वैसा प्रतिरोध नहीं किया जिसकी आशंका उसने की थी। कारण यह है कि लैनी की भांति लारेल भी पिछले कुछ समय से मन ही मन इसी समस्या पर विचार कर रही थी। इसलिये इस समय उसके स्वर में क्रोध की अपेक्षा अवसाद का भाव ही अधिक था। "हम लोग अपने प्रोग्राम का क्या करेंगे?—सैनिक विशेषज्ञों को बुला कर उन्हें सशस्त्रीकरण पर अपने विचार प्रकट करने के लिये कहेंगे?"

"मेरा विश्वास है कि हम लोग एक कार्य अविलम्ब शुरू कर सकते हैं। वह यह कि हम लोग दोनों पक्षों को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता दे दें। जब कभी कोई कम्युनिस्ट सहयात्री अपनी वक्तृता में किसी नीति की ओर संकेत करे, हमें एक दूसरे व्यक्ति की वक्तृता प्रसारित करके विरोधी विचार भी साथ ही साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न करना पड़ेगा। उदाहरण के लिये फिलिप्स का उत्तर देने के लिये हमें रेडियो पर जान डेवे को लाना होगा।"

वे लोग वाशिंगटन सांध्य भोजन के समय पहुँच गए। भोजन समाप्त करके लैनी ह्वाइट हाउस की ओर रवाना हो गया। इस बार फाटक पर गुप्त पुलिस के अधिकारियों ने उसे पहचान लिया और उसका स्वागत किया। उसे प्रेसीडेण्ट के अध्ययन कक्ष में ले जाया गया। प्रेसीडेण्ट थके हुए से प्रतीत हो रहे थे और उनके हस्ताक्षरों का क्रम जारी था। लैनी को देखकर उनके चेहरे पर प्रसन्नता की एक झलक दौड़ गयी। कुछ भी हो, लैनी आखिर कुछ सुसवाद लाया था। यह बात क्या कम महत्वपूर्ण थी कि जर्मनी में अमरीकी सेना जर्मनों के साथ शिष्ट व्यवहार कर रही है और उसके मित्रों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह भी एक सुखद बात थी कि तथाकथित 'ट्रूमन योजना' जर्मनी के अंदर आशा और साहस का संचार कर रही है। अब लैनी प्रेसीडेण्ट को इस जाली मुद्रा से सम्बन्धित जानकारी देने के लिये स्वतंत्र था। उसने बताया कि किस प्रकार उसने उस गिरोह के एक व्यक्ति को पकड़ा था और एक दूसरे जर्मन युवक को इस नये नाजीदल के रहस्योच्छेदन के लिये तैयार किया था। किन्तु लैनी ने प्रेसीडेण्ट को इससे अधिक कुछ न बताया।

अन्त में लैनी ने अपना वह कागज निकाला जो उसने यत्नपूर्वक तैयार किया था।

"मिस्टर प्रेसीडेण्ट, आपने जोसेफ स्टालिन द्वारा लिखित पुस्तकों के सम्बन्ध में कुछ दिलचस्पी दिखाई थी। मैंने विश्व शान्ति के प्रश्न पर उनकी पुस्तकों से कुछ अंश संकलित किये हैं। क्या मैं आपको दो एक पढ़कर सुना दूं?"

"अवश्य।" प्रेसीडेण्ट ने कहा। और लैनी ने "प्राबलम्स आव लेनिनीज्म के ११ वें संस्करण (१९४७) के पृष्ठ १६० से पढ़ना शुरू किया;

"इस समय हम लोग एक राज्य में नहीं बल्कि कई राज्यों के अन्दर निवास कर रहे हैं और यह बात अकल्पनीय है कि सोवियत रूस अधिक समय तक साम्राज्यवादी देशों के साथ रह सकेगा। अन्त में दो में से एक को विजयी होना है। इस बीच में सोवियत रूस तथा बुर्जुआ राज्यों के बीच कई भयानक संघर्ष होना अनिवार्य है।"

लैनी ने कुछ अंश पढ़ कर प्रेसीडेण्ट को सुनाए।

"मिस्टर बड, मेरे परामर्शदाता मेरे सम्मुख इस प्रकार की चीजों को क्यों नहीं रखते?" प्रेसीडेण्ट ने प्रश्न किया।

"कदाचित इसलिये कि वे जानते हैं कि आप अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति हैं और आपको यह सब पढ़ने का अवकाश नहीं मिलता। इसीलिये मैंने सारा मसाला स्वयं तयार करके आपको पढ़ कर सुना देने का निश्चय किया था।"

"अच्छा, आगे पढ़िये, मिस्टर बड।" प्रेसीडेण्ट ने मुस्कराते हुए कहा।

लैनी ने कहा, "यह उद्धरण भी लेनिन का है। लेनिन की संकलित रचनाओं के पांचवे खण्ड के पृष्ठ १४१ में "दि यूनाइटेड स्टेट्स आव योरोप" शीर्षक एक लेख है। यह लेख स्टालिन को विशेष रूप से प्रिय है। उन्होंने अपनी कई रचनाओं में इसको उद्धृत किया है—"प्राबलम्स आव लेनिनीज्म" में भी। इसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:

"विजयी सर्वहारा समाज·····पूंजीपतियों को पराभूत करने के उपरान्त उत्पादन के साधनों को अपने ढंग से संगठित करेगा और इसके बाद शेष पूंजीवादी संसार के विरुद्ध उठ खड़ा होगा। उसे इस संग्राम में अत्याचार पीड़ित अन्य देशों की जनता से सहयोग प्राप्त होगा। आवश्यकता होने पर यह संगठित सर्वहारा समाज शोषक वर्गों तथा सरकारों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने के लिये भी तैयार होगा—

"यहाँ आपको स्टालिन की सम्पूर्ण योजना की एक झलक मिल जाती है, मिस्टर ट्रूमन। यह लेख आज से लगभग ४२ वर्ष पूर्व लिखा गया था—प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ के समय।"

"यह कागज़ आप मेरे पास छोड़ जाइये, मिस्टर बड।" प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने कहा "मैं इन उद्धरणों को कण्ठस्त कर लूंगा और मन्त्रिमन्डल की आगामी बैठक के अवसर पर इन्हें सुनाऊंगा।"

"समाचार पत्रों के संवादताओं को यह बता दीजिये और निश्चिन्त हो जाइये। मिस्टर मोलोटोव और मिस्टर ग्रोमीको के पास यह खबर पहुंचनेमें देर न लगेगी। उन्हें इस बात का पता लग जाएगा कि आप को आसानी से मूर्ख बनाना सम्भव नहीं है।"

लैनी चुप हो गया। प्रेसीडेण्ट ने क्षण भर तक विचारमग्न रहकर कहा, "हां, अब मैं दुबारा वैसी मूर्खता न करूंगा जैसी कि पोट्सडम में की थी।"

(१०)

प्रेसीडेण्ट ट्रूमन फिर विचारमग्न हो गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "फ्रैन्कलिन रूजवेल्ट ने स्टालिन के साथ मित्रता स्थापित करने का भरसक प्रयत्न किया था। मैंने भी इस दिशा में कुछ नहीं उठा रखा। किन्तु हम दोनों असफल रहे। बताइये तो मिस्टर बड, आखिर हम लोगों का दोष क्या है? हमने उन लोगों का क्या बिगाड़ा है?"

"हमारा दोष यही है, मिस्टर प्रेसीडेण्ट, कि हम एक बुर्जुआ राष्ट्र हैं और संसार में सबसे अधिक समृद्धिशील हैं। हमारी सरकार पूंजीपतियों के हाथों की कठपुतली है। ये पूंजीपति ही हमारे सीनेटरों को मनचाहा नाच नचाते रहते हैं और पूंजीपति एक विकासशील अर्थव्यवस्था की शक्तियों द्वारा प्रेरित होकर स्वयं सारे संसार में फैलने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन्हें कच्चे मालों तथा बाजारों की प्राप्ति के लिये यह सब करना ही पड़ता है। जहां आसानी से काम नहीं चलता वहाँ हम लोग शस्त्रों का प्रयोग करने में भी नहीं हिचकते। इस प्रकार हम औपनिवेशिक देशों की जनता को अपने दासों के रूप में परिवर्त्तित कर देते हैं और उसकी उन्नति के मार्ग में रोड़े अटकाते हैं। किन्तु अब हमारी दाल गलने वाली नहीं। अब पराक्रमी बोलशेविक लोग मार्क्स-लेनिन-स्टालिन के मार्ग का अनुसरण करते हुए संसार के सर्वहारा समाज को शोषित वर्ग के विरुद्ध संगठित होने के के लिये आमंत्रित कर रहे हैं!!—आप इस नारे को समझते हैं न मिस्टर ट्रूमन?

यदि न समझते हों तो अब समझ लीजिये। अब हमें अपने शेष जीवन में निरंतर इसकी आवश्यकता पड़ेगी।"

"मैंने इस नारे को सुना है, मिस्टर बड। किन्तु इसपर विश्वास करना बड़ा कठिन है।"

"क्यों? इस पर अविश्वास का क्या कारण है? इसे आजके युग का सबसे बड़ा सत्य समझिये। हजारों लाखों विक्षिप्त व्यक्तियों द्वारा यह नारा रात दिन रटा जा रहा है। करोड़ों व्यक्तियों को इसका मर्म समझाया जा रहा है। कुछ ही दिनों में आप देखेंगे कि जिस नारे को आप विचित्र समझ रहे हैं उसे अनेकों देशों के असंख्य लोग ध्रुव सत्य के रूप में ग्रहण कर लेंगे और इस पर उतनी ही गम्भीरता से विश्वास करने लगेंगे जितनी गम्भीरता से आप अपनी बाइबिल पर विश्वास करते हैं।"

"आश्चर्य की बात है, मिस्टर बड! इस सम्बन्ध में हम लोग क्या करें?"

"हमारे लिये पहली आवश्यकता तो इस बात की है कि हम वस्तुस्थिति की गम्भीरता को समझें। यह कुछ कठिन बात है। मैंने उन लोगों के साथ बातें की हैं जो कि इस सम्बन्ध में काफी जानकारी रखते हैं। उनसे मुझे ज्ञात हुआ कि युद्ध समाप्त होने भी न पाया था कि पोलिटब्यूरो की एक बैठक हुई थी। उसमें स्टालिन भी उपस्थित थे। इस बैठक में पोलिट ब्यूरो ने अपनी भावी नीति निर्धारित करने का प्रश्न उठाया था। यद्यपि कुछ सदस्यों द्वारा थोड़ा बहुत विरोध हुआ था तथापि विजय मोलोटोव और मालेनकोव की हुई थी। यह निश्चय हुआ था कि कम्युनिज्म को विश्वविजय के लिये अपनी तयारी पूरे जोर शोरके साथ करते रहना चाहिये। इसका यह अर्थ हुआ कि प्रकट और परोक्ष, प्रत्यक्ष और गुप्त जिस प्रकार भी सम्भव हो, हर मोर्चे पर कम्युनिस्ट क्रियाशीलता की वृद्धि। इसका यह अर्थ हुआ कि कम्युनिस्ट प्रचार यन्त्र संसार के भिन्न भिन्न देशों में अमेरिका के विरुद्ध घृणा फैलाने के लिये पूर्णतया गतिशील रहेगा। मैं जानता हूं कि आपके लिये इन सब बातों पर विश्वास करना कठिन है। आप का लालन-पालन प्रेम के आदर्श पर हुआ है। आप प्रेम के इस सिद्धान्त की उत्कृष्टता स्थापित करने के लिये कदाचित अपने प्राणों की बलि देनेमें भी न हिचकेंगे। किन्तु आप

इस बात को मत भूलिये कि कम्युनिस्ट लोग इसी प्रकार घृणा का प्रचार करने के लिये कृतसंकल्प हैं। वे अपने प्रचार के तारतम्य में हर प्रकार के असत्य और फरेब का आश्रय ले रहे हैं और उनके साथ बड़े बड़े मनोवैज्ञानिक हैं जो इस कार्य में सिद्धहस्त हैं। हिटलरने एक बार कहा था कि असत्य जितना बड़ा होता है उतना ही अधिक विश्वसनीय होता है। हिटलरको इसकी शिक्षा मुसोलिनी ने दी थी और मुसोलिनी ने स्वयं इसे बोलशिवकों से सीखा था।"

प्रेसीडेण्ट एक अच्छे श्रोता थे और वक्ता का मर्म ग्रहण करने में कभी न चूकते थे। उन्होंने कहा, "मिस्टर बड, हम लोगों को फिर से सशस्त्रीकरण करना होगा। यह बात मेरे लिये बड़ी ही कष्टप्रद है किन्तु कोई उपाय नहीं है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं प्रतिक्रितावादी बनने जा रहा हूं। हम लोग एक सेना तयार रखकर भी सामाजिक प्रगति का क्रम जारी रख सकते हैं। इस नयी कांग्रेस के साथ मैं अधिक कुछ न कर सकूंगा—यह मैं जानता हूं; किन्तु मैं अपनी मांगें अवश्य प्रस्तुत करूंगा और जनता को वस्तुस्थिति से अवगत करानेका प्रयत्न करूंगा। विश्वास रखिये—हमारा झण्डा सदा फहराता रहेगा।"

लैनी ने होटल में लौटकर लारेल को प्रेसीडेण्ट के साथ होनेवाली वार्ता बतायी। उसकी आँखों में आंसू आ गए। अमेरिका एक नये युद्ध के लिये तयार हो रहा है—यह विचार ही उसे विह्वल करने के लिये पर्याप्त था। उसने हिसाब लगाया। घर पर उसका एक चार वर्ष का बालक था। पन्द्रह वर्ष बाद यह वयस्क हो जाएगा और उसे भी सेना में भर्ती होकर इस युद्ध के लिये जाना होगा और यह युद्ध पृथ्वी के वक्षपर लड़े गए सभी युद्धों की तुलना में कहीं अधिक भयंकर, कहीं अधिक निर्दय होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं!

(११)

एडगरमीयर लौट कर लैनी ने अपनी डाक देखना शुरू किया। रेडियों प्रोग्राम के बाद आने वाले सभी पत्र उसमें थे। उसे यह देख कर कुछ कष्ट हुआ कि अधिकांश श्रोताओं ने फिलिप्स की दलीलों को ज्यों की त्यों स्वीकार कर लिया था। उन्हें प्रोफेसर की लम्बी चौड़ी शब्दावली ने मुग्ध कर लिया था। केवल दो एक पत्र ही ऐसे थे जिनमें यह शंका प्रकट की गयी थी कि प्रोफेसर ने अमेरिका में

जिन दोषों को खोजा है उनमें से क्या कोई रूस में भी हैं ? लैनी ने मन ही मन निश्चय किया कि भविष्य में वह रेडियो प्रोग्राम के तारतम्य में आने वाले वक्ताओं के सम्बन्ध में अधिक सतर्क रहेगा।

इसके बाद उसने शान्ति-परिवार के रिक और नीना के साथ विचार विनिमय किया। ये दोनों बुजुर्गों में समझे जाते थे। रिक लैनी से एक वर्ष बड़ा था और नीना लारेल से ६ वर्ष बड़ी थी। लैनी जानता था कि ये लोग भी वस्तुस्थिति पर उसी की भांति विचार कर रहे थे और उसे यह जानकर बड़ा संतोष हुआ कि प्रोफेसर के सम्बन्ध में इन लोगों की धारणा ठीक उसकी भांति ही थी।

शान्ति परिवार प्रति सप्ताह संध्या के समय अपनी एक बैठक करता था जिसमें भविष्य के सम्बन्ध में कार्यक्रम का निश्चय होता था। अगली बैठक में लैनी ने अपनी योजना विचारार्थ प्रस्तुत की। सभी ने उसका अनुमोदन किया; विरोध किया केवल उस वृद्ध दार्शनिक ने जो सारे शहर के कपड़े धोने का काम करता था और अपने आपको अराजकतावादी घोषित करता था? "क्या हम लोग लाल विरोधी बनने जा रहें हैं?" उसने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया। उसकी स्थूलकाय पत्नी ने उसे समझाते हुए कहा कि केवल इस नाम से भड़क उठने की कोई आवश्यकता नहीं। माता टिप्पटन ने डी० ए० आर—डाटर्स आव दि अमेरिकन रिवोल्यूशन नामक एक संस्था की सदस्यता स्वीकार कर ली थी। उसने इसे एक मज़ाक के रूप में ही लिया था—शायद यह दिखाने के लिये कि एक समाजवादी भी शभक्त हो सकता है! उसने एक नये शब्द का आविष्कार किया था जो "लाल विरोधी" का स्थान ले सकता था। यह शब्द था "सैम विरोधी"! यह था उनके लिये जो काका सैम के हर कार्य में कोई न कोई दोष खोजने के लिये कटिबद्ध रहते हैं!

द्वितीय भाग

अध्याय ७

● भाग्य के लाड़ले ●

(१)

एस्थर और रोबी बड प्रति वर्ष एक पारिवारिक प्रीतिभोज मनाने के अभ्यस्त थे, इस प्रकार के समारोह के लिये उनके पास पर्याप्त स्थान और नौकर चाकर थे। लैनी और लारेल रिक और नीना को लाने के लिये चले गये क्योंकि ये भी एक प्रकार से लैनी के परिवार के सदस्य हो गये थे। इसके अतिरिक्त रिक एक "बैरोनेट" था और मीना एक "लेडी"। फ्रान्सेस स्क्रबी की गाड़ी में बैठकर आ रही थी। बेस और उसके पति को भी निमन्त्रण दिया गया था किन्तु बेस इस समारोह में भाग लेने के लिये तयार न हुई क्योंकि उसे परिवारों से घृणा थी और वह जानती थी कि उसकी उपस्थिति सबके उत्साह में बाधक होगी। हैन्सी ने इस प्रीतिभोज में आना स्वीकार कर लिया था।

लैनी ने अपनी पत्नी को गाड़ीकी पिछली सीट पर सावधानी के साथ बैठा दिया। नीना भी उसके साथ बैठ गयी। बीच में रिकको स्थान दे दिया गया पिछली रात को बर्फ पड़ चुकी थी, यह वर्ष की प्रथम बर्फ थी। गाड़ी ज्यार्ज वाशिंगटन पुल से होती हुई आगे बढ़ी और तेज़ी के साथ रास्ता पार करके नार्थ-शोर के पास आ गयी। हजारों अन्य व्यक्ति अपने अपने प्रीति भोज में भाग लेने के लिये जा रहे थे और सड़क पर हजारों बच्चे अपने चमकीले वस्त्रों में लैस होकर धूप में किलकारियां भरते हुए चल रहे थे।

बड-अलिन्ग एयरक्राफ्ट कम्पनी के प्रेसीडेन्ट विगत युद्ध के साढ़े पांच वर्षों में अपने कार्यालय की कुर्सी पर बैठे बैठे थक गये थे। उनकी मुख-मुद्रा चिन्तित सी प्रतीत होती थी और शरीर भी पहले की तुलना में कुछ दुबला हो गया था। इस समय आप अपने कार्य से अवकाश ग्रहण करके विश्राम कर रहे थे। किन्तु वस्तुतः विश्राम करना सम्भव न था। युद्ध समाप्त हो जाने के कारण उनकी कम्पनी को लड़ाकू वायुयानों के आर्डर मिलने एकदम बन्द हो गये थे। कम्पनी को अब अपनी

पुरानी कमाई पर निर्भर करने के लिये बाध्य होना पड़ा था। युद्ध काल में कम्पनी के कारखाने में काम करने के लिये जो हजारों मजदूर न्यूकैसेल आ गये थे उन्हें अब लौटकर अपनी खेती बारी सम्हालने के लिये बाध्य होना पड़ा था। कमाई के ज़माने में रोबी बड पर यह अभियोग लगाया जाता था कि वे डिवीडेन्डों के वितरण में उदारता नहीं दिखाते। किन्तु अब लोगोंने उनकी दूरदर्शिता को समझा।

रोबी एक सहृदय वृद्ध व्यक्ति थे और उन्हें अपने परिवार पर बड़ा अभिमान था। उन्होंने अपने अतिथियों का स्वागत किया। पुरुषों से हाथ मिलाया और महिलाओं तथा बच्चों का चुम्बन लिया। उनके दो पुत्र इस समय प्रौढ़ हो चुके थे और उनकी पत्नियां भी समाज के अन्दर पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी थीं। आधुनिक रुचि के अनुसार उन्होंने अपने शरीरों को दुबला पतला ही बनाए रखा था और घरमें बच्चों की भीड़ न होने दी थी। प्रत्येक परिवार में तीन बच्चे ही पर्याप्त समझ लिये गए थे। समारोह में कुछ रिश्तेदार भी आ गये थे। भोज वाला मेज़ इतना लम्बा था कि अनायास उसके आसपास घूम लेना सम्भव न था। फिर भी वह पूरी तरह से भर चुका था और इसलिये बच्चों को प्रातःकालीन नाश्ते वाले कमरे में बैठाना पड़ा था।

जब लैनी सर्वप्रथम न्यूकैसेल आया था उस समय प्रथम विश्व-युद्ध चल रहा था और उसके पितामह सैमुअल बड जीवित थे। उस समय जो प्रीतिभोज हुआ था उसमें उन्होंने स्वयं दस सेर वजन की "केक" अपने हाथों काटी थी और अतिथियों में उसे वितरित किया था। किन्तु अब यह कार्य भी आधुनिक रुचि के अनुसार बेहरों द्वारा सम्पन्न होने लगा है।

मध्यान्ह के समय लैनी ने अपने पिताके साथ बातें की। उन्होंने फिर अपनी पुरानी बात को दोहराया कि जब अमेरिका पर कोई आफत आती है वह अपने शस्त्र-उत्पादकों की प्रशंसा में पंचमुख हो उठता है किन्तु आफत सिर से हटते ही उन्हें "मृत्यु के व्यवसायी" बताकर गालियां देने लगता है। उन्होंने लैनी से पूछा कि इस बार योरोप जाकर वह क्या कर रहा था। लैनी ने जाली मुद्रा के सम्बन्ध में कुछ न कहा किन्तु उसने प्रेसीडेन्ट ट्रूमन से होने वाली भेंट की जानकारी अपने पिता को दे दी। उसने उन्हें यह भी बता दिया कि वह योरोप से

प्रेसीडेण्ट के लिये क्या संदेश लाया है। रोबी बड प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के भक्त न थे और उन्हें अमरीकी अक्षमता का प्रतीक समझते थे। फिर भी वे पूरी बात जानने के लिये उत्सुक थे। वे लैनी से भाँति भांति के प्रश्न करने लगे। लैनी ने अपने उत्तरों के प्रसंग में अपने वृद्ध पिता को एक ऐसी बात बतायी जिससे उनकी बांछें खिल गयीं। उसने उनसे कहा कि इस समय हवा का जो रुख है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें निकट भविष्य में ही नये और अपेक्षाकृत उत्कृष्ट लड़ाकू वायुयानों के आर्डर मिलने लगेंगे। रोबी ने कहा कि अब केवल जेट वायुयान ही बनेंगे, "प्रोपेलर" वायुयानों का युग अब एक दम समाप्त हो गया है। उन्होंने अपने पुत्रको इस रहस्य से भी अवगत करा दिया कि वे न्यू मेक्सिको वाले अपने कारखाने में इस दिशामें काफी बड़े पैमाने पर प्रयोग कर रहे हैं।

(२)

संन्ध्या समाप्त होनेपर फ्रान्सेस ने रिक, नीना तथा उनके पुत्र को अपनी गाड़ी में बैठाकर घर पहुँचा दिया। लैनी और लारेल रोबिन-परिवार से मिलने के लिये ठहर गए। यहां भी काफी मजमा था किन्तु इस मजमे में यहूदी लोग ही थे। ईसाई लोग अपने धार्मिक कृत्योंके महत्व को भूल गए थे और इस-लिये यह स्वाभाविक ही था कि यहूदी लोग इनमें भाग लेने लगे थे। उन्होंने इस आमोद प्रमोद को अपने पारिवारिक संगठन का एक माध्यम बना लिया था। इस समय यहां पर प्रौढ़ वयस्क जोहानीज़ रोबिन बैठा हुआ था जिस पर एक समय नाजियोंने बड़ा अत्याचार किया था। किसी जमाने में वह करोड़पति था किन्तु अब वह अपने आप को दरिद्र बताता था। यह बात पूर्णतया सत्य न थी क्योंकि बड-अलिन्ग कम्पनीके विक्रय विभागके प्रधान के रूपमें उसकी आय कम न थी और उसने अपने धन का विनियोजन बुद्धिमत्ता के साथ कर लिया था।

श्रीमती रोबिन पारिवारिक प्रेम की जीती जागती प्रतिमा सी प्रतीत होती थीं। वे अब काफी वृद्धा हो चुकी थीं किन्तु इस आयु में भी वे एकदम रुचिविहीन न हुई थीं। हैन्सी के दो पुत्र फ्रेडी और उसकी सौतेली मां रोहेल, जिसने दुबारा शादी कर ली थी, के चार बच्चे इस समय यहां उपस्थित थे। जिस समय लैनी और लारेल यहां आए कुल मिलाकर चौदह व्यक्तियों का जमघट हो गया

था। सब लोगों ने हल्का नाश्ता किया क्योंकि किसी को भूख न थी। इसके बाद हैन्सी ने लैनी के साथ वायलिन बजायी। लैनी का अभ्यास छूट चुका था और उसे हैन्सी का साथ देने में काफी कठिनाई का अनुभव हो रहा था। किन्तु वह किसी प्रकार काम निकाल गया और श्रोताओंने उसके दोषों को लक्ष्य न किया। श्रीमती रोबिन लैनीको बहुत चाहती थीं क्यों कि उसने एक समय नाजियों के चंगुल से छुटकारा दिलाकर उनका बहुत बड़ा उपकार किया था। वे उसे एंग्लो सैक्सन जाति के आदर्श के प्रतीक के रूप में देखती थीं।

हैन्सी रोबिन कभी मोटर न चलाता था। वह ऐसा कोई काम न करता था जिसमें उसकी बहुमूल्य उंगलियों की चपलता नष्ट होने की किंचित मात्र सम्भावना रहती हो। उसकी एक उंगली नष्ट हो जाने पर शेष भी अनिवार्य रूपमें बेकार हो जातीं। लैनी ने उसे अपनी गाड़ीमें घर पहुंचा दिया। तीनों प्रायः अर्धरात्रि तक संसार की विभिन्न समस्याओं पर वार्ता करते रहे। लैनी ने अपनी पिछली यात्रा तथा मान्क के साथ होनेवाली बातचीत की चर्चा की। उसने और लारेल ने हैन्सी को अपने रेडियो प्रोग्रामों में होनेवाले परिवर्तनों की रूपरेखा भी बतायी। हैन्सी का हृदय यह सोचकर मसोस उठा कि फिर से युद्ध-पिपासु लोगों का बोलबाला होने जा रहा है। किन्तु मन ही मन वह इस बात का अनुभव कर रहा था और कोई उपाय नहीं है। वह प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के इस सिद्धान्त पर विश्वास करता था कि शान्ति-रक्षा के लिये दोनों पक्षों का सहयोग आवश्यक होता है। रोबी बड की तुलना में हैन्सी रोबिन प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के प्रति अधिक श्रद्धालु था।

(३)

लैनी और लारेल ने यह निश्चय किया था कि रात हैन्सी और बेस के साथ बितायी जाय। लारेल बेस के साथ खुलकर बातें करना चाहती थी। किन्तु बेस वहां उपस्थित न थी। वह अपनी कमेटी-मीटिङ्ग में भाग लेने के लिये चली गयी थी। कम्युनिस्ट लोग छुट्टियों के दिन अपनी सभाएं अवश्य करते हैं ताकि श्रमजीवी जनता उनमें भाग ले सके।

रात के एक बजे बेस लौटी। वह अपनी गाड़ी गैरेज में रखकर ऊपर आयी

तो बड़ी थकी हुई सी प्रतीत हुई। बचपन में वह बड़ी सुन्दर थी किन्तु अब वह चालीस वर्ष की हो चुकी थी और उसके गालों का रंग उड़ गया था। वह उस रंग को वापस लाने के लिये विशेष उत्सुक भी न थी। उसके बाल जूड़े के ढंग से बंधे रहते थे और उनपर एक छोटा सा हैट रखा रहता था। वह किसी प्रकारके शृङ्गार प्रसाधनों का व्यवहार न करती थी। यदि वह किसी को इनका व्यवहार करते देखती तो तुरन्त यह समझाने का प्रयत्न करने लगती कि यह एक पूंजीवादी प्रथा है और पूंजीवाद ही संसार के सारे अनर्थों की जड़ है।

वह जानती थी कि उसका सौतेला भाई लैनी तथा उसकी पत्नी लारेल उसके घर में आए हैं क्योंकि उसने घर के सामने इनकी गाड़ी को खड़ी हुई देख लिया था। अन्दर आकर उसके संक्षेप में इनका अभिवादन किया। उसने अपने हाथों के ग्लोव तथा कोट निकालकर एक कुर्सी पर डाल दिया और दूसरी कुर्सी पर स्वयं लुढ़क गयी।

"तो अब तुम लोग किसी को शान्ति पर विश्वास न रखने दोगे?" कुछ देर बाद उसने कहा।

यह एक चुनौती थी। स्पष्ट था कि इस अर्धरात्रि के समय भी वह तर्क करने के लिये पूर्णतया प्रस्तुत थी। कम्युनिस्टों की प्रणाली भी यही है—अपने शत्रु पर बार बार आक्रमण करते रहना, तब तक करते रहना जब तक कि वह शिथिल न हो जाय।

उसके प्रश्न के उत्तर में किसी को कुछ कहने की इच्छा न हुई। सब चुप बैठे रहे। बेस ने फिर कहा, "इसका अर्थ जहां तक मैं समझती हूँ यह है कि संसार के सभी शान्ति-प्रेमी कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूतिशील हैं। वे जानते हैं कि विश्व शान्ति का और कोई मार्ग नहीं है। इसलिये तुम लोग इनकी भर्त्सना करने लगे हो। लैनी, सच सच बताओ तुमने जान बूझकर इस नीति को अपनाया है अथवा तुम यह आशा करते हो कि मैं इसे एक आकस्मिक परिवर्तन के रूप में मान लूंगी?"

अब उत्तर देना अनिवार्य था। लैनी ने धीरे से कहा, "हम लोगों ने सोचा कि प्रश्नोत्तर के रूप में दोनों पक्षों का दिग्दर्शन कराना अधिक रोचक होगा।"

"हाँ, प्रश्न इस प्रकार सजा कर रखे जायं कि वक्ता को यह स्वीकार करने के लिये बाध्य होना पड़े कि युद्ध का सारा खतरा सोवियत रूस की ओर से है। तुम यह मत समझो कि तुम अधिक समय तक जनता को इन प्रकार धोखे में रख सकते हो। लोग अब वस्तुस्थिति को समझने लगे हैं—वे जानने लगे हैं कि विश्वशान्ति के मुख्य और वास्तविक शत्रु कौन हैं।"

"बेस, इस विषय पर तर्क करना समय की बर्बादी मात्र है।"

"नहीं, मैं जानती हूं कि तुम इन प्रश्नों की चर्चा केवल अपने रेडियो प्रोग्राम पर करना पसन्द करोगे जहाँ तुम्हें अपनी मनगढ़न्त बातें बनाने की पूरी स्वतंत्रता रहेगी और प्रतिवाद की कोई सम्भावना न रहेगी।"

"मुझे दुःख है कि तुम अपने मन में इस प्रकार की धारणा रखती हो, बेस। हम लोग अपनी तालिका में भिन्न भिन्न प्रकार के वक्ताओं को स्थान देने का प्रयत्न करते हैं।"

"और जब दुर्भाग्यवश कोई ऐसा वक्ता आ जाता है जो वस्तुस्थिति पर सच्चा और वास्तविक दृष्टिकोण व्यक्त करता है तो तुम लोग उसे दबाने और उसके विचारों का मजाक उड़ाने का भरसक प्रयत्न करने लगते हो। पहले मेरे मनमें कुछ आशा थी कि शायद तुम लोग दोनों पक्षों को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करोगे किन्तु मेरी यह आशा गलत निकली। शायद तुम लोगों पर ऊपर से दबाव पड़ रहा है—सच बताओ, अमेरिकन लीजन अथवा कू क्लक्स क्लान वाले तो तुम लोगों पर दबाव नहीं डाल रहे?"

पहले भी इस प्रकार के झगड़े हो चुके थे किन्तु इस बार हैन्सी का विचार करके लैनी नये झगड़े का सूत्रपात न करना चाहता था। उसने धीरे से कहा, "रात काफी बीत चुकी है, बेस—"

किन्तु बेस ने बात काटते हुए कहा, "तुम मेरे प्रश्न का सीधा उत्तर क्यों नहीं देते? साफ साफ बताओ तुम पर कितना दबाव पड़ा है?"

"हम लोगों पर कोई दबाव नहीं डाला गया, बेस। हम लोगों ने प्रोफेसर फिलिप्स का भाषण सुना और हमें ऐसा लगा कि उनके विचार सुलझे हुए नहीं हैं। मैंने अपने मित्रों के साथ इस प्रश्न का विचार विनिमय किया और हम लोग

इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हम लोग अपने वक्ताओं के सम्मुख प्रश्न रख कर वस्तुस्थिति को अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न किया करेंगे।"

"दूसरे शब्दों में, तुम्हारा विश्वास है कि जेम्स अलवर्सन फिलिप्स कम्युनिस्ट हैं। है न यही बात?"

"मैं ऐसा नहीं कहता, बेस।"

"मैं तुम्हें भीतरी बात बता सकती हूँ। वे उतने ही कम्युनिस्ट हैं जितने कि हर्बर्ट हूवर थे। बात यह है कि तुम लोग ऐसी स्थिति में पहुंच गये हो जहां तुम किसी व्यक्ति से यह आशा नहीं कर सकते कि वह पूंजीवादी व्यवस्था में किंचित मात्र त्रुटि दिखाने का अथवा सोवियत रूस में किंचित मात्र अच्छाई दिखाने का साहस करेगा। लेनी, एक समय तुम्हीं ने मुझे समाजवाद की शिक्षा दी थी और मैं तुम्हें उदार मनोवृत्ति का व्यक्ति समझती थी। किन्तु अब तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम्हें यह आशंका हो गयी है कि तुम रोबी के रुपये से हाथ धो दोगे? या तुम्हारे पास ही कुछ अधिक रुपया आ गया है?"

"रुपये का कोई प्रश्न नहीं है, बेस। बात यह है कि सोवियत रूस में मैंने आवश्यकता से अधिक रक्तपात्त देख लिया है।"

"रक्तपात! हे भगवान, तुम रक्तपात की बात करते हो! तुमने देखा है कि किस प्रकार पूंजीवादी शक्तियां एक दूसरे का गला काटने के लिये झपटती हैं—इसके दो दृष्टान्त तुम्हारे सामने आ चुके हैं और ये दोनों इतिहास के सबसे अधिक भयानक दृष्टान्त हैं। तुमने यह देखा है कि किस प्रकार जर्मनी के पूंजीपतियों ने हिटलर को सत्तारूढ़ किया और उसे अस्त्र शस्त्र देकर साठ लाख यहूदियों का सर्वनाश कराया और इसके बाद—भगवान जाने कितने—शायद एक या दो करोड़ रूसियों के प्राण लिये। और इसपर भी तुम रक्तपात की बात करते हो! तुम देख रहे हो कि रूसी लोग देशद्रोहियों और पूंजीपति षड्यंत्रकारियों को कारावास का दण्ड दे रहे हैं—मैं समझती हूं कि उन लोगों ने जितने व्यक्तियों को मारा है उनकी संख्या गत महायुद्ध में मरने वालों का एक प्रतिशत भी नहीं है। और इस पर भी तुम इन पर रक्तपात का अभियोग लगाते हो! तुम विश्वयुद्धों के लिये तैयार हो—और इसके लिये तेजी के साथ तैयारियां भी कर रहे

हो—किन्तु तुम देशद्रोहियों और षड्यन्त्रकारियों के वध को सहन नहीं कर सकते ! शायद इसका कारण यह है कि तुम मन ही मन जानते हो कि तुम स्वयं एक देशद्रोही हो।"

"ओह, बेस ! कैसी भयानक बातें कर रही हो तुम !" लारेल ने अवाक होकर कहा।

"तुम जानती हो कि वह एक जासूस था। उसने गेयरिन्ग के विरुद्ध जासूसी की थी। यहां तक तो ठीक था। किन्तु मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या अब वह सोवियत रूस के विरुद्ध जासूसी करना चाहता है ? मैं उसे देशद्रोही ही कहूँगी क्योंकि एक समय उसने श्रमजीवी जनता का पक्ष लेकर बाद में उसे ठुकरा दिया। मैं जानती हूँ कि तुम दोनों एमिली चेटर्सवर्थ का रुपया लेकर उसका ठीक उल्टा उपयोग कर रहे हो। जब तुम लोगों ने अपना काम शुरू किया था तब मुझे कुछ कुछ आशा थी कि तुम शन्ति के लिये प्रयत्न करोगे। किन्तु अब मैं देख रही हूं कि सारा देश सोवियत रूस के विरुद्ध पागल की भांति चीख पुकार मचा रहा है और यह भयानक व्यक्ति प्रेसीडेण्ट ट्रूमन भी युद्ध का आह्वान कर रहा है तथा उसके लिये तयारियां कर रहा है और तुम लोग भी पागलों के इस दल के साथ उसकी चीख पुकार में शामिल हो गए हो !"

हैन्सी उठकर खड़ा हो गया। "रात काफी बीत चुकी है।" उसने धीरे से कहा। "हम लोगों को अब सो जाना चाहिये। लारेलको विश्राम की विशेष आवश्यकता है। यह पारिवारिक समारोह का दिन है और हमें एक दूसरे के प्रति सद्भावना का प्रदर्शन करना चाहिए। सौभाग्यवश हम लोग एक स्वतन्त्र देश में रहते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्तिको इच्छानुसार सोचने और काम करने की छूट है।"

हैन्सी गृह-स्वामी था। उसके इस वक्तव्य ने आदेश का सा काम किया। लैनी उठ गया। उसने लारेल का हाथ अपने हाथ में लेकर रात्रि का अभिवादन किया। वह उसे ऊपर उस कमरे तक पहुंचा आया जहां एक समय दोनों कई हफ्तों तक साथ साथ रहे थे। हैन्सी और बेस अलग अलग कमरों में सोते थे। हैन्सी अपने कमरे की ओर चला गया। बेस कब तक अकेली बैठी रही इसका किसी को कुछ पता न चला।

लारेल के मुखसे अनायास ही निकला, "बेचारा हैन्सी!"—उसने कई बार इन शब्दों को दोहराया। उसके स्वर में दया और सहानुभूति का भाव था। वह यहां इस इरादे से आयी थी कि बेस के साथ अकेले में बातें करके उसे समझाने का प्रयत्न करेगी। किन्तु उसने देख लिया कि बेस के साथ बातें करना व्यर्थ है। उसने लैनी से कहा, "अब इन दोनों को सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिये। दोनों में से किसी एक को तलाक ले लेना चाहिये। इसके बाद सम्भव है हैन्सी को कोई ऐसी लड़की मिल जाय जिसके साथ वह विवाह कर सके। जो भी हो, वह इस प्रकार रहा तो उसका सर्वनाश हो जाएगा।"

(४)

शान्ति-प्रचारक दम्पति दूसरे दिन प्रातःकाल अपने घर लौट आए। रास्ते में उन्होंने हैन्सी के अशान्त दाम्पत्य जीवन की चर्चा की। उन्होंने आपस में यह मत प्रदर्शित किया कि इस युग में दाम्पत्य कलह की क्रमशः बढ़ने की सम्भावना है क्योंकि लोग विचारशील बनते जा रहे हैं और इस बात की पूरी सम्भावना है कि एक दूसरे के विचारों में विरोध की मात्रा बढ़ती जाय। हैन्सी और बेस को ही लीजिये। एक समय ये दोनों कलाकार एक दूसरे के प्रति कितने सहानुभूति शील थे किन्तु अब वे एक दूसरे को देख न सकते थे। लैनी और लारेल इस बात पर सहमत थे कि इस दम्पति का मनोमालिन्य बढ़ने की ही अधिक सम्भावना है क्योंकि सोवियत रूस और पश्चिमी संसार के बीच विरोध की भावना में वृद्धि होना निश्चित है।

लैनी ने एक मार्के की बात लक्ष्य की थी। वह यह कि हैन्सी और बेस भाषा के प्रश्नपर भी एकमत न थे। बेस सदा "सोवियत" अथवा 'सोवियन यूनियन' शब्द का व्यवहार करती थी। दूसरी ओर हैन्सी 'रूस' और 'रूसी' शब्द का व्यवहार करता था। हैन्सी का कहना था कि रूस में सोवियत व्यवस्था समाप्त हो चुकी है, अब वह अतीतकाल का "पवित्र रूस"—जारशाही के दिनों का साम्राज्यवादी रूस है, वह फिरसे उस भालू के रूप में परिणत हो गया है जो मनुष्य की भांति चलता फिरता है। यद्यपि इस समय यह भालू लाल पोशाक धारण किये हुए है और हंसिया-हथौड़ावाला झण्डा लेकर चलता है तथापि

उसकी मनोवृत्ति पहले जैसी ही है। उसे अब भी पड़ोसियों की भूमि की लिप्सा है। उसे अब भी योरोप और एशिया में अपने "उष्ण-जलीय" बन्दरगाह प्राप्त करने की आकांक्षा है। इस भालू ने पहले का जारतंत्र त्याग दिया है और उसके स्थान पर आधुनिक वैज्ञानिकों की सहायता से बड़े बड़े अत्याचार-कक्षों का निर्माण कर लिया है—ऐसे अत्याचार कक्षों का जिनके जगमगाते हुए प्रकाश में आंखें अंधी हो जाती हैं और जिनके फर्श इस ढंग से बने हुए हैं कि उन पर किसी भी ढंग से बैठना या लेटना नारकीय यातना ही होती है।

अत्याधुनिक शिक्षाप्राप्त मनोवैज्ञानिक अत्याचार की इस प्रक्रिया का निरीक्षण करते रहते हैं। प्रत्येक तानाशाह अपने पूर्ववर्त्ती से इस भयानक कला को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त करता है और अपने जीवन काल में उसमें और भी संशोधन परिवर्द्धन करता है। मुसोलिनी ने यह विद्या लेनिन से सीखी थी, हिटलर ने इसे मुसोलिनी से प्राप्त किया था। स्टालिन ने दोनों का अनुकरण किया था। यह एक ऐसा विष है जो प्रत्येक नयी संस्कृति के माध्यम से क्रमशः अधिक खतरनाक होता जाता है। बेस के आने के पूर्व हैन्सी लैनी के साथ इसी विषय की चर्चा कर रहा था। उस समय बेस ने उसकी बातें न सुनी थीं किन्तु इसके पूर्व वह अनेकों बार इन्हें सुन चुकी थी।

अन्त में लारेल ने प्रश्न किया, "अच्छा मान लो उन्हें तलाक मिल भी जाय तो बच्चों का क्या होगा?"

लैनी ने उत्तर दिया, "यों भी ये लोग अपने बच्चों का क्या करेंगे? समस्या अन्तहीन रूप में टाली तो नहीं जा सकती।"

फिलहाल बच्चों को एक बोर्डिंग स्कूल में रखकर समस्या का अस्थायी समाधान कर लिया गया था। किन्तु बच्चे अब बड़े हो गए थे और संसार की गतिविधि के सम्बन्ध में अपनी उत्सुकता प्रकट करने लगे थे। अधिक दिनों तक उनसे यह बात छिपाई भी न जा सकती थी कि उनके माता पिता के बीच इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर ही भारी विरोध है। यह स्पष्ट था कि बेस अपने बच्चों के हित को दृष्टिगत करते हुए अपने राजनैतिक आग्रहों को छिपाने के लिये राजी न होगी बल्कि वह अपने बच्चों को यह बताने के लिये उत्सुक होगी कि कम्युनिस्ट

लोग गौरवशाली शहीद हैं। और हैन्सी से पूछा गया तो वह क्या कहेगा ? यदि वह अपने मन की बात बताएगा तो बेस भड़क उठेगी और बेचारे बच्चों को लेकर एक अच्छा खासा युद्ध छिड़ जाएगा।

लैनी और लारेल दोनों ही इस प्रश्न पर एकमत थे कि हैन्सी यह तनाव अधिक समय तक नहीं सह सकता। वह एक भावुक-हृदय कलाकार था और पाँच मिनट का झगड़ा उसका सारा दिन बर्बाद कर देने के लिये पर्याप्त होता था। इस झगड़े के फलस्वरूप लैनी और लारेल का दिन भी बर्बाद हो गया था क्योंकि वे अपने मित्र की दुर्दशा देख कर विचलित हो गये थे! बुद्धिमान फ्रान्सिस बैकन ने लिखा था : "जिसके पत्नी और बच्चे होते हैं वह भाग्यशाली होता है।" और यही बात मित्रों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। मित्र आपके जीवन को विस्तार प्रदान करते हैं किन्तु यह विस्तार सुख और दुख, सफलता और असफलता दोनों पर ही सामान रूप में लागू होता है।

(५)

घर पर लैनिन्ग क्रेस्टन बड नामक सुन्दर सुडौल बालक था जो पाँच वर्ष का हो चुका था। अपनी माता की भाँति उसकी आँखें भूरी थीं तथा बाल रेशम की भांति चिकने थे। वह अपनी आयु के उस आश्चर्यजनक स्थल पर था जिसमें मस्तिष्क का विकास ठीक उसी तेजी के साथ होता है जिस तेजी के साथ ग्रीष्म-कालीन गल्ले की फसल का होता है। विकास की यह आश्चर्यजनक गति इतनी स्पष्ट होती है कि बीते हुए दिन और आज के दिन का अन्तर भी मापा जा सकता है। वह अपनी पाठशाला से लौट कर आया था और वह अपने अनुभवों को कह सुनाने के लिये अत्यन्त उत्सुक था। उसका मुंह अनवरत रूप में चल रहा था। संसार में उसे कोई चिन्ता न थी। यदि कोई चिन्ता थी तो केवल यह कि वह घर लौटते समय गिर पड़ा था और उसे कुछ चोट आ गयी थी। किन्तु वह चोट गम्भीर न थी और उसे दो तीन चुम्बनों द्वारा ठीक किया जा सकता था।

किन्तु उसकी माँ को एक भयानक चिन्ता सताया करती थी। यह चिन्ता थी भावी महायुद्ध के सम्बन्ध में। कब आएगा यह महायुद्ध ? हे भगवान्! इसे शीघ्र ही लाकर समाप्त कर दे ताकि मेरा बच्चा उसके चंगुल में न फंसने पाए !! किन्तु

यह भी सम्भव है कि यह युद्ध इतने शीघ्र समाप्त न हो। सम्भव है वह तीस अथवा सौ वर्ष तक चलता रहे। सम्भव है इन भयानक अस्त्र शस्त्रों के आविष्कार के बावजूद अथवा इनके कारण ही यह युद्ध तब तक चलता रहे जब तक कि सभ्यता का अन्तिम चिन्ह नहीं मिट जाता और मानव जाति फिर से अरण्य-वासिनी होकर डण्डों और भालों से युद्ध करने की स्थिति पर नहीं पहुंच जाती।

लारेल के मन में एक ही सांत्वना थी। वह यह कि बेस और हैन्सी के विपरीत वह अपने पति के साथ एकमत थी। "ईश्वर को धन्यवाद है।" उसने श्रद्धाज्ञापन के स्वर में कहा, "हम लोगों का दाम्पत्य जीवन सुखमय है!" किंतु इस प्रकार का दृष्टिकोण हास्यास्पद था—ठीक उस व्यक्ति की भांति जो अपने मकान की छत पर चढ़कर ईश्वर को इसलिये धन्यवाद देता था कि वह दूसरों की भाँति नहीं है।

लारेल और लैनी का वार्त्तालाप फिर हैन्सी की ओर मुड़ा। वे लोग उसकी क्या सहायता कर सकते हैं? उन्हें बेस की विशेष चिन्ता न थी क्योंकि वे जानते थे कि बेस को एक नया धर्म मिल गया है जिसमें प्रेम की अपेक्षा घृणा का ही प्राधान्य है और वह इतने से ही संतुष्ट है। कट्टर ईसाई की भाँति जो इस बात पर विश्वास करता है कि स्वर्ग में उसकी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा और सारा दुख क्लेश समाप्त हो जाएगा, बेस भी एक ऐसे काल्पनिक लोक की ओर ताक रही थी जिसमें सब लोग ठीक उसी प्रकार से जीवन यापन करेंगे जिस प्रकार कि वह उन्हे करते देखना चाहती है और फलस्वरूप निर्दयता और बल प्रयोग की कोई आवश्यकता न रहेगी। सच तो यह है कि बेस मार्क्स की उस तार्किक माया मरीचिका का शिकार बन गयी थी जो रेखा-गणितकी मान्यताओं की भांति ध्रुव सत्य प्रतीत होती है। उसने इस बात पर विश्वास कर लिया था कि पूंजीवादी सभ्यता अपने अन्तर्निहित द्वन्द्वों के फलस्वरूप स्वतः समाप्त हो जाएगी और उसके स्थान पर श्रमजीवी जनता का सुखद राज्य स्थापित हो जाएगा!

इस मान्यता में क्या वस्तु बाधा डालती थी? लैनी का कहना था कि इसमें मानव हृदय की दुर्बलताओं को दृष्टिगत नहीं किया गया। श्रमजीवी समाज एक सूक्ष्म

परिकल्पना मात्र है, स्थूल रूप में ऐसी कोई वस्तु नहीं है। यह समाज भी आखिर मनुष्यों का समाज है और इसमें भी अन्तर्निहित दुर्बलताओं का रहना अनिवार्य है। इसीलिये रूस में "प्रोलीतारियत" के राज्य की स्थापना होने के स्थान पर "पोलिट ब्यूरो" के राज्य की स्थापना हो गयी! लैनी बहुधा लार्ड एक्टन की एक बात दोहराया करता था : "शक्ति भ्रष्टाचार की ओर मुड़ने की प्रवृत्ति रखती है और पूर्ण शक्ति पूर्ण भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख हो जाती है।" लेनिन ने अपनी मृत्यु के समय यह निर्णय किया था कि स्टालिन "अत्यंत उद्दण्ड" है और वह उनका उत्तराधिकारी बनने के योग्य नहीं है। किन्तु फिर भी स्टालिन सत्तारूढ़ हो ही गया और उसने उन सभी व्यक्तियों को मरवा डाला जो लेनिन के कृपापात्र थे। लैनी इस एकाकी तानाशाह का बड़ा स्पष्ट चित्र खींचा करता था। वह कल्पना किया करता था कि किस प्रकार मोटी मोटी दीवारों से घिरा हुआ और मशीन गनों के पर्दे में सुरक्षित यह व्यक्ति मन ही मन शंकाओं और संदेहों की चक्की में पिसता रहता होगा और एक के बाद एक अपने सहयोगियों को मौत के घाट उतारने का आदेश देता रहता होगा। इन भावपूर्ण चित्रों की स्पष्टता ने लारेल को इतना अधिक प्रभावित किया था कि एक रात अचानक उठकर उसने कुछ काव्य रचना कर डाली :

शक्तिमान व्यक्ति

सबल को बल देता है कौन ? यही हैं साधन या फिर साध्य
बस दासों के आंसू मौन। यही हैं प्रभुता के आराध्य।
शक्ति लिप्सा बन जीवन मंत्र सबल का शासन बन दुर्दम्य
कुछ बदमाशों का षड़यन्त्र। बनाता कायरता को क्षम्य।

मुक्ति बनती पागल का गान।
जहां होता शासक बलवान॥

लैनी को यह कविता काफी सुन्दर लगी थी। वह इसे अपने साप्ताहिक शान्ति-पत्र में प्रकाशित कर देना चाहता था। किन्तु लारेल ने उसे ऐसा न करने दिया। उसे भय था कि यह कम्युनिस्टों के विरुद्ध अनावश्यक प्रचार है।

(६)

दोनों ने अपने दैनिक कार्यक्रम की ओर ध्यान दिया। उन्हें प्रतिदिन दो बार डाक मिलती थी। इसमें विभिन्न प्रकार के पत्र रहते थे। कोई साप्ताहिक शान्ति-पत्र के लिये आर्डर भेजता था और लिफाफे में चन्दे के रूप में टिकट, नोट अथवा चेक या नकद सिक्के रख देता था। कोई उन्हें अपना परामर्श अथवा आलोचना भेज देता था। कोई युद्ध को रोकने के लिये अपनी नयी सूझबूझ द्वारा आविष्कृत एक लम्बा चौड़ा सैद्धान्तिक विश्लेषण भेज देता था। कोई अपने पत्र में नौकरी की याचना करता था और कोई बिना वेतन लिये ही अपनी सेवाएं प्रदान करनेको मांग कर बैठता था। पत्रोंकी यह विविधता बड़ी मजेदार होती थी। अधिकांश पत्रों में लेखक का पूरा पूरा परिचय रहता था और ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी कठिनाई में है। कोई परामर्श चाहता था कोई आर्थिक सहायता।

कुछ पत्र बड़े मार्मिक होते थे। कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण होते थे। किन्तु कुछ एकदम निरुद्देश्य और अर्थहीन भी होते थे। ये पत्र भिन्न भिन्न रंग की स्याहियों में लिखे हुए होते थे और कभी कभी इनमें जीवन के दार्शनिक दृष्टिकोण का एक लम्बा चौड़ा विश्लेषण मिल जाता था। लेखकगण भिन्न भिन्न प्रकार के मानचित्रों के साथ मानव समाज के पुनर्गठन के सम्बन्ध में अपने विचार भी बहुधा भेजते रहते थे। कोई नये वैज्ञानिक आविष्कारों का उल्लेख करता था जिनके जरिये करोड़ों रुपये कमाये जा सकते थे बशर्ते कि कोई उनका पेटेण्ट—अधिकार प्राप्त करने के लिये तयार हो जाए। कोई नये धर्म की चर्चा करता था। कोई यह सलाह देता था कि कागजी मुद्रा छापकर जनता की गरीबी मिटाई जा सकती है। इन पत्रों को देखकर ऐसा लगता था कि इनके लिखनेवाले निरीह और एकाकी व्यक्ति हैं जो रेडियोपर प्रसारित होनेवाली सहानुभूतिपूर्ण वाणी द्वारा आशान्वित होकर इस ओर आकृष्ट हुए हैं। इन पत्रोंके लेखकों में अधिकांश यह अनुरोध करते थे कि उन्हें रेडियो पर बोलने का अवसर प्रदान किया जाय। इन सारे अनुरोधों पर विचार करना आवश्यक रहता था। प्रत्येक पत्र का उत्तर देना अनिवार्य था, भले ही वह दो पंक्तियों का ही हो। फलस्वरूप रेडियो स्टेशन, जो किसी समय तार बनानेवाला

कारखाना था, के अन्दर टाइप राइटरों की खट खट अनवरत रूप में चलती रहती थी।

ऐसा कार्यव्यस्त जीवन था लैनी का। जो व्यक्ति संसार को बदलने की आकांक्षा रखता हो उसके लिये यह स्वाभाविक भी था। किन्तु अब एक कठिनाई उपस्थित हो गयी थी। जब तक लैनी की दृष्टि में यह बात स्पष्ट थी कि वह संसारकी वस्तुस्थिति में कौन सा परिवर्तन लाना चाहता है तब तक तो कोई चिन्ता न थी। किन्तु अब अचानक उसे अपने सम्पूर्ण कार्यकलाप की सार्थकता पर सन्देह होने लगा था। वह मन ही मन इस बात का अनुभव करने लगा था कि अशान्ति के वातावरण में शान्ति की यह रट व्यर्थ है। वह समझने लगा था कि युद्ध अनिवार्य है और इसलिये शान्ति की अपेक्षा युद्ध की तैयारी करना ही अधिक बुद्धिमत्ता का कार्य है। परिणाम स्वरूप उसके मन में एक जटिल संघर्ष की सृष्टि हो गयी थी और वह रात्रि के समय बिस्तर पर लेटे लेटे अपने हृदय के स्फूर्ति देवता से भांति के प्रश्न किया करता था।

(७)

किन्तु जीवन की गति रुक नहीं सकती। आप कितने ही चिन्ताग्रस्त क्यों न हों आपको अपनी व्यक्तिगत समस्याओं तथा अपने मित्रों की समस्याओं की ओर ध्यान देना ही पड़ेगा। उदाहरण के लिए फ्रांसेस बार्नेस बड और स्क्रबहम पामेराय नीलसन की समस्या थी। ये दोनों एक दूसरे से प्रेम करते थे। स्क्रबी के पिता ने जूते की पालिश बनाकर करोड़ों रुपये कमा लिये थे, 'नाइट' उपाधि से आभूषित थे और इङ्गलैण्ड के तत्कालीन प्रधान मंत्री के अंतरंग मित्र थे। यह स्क्रबी नाम कुछ विचित्र सा था किन्तु प्रधान मंत्री का नाम डिजी था और यह कुछ कम विचित्र न था।

युवक स्क्रबी की आयु अधिक न थी किन्तु वह इस छोटी सी आयु में ही इङ्गलैण्ड और जर्मनी के आसपास पक्षी की भांति फुदकता रहता था। जहाँ तक फ्रांसेस का प्रश्न है वह छुट्टियों में अपने पिता से मिलने के लिये आयी थी और यह समझा गया था कि छुट्टियां समाप्त होने पर वह वापस अपने स्कूल लौट जाएगी। किन्तु इसके विपरीत उसने यह निश्चय किया कि स्कूल की शिक्षाकी

अपेक्षा वह विश्व-शान्ति की दिशा में अधिक उपयोगी शिक्षा प्राप्त करेगी। फल-स्वरूप वह लिफाफे बंद करने, शान्ति-पत्र के प्रूफ ठीक करने तथा इसी प्रकार के अन्य काम करने में अपना समय लगाने लगी। वह सब कुछ करने के लिये तयार थी बशर्ते कि उसे स्क्रबी के पास बैठकर काम करने का अवसर मिले।

वे आपस में शादी करना चाहते थे। उन्होंने सुन रखा था कि दो व्यक्ति उतने ही सस्ते ढंग से जीवन निर्वाह कर सकते हैं जितने से कोई अकेला व्यक्ति कर सकता है। वे किसी भी प्रकार जीवन बिताने के लिये तैयार थे बशर्ते कि वे साथ साथ रहें। फलस्वरूप लैनी को अपनी भूतपूर्व पत्नी (अब लेडी विकथार्प) को एक पत्र लिखकर वस्तुस्थिति स्पष्ट कर देने की आवश्यकता पड़ी। यह निश्चित था कि इर्मा इस प्रस्ताव को पसन्द न करेगी। कारण यह है कि उसकी पुत्री बार्नेस एक विशाल सम्पत्ति की उत्तराधिकारणी थी और उससे यह आशा की जाती थी कि वह अपने आपको उस भावी गौरवशाली जीवन के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करेगी; रेडियो अथवा साप्ताहिक समाचार-पत्र का व्यापार सीखने में अपना समय नष्ट न करेगी। रेडियो और साप्ताहिक समाचार-पत्र ही क्यों, संसार को बदलने का यह व्यापार भी उसके लिये उपयुक्त न था।

इर्मा ने इस मामले की छानबीन करने के लिये अपनी मां को भेज दिया। इन महिला का नाम था फैनी बार्नेस, किन्तु लोग इन्हें "पुरानी तलवार" के नाम से पुकारा करते थे। इनके पास विशेष सम्पत्ति न थी क्योंकि इन्होंने अपने पति के साथ झगड़ा करके सारी सम्पत्ति अपनी पुत्री को दिला दी थी। लैनी इसके प्रति सदा विनीत रहता था। यों तो विनय उसके स्वभाव में ही था तथापि जिस दिन इस वृद्धा महिला की पुत्री ने घर से भाग कर लैनी के साथ विवाह कर लिया था उस दिन से वह वृद्धा के प्रति विशेष श्रद्धालु रहता था। वह उनके साथ सैकड़ों बार ताश खेल चुका था। वृद्धा ने न्यूयार्क पहुंच कर 'वाल्डार्फ-अस्टोरिया' नामक होटल में डेरा डाला। दूसरे दिन लैनी वहां पहुँचा और उन्हें अपने साथ एडगरमीयर ले आया। रास्ते में उसे डांट डपट सुनने को मिली।

किन्तु स्क्रबी बेचारे का कोई दोष न था। यदि उसका कोई दोष था तो यही कि वह एक कनिष्ठ पुत्र था और इङ्गलैण्ड में कनिष्ठ पुत्रों की ओर न अधिक ध्यान

ही दिया जाता है, न उनके पास विशेष पैसा ही रहता है। उसके पक्ष में यह दलील अवश्य दी जा सकती थी कि उसने हिटलर के चंगुल से इङ्गलैण्ड की रक्षा करने में अच्छी सहायता पहुंचाई थी। वृद्धा फैनी अपनी पुत्री के विपरीत, हिटलर के प्रति कभी कोई प्रशंसा का भाव न रख सकी थी। जहाँ तक फ्रांसेस का प्रश्न था वह अभी बच्ची ही थी और एक संतुष्ट बच्ची की भांति अपनी रुचि के अनुसार चलने की अभ्यस्त थी। लैनी ने श्रीमती फैनी को समझाते हुए कहा, "तुम तो जाननी ही हो मां, अपना जीवन प्रारम्भ करने के समय तुम्हारे पास भी कोई विशेष सम्पत्ति न थी।"

"मैं समझती हूं।" वृद्धा ने कहा। "वस्तुतः यह वीभत्स आयकर ही इसके लिये उत्तरदायी है। इङ्गलैण्डवाले भी इससे उतने ही परेशान हैं जितने कि अमेरिका वाले।

"ठीक है।" लैनी ने कहा, "किन्तु ये दोनों यदि अभी से किसी कामकाज में लग जाएं और सावधानी के साथ चलते रहें तो उन्हें किसी प्रकार के कर की चिन्ता न रहेगी—उन्हें इर्मा अथवा रोबी की जायदाद की चिन्ता करने की भी कोई आवश्यकता न पड़ेगी। यहां शान्ति परिवार में इन लोगों का वेतन नहीं बढ़ाया जा सकता क्योंकि यह पक्षपात सा लगेगा। इस समय इन्हें पचीस पचीस डालर प्रति सप्ताह मिल रहे हैं और ये चाहें तो इतने में गुजर बसर कर सकते हैं।"

"हे भगवान्!" फैनी ने चौंक कर कहा, "इतने में ये अपने कपड़े लत्ते भी कैसे बनवा सकेंगे?"

एडगरमीयर पहुँच कर वृद्धा ने सबको डांट फटकार सुनाई। किन्तु अंत में वे राजी हो गयीं और हवाई डाक से उन्होंने इर्मा को लिख दिया कि इन मूर्ख बच्चों की शादी अनिवार्य हो गयी है और इसलिये इर्मा को शीघ्र ही ऐसी व्यवस्था कर देनी चाहिये कि फ्रांसेस को लगभग दो सौ डालर प्रति मास मिलते रहें। इससे कम से कम यह लाभ तो होगा कि इन्हें भूखों मरने की नौबत न आएगी।

अन्त में स्क्वीबी और फ्रान्सेस की शादी हो गयी। यह समारोह नीना और रिक के किराए वाले मकान में सम्पन्न हुआ। युवा दम्पति अपनी सुहागरात मनाने

के लिये शनिवार तथा रविवार की छुट्टी लेकर चले गए। उन्होंने अपने काम को महत्वपूर्ण समझ कर दो दिन से अधिक की छुट्टी लेना ठीक न समझा। वृद्धा फैनी अपने घर लौट गयी। फ्रान्सेस की मनोकामना पूरी हो गयी और इर्मा भी एक प्रकार से संतुष्ट ही हुई। उसे यह भरोसा था कि उसके दो पुत्र और हैं—एक "विस्काउण्ट" है और दूसरा जन्म के क्षण से ही "माननीय" है। इन दोनों का पालन पोषण वह अपने ढंग से कर सकती है और इनके सम्बन्ध में शान्ति के सनकियों या समाजवादियों के हस्तक्षेप का कोई भय नहीं है।

(८)

क्रिसमस का त्योहार आ गया। किन्तु लारेल ने उस समारोह में कोई भाग न लिया क्योंकि उसका प्रसव काल समीप था। क्रिसमस के तीन दिन बाद लैनी उसे न्यूयार्क के एक अस्पताल में ले गया जहाँ उसने एक पुत्री को जन्म दिया। लैनी ने एक कर्त्तव्यनिष्ठ पति की भाँति जो कुछ करना चाहिये था किया। इसके बाद अवकाश के समय वह अपना मन बहलाने के लिये अन्य उपाय खोजने लगा।

वह अपने पुराने मित्र जोलतान कर्तेजसी के पास गया। वह भी लैनी की भाँति एक कलाविशेषज्ञ था। उसने लैनी को बजार की वर्त्तमान स्थिति की जानकारी दी। जोलतान के पास न्यूयार्क में मार्सेल देताजे नामक चित्रकार के कुछ चित्र थे। कभी कभी वह इनमें से एकाध चित्र बेचकर लैनी को एक अच्छी खासी चेक भेज देता था। चित्र के मूल्य के रूप में प्राप्त होने वाले रुपये का दो तिहाई भाग ब्यूटी और मार्सेल को उनके परिश्रमिक के रूप में भेज दिया जाता था।

हैन्सी और बेस किसी संगीत समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे थे। लैनी को पूरा निश्चय था कि यह कोई कम्युनिस्ट मोर्चा है किन्तु उसे संदेह था कि हैन्सी को इसकी अभिज्ञता नहीं है। लैनी इस समारोह को देखने के लिये चला गया। संगीत समाप्त होने पर सब लोग यार्कविल्ला काफे में गए। यहाँ लैनी अपने नवजात शिशु जैसे निर्दोष विषय पर बातचीत करके समय काटने का इच्छुक था।

किन्तु वार्त्तालाप अधिक समय तक राजनीति—निरपेक्ष न रह सका। बेस के

रहते हुए ऐसा होना सम्भव भी न था। संयोगवश उन दिनों अजर्बेजान में लड़ाई हो रही थी। अन्त में रूसी सेनाएं उस क्षेत्र को छोड़कर हट जाने के लिये तैयार हो गयी थीं। उनके जाने के बाद ईरानी सेनाएं पहुंच गयी थीं। बेस यह प्रमाणित करना चाहती थी कि सोवियत् रूस अपने विरोधियों को ज़रा सी भी छूट दे देता है तो गड़बड़ी शुरू हो जाती है। लैनी ने उसे समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा कि सारा संसार इस बात को जानता है कि अजर्बैजान ईरान का एक प्रान्त है। ईरानी सेनाएं वहाँ शान्ति और सुरक्षा की स्थापना करने के लिये गयीं तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। किन्तु बेस ने ताना मारते हुए कहा कि वहाँ तेल भी है। और तेल ही इस समय धधक रहा है!

संयोगवश उसी दिन राष्ट्र संघ में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था कि आणविक शक्ति पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण रहे। दस वोट इस प्रस्ताव के पक्ष में आए थे और दो देश तटस्थ रहे थे। तटस्थ रहने वाले ये देश थे रूस और पोलैण्ड। अन्य बातों के अतिरिक्त इस घटना से यह भी प्रमाणित हो गया था कि पोलैण्ड रूस के हाथों में नाचने वाली कठपुतली मात्र है। यह कठपुतली शब्द कड़ा है और इसीलिये लैनी ने इसका प्रयोग न किया था। किन्तु बेस भड़क उठी। दो सप्ताह पूर्व राष्ट्र संघ की साधारण समिति ने यह प्रस्ताव स्वीकृत किया था कि विश्व स्तर पर निःशस्त्रीकरण होना चाहिये। किन्तु सोवियत रूस ने उस प्रस्ताव में से सेनाओं की जनगणना वाली धारा निकलवा ली थी। लैनी को इस धारा का निकल जाना बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत हुआ था। इसका यह अर्थ था कि सोवियत रूस छिपे छिपे अपनी सेनाएं ज्यों की त्यों बनाए रखेगा और अमेरिका अपनी सेनाओं का विघटन करते रहेगा—और शेष संसार को इसका पता भी न लगने पावेगा। बेस की दलील यह थी कि सोवियत् रूस को अपनी सेना सुरक्षित रखनी ही चाहिये क्योंकि पूंजीवाद सारे संसार पर अपना अधिपत्य जमाए हुए बैठा है। "अमेरिका के पास रुपया है और अमरीकी लोग वस्तु स्थिति को ज्यों का त्यों बनाए रखने के पक्ष में इसीलिये है क्योंकि वे धीरे धीरे अपने पैसे के जोर पर सब कुछ हड़प लेने की आशा रखते हैं।"

"हे भगवान!" लैनी ने आश्चर्य चकित होकर कहा। "तुम यह क्या कह रही

हो ? हम लोग स्टालिन को ११ करोड़ डालर दे चुके हैं जब कि इस रकम के लौटने की कोई सम्भावना नहीं है !"

"यह रकम तुमने रूस को इसलिये दी थी की ताकि वह तुम्हारे लिये हिटलर से भिड़े। इस रकम से तुमने कई लाख रूसियों को मरने के लिये किराये पर ले लिया था।"

कुछ व्यंग्य के स्वर में लैनी ने कहा, "तुम्हारी बातें सुनकर कोई भी यह सोचेगा कि हिटलर ने अमेरिका पर आक्रमण किया था। किन्तु सत्य यह है कि उसने रूस पर आक्रमण किया था और हम लोगों को रूस की मदद के लिये जाना पड़ा था।"

बेस ने भी व्यंग्य के साथ उत्तर दिया, "तुम्हारी बातें सुनकर कोई भी यह सोचेगा कि तुमने पर्ल हार्बर पर होने वाले आक्रमण की बात नहीं सुनी। तुम सदा की भाँति प्रश्न को टालने का प्रयत्न कर रहे हो। वास्तविक बात यह है कि अमेरिका के पास धन है और वह इस धन के बल पर सारे संसार को हड़प जाना चाहता है। जो कोई भी इस स्थिति को बदलने की दलील देता है उसे तुम कम्युनिस्ट और युद्ध-पिपासु कह कर दबा देने का प्रयत्न करते हो।"

हैन्सी मूक भाव से चुपचाप बैठा था। उसके चेहरे पर थकावट और ग्लानि का भाव था। लैनी का हृदय उसके लिये मसोस कर रह गया। बात बदलने के लिये उसने कहा, "हम लोग हैन्सी की संध्या नष्ट कर रहे हैं।" उसने जान बूझकर "हम" का प्रयोग किया था ताकि आक्षेप केवल बेस पर न रहे।

किन्तु बेस कुण्ठित न हुई। उसने कहा, "मै हैन्सी के विश्वासों में हस्तक्षेप नहीं करती। इसीलिये उसे भी मेरे विश्वासों के सम्बन्ध में परेशान होने के लिये कोई कारण नहीं है।"

"किन्तु वह तुमसे प्रेम करता है: बेस।"

बेस ने तुरन्त उत्तर दिया, "किन्तु लैनी, तुम्हीने एक दिन मुझे आदर्शों से प्रेम करना सिखाया था। मैं देख रही हूँ कि निकट भविष्य में फिर एक महायुद्ध होने जा रहा है और यह महायुद्ध पिछले सभी महायुद्धों से अधिक भयानक होगा। ऐसी स्थिति में आदर्शों की तुलना में व्यक्ति का कोई महत्व नहीं है। हैन्सी भी

इस बातको समझता है। और दो दिन आगे या दो दिन पीछे उसे परिस्थितियों से बाध्य होकर मेरी ओर आना ही पड़ेगा।"

ये वजनदार शब्द थे। लैनी को याद आया कि उसने फ्रिज मेसनर से ठीक यही बात कही थी : "आदर्शोंके सामने व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं।" यह बात न्यूयार्क में उतनी ही सत्य है जितनी की बर्लिन अथवा पोलैण्ड में।

(९)

अस्पताल में लैनी ने अपनी पत्नी को यह सब बताया। उसने खीझ कर कहा कि "स्टालिन और सोवियत रूस हमारे सम्पूर्ण जीवन को निगलते जा रहे हैं। हम लोग और किसी बात की चर्चा ही नहीं करते।"

लैनी ने उत्तर दिया, "यदि कोई आदमी तुम्हारे मकान के पिछवाड़े बैठ जाए और तुम्हें दिन रात कोसता रहे तो उसकी उपेक्षा करना आसान न होगा। तुम उपेक्षा करना भी चाहो तो यह सम्भव नहीं। तुम देखोगी कि वह रात दिन मशीनगन चला रहा है। पूछने पर वह कहेगा कि वह आक्रमण के विरुद्ध अपनी सुरक्षा का अभ्यास कर रहा है—उस आक्रमण के विरुद्ध जिसकी कोई कल्पना तुम्हारे मस्तिष्क में नहीं है।"

"मैं जानती हूं, लैनी।" लारेल ने कहा, "मुझे शान्ति प्रेमी लोग यही बताते हैं कि प्रत्येक युद्ध इसी प्रकार शुरू होता है।"

"मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह महायुद्ध इसीलिये उपस्थित होगा क्योंकि स्टालिन के पास एक ऐसा दार्शनिक सिद्धान्त है जो उसे अनिवार्य रूप में विश्व विजय के लिये प्रोत्साहित करता रहता है। हम लोगों ने शान्ति के लिये जितनी उत्सुकता प्रकट की है उससे अधिक कोई क्या कर सकता है? हमारे पास डेढ़ वर्ष पूर्व जितनी सेना थी उसकी शायद एक चौथाई भी अब नहीं है। किन्तु स्टालिन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह हमसे हमारा वह अस्त्र छीन लेना चहता है जो उसके पास नहीं है—अणु-बम।"

"किन्तु उसे यह सब करने की कोई आवश्यकता न थी। यदि वह हमें अकेला छोड़ देता तो उसका उद्देश्य अपने आप पूरा हो जाता। हम लोग अपने देश में पूरा उत्पादन करने लगते और दो तीन वर्ष के अन्दर ही उत्पादन-बहुलता के

कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता। फलस्वरूप हमें अनिवार्य रूप में अपनी अर्थ व्यवस्था को योजनाबद्ध करना पड़ता।"

"नहीं, स्टालिन यह नहीं होने देना चाहता। वह यह नहीं चाहता कि कोई भी देश शान्तिपूर्ण रूप में समाजवादी अर्थव्यवस्था प्राप्त कर ले। इससे उसके इस सिद्धान्त का खण्डन हो जाएगा कि समाजवाद केवल तानाशाही के जरिये आ सकता है। यदि उसका यह सिद्धान्त गलत प्रमाणित हो गया तो रूस की जनता तथा अन्य बन्दी—जनता का भ्रम मिट जाएगा और वह स्वाधीनता की मांग करने लगेगी।"

"अब भी हम लोग स्टालिन की ही चर्चा कर रहे हैं।" लारेल ने मुस्करा कर कहा।

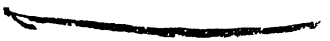

अध्याय ८

● गुप्तचरों की बाढ़ ●

(१)

अब डाक्टर लोग महिलाओं को पहले की भांति अधिक समय तक प्रसूतिका गृह में बंद नहीं रखते। लारेल शीघ्र ही उठकर खड़ी हो गयी और अपने घर चली आयी। घर में वह अपना अधिकांश समय बिस्तर पर लेटे लेटे बिताती थी। उसका सेक्रेटरी रोज़ की डाक उसे दे जाता था। उसे काम करने में आनन्द आता था। शिशु-पालन के साथ साथ उसने अपने दैनिक कार्य का संतुलन इस प्रकार कर लिया था कि एक के कारण दूसरे में कोई बाधा न पहुँचती थी।

दैनन्दिन जीवन का क्रम पहले की भांति चलने लगा। लैनी और लारेल ने अपना काम कार्यालय तथा घर के बीच बुद्धिमत्तापूर्ण रूप में विभाजित कर लिया था और अन्यत्र कहीं जाने की कोई विशेष आवश्यकता भी न पड़ती थी। रेडियो पर वक्ताओं का आना पहले की भांति जारी था। लैनी और लारेल की इच्छा थी कि जनता को विभिन्न मनमनान्तरों से अवगत कराया जाय। किन्तु वे इस दिशा में पूरी सावधानी रखने लगे थे कि यदि कहीं पर कोई वक्ता द्वयार्थिक हो उठे अथवा किसी प्रकार के भ्रम की सृष्टि करने लगे तो उसके सामने तत्सम्बन्धी प्रश्न रख कर स्थिति को स्पष्ट अवश्य कर दिया जाय। ऐसी स्थिति में वक्ता को पहले से चेतावनी दे दी जाती थी ताकि वह अपने उत्तर तैयार कर ले।

इस समय जेनरल मार्शल चीन में थे। वे वहां के परस्पर विरोधी राजनैतिक दलों को किसी प्रकार एक दूसरे से मिला कर देश के अन्दर एक गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना करने का प्रयत्न कर रहे थे। कुछ लोग यह दलील दे रहे थे कि चीन के कम्युनिस्ट वास्तविक कम्युनिस्ट नहीं हैं; वे "भूमि-सुधारक" मात्र हैं। यदि यह बात ठीक थी तो वे देश के अन्दर विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक गणतांत्रिक सरकार की स्थापना का विरोध क्यों कर रहे थे?

अमेरिका जापान में, ब्रिटेन भारत में, तथा हालैण्ड इन्डोनेशिया में इसी प्रकार की चेष्टा कर रहा था। किन्तु चीन में इस प्रयोग को सफलता न मिल रही थी।

इधर न्यूयार्क में विश्व-शान्ति की दिशा में एक वास्तविक और निश्चित प्रयत्न हो रहा था। किन्तु सोवियत रूस की ओर से यहां बार बार यह मांग क्यों पेश हो रही थी कि पहले अणु-बम का बहिष्कार हो, इसके बाद ही अन्य निःशस्त्रीकरण-प्रस्तावों पर विचार किया जा सकता है? क्या इसका यह अर्थ न था कि स्टालिन अपनी चालीस पचास लाख सैनिकों वाली विशाल सैन्य वाहिनी को पश्चिमी योरोप तथा शेष गणतांत्रिक संसार के लिए अजेय बनाना चाहते थे? युद्ध के अन्त के समय अमेरिका की सेना में लगभग अस्सी लाख सैनिक थे। किन्तु दो वर्षों के अन्दर ही उसने अपनी सारी सेना का विघटन कर दिया था और विदेशों में उसके केवल साढ़े पांच लाख सैनिक रह गए थे। स्टालिन अणुबम के बहिष्कार पर तो इतना जोर दे रहे थे किन्तु सेनाओं पर अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण का प्रस्ताव उन्हें मान्य क्यों न था? वे पूर्वी योरोप में जनता द्वारा अपनी सरकारों का गठन क्यों नहीं होने देते थे? उन्होंने अपने साम्राज्य के आसपास एक लौह यवनिका क्यों गिरा दी थी ताकि शेष संसार को उनके कार्य कलाप का कोई पता न लग सके? और वे गणतांत्रिक संसार—विशेषकर अमेरिका जो उनके गाढ़े संकट के समय उनके काम आया था—पर व्यर्थ ही गालियों की बौछार क्यों कर रहे थे?

ये प्रश्न प्रत्येक अमरीकी को परेशान कर रहे थे। प्रत्येक अमरीकी नागरिक इन प्रश्नों का उत्तर चाहता था। किन्तु उसे कहीं से भी इनके उत्तर न प्राप्त हो रहे थे।

(२)

बर्नहाइट मान्क के यहां से एक पत्र आया। इस पत्र में मान्क ने लिखा था कि रूसी लोग बर्लिन के अपने अंचल को मनमाने ढंग से लूट रहे थे। वे किसानों को लूट कर जो अन्न प्राप्त करते थे उससे बर्लिन में पड़ाव डाले हुई अपनी सेना का पेट भरते थे। जर्मन नागरिकों के उदर पोषण की उन्हें कोई चिन्ता न थी। उसने अपने पत्र में यह भी लिखा था कि "फर्डीनेन्ड मजे में अपना काम कर रहा है।"

यह फर्डीनेन्ड और कोई नहीं फ्रित्ज मेसनर ही था। लैनी के सुझाव के अनुसार उसका यह गुप्त नाम रख दिया गया था। लैनी का गुप्त नाम क्रिस्टाफर कोलम्बस था और फ्रित्ज उसका राजा फर्डीनेन्ड। किन्तु यहाँ इसाबेला की कोई सम्भावना न थी। लैनी ने यह चेतावनी दे दी थी कि इस कठोर काम में प्रेम का पूर्ण परित्याग आवश्यक होगा : फ्रित्ज किसी नाजी लड़की से प्रेम कर न सकेगा और समाजवादिनी लड़की उसकी ओर ताकेगी भी नहीं।

मान्क के पत्र में "वोल्किस्चरबण्ड" के सम्बन्ध में बस यही एक वाक्य था। लैनी इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी स्वयं बर्लिन जाकर ही प्राप्त कर सकता था। वहाँ भी अधिक कुछ जानना सम्भव न था क्योंकि उसने फ्रित्ज और मान्क को आवश्यकता से अधिक वाचाल न होने का आदेश दे दिया था। लैनी ने नाव को पानी में छोड़ दिया था और वह वायु के तरंगाघातों के फलस्वरूप किस दिशा की ओर बढ़ेगी इसकी उसे स्वयं कोई कल्पना न थी। लैनी के कौतूहल की निवृत्ति का एकमात्र उपाय यह था कि वह अधिकारियों से कह कर इस मामले की तहकीकात फिर से अपने हाथ में ले ले। किन्तु ऐसा करने की उसे कोई इच्छा न थी। इस समय वह एडगरमीयर में अपनी पत्नी तथा नवजात शिशु के साथ जीवन यापन करते हुए रेडियो पर शान्ति-पाठ करने में ही पूर्ण संतुष्ट था।

किन्तु शान्ति कहाँ थी ? सारा संसार अशान्ति की ज्वलाओं से व्याकुल हो रहा था। कोई भी समाचार पत्र उठाते ही उसे इस अशान्ति की एक नयी झलक मिल जाती थी। प्रति सप्ताह डाकिया दो बार एक छकड़े भर चिट्ठियाँ दे जाता था जो चिल्ला चिल्ला कर संसार की अशान्तिपूर्ण स्थिति की घोषणा करती रहती थीं।

बड-परिवार में भी अशान्ति की लहर आ गयी थी। पारिवारिक प्रीतिभोज के समय लैनी की सौतेली मां एस्थर उसे एकान्त में ले जाकर अपना दुखड़ा रोयी थी। वह अपनी पुत्री के सर्वनाश से बड़ी दुखी थी। उसने बेस को समझाने का काफी प्रयत्न किया था। उसने कम्युनिस्ट साहित्य पढ़ कर अपनी पुत्री के विचारों को समझने की चेष्टा भी की थी। किन्तु वह ज्यों-ज्यों इस कम्युनिस्ट साहित्य को पढ़ती जाती थी त्यों त्यों उसके आश्चर्य की मात्रा बढ़ती जाती थी कि स्वयं उसकी

पुत्री इस भयानक धर्म में कैसे दीक्षित हो गयी। उसकी समझ में यह बात न आती थी कि उसकी पुत्री बेस ने अपनी आत्मा में ऐसी अमानुषिक घृणा का समावेश कैसे कर लिया और उन लोगों का साथ देने के लिये कैसे तैयार हो गयी जो उसकी जन्मभूमि के प्रति नाना प्रकार की वृणित और मिथ्या बातों का प्रचार करने में लगे हुए हैं। बेचारी एस्थर ने परेशान होकर यह निश्चित किया था कि वह स्वयं बेस से मिल कर इस सम्बन्ध में बातें करेगी। किन्तु बेस ने साफ इनकार कर दिया और अपनी माता के घर आना जाना बन्द कर दिया।

एस्थर ने लैनी से कहा था कि इस दुर्घटना के कारण रोबी भी बहुत दुःखी हैं। वे एक कड़े व्यक्ति थे और किसी प्रश्न पर अपना विचार एक बार स्थिर कर लेने के बाद टस से मस न होते थे। वे कहते थे कि बेस के उद्धार की कोई आशा नहीं रह गयी और अब उन्होंने इस प्रश्न पर सोचना विचारना बन्द कर दिया था। किन्तु एस्थर जानती थी कि ऊपर से चाहे वे जितनी उदासीनता दिखावें भीतर ही भीतर वे भी क्षुब्ध हैं और अपनी पुत्री के आचरण के फलस्वरूप तीव्र ग्लानि तथा लज्जा का अनुभव कर रहे हैं। एस्थर ने लैनी से अनुरोध किया था कि वह बेस को समझा बुझा कर रास्ते पर लाने का प्रयत्न करे। किन्तु लैनी हर सम्भव उपाय का प्रयोग कर चुका था और अब अधिक कुछ करने की कोई सम्भावना न थी।

(३)

हैन्सी की समस्या भी बड़ी जटिल थी। लैनी के अपना कोई निजी भाई न था। शायद इसीलिये वह हैन्सी को भाई की भांति ही मानता था। उसने बचपन से ही हैन्सी की प्रगति को ध्यानपूर्वक देखा था और इस पर उसे गर्व था। उसने बेस के साथ हैन्सी की शादी कराने में सहायता पहुंचाई थी और नव-दम्पति के आनन्द में उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुआ था। किन्तु अब सारे आनन्द का तिरोधान हो चुका था, सारी आशा समाप्त हो चुकी थी। लैनी को भय था कि कहीं यह दुर्घटना हैन्सी की स्फूर्ति और स्वास्थ्य को चकनाचूर न कर दे।

कलाकार हैन्सी ने शिष्य के रूप में एक युवक को ले लिया था—पैसे के लिये नहीं, अपने संतोष के लिये। पैसे की उसे कोई कमी न थी और वह जितना

चाहता कमा सकता था। इस युवक को देखकर उसे ऐसा प्रतीत हुआ था कि उसे एक नयी यहूदी प्रतिभा मिल गयी है और वह अपनी कला का रहस्य इसे सौंप सकता है। किन्तु अचानक उसने इस युवक शिष्य को बिदा कर दिया और कह दिया कि वह उसे कुछ भी नहीं सिखा सकता। बेचारे युवक ने दुख और क्षोभ से कातर होकर लैनी को एक पत्र लिखा और जानना चाहा कि कहीं उससे कोई भूल तो नहीं हो गयी। लैनी जानता था कि इस समय हैन्सी की मानसिक स्थिति इतनी असंतुलित हो गयी है कि उसे अपनी कला के शिक्षण या प्रदर्शन में कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी। किन्तु लैनी युवक शिष्य का दिल न तोड़ना चाहता था। इसलिये उसने उसे एक पत्र लिख दिया कि वह शीघ्र ही हैन्सी से मिल कर इस सम्बन्ध में बात करने का प्रयत्न करेगा।

लैनी ने लारेल के साथ इसकी चर्चा की। प्रश्न यह था कि हैन्सी को तलाक ले लेने के लिये कहा जाय या बेस को स्वयं तलाक लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। यह स्पष्ट था कि अब दोनों साथ साथ नहीं रह सकते। साथ रहने का अर्थ था कठोर यातना। लारेल इस सम्बन्ध में सुनिश्चित थी; किन्तु लैनी अब भी संदिग्ध था। उसके अंतःकरण में रह रहकर यह संदेह उठता था कि कदाचित बेस अब भी हैन्सी को प्यार करती हो।

लारेल ने कहा, "यह बात अर्थशून्य है कि बेस के अन्तर्मन में हैन्सी के प्रति कैसी भावना है। यह स्पष्ट है कि प्रकट रूप में दोनों के बीच कलह होती रहती है और वह भविष्य में भी होती रहेगी। न हैन्सी अपने विचारों को त्याग सकता है न बेस। ऐसी स्थिति में दोनों साथ साथ कैसे रह सकते हैं? इस प्रकार की परिस्थितियों में सम्बन्ध विच्छेद ही एकमात्र उपाय है और वह जितनी जल्दी हो जायगा उतना ही अच्छा रहेगा। बेस के विचारों से सहमत होनेवाला कोई कम्युनिस्ट उसे अवश्य मिल जाएगा और हैन्सी के लिए मां रोबिन कोई ऐसी यहूदी लड़की खोज देंगी जो उसकी प्रतिभा तथा विचारों के प्रति श्रद्धालु होकर सुख पूर्वक उसके साथ रह सके।"

लैनी ने हैन्सी को टेलीफोन करके पूछा कि क्या वह न्यूयार्क आ सकेगा ताकि उसके साथ कुछ बात चीत हो सके। हैन्सी ने दूसरे दिन आने का वायदा

किया। उसने लैनी को वह गाड़ी बता दी जिससे वह न्यूयार्क आएगा और ग्रैण्ड सेण्ट्रल टर्मिनल स्टेशन पर उपस्थित रहने का अनुरोध किया। यह तय हुआ कि चूंकि मोटर खड़ी करने के लिये स्थान मिलना एक प्रकार से असम्भव होगा इसलिये हैन्सी अमुक फाटकपर अमुक समय आ खड़ा होगा और लैनी उसे वहीं अपनी गाड़ी में उठा लेगा।

(४)

पूर्वकल्पित योजना के अनुसार लैनी ने हैन्सी को स्टेशन पर ले लिया। इसके बाद दोनों सेन्ट्रल पार्क की ओर चले क्यों कि यह स्थान अपेक्षाकृत शान्त और नीरव पड़ता था। लैनी ने हैन्सी को उसके शिष्य के पत्र की बात बताई। उत्तर आशा के अनुकूल ही मिला। "मैं इतना दुखी रहता हूं, लैनी, कि किसी काम में मेरा मन नहीं लगता।"

"मुझे पहले ही इस बात की आशंका थी। खैर, इस प्रकार अब चल नहीं सकता।"

"मैं जानता हूँ। इसलिये अब मैं एक निश्चय पर पहुंच गया हूँ।"

लैनीको ऐसी ही आशा थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि हैन्सी तलाक अथवा सम्बन्ध-विच्छेद की चर्चा करेगा। किन्तु हैन्सी ने जब दुबारा मुंह खोला तो उसके मुंह से एक ऐसी बात निकली कि लैनी आश्चर्य से अभिभूत होकर काष्ठवत हो गया। उसने एक झटके के साथ अपनी गाड़ी रोक कर सड़क के किनारे लगा दी।

हैन्सी का वाक्य यह था, "मैंने बेस का अनुसरण करनेका निश्चय कर लिया है। मैं भी कम्युनिस्ट हो जाऊँगा।"

"हे भगवान! हैन्सी, तुम क्या कह रहे हो?" लैनी ने आश्चर्यचकित भाव से कहा।

"मैंने हर पहलू से इस प्रश्न पर विचार कर लिया है और मैं समझता हूं कि मेरे लिए अब यही एक उपाय रह गया है। मैं अपनी यह शादी तोड़ नहीं सकता, बेस के बिना मैं रह नहीं सकता। मैंने मन ही मन बेस से अलग होकर रहने की कल्पना की थी किन्तु मैंने देखा कि यह मेरे लिये नितान्त असम्भव है।'

"किन्तु हैन्सी, तुम से यह स्वांग कैसे निभेगा? तुम कोई अभिनेता तो हो नहीं।"

"मुझे स्वांग करने की कोई आवश्यकता नहीं, लैनी। मैं सचमुच कम्युनिस्ट हो रहा हूं। मैंने बेस की दलीलों को ध्यानपूर्वक सुना है और अब मुझे विश्वास होता जाता है कि वह ठीक कहती है—कम से कम जहां तक मेरा प्रश्न है वह ठीक है। मैं सदा कम्युनिस्ट था: सदा कम्युनिज्म का हिमायती था। प्रश्न यह है कि कम्युनिज्म किस प्रकार लाया जाय। किन्तु मैं समझता हूं कि बेस को इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी है। वह वर्षों से इस समस्या का अध्ययन कर रही है। मैं अपने संगीत की साधना में चूर रहता था और वह इन प्रश्नों पर विचार करने में तल्लीन रहती थी। इस समस्या पर उसे एक विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार कर लेने में मुझे कोई कठिनाई नहीं दीखती।

लैनी के विस्मय की कोई सीमा न रही। उसे अपने मित्र की वाणी में विश्वास की स्पष्ट ध्वनि सुनाई दे रही थी। वह उसका विरोध करने में इसलिये हिचकिचा रहा था कि यह उसके व्यक्तिगत मामले में अनधिकार हस्तक्षेप होता। फिर भी उसने साहस बटोर कर कहा, "और बच्चों का क्या होगा, हैन्सी?"

'बच्चों के सम्बन्ध में भी मैंने निर्णय कर लिया है। उनके सामने दो रास्ते हैं। या तो उनका लालन पालन एक विभक्त परिवार में हो सकता है जिसमें उनके माता-पिता बराबर आपस में झगड़ते रहें या फिर एक ऐसे परिवार में जिसमें उनकी मां के विश्वासों को पूर्ण मान्यता मिले। जो भी हो, बेस ने कह दिया है कि वे काफी वयस्क हो चुके हैं और अपने मतों का निर्धारण स्वयं कर सकते हैं। उसने वचन दिया है कि वह उनके साथ तर्क न करेगी।"

लैनी के मनमें आया कि वह कह दे कि यह सब व्यर्थ की बकवास है और बेस इन बच्चों को कम्युनिज्म में ठीक उसी प्रकार आग्रहपूर्वक दीक्षित कर लेगी जिस प्रकार कि उसने तुम्हे किया है। बेस यह कहती अवश्य है कि आदर्श के सामने व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं किन्तु जब बात प्रत्यक्ष रूप में उसके बच्चों पर आएगी तो वह इस प्रकार उदासीन न रह सकेगी। वह अपने बच्चों को

भरसक उस नये संसार में वास करने योग्य नागरिकों के रूप में तयार करनेका प्रयत्न करेगी जिसका निर्माण करने में वह लगी हुई है।

किन्तु लैनीने तर्क न किया। वह जानता था कि तर्क करना व्यर्थ है। हैन्सी वर्षों तक इस प्रश्न पर विचार कर चुका था और उसने समझ बूझ कर निर्णय किया था। उसने गाड़ी फिर चालू की और धीरे धीरे चलने लगा। रास्ते में उसने धीरता के साथ प्रश्न किया, "तुम पार्टी के सदस्य हो जाओगे, हैन्सी ?"

"मैंने सदस्यता के लिये आवेदन-पत्र भेज दिया है। किन्तु स्वभावतः उन लोगों को मुझ पर संदेह है। इस संदेह के निवारण में कुछ समय अवश्य लगेगा।"

"यह तो ठीक ही है। तुमने खुलकर बात की थी ?"

"बेस को स्वयं मुझ पर संदेह था। किन्तु मैं समझता हूँ कि अब वह संतुष्ट हो गयी है। वह बड़ी प्रसन्न है। उसने वायदा किया है कि वह फिर से मेरे साथ वायलिन बजाया करेगी।"

"मैं समझता हूँ कि अब तुम पार्टी के लिये अपनी कला का प्रदर्शन किया करोगे ?" लैनी ने अपने स्वर में किसी प्रकार के व्यंग्य की छाया न आने दी।

"बेशक। उन्हें रुपया चाहिये और मेरे पास यही एक हुनर है जिससे मैं उनकी कुछ सहायता कर सकता हूं।"

"क्या तुम परिवारवालों को इसकी सूचना दोगे ?"

"उन्हें बताना होगा ही। उन्हें यह बात अच्छी न लगेगी किन्तु कोई उपाय नहीं है।" अचानक हैन्सी फूट पड़ा, "लैनी, इसके कारण तुम मुझ से घृणा मत करना।"

लैनी ने तुरन्त उत्तर दिया, "हे, भगवान ! नहीं। ऐसी बात मत सोचो। हम लोग कभी भी तुम से घृणा नहीं कर सकते। हमें इस घटना से सदमा अवश्य पहुंचा है—किन्तु इससे केवल इतना ही होगा कि हमारी बातचीत का दायरा कुछ संकुचित हो जाएगा। बेस के साथ भी यही बात थी।"

"तुम तो जानते हो बेस को छोड़ना मेरे लिये असम्भव था। हम लोगों ने बीस वर्ष साथ साथ बिताए हैं—मेरे जीवन का आधा भाग। मेरी आत्मा के टुकड़े टुकड़े हो रहे थे और यह मेरे लिये एकदम असह्य था।"

"मैं समझता हूं, हैन्सी। हां, यह प्रयत्न अवश्य करना कि तुम भी बेस की भांति उग्र और कटु न हो उठो। यह बात तुम्हारे स्वभाव के विरुद्ध होगी।"

"बेस राजनीति में डूबी रहती है। मैं यह नहीं कर सकता। बेस ने वचन दिया है कि वह मुझसे इसकी आशा भी न करेगी। किन्तु मुझे यह आशंका खाए जाती है कि तुम और लारेल मुझ से घृणा करोगे।"

"ऐसी बात मन सोचो, हैन्सी। भविष्य में हम लोग उन बातों की चर्चा न करेंगे जिन पर हम एकमत नहीं हो सकते।"

किन्तु लैनी मन ही मन कुछ और सोच रहा था। उसे इस अभागे व्यक्ति पर दया भी आ रही थी और ग्लानि भी हो रही थी जिसने अपने दाम्पत्य सुख के लिये अपने सिद्धान्तों का बलिदान कर दिया! हैन्सी सब कुछ जानता था किन्तु उसने यौन-सुख के लिये अपनी बुद्धि के स्वातंत्र्य को बेच दिया। लैनी को यह बात मालूम थी कि कम्युनिस्ट लोग जिसे अपने पक्ष में मिलाना आवश्यक समझते हैं उस पर सुन्दरी स्त्रियों तक को लगा देते हैं। यद्यपि इस मामले में स्त्री एक विवाहिता महिला थी तथापि परिणाम एक ही निकला— अभागे व्यक्ति का मस्तिष्क और चरित्र पूर्णतया अभिभूत होकर ध्वंस हो गया।

लैनी मन ही मन सोच रहा था कि अब हैंसी से मिलना जुलना आकर्षक न रहेगा। वह अपना एक अंतरंग मित्र खो देगा। सहसा उसके मन में विचार आया कि उसके सभी पुराने मित्र एक के बाद एक छूटते जा रहे हैं। कर्ट मेसनर गया और अब हैन्सी राबिन भी गया। वह सोच रहा था कि अब किसकी बारी आयेगी?

(५)

जब लैनी घर पहुंचा, लारेल अपने बिस्तर पर लेटी हुई डाक तथा पाण्डु लिपियों में उलझी हुई थी। उसने हैन्सी का समाचार उसे सुनाया तो उसके हाथ से कागज छूट कर गिर पड़ा और उसकी आँखे विस्मय से फैल गयीं। कुछ देर तक सन्न सी रह कर उसने कहा, "हे भगवान! यह तुम क्या कह रहे हो लैनी?

लैनी ने हैन्सी के साथ होने वाली सारी बातचीत सुना दी। अपनी बात समाप्त कर के उसने देखा कि लारेल की आँखों में आंसू छलक आये हैं। "बेचारा

अभागा ! वह इससे सुखी न होगा। उसका कष्ट और भी बढ़ जायगा। लज्जा और अपराध की भावना उसके मन पर सदा के लिए सवार हो जायगी। लैनी, हम लोगों को उसे रोकना चाहिए।"

"लारेल, वह सारी बात जानता है। जो कुछ हमें मालूम है वह उसे भी मालूम है। उसके साथ तर्क करना व्यर्थ है, वह बेस के बिना रह नहीं सकता।

"यदि वह बेस के बिना नहीं रह सकता तो कम्युनिस्टों के साथ भी नहीं रह सकता। मैं उसे अच्छी तरह जानती हूं। यह एक भयानक बात होने जा रही है, लैनी, एक सार्वजनिक दुर्घटना !! हमें इसे रोकना ही होगा।"

लैनी ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, "डेली वर्कर' में उसे आधा पृष्ठ मिल जायगा, इसमें कोई संदेह नहीं। वह अमेरिका के सबसे महान संगीतज्ञ के रूप में घोषित कर दिया जायगा—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि पाल रोबेसन को सबसे महान गायक और हावर्ड फास्ट को सबसे महान उपन्यासकार के रूप में घोषित किया गया है।"

"और हैन्सी भी अब हम लोगों को फासिस्ट कहने लगेगा। हमारी मित्रता यहां समाप्त हो गई। किन्तु लैनी, यह मार्क्सवाद के सत्यानाशी प्रभाव का एक और दृष्टान्त है।"

"द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद !"

"यह लोगों के मस्तिष्कों को मोहित कर लेता है। ठीक उस सम्मोहित मुर्गी की भांति जिसे हम लोगों ने उस दिन देखा था। खड़िया मिट्टी से एक रेखा खींच कर उसकी चोंच वहां लगा दी गयी थी और वह वहाँ से किंचित मात्र न हिल सकी थी।"

"यह पार्टी लाइन है।" लैनी ने मुस्करा कर कहा। "पूंजीपति लोग अपनी शक्ति के संरक्षण के लिए लड़ते हैं और श्रमजीवी समाज उनका विरोध करता है। इस संघर्ष से एक नये समाज का निर्माण होता है। कितनी सरल बात है !"

"और इस संघर्ष से एक ऐसे अत्याचारी शासन का भी जन्म होता है जिसकी कल्पना भी इस आधुनिक युग में कठिन है।" लारेल ने उत्तेजित स्वर में कहा।

(६)

लैनी का अनुमान ठीक निकला। "डेली वर्कर" के रविवार वाले अंक में एक पृष्ठ का आधा भाग हैन्सी राबिन को दिया गया। इस लेख में हैन्सी का एक चित्र भी प्रकाशित किया गया था। लेख में यह घोषणा की गयी थी कि अमेरीका का सबसे बड़ा संगीतज्ञ मार्क्स-लेनिन-स्टालिनवादी आदर्श में दीक्षित हो गया है। साथ ही साथ हैन्सी के साथ पत्र-प्रतिनिधि की एक भेंट का वर्णन भी प्रकाशित किया गया था जिसमें उसने यह बताया था कि वर्षों तक नाना प्रकार के संदेहों और भ्रमों के साथ संघर्ष करते रहने के पश्चात वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि हंसिया और हथौड़ा अंकित लाल झंडा ही विश्व शान्ति तथा श्रमजीवी जनता की प्रगति का प्रतीक है। इस लेख के बाद यह घोषणा की गयी थी कि कामरेड हैन्सी राबिन अपनी पत्नी बेस, जो एक अर्से से पार्टी की सदस्या हैं, के साथ कार्नेगी हाल में अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे और इससे प्राप्त होने वाली आय अमेरिका-रूस मत्री संघ को भेंट की जायगी।

लैनी और लारेल ने इस समाचार को पढ़ कर यह निश्चय किया कि अब उन्हें अपने मित्रों की तालिका से हैंसी और बेस के नाम काट देने चाहिए। दोंनों खून का घूंट पीकर रह गये। किन्तु कोई उपाय न था। उन्हों ने अपने शान्ति प्रोग्राम में मन लगाया। लारेल को अपनी बच्ची का पालन पोषण करना पड़ता था। इस लिए वह प्रातःकाल नाश्ता करके कार्यालय चली जाती थी और दोपहर तक घर लौट आती थी। लैनी शान्ति-परिवार के साथ विचार विनिमय करके वक्ताओं को नियुक्त करता था। रेडियो स्टेशन में उन्हे लाने तथा वापस पहुंचाने का उत्तरदायित्व भी उसी पर रहता था। रेडियो पर वक्ताओं का भाषण होने के पूर्व वह उनसे मिल कर प्रतिपाद्य विषय ठीक कर लेता था। इन सब कार्यों के अतिरिक्त दैनिक डाक देखना और उत्तर लिखना तो था ही।

शान्ति परिवार के प्रयत्न कितनी दूर तक सार्थक थे? लैनी और उसके दल का विश्वास था कि उनका कार्य महत्वपूर्ण है। प्रति सप्ताह लाखों व्यक्ति उनके रेडियो प्रोग्राम द्वारा विश्व शान्ति की समस्या पर देश के सबसे अधिक योग्य और सम्मानीय व्यक्तियों के मत मतान्तर सुनने का अवसर प्राप्त करते थे। विश्व-

विद्यालयों के विद्वान प्रोफेसर, राजनीतिज्ञ, लोकप्रिय चिन्तक सभी इस प्रोग्राम में सम्मिलित होकर विश्वशान्ति से सम्बन्धित प्रश्नों पर अपने विचार व्यक्त करते थे। शान्ति- परिवार के पास प्रति दिन देश ही नहीं सारे संसार से सैकड़ों पत्र प्राप्त होते थे और इन पत्रों में भांति-भांति की जिज्ञासाएं की जाती थीं। यह क्रिया-शीलता सार्थक थी क्योंकि इससे संसार में अभिज्ञता फैलती थी और आवश्यकता पड़ने पर आकस्मिक विपत्ति का सामना करने के लिए एक सबल जनमत तैयार हो रहा था

(७)

इधर जोसेफ स्टालिन की योजना पूर्वकल्पित रूप के अनुसार निर्बाध गति से बढ़ रही थी। क्रेमलिन नामक विशाल गढ़ में सुरक्षित वह अपना कार्य मजे में करता जा रहा था। पोलिटब्यूरो के तेरह या चौदह सदस्य उसके आदेशों का अक्षरशः पालन करते हुए अपने आप को कृतकृत्य समझ रहे थे। स्टालिन का जाल सारे संसार पर अत्यन्त द्रुतगति से फैलता जा रहा था। किसलिए? पूंजी-वादी सभ्यता का सर्वनाश करके श्रमजीवी समाज का अभ्युदय सम्पन्न करने के लिए।

युद्ध के समय जब स्टालिन को अपने पूंजीपति मित्रों की सहायता लेने के लिए बाध्य होना पड़ा था तब पार्टी की नीति में कुछ ढिलाई आना अनिवार्य हो गया था। किन्तु युद्ध समाप्त होने के एक या दो मास के अन्दर यह ढिलाई आकस्मिक रूप में समाप्त कर दी गई। फिर से सारे संसार में वर्ग-संघर्ष को पहले की भाँति जोर शोर से चलाने का आदेश जारी हुआ। इसका अर्थ यह था कि उन मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध फिर से क्रियाशीलता शुरू की जाय जिन्होंने हिटलर के तथाकथित राष्ट्रीय समाजवाद के विरुद्ध लड़ने में रूस को सहायता पहुंचाई थी। सारे कम्युनिस्ट देशों में नये "विशुद्धीकरण" होने लगे और इनकी चपेट में वे अभागे व्यक्ति आ गये जिन्होंने मूर्खतावश इस बात पर विश्वास कर लिया था कि युद्ध काल में रूस की परराष्ट्र नीति में जो थोड़ी सी उदारता आयी थी वह भविष्य में भी अक्षुण्ण रहेगी।

अमेरिकावालों ने अपने देश में एक विचित्र प्रकार की स्थिति के दर्शन

किए। वहां कम्युनिस्ट पार्टी का एक पुराना और विश्वासी सेक्रेटरी था जिसका नाम था अर्ल ब्राउडर। फ्रांस की एक साधारण सी कम्युनिस्ट पत्रिका में डक्लोज नामक एक व्यक्ति का एक लेख प्रकाशित हुआ। इसमें यह मत प्रदर्शित किया गया कि ब्राउडर ने मार्क्स-लेनिनवाद के सिद्धांतों तथा श्रमजीवी जनता के हितों के विरुद्ध विश्वासघात किया है। यह लेख फ्रांसीसी पत्रिका से उद्धृत करते हुए अमेरिका में भी प्रकाशित किया गया और देश भर में कम्युनिस्ट लोगों को न जाने किस प्रकार इस बात का पता चल गया कि इसमें क्रेमलिन की गुप्त आवाज बोल रही है। रातोरात "ब्राउडरवाद" एक प्रतिक्रियात्मक चिन्तनधारा के रूप में घोषित कर दिया गया और ब्राउडर को अमरीकी पूंजीवाद का साथी बता कर पार्टी से बहिष्कृत कर दिया गया।

सारे संसार में इसी प्रकार की घटनायें घटीं। शीत-युद्ध तेजी के साथ चलने लगा। गालो गलौज का बाजार गर्म हो गया। पुराने साथी प्रतिक्रियावादी फासिस्ट घोषित कर दिये गये। भाषा जगत में एक प्रकार का भूकम्प सा आ गया। गणतन्त्र अत्याचार हो गया और अत्याचार गणतन्त्र, दासता स्वतंत्रता बन गयी और स्वतन्त्रता दासता। सारे संसार में कम्युनिस्ट लोग इस प्रकार के असत्यों का प्रचार करने में दत्त चित्त हो कर जुट गए। यह कहा गया कि वर्ग-संघर्ष अनिवार्य है और इस लिए प्रत्येक कम्युनिस्ट का यह कर्त्तव्य है कि वह इसे अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करे। और मजे की बात यह थी कि यह सब शान्ति के नाम पर हो रहा था। यदि कोई यह दलील देता कि वर्ग-संघर्ष के निर्णय के पूर्व भी संसार में शान्ति की स्थापना की जा सकती है तो उसे गालियां दी जातीं। प्रत्येक कम्युनिस्ट अपने वर्ग-शत्रुओं से घृणा करना एक पवित्र कर्त्तव्य समझता था; केवल थोड़े से कम्युनिस्ट ऐसे थे जो इन वर्ग-शत्रुओं के प्रति प्रेम का अभिनय करके इनसे वे गुप्त रहस्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे जो उनकी "पितृ भूमि" के काम आ सकते थे।

(८)

शान्ति-परिवार के कार्यालय में एक दिन एक विचित्र घटना घटी। वहां एक लड़की काम करती थी। इसका काम यह था कि दिन भर की डाक में आने

वाले लिफाफों को चाकू से काट कर रख दे। उस दिन प्रातः काल यह लड़की लैनी के पास आयी और बोली "मिस्टर बड, इस लिफाफे पर 'व्यक्तिगत' लिखा हुआ था। किन्तु मेरी नजर इस पर नहीं पड़ी और अन्य लिफाफों के साथ मैंने इसे भी खोल लिया। किन्तु मैंने इसके अन्दर का कागज नहीं निकाला है।"

लैनी ने उदारतापूर्वक मुस्कराते हुए कहा "खैर कोई बात नहीं। शायद इसमें कोई विश्वसनीय पत्र न होगा।" इसके बाद जब लड़की कमरे के बाहर चली गई उसने लिफाफे के अन्दर रखा हुआ कागज निकाला जो कई पर्तों में मुड़ा हुआ था। कागज को फैला कर उसने देखा कि वह एक विचित्र संदेश है। किसी ने समाचार पत्रों के विज्ञापनों से अक्षर काट काट कर छै शब्दों का एक वाक्य बनाकर गोंद से चिपका दिया था। अंग्रेजी के इस वाक्य का अर्थ यह था "बेस रूसी गुप्तचर का कार्य कर रही है।"

पत्र पर किसी के हस्ताक्षर न थे। यद्यपि गुमनाम पत्रों की ओर कोई ध्यान न देना शिष्टता के दृष्टिकोण से एक अच्छी बात है तथापि सब समय इस नियम का पालन नहीं किया जा सकता। यह वाक्य लैनी को बड़ा महत्वपूर्ण लगा क्यों कि पिछले कई मासों से वह भी कुछ इसी प्रकार की बात सोच रहा था। वह जानता था कि बेस बहुधा घर से गायब हो कर अपनी मोटर में दूर दूर चली जाया करती थी। हैन्सी को वह सदा यह स्पष्टीकरण दे देती थी कि उसे पार्टी के काम से जाना पड़ता है। भाषण देना, सभाएं संगठित करना, पार्टी की कमेटी मीटिंग में भाग लेना—न जाने कितने काम उसे करने पड़ते हैं। किन्तु अब लैनी के मन में एक दूसरा ही विचार घूम रहा था। मान लो वह उस गुप्तचर मण्डल में शामिल हो गयी हो जो रूस की ओर से एक विशालकाय जाल की भांति सारे अमेरिका पर फैला दिया गया है। सम्भव है वह भी सामरिक रहस्यों का पता लगाने में, महत्वपूर्ण कागजों के फोटो लेने में, देश के विद्युत शक्ति केन्द्रों, बांधों, पुलों, उद्योगधंधों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने में लगी हुई हो ताकि इस प्रकार प्राप्त होने वाली जानकारी को वह अपनी पितृभूमि में भेज सके। यह असम्भव न था क्यों कि अमेरिका में रूसी राजदूतावास था और वाशिंगटन तथा न्यूयार्क में सैकड़ों गुप्तचरों का एक अच्छा खासा दल तैनात था।

मेक्सिको अथवा स्थानीय बंदरगाह में आने वाले रूसी जहाजों के जरिए भी यह जानकारी पितृभूमि भेजी जा सकती थी।

लैनी ने ध्यानपूर्वक उस लिफाफे का निरीक्षण किया। लिफाफे में कोई विशेषता न थी। वह एक साधारण लिफाफा था– जैसे कि डाकखाने में प्रतिदिन लाखों की संख्या में बिकते हैं। कागज भी किसी साधारण सस्ते पैड से फाड़ा हुआ प्रतीत होता था। अक्षर किसी भी समाचार पत्र के हो सकते थे। लिफाफे पर पता भी बड़े बड़े अक्षरों में एक रूलर तथा पेन्सिल की सहायता से लिखा गया था जिसके फलस्वरूप लिखावट में कोई विशेषत्व न रहने पाया था। केवल लिफाफे के कोने पर "व्यक्तिगत" शब्द हाथ से लिखा गया था। लिफाफे पर केवल एक ही सूराग था—"एन" अक्षर एक विदेशी ढंग से लिखा गया था। यह स्पष्ट था कि लिखने वाला एक विदेशी है और यह स्पष्ट था कि वह एक भीतु व्यक्ति है जो अपना कोई चिन्ह नहीं देना चाहता। लिफाफा न्यूयार्क के बड़े डाकखाने में डाला गया था और इसलिए लिखने वाले के निवास स्थान का कोई पता सूराग मिलना कठिन था।

लैनी ने मन ही मन उन व्यक्तियों के नाम सोचना शुरू किया जो बेस से परिचित थे। सम्भव है यह व्यक्ति उसके घर का कोई नौकर हो; सम्भव है यह उसके दल का ही कोई व्यक्ति हो जो किसी कारणवश उससे घृणा अथवा ईर्ष्या करता हो। किन्तु इतना अवश्य स्पष्ट था कि यह व्यक्ति कोई सरकारी जासूस न था क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह यह भेद अधिकारियों के पास भेजने में क्षण मात्र विलम्ब न करता; गुमनाम पत्र लिखने न बैठता।

लैनी लारेल के कार्यालय में गया। वहां उसके सेकरेटरी को हटा कर उसने पत्र लारेल के हाथ में दे दिया। उसने देखा कि उसे पढ़ते समय लारेल के चेहरे पर आतंक का भाव स्पष्ट रूप में अंकित हो उठा। उसके मुंह से सर्वप्रथम यही शब्द निकले, "ओह! अभागा हैन्सी! क्या तुम समझते हो कि उसे इसकी जानकारी है?"

"मुझे संदेह है।" लैनी ने कहा। "किन्तु यदि वह पार्टी के साथ बना रहा तो उसे शीघ्र ही इसकी खबर मिल जाएगी।"

उसने लारेल का ध्यान लिफाफे की उन विशेषताओं की ओर आकर्षित किया जो कि उसने देखी थीं।

"सम्भव है यह बात सच न हो।" लारेल ने कहा।

"हो सकता है, किन्तु हमें तहकीकात तो करनी ही पड़ेगी।" लैनी ने उत्तर दिया।

"तुम क्या करोगे इसका?"

"मुझे इसे फेडरल ब्यूरो आफ इनवेस्टीगेशन तक ले जाना होगा।"

"लैनी, यह कितनी भयानक बात है! तुम यह कर सकोगे?"

"बेस ने स्वयं मुझे यह अधिकार दिया है। वह स्वयं कहा करती थी कि आदर्श के सामने व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं। लारेल, हमारे सामने भी एक आदर्श है।"

"किन्तु यदि यह बात सच न निकली?"

"तो बेस का कोई अहित न होगा। एडगर हूवर के आदमी जबर्दस्ती दोषारोपण करने के आदी नहीं हैं। यदि बेस ने कोई अपराध न किया होगा तो उसे कोई भय नहीं।"

"लैनी, तुम्हारे पिता को इससे गहरा सदमा पहुंचेगा।"

"मैं जानता हूँ। किन्तु वे इस धक्के को भी सम्हाल लेंगे।"

"किन्तु तुम्हें उनसे परामर्श ले लेना चाहिये। तुम यह पत्र पहले उन्हें दिखा दो।"

"अच्छी बात है। मैं ऐसा ही करूंगा।"

इसके बाद उन्होंने और वाद-विवाद करके समय नष्ट करना उचित न समझा। लैनी ने टेलीफोन पर न्यूकैसेल में अपने पिता की लाइन जुड़ाई। किन्तु वहां से रोबी बड के सेक्रेटरी ने बताया कि वे इस समय न्यूयार्क में ही हैं। लैनी ने उतावली के साथ कहा, "मुझे उनसे एक अत्यावश्यक प्रश्न पर परामर्श करना है। कृपया जिस प्रकार भी हो उनका पता लगाकर उन्हें सूचित कीजिये कि वे मुझे शीघ्र से शीघ्र बुला लें।"

(९)

शीघ्र ही रोबी बड का टेलीफोन आ गया। वे अपने न्यूयार्क कार्यालय से

बोल रहे थे। लैनी ने उनसे कहा कि उसे एक अत्यावश्यक प्रश्न पर उनके साथ विचार विनिमय करना है और वह शीघ्र ही उनके पास आ रहा है।

लैनी तुरन्त अपनी गाड़ी पर बैठकर रवाना हो गया। सारे रास्ते वह बेस के सम्बन्ध में विचार करता रहा। बार बार उसके मन में उस भोली भाली मधुर बच्ची की मूर्त्ति उभर आती थी जिसे उसने वर्षों पूर्व देखा था और देख कर मुग्ध रह गया था। उसे याद आया कि उस समय वह अपनी माता के साथ भ्रमण करने निकली थी। एमली चैटर्सवर्थ के घर पर हैन्सी का संगीत सुनकर वह मुग्ध हो गयी थी। इसके बाद नवोदित प्रेम के मादक प्रवाह में बहती हुई वह हैन्सी के साथ घर बसाने के लिये चली गयी थी। और आज उस पर कैसा भयानक संकट छा गया है!

लैनी को न जाने क्यों इस बात का विश्वास होता जा रहा था कि वह अपराधिनी है। उसे इस बात में कोई संदेह न था कि बेस के लिये यह सब सम्भव है। वह अपनी गाड़ी में बैठकर दूर दूर के औद्योगिक अंचलों तक जाकर उनके फोटो उतार कर लाती रही होगी और इन फोटो-फिल्मों को न्यूयार्क में जे० पीटर्स अथवा अन्य किसी सोवियत एजेण्ट के हवाले करती रही होगी। उसके विरुद्ध कार्यवाही करने में लैनी का मन राजी न हो रहा था। किन्तु उसका कर्त्तव्य-बोध इस भावुकता पर कठोर अंकुश का सा कार्य कर रहा था। बेस ने स्वयं उसे कहा था कि आदर्श ही सब कुछ है और व्यक्ति कुछ नहीं—और उसका आदर्श भी उतना ही उच्च था जितना कि बेस का।

अपने पिता के कार्यालय में पहुंच कर लैनी ने वह लिफाफा उनके हाथ में रख दिया। पिता ने उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा; उनके चेहरे पर गहरे दुख की रेखाएं उभर आईं। किन्तु संयत स्वर में ही उन्होंने प्रश्न किया; "इस सम्बन्ध में तुम और कुछ जानते हो?"

"कुछ भी नहीं।" लैनी ने कहा।

"अब तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं आपके पास यही जानने के लिये आया हूं। जहां तक मैं समझता हूँ मेरा कर्तव्य है कि इस लिफाफे को एफ० बी० आई के पास पहुँचा दूं।"

पिता रोबी बड की प्रतिक्रिया लैनी की आशा के अनुकूल ही हुई। उन्होंने संयत स्वर से कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक हो। तुम्हें यही करना चाहिये।"

"सम्भव है इसके फलस्वरूप कुटुम्ब की बदनामी हो।" लैनी ने चेतावनी दी।

"जो भी होगा हम झेल लेंगे। बेस के उद्धार की कोई आशा नहीं। और मेरा उसके प्रति जो दृष्टिकोण है उसे सभी जानते हैं। लारेल को तुमने इसकी खबर दी?"

"हां। वह भी मेरे साथ सहमत है। मै किसी अन्य व्यक्ति को इसकी सूचना न दूंगा; दबे स्वर से भी इसकी चर्चा न करूंगा। सम्भव है बेस पर यह अभियोग प्रमाणित न हो सके। ऐसी अवस्था में एस्थर को व्यर्थ ही चिन्ता क्यों करने दी जाय।"

"ठीक है।" रोबी बड ने अपनी सहमति जनाते हुए कहा। "मैं समझता हूं तुम्हें एफ बी० आई के अधिकारी मिस्टर पोस्ट से यह आश्वासन ले लेना चाहिये कि जब तक बेस के अपराध के सम्बन्ध में कोई ठोस प्रमाण न मिल जाय इस मामले का प्रचार न किया जाय।"

"वे अवश्य ही मुझे यह आश्वासन दे देंगे। उन्हें समाचार पत्रों में भव्य शीर्षकों के प्रति विशेष आकर्षण नहीं है।"

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि हैन्सी को इस सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी है।" वृद्ध रोबी ने कहा। उन्हें हैन्सी के कम्युनिस्ट हो जाने की बात मालूम हो चुकी थी।

"मुझे भी संदेह है। किन्तु इस सम्बन्ध में अधिक अभिज्ञता प्राप्त करना मेरे लिये सम्भव नहीं है। आजकल न हैन्सी के साथ मेरी मुलाकात होती है न बेस के साथ।"

अन्त में वृद्ध पिता अपने हृदय के लम्बे क्षोभ को दबा न सके। वे बोल उठे, "लैनी, तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि बेस का दिमाग खराब करने में

तुम्हारा भी बहुत बड़ा हाथ रहा है। तुम्हीं ने उसके दिमाग में ये समाजवादी विचार भरे थे।"

"इस सम्बन्ध में हम लोग काफी तर्क कर सकते हैं।" पुत्र ने उत्तर दिया। "यदि बेस ने मेरी बातों का गलत अर्थ लगाया और मेरे विचारों का अनुचित प्रयोग किया तो इसके लिये मैं दोषी नहीं।" किन्तु अचानक उसे स्मरण हो आया कि उसके पिता तर्क शुरू कर देते हैं तो एक लम्बे समय तक उस पर अड़े रहते हैं। इसलिये बात को समाप्त करने के उद्देश्य से उसने शीघ्रतापूर्वक कहा, "मैं फिर कभी आकर इस सम्बन्ध में आपसे बात करूंगा। अभी तो मुझे यह पत्र एफ० बी० आई के पास ले जाना है। मैं टेलीफोन पर आपको बता दूंगा कि एफ बी० आई में क्या प्रतिक्रिया हुई। हां, बेस के लिए एक छद्म नाम आवश्यक है—इसाबेला ठीक रहेगा।"

इस दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति में भी लैनी का विनोद नष्ट न हुआ था। क्रिस्टाफर कोलम्बस, फर्डीनेण्ड और अब इसाबेला !

(१०)

फेडरल ब्यूरो आफ इनवेस्टीगेशन से लैनी अपरिचित न था। जब हिटलर के साथ ब्रिटेन का युद्ध चल रहा था और अमेरिका तटस्थ था तब न्यूयार्क के एक होटल में लैनी को हिटलर का एक एजेण्ट दिखाई दे गया था। यह व्यक्ति था तो अंगरेज किन्तु वह अपने देश के प्रति विश्वासघात करके हिटलर की ओर चला गया था। इस व्यक्ति का ध्यान फंसाये रखने का कार्य अपनी पत्नी को सौंप कर लैनी ने बाहर जाकर एफ बी० आई को टेलीफोन कर दिया था। परिणाम यह हुआ था कि अमेरिका से औद्योगिक हीरों का चौरानयन करनेवालों का एक बहुत बड़ा दल पकड़ में आ गया था। इसलिये लैनी को विश्वास था कि एफ०बी०आई० में न्यूयार्क क्षेत्र के अधिकारी मिस्टर विल्बर सी० पोस्ट उससे दुबारा मिलकर प्रसन्न होंगे।

लैनी सड़क पर धीरे-धीरे चहलकदमी की चाल से चल रहा था। उसके आस पास से लोग आ जा रहे थे। लैनी यह चाहता था कि उसका कोई परिचित उसे

इस इमारत में प्रवेश करते हुए न देखे। किन्तु दैवयोग से लैनी जब इमारत से लगभग तीस फीट की दूरी पर रह गया उसने देखा कि एक काली मोटर गाड़ी आकर सदर फाटक के सामनेवाली खाली जगह पर रुकी और उससे एक स्थूलकाय व्यक्ति निकला। इस व्यक्ति का चेहरा-मोहरा आयरिश ढंग का था—गोल माथा और चौड़ा मुंह। लैनी को इस बात में किंचित मात्र संदेह न था कि उसे इस व्यक्ति से ही मिलना है।

और इसके बाद गाड़ी से एक दूसरा व्यक्ति निकला और उसे देखते ही आश्चर्य के कारण लैनी की सांस रुक सी गयी। अपने आप को एक झटके के साथ सम्हाल कर वह तुरन्त घूम पड़ा मानों पास की दूकान की खिड़की पर उसे कोई अत्यन्त मनोरञ्जक वस्तु दिखायी पड़ गयी हो। वहां पर खड़े खड़े वह अपनी एक आँख के कोने से इन दोनों व्यक्तियों को ताकता रहा और ज्यों ही वे फाटक के अन्दर घुसे त्यों ही वह भी दौड़कर उनकी नजर बचाते हुए भीतर दाखिल हो गया। दोनों व्यक्ति बरामदा पार करके एलीवेटर के पास पहुँचे और ज्यों ही उसके भीतर घुसे त्यों ही लैनी भी फुर्ती के साथ आकर अन्दर खड़ा हो गया।

एलीवेटर के छोटे से कटघरे के अन्दर तीनों व्यक्ति खड़े थे। लैनी ने अपना सिर झुकाकर आंखें मूंद लीं मानों वह कोई प्रार्थना कर रहा हो। वह यह न चाहता था कि अभी उसका परिचय खुले। इसलिये वह इस मुद्रा में तब तक चुप चाप खड़ा रहा जब तक कि एलीवेटर अपने गंतव्य स्थानपर पहुंच न गया और दोनों व्यक्ति बाहर न निकल गए। लैनी भी इनके पीछे निकलकर चुपचाप चलने लगा। गलियारे से गुजरते समय अवसर पाकर वह पोस्ट के बगल में आ गया और उसके कान के पास अपना मुंह ले जाकर धीमे स्वर में बोला, "अभी कुछ मत कहिएगा। पहले अपने कार्यालय में पहुंच जाइये।"

कार्यालय के अन्दर पहुंचकर लैनी का मुंह खुला। उसने पोस्ट से कहा, "मैं आशा करता हूं कि आप मुझे जानते होंगे, मिस्टर पोस्ट। मैं हूं लैनी बड।"

"मैं आपको पहचानता हूँ, मिस्टर बड।" पोस्ट ने कहा।

इसके बाद लैनी ने दूसरे व्यक्ति की ओर घूमकर मुस्कराते हुए कहा, "क्यों हैन्सी!" उसने अपना दाहिना हाथ हैन्सी के कंधे पर डालकर उसे हिलाते हुए कहा,

"तुम पुराने चंडूल हो हैन्सी। तुमने मुझे बड़ा बेबकूफ बनाया। मेरा तो दिल ही टूट गया था।"

(११)

सचमुच जब हैन्सी ने लैनी को अपने कम्युनिस्ट हो जाने का निश्चय सुनाया था तब वह विस्मय से अभिभूत हो गया था। अब हैन्सी को यहाँ देखकर उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा और उसकी आंखें जलाद्र हो उठीं। उसे ऐसा लगा मानो हैन्सी का पुनर्जीवन हुआ हो।

अपने आप को संयत करते हुए लैनी ने पोस्ट से कहा, "आपको यह सब देखकर आश्चर्य हो रहा होगा। किन्तु यदि आप इस लिफाफे को देखेंगे तो आपको सब कुछ मालूम हो जायगा। यह मुझे आज सवेरे की डाक से मिला था।"

उसने लिफाफा अपनी जेब से निकाल कर पोस्ट की ओर बढ़ा दिया। पोस्ट ने उसे ध्यानपूर्वक देखा। एक दृष्टि में ही सारा मर्म उसकी समझ में आ गया।

"अच्छा, वह बात है!" उसने कहा।

"शायद आप जानते हों, हैन्सी मेरा साला है।" लैनी ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया।

"हां, उन्होंने मुझे यह बात बता दी है।"

"मैं आपसे मिलने के लिये आ रहा था कि अचानक मेरी दृष्टि आप दोनों पर पड़ गयी। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझ पर पूर्ण विश्वास रखें। मैं स्वयं गुप्त छानबीन का कार्य कर चुका हूं और इससे सम्बन्धित सारी बातें जानता हूं। मेरा अनुमान है कि हैन्सी को भी इसी प्रकार का एक लिफाफा मिला होगा।'

अनुभवी पोस्ट ने इसका कोई उत्तर न दिया। उसने इतना ही पूछा, "क्या आप इस लिफाफे के भेजनेवाले के सम्बन्ध में कोई अनुमान लगा सकते हैं?"

"कुछ भी नहीं।" लैनी ने कहा। "मेरा विश्वास है आपने "एन" अक्षर वाली भूल को लक्ष्य पर लिया होगा—वह भूल चार बार हुई है। रूसी लोग "एन" अक्षर इसी प्रकार लिखते हैं। शायद यह संकेत आप के लिये कुछ उपयोगी हो।"

इसके बाद कुछ और बातचीत हुई। लैनी ने पोस्ट से यह आश्वासन ले लिया कि जब तक कोई ठोस प्रमाण न मिल जाय वह इस मामले को गुप्त रखेगा।

"मुझे तो इस घटना से बड़ा ही आश्चर्य हुआ है। हैन्सी ने उस दिन मेरे साथ ऐसा सच्चा अभिनय किया था कि मुझे सोलहो आने यह विश्वास हो गया था कि वह कम्युनिस्ट हो गया है। मेरी पत्नी को भी गहरा सदमा पहुँचा था। मैं समझता हूँ हैन्सी यहां कैदी के रूप में नहीं आया है।" लैनी ने यह कहते हुए ऐसी मुस्कराहट फेंकी जो उसी के लिये सम्भव थी।

"नहीं, वे कैदी के रूप में नहीं आए हैं।" पोस्ट ने आश्वासन दिया।

(१२)

उस दिन संध्या के समय जब लैनी एडगरमीयर में अपने घर की ओर चला तब उसका चित्त बड़ा हल्का था। उसने अपनी पत्नी को सारा वृत्तान्त बताया तो वह आनन्द के मारे रो पड़ी! "ओह लैनी, कैसे आश्चर्य की बात है!...भगवान को कोटि कोटि धन्यवाद! लैनी यह बात मेरे मन पर एक बोझ बन गयी थी। मैं समझ न पा रही थी कि आखिर हैन्सी को क्या हो गया है!" उसने अपने आंसुओं को पोछते हुए कहा।

लैनी ने लारेल को चेतावनी दी कि हैन्सी से मिलने का कोई प्रयत्न न करे। पोस्ट ने इस ओर सतर्क रहने का आदेश दे दिया था। उसने लैनी को हैन्सी के साथ अधिक बातें करने का समय भी न दिया था। लैनी केवल इतना ही जान सका था कि हैन्सी को कुछ समय पूर्व एक गुमनाम पत्र मिला था। यह पत्र पढ़कर हैन्सी अपनी पत्नी पर कड़ी दृष्टि रखने लगा था। सूने में वह उसके मेज के दराजों की तलाशी लेता था, छिप कर टेलीफोन पर होनेवाली वार्त्ताएं सुनता रहता था और हर प्रकार से सतर्क रहने का प्रयत्न करता था। उसके हाथों में कई ऐसे पत्र आ गए थे जिनसे उसकी यह धारणा बद्धमूल हो गयी थी कि बेस के विरुद्ध यह अभियोग आधाररहित नहीं है। इसके बाद उसके मन में भी वैसा ही अन्तर्द्वन्द्व उठा था जैसा कि लैनी और लारेल के मन में उठा था और वह भी इसी निश्चय पर पहुँचा था कि एफ० आई० बी० को इस बात की जानकारी

दे देना उसका कर्तव्य है। इस निश्चय के तारतम्य में ही उसकी योजना प्रस्फुटित हुई थी—वह कम्युनिस्ट बना था, पार्टी की सदस्यता स्वीकार की थी। किन्तु वस्तुतः वह सरकार का अंतनिक गुप्तचर ही बना था! अब उसका भी एक छद्म नाम हो गया था—एबसलम।

लैनी के आसपास मुसीबतों का जाल फैलता जा रहा था। समस्याओं का विस्तार अनन्त सा प्रतीत होने लगा था।

अध्याय ६

● विपत्ति का उपयोग ●

(१)

रेडियो पर भाषण देने के लिए इस बार प्रोफेसर चार्ल्स टी० आल्सटन आए। ये एक वयोवृद्ध सज्जन थे। प्रथम महायुद्ध के उपरान्त पेरिस के शान्ति सम्मेलन के अवसर पर आप ही लैनी के गुरु और शिक्षक थे तथा आपही से लैनी ने विश्व राजनीति के सम्बन्ध में अपनी प्रथम अभिज्ञता प्राप्त की थी। अब आप विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य कर रहे थे और चौथाई शताब्दी के लम्बे समय के उपरान्त भी आप के विचारों में कोई आधारभूत अन्तर न आया था। आप एक दुबले पतले व्यक्ति थे और छोटी सी दाढ़ी रखते थे। लैनी को वे अपने प्रथम शिष्य के रूप में मानते थे और यदा कदा उसे अपना परामर्श देते रहते थे। आप ही ने प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट के साथ लैनी का परिचय कराया था और आठ वर्ष बाद प्रेसीडेन्ट ट्रूमन के साथ।

प्रोफेसर आल्सटन मानवतावादी दृष्टिकोण के व्यक्ति थे। आप का कहना था कि इस समय योरोप जिस प्रकार की संकटकालीन स्थिति का अनुभव कर रहा है वैसी चौदहवीं शताब्दी में तैमूरलङ्ग के सैनिकों द्वारा योरोप पर आक्रमण के समय उत्पन्न हुई थी या पांचवीं शताब्दी में हूणों द्वारा फ्रांस पर आक्रमण के समय। आपका विश्वास था कि इस समय मनुष्य के मस्तिष्क और मन को बन्दी बनाने के लिए जिस प्रकार का भयानक जाल फैलाया गया है वैसा इसके पूर्व कभी नहीं देखा गया। मानव समाज का इतने सामूहिक रूप में अधः पतन भी पहली बार ही दिखाई दे रहा है। आप का कहना था कि युद्ध-काल में थके हुए बुभुक्ष मजदूरों को इस पृथ्वी पर एक स्वर्ग का प्रलोभन दिया गया था किन्तु उन्हें दिया गया निर्दयता और विश्वासघात का जीता जागता नर्क! प्रोफेसर इस सम्बन्ध में पूर्णतया सुनिश्चित थे कि क्रेमलिन के शासक पूर्णतया

हृदयहीन और सिद्धांतशून्य व्यक्ति हैं और वे ऊपर से जिन आदर्शों का प्रतिपादन करते हैं उन पर वस्तुतः उन्हें स्वयं विश्वास नहीं है। वे अन्तर्राष्ट्रीयता की बात करते हैं किन्तु वस्तुतः वे रूसियों के अतिरिक्त अन्य किसी पर विश्वास नहीं करते। वे जिन जिन देशों पर अधिकार प्राप्त कर लेते हैं उन्हें खुल कर लूटते हैं। और अपनी शक्ति को येन केन प्रकारेण अक्षुण्ण रखने के अतिरिक्त उनके सामने और कोई आदर्श नहीं है। नाना प्रकार के छल प्रपंच द्वारा वे अपनी इस शक्ति का विस्तार करते जा रहे हैं। अरबों के सम्मुख वे मुसलमान बन जाते हैं; पूर्वी एशिया वालों के सम्मुख वे बौद्ध बन जाते हैं और शान्तिवादियों के सम्मुख शान्तिवादी बन जाते हैं।

प्रोफेसर आल्सटन कह रहे थे: "इटली और फ्रांस के मजदूरों को उन्होंने अपनी ओर मोड़ लिया है और वे अब उनके गीत गा रहे हैं। अमेरिका को भी उन्होंने शोरगुल मचाकर निरस्त्र करवा लिया है। अब कौन इस नयी रिपब्लिकन कांग्रेस से यह स्वीकृति प्राप्त कर सकता है कि करोड़ों डालर खर्च करके अमेरिका को फिर से सशस्त्र किया जाय? अब कौन फिर से अमरीकी युवकों को एक नया युद्ध लड़ने के लिए तैयार करके एक करोड़ व्यक्तियों की सेना खड़ी कर सकता है?"

प्रोफेसर ने लैनी से प्रश्न किया कि क्या वे इस प्रकार के प्रश्न अपने रेडियो भाषण के तारतम्य में उठावें?

लारेल उत्तेजित हो उठी और इस प्रसूतिकाल में उसका उत्तेजित होना ठीक न समझा जाता था। फिर भी उसने प्रोफेसर से आग्रह किया, "मान लेती हूँ कि कम्युनिस्ट नेताओं के सम्बन्ध में आप के विचार ही ठीक हैं और उनकी नीतियां उनके सिद्धांतों की भांति ही कठोर हैं किन्तु क्या उनका सामना करने के लिए हमारे पास और कोई उपाय नहीं है? वे श्रमजीवियों को असत्य भाषण द्वारा अपनी ओर फोड़ रहे हैं। हम सत्य को प्रकाश में लाकर उन्हें अपनी ओर ला सकते हैं।'

"किन्तु श्रीमती बड, क्रेमलिन के लोगों के सामने सत्य का क्या मूल्य है? मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ, उन्होंने हिटलर के सिद्धांत को अक्षरशः

अपना लिया है : असत्य जितना ही विराट होता है उतना ही विश्वसनीय प्रतीत होता है। वे लोग असत्य भाषण की कला में बड़े पटु हैं और विजित देशों में उनका विशालकाय प्रचार-यन्त्र निर्बाध गति से घूम रहा है। दूसरी ओर हमारे देश में समाचार प्रकाशन का व्यापार पूर्णतया व्यक्तिगत उद्योग के हाथों में रखने की परम्परा है और व्यक्तिगत उद्योग उसी प्रकार की जानकारी जनता को देता है जो उसे रुचिकर होती है। बिक्री बढ़ाने के लिए यह आवश्यक होता है क्यों कि बिक्री बढ़ने पर ही उसे विज्ञापन प्राप्त होते हैं।"

"हां, प्रोफेसर आल्सटन। हम लोग इस बात को समझते हैं और इसी लिए तो हमने इस शान्ति-परिवार की स्थापना की है ताकि जनता को सच्ची जानकारी दे सकें—वह जानकारी जो उसे पूंजीपति प्रेस से नहीं मिल सकती।"

"किन्तु आप लोग तो जनता को निरस्त्रीकरण का संदेश सुना रहे हैं। मैं आपको यह समझाना चाहता हूँ कि इस समय सशस्त्रीकरण ही हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।"

इस पर एक तर्क छिड़ गया। शान्ति-परिवार का मुख्य उद्देश्य क्या है? क्या उसका उद्देश्य अमेरिका का निरस्त्रीकरण है? अथवा इस शर्त पर शस्त्रीकरण कि शस्त्रों का कोई उपयोग न किया जाय? यदि शस्त्रों का उपयोग वर्जित हो गया तो फिर उनसे लाभ ही क्या है? शस्त्र अपने आप नहीं चल सकते। उनकी सार्थकता इसी बात में है कि वे ऐसे दृढ़प्रतिज्ञ लोगों के हाथों में रहें जो आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग करने के लिए कटिबद्ध हों।

रिक ने कहा, "स्विस लोगों को देखो। वे लोग अपने पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं। हर व्यक्ति के पास एक बन्दूक रहती है और वह उसके प्रयोग से भली भाँति अवगत रहता है। वे लोग अस्त्र शस्त्रों से भली भाँति लैस रहते हैं। किन्तु वे कहते हैं कि हमारे अस्त्र शस्त्र सुरक्षा के लिए हैं। कोई हमें न छेड़े तो हम भी किसी को न छेड़ेंगे। किन्तु यदि कोई हमारी सीमाओं का अतिक्रमण करेगा तो फिर उसकी खैर नहीं। इस दृष्टिकोण का परिणाम यह हुआ कि स्विस लोग दो महायुद्धों से बेदाग निकल आए। उनकी स्वाधीनता पर आँच न आने पायी।"

लैनी ने कहा "यह ठीक है। स्विस लोग एक पार्वत्य प्रदेश में रहते हैं और बड़े परिश्रम तथा मितव्ययिता द्वारा अपना निर्वाह कर लेते हैं। किन्तु हमारा देश बहुत बड़ा है और उसके समुद्री तट का भी विस्तार भी कुछ कम नहीं है। क्या हम लोग भी स्विटजरलैंड के निवासियों की भाँति यह कह सकते हैं कि हमें न छेड़ो तो हम भी किसी को न छेड़ेंगे और शेष संसार में कुछ भी क्यों न होता रहे हम कोई दिलचस्पी न लेंगे? कैनाडा और मेक्सिको के सम्बन्ध में अथवा पनामा नहर के सम्बन्ध में ही क्या हम ऐसा तटस्थ दृष्टिकोण ले सकते हैं?"

आल्सटन ने कहा "मैंने वाशिङ्गटन में लेफ्टीनेन्ट जेनरल हौज से सुना था कि उत्तरी कोरिया में कम्युनिस्ट लोग पाँच लाख सैनिकों की एक विशाल सेना खड़ी कर रहे हैं। और इधर हम लोगों ने दक्षिणी कोरिया से अपनी सेनाएं हटा ली हैं। हमने दक्षिणी कोरिया के पास केवल इतने ही अस्त्र शस्त्र छोड़े हैं जिनसे वह किसी प्रकार अपनी रक्षा कर सकता है। रूस का मजदूर जितना वेतन पाता है वह मुश्किल से जीवन निर्वाह के लिए पूरा पड़ता है। एक मास के वेतन से वह एक जोड़ा जूता भी नहीं खरीद सकता। किन्तु ट्रांस साइबेरियन रेलवे अस्त्र शस्त्रों से खचाखच भरी रहती है। उत्तरी कोरिया को टैंकें, बन्दूकें, तेल तथा अन्य सामरिक सामग्री निर्बाध गति से भेजी जा रही है। इसके बाद कदाचित एक दिन अचानक सीमान्त क्षेत्र पर किसी न किसी उपाय से झगड़े का सूत्रपात कर दिया जायगा। उत्तरी कोरिया की ओर से यह घोषणा कर दी जायगी कि दक्षिणी कोरिया की पूंजीपति सरकार ने श्रमजीवी जनता के गणतंत्र पर बलात आक्रमण कर दिया है और वह अपनी सुरक्षा के लिए वीरता पूर्वक लड़ने के लिए बाध्य हो गया है। महीने दो महीने में लाल सेनाएं सारे कोरिया को हड़प जाएंगी। इसके बाद साल दो साल तक फिर तैयारी होती रहेगी और फिर जापान की बारी आ जायेगी। आप को मालूम होना चाहिए कि युद्धकाल में दो तीन लाख जापानी कैदियों को कम्युनिज्म की दीक्षा दी जा चुकी है और ये अवसर की ताक में तयार बैठे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कम्युनिस्ट लोग सारे एशिया और सारे योरोप को हड़प जाने के लिए तैयार बैठे हैं। मैं आपसे पूछता हूँ कि अमरीकी लोगों की आंखें कब खुलेंगी?"

"आप क्या चाहते हैं ?" लारेल ने प्रश्न किया। "क्या आप दक्षिणी कोरिया को एक विशाल अमरीकी सेना भेजना चाहते हैं ?"

"पहले तो मैं चाहूंगा कि मेरा देश सशस्त्रीकरण शुरू कर दे। उसके बाद मैं जर्मनी आस्ट्रिया, ग्रीस, तुर्की, एशिया माइनर, हिमालय पर्वत माला और कोरिया की ३८ वीं सीमान्त को छूती हुई एक रेखा खींच दूंगा और रुसियों से स्पष्ट रूप में कह दूंगा—सावधान ! इस रेखा के पार एक कदम भी उठाया तो क्रेमलिन पर अणु-बम टूट पड़ेगा ! मैं अपने इस निश्चय को इस प्रकार स्पष्ट रूप में व्यक्त कर दूंगा कि मिस्टर विशिन्स्की तक को विश्वास हो जायगा कि यह कोरी धमकी नहीं है।"

(२)

अन्त में यह तय हुआ कि प्रोफेसर आल्सटन रेडियो-भाषण में अपने विचार स्वतन्त्र रूप में व्यक्त करें और बाद में लारेल अपने भाषण में यह बात और जोड़ दें कि अमेरिका को अस्त्र शस्त्रों के अतिरिक्त विचारों के अस्त्र का प्रयोग भी करना चाहिए। कांग्रेस को इस प्रचार-कार्य के लिए लाखों के स्थान पर अब करोड़ों डालरों की स्वीकृति देनी चाहिये।

लारेल ने अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कहा, "हमें संसार के लोगों को बताना चाहिये कि स्वतन्त्र चुनाव क्या चीज है और अमेरिका में इसकी व्यवस्था किस प्रकार होती है और ब्रिटेन स्कैण्डीनेविया तथा स्विटजरलैण्ड के लोग नागरिक अधिकारों का उपभोग किस प्रकार करते हैं। हमें लोगों को यह बताना चाहिए कि सत्य की रक्षा के लिए भाषण की स्वतंत्रता और गणतांत्रिक व्यवस्था अनिवार्य हैं।"

प्रोफेसर अल्सटन का रेडियो भाषण आशा के अनुरूप बड़ा प्रभावोत्पादक हुआ। उन्होंने अपने श्रोताओं के स्मृतिपट पर यह बात भली भांति अंकित कर दी कि रूसी लोगों ने पश्चिमी संसार के बहुत से वैज्ञानिक रहस्य ही नहीं वैज्ञानिक भी चुरा लिये हैं और वे दो तीन वर्षों के अन्दर ही अपना अणु बम तैयार कर लेंगे। वे इस अणु बम का प्रयोग करने में हमारी भांति हिचकेंगे नहीं। और तब, शान्ति-परिवार के मित्रों, तब क्या होगा ?

"अभी हमें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि उनके बम किस तेजी के साथ बन रहे हैं। किन्तु मान लीजिये पांच छै वर्षों में उनके पास सौ अणु बम हो जायं और हमारे पास एक हजार। तब भी उनकी स्थिति हमारी तुलना में अधिक सुविधाजनक रहेगी। उन लोगों की एक सबल पार्टी हमारे देश में है किन्तु हमारी कोई पार्टी उनके देश में नहीं है। हम लोग उनके देश के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते जब कि वे हमारे देश के सम्बन्ध में सब कुछ जानते हैं। उन्होंने हमारे देश में अपने जासूसों का विशालकाय जाल फैला रखा है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे अन्दर पुण्यापुण्य विवेक है जब कि वे इससे पूर्णतया रहित हैं। वे गणित के नियमों के अनुसार अपनी गणना करेंगे और अपने अणुबमों द्वारा हमें नष्ट-भ्रष्ट करने में किंचित मात्र न हिचकेंगे। अणुबम व्यापारिक जहाजों अथवा सब-मैरीनों द्वारा लाए जा सकते हैं और बन्दरगाहों पर इनका प्रयोग अत्यन्त भयानक रूप में किया जा सकता है। या किसी रात को सौ बमबाज वायुयान उत्तरी रूस के किसी अड्डे से रवाना होकर देखते ही देखते न्यूयार्क, वाशिन्गटन, डेट्रायट, शिकागो, सीटल, हैनफोर्ड, वाशिन्गटन, ओकरिज और टेनेसी का काम तमाम कर सकते हैं।

मैं जब लोगों से इस सम्भावना की चर्चा करता हूँ तब वे तुरन्त उत्तर देते हैं कि हम लोग भी अपने बमों द्वारा रूस के उद्योग धंधे नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। प्रतिकार की यह बात ठीक है। किन्तु इसका परिणाम क्या होगा? कारखानों, तेलकूपों, यातायात के साधनों और सभ्यता के अन्य स्रोतों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाय तो हम लोग फिर से प्रागैतिहासिक युग में पहुंच जायेंगे और फलस्वरूप युद्ध-कला भी उसी स्तर पर पहुंच जाएगी। फिर से ऐसी स्थिति आ जाएगी कि युद्ध तलवारों भालों, तीर कमानों आदि से लड़े जाने लगेंगे। इस प्रकार के युद्धों में सैनिकों की संख्या ही मुख्य प्रश्न रहेगी। इसकी रूस में कोई कमी नहीं है। फिर एक बात और भी है। अणु-बमों द्वारा बंदरगाह आदि नष्ट हो जाने के कारण रूसियों से लड़ने के लिए हम योरोप जा भी कैसे सकेंगे? धीरे धीरे कम्युनिस्ट लोग सारे योरोप और एशिया पर अपना आधिपत्य जमा लेंगे। यह युद्ध सम्भव है एक शताब्दी तक चलता रहे। यह भी सम्भव है कि वह एक स्थायी वस्तु हो

जाय क्योंकि उस समय मनुष्य एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाएगा जब एक दूसरे का विश्वास करना एकदम असम्भव हो जायगा।"

रेडियो भाषण समाप्त होने के उपरान्त लारेल ने कहा। "आप बड़े निराशवादी व्यक्ति हैं, प्रोफेसर!"

"मैं वस्तुस्थिति को उसके वास्तविक रूप में पेश करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यह ठीक है कि इस समय व्यक्तिगत उद्योग की परम्परा अर्थात् व्यक्तिगत मुनाफे के लिए उत्पादन की परम्परा टूट रही है—वह अब चल नहीं सकती। हमें इसके स्थान पर एक समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करनी पड़ेगी। यदि हम व्यक्तिगत उद्योग की रक्षा में लड़ेंगे तो हम निश्चय ही हार जाएंगे क्योंकि हमें किसी भी देश की जनता का सहयोग प्राप्त न होगा। कम्युनिस्ट तानाशाही का सामना करने का हमारे पास एक ही उपाय है—वह यह कि हम वैधानिक उपायों द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में गणतंत्र की स्थापना करें और साथ ही साथ जनता के राजनैतिक अधिकार भी सुरक्षित रखें।"

इस प्रोग्राम के बाद शान्ति-परिवार के कार्यालय में पत्रों की एक ऐसी बाढ़ आयी जो इसके पूर्व कभी न देखी गयी थी। पहली डाक में आने वाले पत्रों के साथ एक लिफाफा आया था जिस पर "व्यक्तिगत" लिखा हुआ था। यह पत्र छोटा सा ही था। "यह प्रोग्राम सीमा के बाहर चला गया। तुमसे अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।—बेस।" और इस पत्र के नीचे हाशिये पर जर्मन शैली में लिखे हुए कुछ और शब्द थे : "मैं तुमसे सहमत हूं।" हैन्सी के ये अन्तिम शब्द पढ़कर लैनी और लारेल को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने मन ही मन अनुमान लगाया कि अपनी पत्नी की नज़र बचा कर ये शब्द लिखते समय हैन्सी की आँखें आनन्द से नाच उठी होंगी और इस आनन्द को अपने तक सीमित रखने में उसे कैसी सतर्कता बरतनी पड़ी होगी!

(३)

जान मसारिक, जेकोस्लोवाकिया के परराष्ट्र मन्त्री, न्यूयार्क आए हुए थे। उन्होंने लैनी को भोजन के लिए आमंत्रित किया था। जान मासारिक लैनी के पुराने ग्राहकों और संरक्षकों में से एक थे; उनके पास अपार धनराशि थी। पार्क

एवेन्यू की एक गगनचुम्बी इमारत में एक पूरी मन्जिल उन्होंने अपने लिए सुरक्षित कर ली थी। चारों ओर विद्युत के प्रकाश में जगमगाते हुए नगर को यहाँ से सरलता पूर्वक देखा जा सकता था। जान मसारिक का यह निवासस्थान स्वयं एक स्वप्निल संसार सा प्रतीत होता था—विलास की वैभवपुरी सा !

जान मसारिक के पिता टामस मसारिक जेकोस्लोवाकिया के ज्यार्ज वाशिंगटन थे। प्रथम महायुद्ध के समय आप जर्मनी से बचने के लिए एक शरणार्थी के रूप में अमेरिका भाग आए थे और वहां शिकागो के एक विश्वविद्यालय में अध्यापक का काम कर लिया था। प्रेसीडेन्ट विल्सन के साथ आप की गहरी मित्रता हो गई थी। युद्ध समाप्त होने पर जब जेकोस्लाविया एक गणतंत्र के रूप में घोषित हुआ था तब आप उसके प्रथम प्रेसीडेन्ट बने थे। इस निर्वासन के समय में उनके पुत्र जान मसारिक ने अपनी जीविका पहले एक लोहे के कारखाने में काम करके और फिर एक फिल्म कम्पनी में पियानोवादक के रूप में काम करके चलाई थी। इन दिनों की बहुत सी मनोरंजक बातें आप सुनाया करते थे। एक कहानी सुनाते हुए आप बड़े आनन्द का अनुभव करते थे। स्वतंत्रता के इस सुन्दर देश में आने के लिए आप ने जब आवश्यक आवेदन पत्र भरा था तब "जाति" वाले खाने में आपने "मानव" शब्द लिख दिया था।

जान मसारिक सचमुच बड़े विनोदप्रिय व्यक्ति थे। जी खोल कर हंसते थे, व्यंगों का मजा लेते थे और अपने मित्रों के साथ चुहलबाजी करने में कभी न चूकते थे। जब लैनी ने उनसे पूछा कि तानाशाहों के सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं, आप ने तुरन्त कहा, "मुझे तो वे बड़े अच्छे लगते हैं। मैं स्वयं भी एक अच्छा तानाशाह बन सकता हूं। यह देखो।" और इसके बाद उन्होंने अपने जबड़ों को जकड़ कर, निचला होंठ लटका कर, आंखे इस प्रकार तरेर लीं कि ठीक मुसोलिनी की शक्ल बन गयी। लोग हंसते हंसते लोट पोट हो गये।

किन्तु इस विनोदी आकृति के नीचे एक गहरे अवसाद और चिन्ता का भाव छिपा हुआ था। उनका देश इस समय संकट में था और वे उसके जीवन मरण का प्रश्न लेकर अमेरिका आए थे। कम्युनिस्टों ने उसे हड़प लिया था। याल्टा सम्मेलन के समय उन्होंने यह आश्वासन अवश्य दिया था कि वे वहां

गणतंत्रिक शासन व्यवस्था बनाये रखेंगे किन्तु इस आश्वासन का कोई मूल्य न था। याल्टा सम्मेलन के समय उन लोगों ने और भी बहुत से आश्वासन दिये थे किन्तु इसमें से एक भी सत्य न निकला। जेकोस्लोवाकिया में चार राजनैतिक दल थे और डाक्टर बेनेस तथा मसारिक का दल ही सबसे बड़ा था। किन्तु कम्युनिस्टों का दमन चक्र निर्दयतापूर्वक चल रहा था। गुप्त गिरफ्तारियाँ जारी थीं, अत्याचार का बोलबाला था। इस युवक राष्ट्र के उद्धार का एक ही उपाय रह गया था—स्वतंत्र संसार से सहायता की अपील।

जान मसारिक स्वतंत्र संसार में थे और वे चाहते तो वहीं रह सकते थे। उन्हें अमेरिका में राजनैतिक संरक्षण मिल जाता। किन्तु वे चुपचाप अपने देश को लौटे जा रहे थे। लौटते समय उन्होंने कोई शोर गुल न मचाया। कोई अभिनय न किया। उन्होंने केवल इतना कहा, "मुझे जाना ही होगा"। वे एक बलि के बकरे की भाँति जा रहे थे। वे जानते थे कि सारे संसार के राजनीतिज्ञ उन्हें जानते हैं और यदि उन्हें कुछ हुआ तो यह संसार की दृष्टि से छिपा कर न रखा जा सकेगा। भोज के समय उन्हों ने इस सम्बन्ध में कुछ भी न कहा किन्तु एलीवेटर में लैनी के साथ उतरते हुए उन्होंने संक्षेप में इसका संकेत दे दिया। लैनी ने पूछा, "जेकोस्लोवाकिया में यह स्थिति कब तक रहेगी?" तो उन्हों ने कहा "अधिक समय नहीं, मिस्टर बड। जब आपको मेरी मृत्यु का संवाद मिले तो आप समझ लीजिएगा कि मेरी हत्या कर दी गयी है। इसके बाद सब कुछ शीघ्र ही समाप्त हो जायगा।"

लैनी इन शब्दों को भूल न सका। इससे उसके हृदय में स्टालिन की तानाशाही के विरुद्ध प्रज्वलित विद्रोह और भी प्रचण्ड हो गया। इस दिन के बाद जान मसारिक मुश्किल से एक वर्ष ही जीवित रह सके। कम्युनिस्टों ने जब देखा कि उनका अवसर आ गया है उन्हों ने क्षण मात्र विलम्ब न किया। एक हत्यारे ने उनके शयन-कक्ष में घुस एक लकड़ी के कुन्दे से पीट पीट कर उन्हें मार डाला और उनके शव को खिड़की से नीचे फेंक दिया। अधिकृत रूप में यह घोषणा की गयी कि उन्हों ने आत्महत्या कर ली है किन्तु स्वतंत्र संसार को वास्तविकता

का पता चल गया। किन्तु इससे क्या हुआ ? एक और गणतंत्रिक देश कम्युनिस्टों की तानाशाही का शिकार होकर पराधीन बन ही गया।

(४)

किसी भी समय—प्रीतिभोज में ही नहीं—एक वास्तविक महान् व्यक्ति से मिलना बड़ा ही रोमांचकारी होता है। वह आपके सम्पूर्ण हृदय और मस्तिष्क को अभिभूत कर डालता है। लैनी ने घर आकर अपनी पत्नी को मसारिक से अपनी मुलाकात की बात बतायी। उसने रिक, नीना तथा शान्ति परिवार के अन्य सदस्यों को भी इसकी जानकारी दे दी। सभी विचलित और उद्विग्न हो उठे। मनुष्य के विश्वास कठिनाई से बदलते हैं, वस्तुतः अपने विचारों को बदलने का यह कार्य कोई बिरला व्यक्ति ही कर पाता है। यदि आप किसी को प्रशंसा की दृष्टि से देखने के अभ्यस्त हो गये हैं तो फिर बाद में उस व्यक्ति का निम्नगामी पतन आपके लिए बड़ा ही दुखदायी होगा। कल जिस पर आप मुग्ध थे वही आज आपके लिए घृणा और भय की वस्तु बन जाय तो आपकी स्नायु-तंतुओं पर कैसी बीतेगी ? जो बात व्यक्ति के संबन्ध में लागू पड़ती है वही राष्ट्रों, समाज-व्यवस्थाओं और देशों पर भी लागू पड़ती है। एक समय जिस राष्ट्र को, जिस देश को सामाजिक न्याय और सुख शान्ति का प्रतीक माना गया था वही अब अत्याचार और आतंक का प्रतीक बन बैठा था।

द्वितीय महायुद्ध के तारतम्य में लैनी और लारेल चीन से मास्को गये थे। वहां उन्हों ने सोवियत अधिकारियों से मिल कर विचार विनिमय किया था। वे रूस के जनसाधारण से भी मिले थे। उनको अनुभव हुआ था कि ये सभी सीधे-सादे सरल, सच्चे, बुद्धिमान और उदार व्यक्ति हैं। ये बाह्य संसार के बारे में जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक दिखाई दिये थे। इन्हें यह जानने का बड़ा कौतूहल था कि हिटलर के आक्रमण के विरुद्ध उनकी रक्षा के लिए गणतांत्रिक देश क्या सहायता देंगे। लैनी और लारेल ने रूस में रहकर जो कुछ अभिज्ञता प्राप्त की थी उससे उन्हें उस देश के लोगों से प्रेम हो गया था। उन्हें रूस के भविष्य पर विश्वास हो गया था।

किन्तु अब उनकी वे पुरानी धारणाएं निर्दयतापूर्वक बदल रही थीं। अब

उनके मन में यह विश्वास था कि रूस की जनता बुरी नहीं है, वहां के लोग इत्यारे और झूठे नहीं हैं। किन्तु अब उनका अस्तित्व नहीं है; अब उनकी आंखे, उनके कान, उनके मस्तिष्क उनसे छीन लिये गये हैं। वे शेष संसार के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते। उनकी जीभें काट ली गयी हैं और इसलिए वे अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकते। वे एक प्रकार के मन्त्रचालित कठपुतलों के रूप में परिवर्तित कर दिये गये हैं और उनका एकमात्र कर्त्तव्य अपने स्वामियों के आदेशों का परिपालन मात्र रह गया है।

अब रूस और रूसियों का एक दूसरा ही अर्थ हो गया है। अब इन शब्दों से तानाशाहों के उस छोटेसे गुट का बोध होता है जो सत्तारूढ़ होकर उस देश के निर्विवाद स्वामी बन बैठे हैं। ये तानाशाह ही अब जनता के देखने, सुनने, और सोचने का काम स्वयं करने लगे हैं। ये अपने देश के अठारह करोड़ व्यक्तियों को जो कुछ कहते हैं उस पर ये आंख मूंद कर चुपचाप विश्वास कर लेते हैं। ये लेखकों को आदेश देते हैं कि इस प्रकार लिखो और लेखक निर्विवाद रूप में वैसा ही लिखने लगते हैं। ये संगीतज्ञों को आदेश देते हैं कि इस प्रकार संगीत-रचना करो और वे वैसी ही रचना करने लगते हैं। ये वैज्ञानिकों को बताते हैं कि सत्य क्या है और वैज्ञानिक उस सत्य शोधन को शिरोधार्य कर लेते हैं। इन्होंने एक नये धर्म और एक नये देवता की स्थापना की है। यह धर्म है कम्युनिज्म और यह देवता है स्टालिन।

इस नये देवता की मूर्ति प्रत्येक घर में स्थापित कर दी गयी है। सार्वजनिक स्थानों में सैकड़ों फीट की ऊँचाई पर इसका भव्य प्रदर्शन किया जाता है। जनता को बताया जाता है कि वही उसका कर्त्ताधर्ता और भाग्यविधाता है। वही एक मात्र ईश्वर है, दूसरा कोई ईश्वर नहीं है। उसके साम्राज्य में केवल उन्हीं को जीवित रहने का अधिकार है जो उसके सामने अपना सिर झुकाने को तयार हों। जिनमें अविश्वास अथवा विद्रोह की किंचित मात्र छाया दिखाई पड़ती है उन्हें तुरन्त साइबेरिया के दास मजदूर-शिविरों की ओर निर्वासित कर दिया जाता है। वहां वे बारह घंटे प्रतिदिन के हिसाब से कठोर परिश्रम करते हुए, आधे पेट भोजन पर अपना निर्वाह करते हुए साल दो साल में काल कवलित हो जाते हैं।

इस समय भी इन अभागे दास मजदूरों की संख्या एक या दो करोड़ के लगभग है। कौन जानता है कि पिछले तीस वर्षों में कितने करोड़ मृत्यु के मुख में समा चुके हैं।

(५)

मान्क का पत्र आया। उसमें फिर लिखा था। "फर्डीनेन्ड मजे में है।" इसके बाद पत्र में जर्मनों की मनोस्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया था। यह बात दिन दिन स्पष्ट होती जा रही थी कि रूसी लोग जर्मनी के पूर्वी क्षेत्र को अपने साम्राज्य में अन्तर्भुक्त कर लेने के लिये कृतसंकल्प थे। वे उसे जेकोस्लोवाकिया, हंगरी और अन्य देशों की भांति अपना पिछलगुआ राज्य बना लेना चाहते थे। इस प्रक्रिया को रोकने का केवल एक उपाय था। वह यह कि पराभूत पूर्वी जर्मनी को स्वतन्त्र संसार के विचारों से अवगत कराया जाय। सोवियत सरकार की ओर से चलनेवाले विशाल मिथ्या प्रचार का सत्य-प्रसार द्वारा सामना किया जाय। और इस विराट कार्य के लिये मित्र राष्ट्रों के पास इस समय एक हजार वाट का एक छोटा सा रेडियो ट्रान्समिटर ही था जो कि एक सैनिक लारी में फिट करके रेडियो स्टेशन के रूप में परिवर्तित कर लिया गया था।

इस ट्रान्समिटर को चलाने वाले तीन पत्रकार थे—दो पुरुष और एक महिला। पिछली बार बर्लिन-यात्रा के समय लैनी इनसे मिल चुका था। उन्होंने अपने इस रेडियो स्टेशन का नाम रक्खा था "रिआस"—रेडियो इन अमेरिकन सेक्टर। यह अब उठाकर केन्द्रीय टेलीफोन एक्सचेञ्ज की बुरी तरह ध्वंस्त इमारत में ले जाया गया था। इसके प्रसाधन अत्यन्त सीमित थे। न पुस्तकालय था, न फाइलें, न अखबारों की कतरनें। यह एक प्रकार से पूर्णतया अमरीकी पत्र पत्रिकाओं पर ही निर्भर करता था। संगीत सम्बन्धी आयोजनों के लिये इसके पास थोड़े से ग्रामोफोन रेकर्ड ही थे।

मान्क ने अपने पत्र में लिखा था कि अब इन लोगों को कुछ अधिक रकम स्वीकृत कर दिया गयी है और बाईस हजार वाट का एक पुराना रेडियो ट्रान्समिटर भी दे दिया गया है। ये लोग तुम्हारे शान्ति-प्रोग्राम में बड़ी दिलचस्पी

रखते हैं और चाहते हैं कि तुम बर्लिन आकर कुछ समय तक इन्हें आवश्यक परामर्श देते रहो।

इसके बाद अचानक एक दिन अमेरिका के सूचना विभाग से लैनी को टेलीफोन में यह संवाद प्राप्त हुआ कि "रिआस" के मुख्य अधिकारी न्यूयार्क आए हुए हैं और वे लैनी से मिलने के इच्छुक हैं। लैनी ने आने का वायदा किया और चलने के लिये तयार हो गया।

(६)

"रिआस" के अमरीकी मुख्याधिकारी ने लैनी का बड़ा सम्मान किया। उसने लैनी को बताया कि बर्लिन के चारो ओर एक भयानक बाढ़ सी आ रही है। बर्लिन चारों ओर से पूर्वी जर्मनी द्वारा घिरे हुए एक टापू की भांति है और पूर्वी जर्मनी पूर्णतया सोवियत रूस के अधीन है। अब समस्या यह हो गयी है कि कम्युनिस्ट लोग अपने विशालकाय प्रचार अभियान द्वारा जर्मनों के मन और मस्तिष्क को भी पराभूत कर लेना चाहते हैं। रेडियो बर्लिन यद्यपि ब्रिटिश अंचल में पड़ता है तथापि उस पर कम्युनिस्ट लोगों ने अपना अधिकार कर रखा है और वे मनमाने ढङ्ग से उसका प्रयोग कर रहे हैं।

इसकी तुलना में "रिआस" एक खिलौना ही है। किन्तु वह सत्य का माध्यम तो है ही। उसने लैनी से अनुरोध किया, "आप हमारी बहुत बड़ी सहायता कर सकते हैं क्यों कि आप जर्मनों की मनोवृत्ति से परिचित हैं और जर्मन भाषा धारा प्रवाह रूप में बोल लेते हैं। हम लोगों की यांत्रिक शक्ति पहले की तुलना में काफी बढ़ गयी है और अब हम नये नये प्रोग्रामों का समावेश कर सकते हैं।"

उसने लैनी से प्रस्ताव किया कि "रिआस" से वे अपने पारिश्रमिक के रूप में कुछ वेतन स्वीकार कर लें—यद्यपि यह वेतन अत्यन्त साधारण ही होगा।

लैनी ने उसे समझाया कि इसकी आवश्यकता नहीं क्योंकि जोविका के लिये उसके स्वतन्त्र स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त आय-कर की समस्या भी है। यदि वह अवैतनिक रूप में काम करेगा तो सारा खर्च अपने हिसाब में डाल देगा और फलस्वरूप उसकी कुल आय कर लगने वाले कर में काफी कमी हो जाएगी। दूसरी ओर वेतन लेने से उसे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी।

(७)

लैनी ने घर जाकर अपनी पत्नी से इस नये प्रस्ताव की चर्चा की। वह उद्विग्न हो उठी। वह लैनी को फिर विदेश यात्रा के लिये न जाने देना चाहती थी। उसने युद्धध्वंस्त बर्लिन से लोगों के चौरानयन और रहस्यमय रूप में "विलीन" होने की कितनी ही विचित्र कहानियां सुन रखी थीं। किन्तु लैनी ने दृढ़तापूर्वक कहा, "मसारिक तो चले गए थे।" इस वाक्य का वही प्रभाव पड़ा जो कि पड़ना चाहिए था। सदा ऐसा ही होता है। त्याग और साहस का कोई भी ज्वलन्त दृष्टान्त भीतु और कायर हृदयों को लज्जित कर देने के लिए पर्याप्त होता है। लारेल प्रतिवाद न कर सकी। करती भी कैसे? मसारिक जान बूझ कर बाघ की मांद के अन्दर चले गए थे, लैनी तो बर्लिन ही जा रहा था।

फलस्वरूप लैनी को एक बार फिर न्यूफाउण्डलैंड और स्काटलैण्ड के रास्ते बर्लिन की यात्रा करनी पड़ी। लैनी ने एक बार फिर अपना सामान बांधा और वायुयान में बैठ गया। हाल ही में सरकार की ओर से "दि प्रेसीडेन्शियल एजेण्ट" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी थी और गुप्तचर विभाग तथा एफ० बी० आई से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति से अनुरोध किया गया था कि वह इसे एक बार पढ़ ले। वायुयान में बैठे बैठे लैनी ने उसे पढ़ डाला। पुस्तक समाप्त होते होते उसका वायुयान बर्लिन के टेम्पेरहोफेरफील्ड नामक हवाई अड्डे में उतरने लगा था। वहां से लैनी सीधे अपने होटल की ओर गया। दूसरे दिन प्रातःकाल वह "रिआस" के कार्यालय में बैठा हुआ उन तीनों पत्रकारों से इस रेडियो स्टेशन की कहानी सुन रहा था जो स्वयं अपने प्रयासों द्वारा इसे इस रूप में लाए थे।

(८)

वे लोग लैनी से कह रहे थे कि रेडियो द्वारा प्रचार के कार्य को हमारी सरकार महत्वपूर्ण नहीं समझती। इसे न सैनिक अधिकारी ही कोई महत्व देते हैं न राजनीतिज्ञ ही। सैनिक अधिकारी केवल अस्त्र शस्त्रों और कवायदों पर विश्वास रखते हैं और राजनीतिज्ञ केवल राजनीतिक कार्यवाही में। इस राजनीतिक कार्यवाही से उनका तात्पर्य केवल यही रहता है कि एक विशेष प्रकार की

औपचारिक भाषा में लम्बे लम्बे पत्रों का आदान प्रदान होता रहे। शिक्षा पर न सैनिक विशेषज्ञ विश्वास करते हैं न राजनीतिज्ञ लोग। जनता में शिक्षा फैलाने के कार्य को वे प्रचार कहते हैं! समाचार पत्रों को तो एक आवश्यक बुराई के रूप में बहुत पहले ही मान्यता प्राप्त हो गयी थी किन्तु रेडियो को वे अभी नया हस्तक्षेप ही समझते हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोण का परिणाम यह हुआ कि जहां अमेरिका को अपने विचारों के प्रचार के लिये करोड़ों रुपये खर्च करना चाहिये था वहां वह लाखों के खर्च पर ही संतुष्ट है। किन्तु वाह्य संसार में अमेरिका के विचारों के प्रचार और प्रसार की आवश्यकता निर्विवाद है। यदि तृतीय विश्वयुद्ध हुआ तो क्या यह अमेरीका के लिए महत्वपूर्ण बात न होगी कि जर्मन लोग स्वतंत्र संसार के साथ खड़े हों?

कम्युनिस्ट लोग अब येन केन प्रकारेण अपने पुराने शत्रुओं जर्मनों को अपनी ओर मिला लेने के लिए कटिबद्ध थे। वैसे तो वे कट्टर राष्ट्रीयतावादी थे किन्तु ऊपर से अन्तर्राष्ट्रीयता का स्वांग भरते रहते थे। उनका वास्तविक उद्देश्य हिंसा, लूट खसोट और दमन ही था किन्तु वे सब समय श्रमजीवी जनता के बन्धुत्व की बातें करते रहते थे। कम्युनिस्टों का प्रधान अस्त्र मिथ्या प्रचार कौशल था। किन्तु "रिआस" के पास सत्य के अतिरिक्त अन्य कोई अस्त्र न था। वे जर्मन जनता को मुख्यतः खबरें—सच्ची खबरें ही देते थे। हां, यदा कदा वे संगीत और व्यंग विनोद द्वारा अपने प्रोग्राम में थोड़ी बहुत विविधता का समावेश करने का प्रयत्न अवश्य करते रहते थे।

"रिआस" के कार्यकर्त्ताओं का विचार था कि एडोल्फ हिटलर के सत्तारूढ़ होने के बाद लगभग चौदह वर्षों तक जर्मन जनता को वाह्य संसार की गतिविधि के सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं मिलने पाया। अब जर्मन जनता को यह बहुमूल्य जानकारी देकर आवश्यक क्षतिपूर्ति की जा सकती है। इस जानकारी के फलस्वरूप जर्मन लोगों की दृष्टि के सम्मुख एक नये संसार का प्रादुर्भाव होगा — एक ऐसे संसार का जहां सत्य-शोधन के लिए हर व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता है। यह जानकारी जर्मनों को सभ्यता के चौदह वर्षों की अज्ञात अवधि में होने वाले अभिनव चमत्कारों का दर्शन करायेगी। विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, कला, संगीत,

साहित्य, राजनीति आदि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कैसे कैसे अभिनव आविष्कार हुए हैं! और सबसे बड़ी बात तो यह है कि गणतंत्र की व्यवस्था में कैसे कैसे विराट प्रयोग हुए हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता! यह शब्द ही जर्मनों के हृदय को स्पन्दित कर देने के लिए पर्याप्त है!

लैनी एडगरगीयर में अपने शान्ति-रेडियो से ठीक यही कार्य कर रहा था। अब उसने "रिआस" को इस सम्बन्ध में कई परामर्श दिये। इन परामर्शों के फल-स्वरुप "स्चलफन्क" योजना का प्रादुर्भाव हुआ—अर्थात् हवाई पाठशाला योजना। इस "स्चलफन्क" से "स्चलफन्क पार्लियामेंट" का प्रादुर्भाव हुआ—अर्थात् हवाई पार्लियामेंट! इसके अन्तर्गत जर्मन जनता को पश्चिमी संसार की गणतंत्रिक परम्पराओं का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता था। पूर्वी जर्मनी में कम्युनिस्ट लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता से सम्बन्धित विचारों को स्कूलों, पुस्तकालयों और पाठशालाओं से एकदम निर्मूल करने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। इधर "रिआस" से ठीक इन्हीं विचारों का प्रचार हो रहा था। लोग छिपकर, गुप्त रूप में अपने अपने घरों में इन प्रोग्रामों को सुनते थे और उन पर विचार करते थे।

इन विचारों के प्रचार का सुन्दर परिणाम भी शीघ्र मिला। जर्मनी में गण-तंत्र के हजारों समर्थक एक सिरे से दूसरे सिरे तक तयार होने लगे। लोग अपनी जान की जोखिम उठा कर पूर्वी क्षेत्र में आकर ये रेडियो प्रोग्राम सुनते और वायु की तरंगों पर गूंजने वाली इस आनन्ददायनी आवाज के प्रति अपनी कृतज्ञता का प्रदर्शन करते!

(९)

लैनी प्रसन्नता पूर्वक अपनी इस नयी क्रियाशीलता में तत्पर हुआ। उसके पास विचारों का कभी न समाप्त होने वाला भंडार था। वह जर्मनों की मानसिक स्थिति से भली भांति परिचित था और जानता था कि कौनसी बात उनके हृदय को सबसे अधिक स्पर्श करेगी। उसने रेडियो पर अपना एक नया नाम रख लिया था—हर फ्रोहलिच अर्थात् श्री आनन्दमय। वह जर्मन भाषा धाराप्रवाह रूप में बोल लेता था। हां, उसके उच्चारण में हल्का सा अमरीकी पुट अवश्य रहता था। उसने जर्मनों को बताया कि वह उनका पुराना मित्र है और बचपन

से ही जर्मन जाति को प्रशंसा की दृष्टि से देखता रहा है। वह नाजियों के युग की बहुत सी कहानियां जर्मनों को सुनाया करता था। ये कहानियां बहुधा उन भयानक व्यक्तियों से सम्बन्धित होती थीं जो काल्प संसार के लिए जर्मन जाति के प्रतीक बन गये थे।

बहुत से जर्मनों के अन्दर एक खतरनाक प्रवृत्ति दिखाई देने लगी थी। वे बहुधा एक ठंडी आह भर कर कहते, "भाई, कुछ भी हो, हिटलर के राज्य में हम फिर भी अच्छे थे!" इस प्रवृत्ति को रोकना आवश्यक था। इसीलिए लैनी पुराने नाजी नेताओं के अमानुषिक अत्याचारों, हत्याओं और लूट खसोट आदि पर भी यदा कदा प्रकाश डालता रहता था।

ये नाजी हत्यारे अपने पतन का समय समीप देखकर जर्मनी से करोड़ों रुपये के मूल्य की सम्पत्ति लेकर विदेशों की ओर भाग गए थे। लैनी ने रेडियो पर घोषणा की कि जो व्यक्ति इन गुप्त खजानों के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्रदान करेगा उसे अच्छा पारितोषिक प्रदान किया जायगा। उस समय स्थिति यह थी कि बहुत से पुराने नाजी स्पेन और दक्षिणी अमेरिकी भाग गये थे और भागते समय करोड़ों रुपये की सम्पत्ति अपने साथ ले गये थे।

"रिआस" के कर्मचारी दल में अधिकांश जर्मन थे। लैनी (अब हर फ्रोहलिच) उनको अपना परामर्श देता रहता था। अमरीकी प्रबंधकों को भी वह अपने परामर्श से अवगत कराता रहता था। रेडियो बर्लिन से कम्युनिस्ट लोग बार बार यह प्रचार कर रहे थे कि "रिआस" एक अमरीकी प्रतिष्ठान है और इसका खर्च अमेरिका की सरकार चलाती है। इस प्रचार के प्रभाव को नष्ट करने का एकमात्र उपाय यह था कि "रिआस" जर्मन हितों का जर्मन ढंग से समर्थन करे और उसकी भाषा, भाव तथा शैली पूर्णतया जर्मन हो। जो लोग यह काम कर सकते थे उनका परिश्रम सचमुच सार्थक था!

अध्याय १०

● फरिश्तों का क्रन्दन ●

(१)

जब लैनी बर्लिन पहुँचा तब बर्नहाड्ट मान्क कहीं बाहर गया हुआ था। इसलिये एक सप्ताह बाद ही लैनी उससे मिल सका। इस बार जब मान्क लैनी से मिला उसने एक बड़ा मनोरञ्जक वृत्तान्त बताया। एक अमरीकी सैनिक अधिकारी जिसकी रगों में पोलिश रक्त था तथाकथित "काटिन हत्याकाण्ड" के प्रश्न को लेकर बड़ा उत्तेजित हो उठा था। उसने इस मामले की जांच करने की अनुमति प्राप्त कर ली थी। घटना इस प्रकार बतायी जाती थी कि जब सितम्बर १९३९ में हिटलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया था उसने रूसियों के साथ किसी न किसी प्रकार का गुप्त समझौता कर लिया था। एक ओर हिटलर की सेनाओं ने पश्चिमी पोलैण्ड पर अधिकार कर लिया था दूसरी ओर स्टालिन की सेनाओं ने पूर्वी पोलैण्ड को हड़प लिया था। पोलैण्ड की सेनाओं को इन सबल शत्रुओं के सामने आत्म समर्पण करना पड़ा था। इसके बाद पोलैण्ड के अधिकारियों को चुन-चुन कर तीन बन्दी-शिविरों में भेज दिया गया था। ये तीन बन्दी-शिविर थे—काटिन, ओस्टारकोव और स्टारोबील्स्क।

कुल मिलाकर चौदह पन्द्रह हजार पोलिश सैनिक अधिकारियों को इन बन्दी-शिविरों में भेजा गया था। अप्रैल १९४० में इन बन्दी सैनिकों के साथ शेष संसार का सारा सम्बन्ध समाप्त कर दिया गया था। इधर स्वतन्त्र पोलैण्ड की निर्वासित सरकार लंदन में इन अभागे बन्दियों के प्रश्न पर शोरगुल मचा रही थी। उसने रूसी सरकार के पास लगभग पचास पत्र इस सम्बन्ध में भेजे थे। विशिन्सकी के साथ ब्रिटिश तथा पोलिश राजनीतिज्ञों की वार्ता भी हुई थी। इस तारतम्य में मोलटोव और स्टालिन ने अपने मौखिक वक्तव्य भी दिये थे। किन्तु ये वक्तव्य गोल मटोल ही थे। रहस्य पर किसी ओर से कोई प्रकाश न पड़ सका था।

इसके दो वर्ष बाद जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया था तब उसकी

सेनाएं पश्चिमी रूस से होकर गुजरी थीं। यहां 'काटिन' नामक घने जंगल के अन्दर, जो स्मोलेन्स्क से पश्चिम की ओर पड़ता था, जर्मन लोगों ने एक विशाल कब्र देखी जिसमें पोलिश सैनिक वर्दियों में लगभग साढ़े चार हजार शव गड़े हुए थे। उस समय जर्मन लोगों को रूसियों के विरुद्ध प्रचार करने का यह अवसर प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई थी। डाक्टर गोबेल्स के मन्त्रालय ने इस मामले पर एक अन्तर्राष्ट्रीय जांच की मांग की थी। फलस्वरूप भिन्न भिन्न देशों के प्रतिनिधियों के साथ कुछ अमरीकी युद्ध बंदियों और कई पोलिश संस्थाओं द्वारा मनोनीत व्यक्तियों की एक जांच समिति बनी थी और इस मामले की जांच शुरू हुई थी। किन्तु नाजियों ने स्वयं इतनी हत्याएं की थीं कि संसार के जनमत की यह धारणा ही अधिक थी कि ये हत्याएं उन्हीं ने की हैं। किन्तु मान्क ने बताया कि अब वास्तविकता पर प्रकाश पड़ गया है। जांच समिति के पोल और अमरीकी सदस्यों द्वारा गवाहों के बयान लिये जा रहे हैं। इस बात में अब कोई संदेह नहीं रह गया है कि यह जघन्य काण्ड रूसियों द्वारा घटित हुआ था। शीघ्र ही यह बात सारे संसार के सम्मुख प्रमाणित हो जायगी। इन अभागे पोल सैनिकों को मार कर अप्रैल १९४० में दफनाया गया था। यह बात उन समाचार पत्रों से प्रमाणित हो जाती है जो कि जांच समिति के पोल सदस्यों के अधिकार में हैं। इन समाचार पत्रों से ही शवों को 'पैक' किया गया था। इसके अतिरिक्त एक बात और भी है। शवों पर जाड़े की भारी भरकम ऊनी वर्दियाँ पायी गयी थीं। जुलाई की गर्मी में ये गर्म कपड़े न पहने जा सकते थे। यह बात इसलिये महत्वपूर्ण है कि जर्मन सेनाएं इस स्थान पर जुलाई मास में पहुँची थीं। स्पष्ट है कि यह हत्याकाण्ड इसके पूर्व ही हो चुका था।

जब जर्मनी ने इस रहस्य का उद्घाटन कर दिया और संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तब क्रेमलिन की ओर से यह वक्तव्य निकला कि इन पोलों को सड़क बनाने के काम में लगाया गया था। इसके बाद जब जर्मनों ने रूस पर आक्रमण किया तब रूसी सेनाएं इन्हें छोड़ कर पीछे हट गयी थीं। एक महत्वपूर्ण बात यह भी थी कि इन लोगों का पता लगने के बाद ही क्रेमलिन की ओर से यह स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया था। इसके पूर्व पूर्ण मौन रखा गया था।

किन्तु रूसियों के लिए अब अपने इस अपराध को छिपाना सम्भव न था। इस हत्याकांड में स्टालिन का उद्देश्य भी स्पष्ट था। उसने साधारण सैनिकों को दास-मजदूर बनाने के लिये रख छोड़ा था किन्तु वह समझदार उच्च अधिकारियों को जीवित न रहने देना चाहता था। वह पोलैण्ड को पूर्णतया अपने अधिकार में ले लेना चाहता था और विद्रोह की कोई गुंजायश न रहने देना चाहता था। उसने सभी बुद्धिजीवियों और समझदार व्यक्तियों की हत्या करवा देने की योजना बनायी थी ताकि उस देश में स्वतंत्र चिन्तनधारा का अस्तित्व न रहने पाए। केन्द्रीय योरोप के देशों में भी उसकी ऐसी ही योजना थी और इस योजना को कार्यरूप में परिणत करने में उसे किंचित मात्र द्विधा का अनुभव न होता था।

(२)

मान्क ने फ्रित्ज मेसनर का समाचार भी दिया। वह अपना कार्य मुस्तैदी के साथ कर रहा था किन्तु उसे अपने पिता के सम्बन्ध में बड़ा दुःख था। उसका मन बड़ा क्षुब्ध था क्योंकि उसे एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध काम करना पड़ रहा था जिसे एक समय वह हृदय से प्रेम और श्रद्धा करता था। मान्क ने कहा कि वह युवक फ्रित्ज की मनोभावना को भली भांति समझ रहा है क्योंकि उसे स्वयं इस प्रकार का अनुभव हो चुका है।

"मेरे पिता थे तो श्रमजीवी किन्तु उनमें वर्ग-भावना एकदम न थी। उनका विश्वास था कि कैसर विलियम ईश्वर के साक्षात् प्रतिनिधि और जर्मन जाति के निर्विवाद नेता हैं। जब मैंने उनसे कहा कि ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं है और यह ईश्वर-भावना जर्मन जाति की मूढ़ता की प्रतीक है, उन्होंने बिगड़कर मुझे लात मार कर घर से निकाल दिया। मेरी माता को इससे बड़ा कष्ट हुआ था। किन्तु उनके साथ फिर मेरी भेंट न हो सकी। मैं अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था और मेरे विचारों में स्वतन्त्रता का पुट आ गया था।"

मान्क ने लैनी को बताया कि कर्ट ने फ्रित्ज को स्कूल छोड़ने की अनुमति नहीं दी। किन्तु क्रिसमस और ईस्टर की छुट्टियों में घर जाकर उसने बहुत सी महत्वपूर्ण बातों का पता लगाया है।

दुबारा जब फ्रित्ज आया मान्क ने लैनी के साथ उसकी भेंट करा दी। लैनी

ने देखा कि उसकी मुखमुद्रा पहले की तुलना में काफी गम्भीर हो गयी है और वह बड़ा चिंतित प्रतीत हो रहा है। उसने कहा "मिस्टर बड, मुझे सबसे अधिक यह बात सताती है कि मेरे पिता सचमुच बड़े दुःखी रहते हैं।"

लैनी ने कहा, "तुम्हें अपने मस्तिष्क में इस दुःख के मूल कारण को भलीभांति स्पष्ट कर लेना चाहिए। तुम्हारे पिता ने अपने आप को एक अशुभ आयोजन के साथ सम्बंधित किया था और वह आयोजन असफल रहा। वे अपने रास्ते पर चलने के लिये कृतसंकल्प थे। किंतु चल न सके। उनका गर्व खण्डित हो गया, इसका उन्हें दुःख है। किंतु उनके गर्व की रक्षा हो जाती तो संसार पर क्या बीतती? उनके मित्र और सहयोगी अर्द्ध-विक्षिप्त व्यक्ति थे, शक्ति रक्षा ही उनके जीवन का ध्येय थी। मानव मूल्यों से उन्हें कोई सरोकार न था। उदाहरण के लिये हिटलर ने स्टालिन के साथ जो सौदा किया था वह एक अत्यन्त घृणित मामला था। दोनों ने पौलैण्ड को बांटकर खा जाने की योजना बनायी थी—मानो पोलैण्ड के निवासी मनुष्य नहीं कीड़े मकोड़े थे जिनको मारकर फेंक देना कोई विशेष महत्वपूर्ण बात न हो। इसके दो वर्ष बाद नाजियों ने उसी व्यक्ति के विरुद्ध आक्रमण कर दिया जिसके साथ उन्होंने सौदा किया था। इस बार वे सारे रूस को हड़प लेने के फेर में थे—जो मनुष्य इस प्रकार का दृष्टिकोण रखने लगते हैं उनके लिये आधुनिक समाज में स्थान नहीं रहता।"

"मैं यह जानता हूं मिस्टर बड, किन्तु किसी को दुःखी देखता हूँ तो न जाने क्यों मेरा मन मसोस उठता है।"

"यह ठीक है। किन्तु तुम्हें यह समझना चाहिए कि कर्तव्य के स्तर पर तुम सब के प्रति सहानुभूतिशील नहीं हो सकते। तुम्हारे पिता के प्रति मेरा प्रेम कुछ कम न था और मैं पिछली बार भी यह आशा लेकर उनके पास गया था कि उन्हे बुरे रास्ते से हटाकर सुख-शान्ति के पथपर अग्रसर करूंगा। किन्तु मैं असफल रहा। उन्होंने मेरी सलाह मानने से साफ इन्कार कर दिया। जब मेरी बात उन्होंने नहीं मानी तो तुम्हारी क्या मानेंगे जिसे वे निरा बच्चा ही समझते हैं?"

(३)

लैनी युवक फ्रित्ज की समस्या को समझ रहा था क्योंकि उसे स्वयं इसी

प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा था। उसे अपने विवेक के सम्मुख और हैन्सी राबिन के विवेक के सम्मुख सैकड़ों बार उन्हीं तर्कों को प्रस्तुत करना पड़ा था जो कि वह इस समय इस जर्मन किशोर के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा था। उसके मन में एक विचार उठा। इस समय युद्ध-ध्वंस्त अभागे योरोप के इस भूभाग में हजारों व्यक्तियों के मन में ठीक इसी प्रकार के प्रश्न उठ रहे होंगे और वे इन प्रश्नों के समाधान के लिये ठीक इसी प्रकार के तर्कों का आश्रय ले रहे होंगे। पिता पुत्र के विरुद्ध, भाई बहिन के विरुद्ध, पति पत्नी के विरुद्ध!

लैनी कहता गया: "तुम अपने मन से पूछो कि तुम्हारे पिता ने जो रास्ता अपनाया है उसमें उन्हें सुख-शान्ति प्राप्त होने की क्या सम्भावना है? वे पूरी तरह से कम्युनिस्टों के हाथों में हैं। किन्तु कम्युनिस्ट लोग उन पर उतना ही विश्वास करेंगे जितना कि उन्होंने हिटलर पर किया था। वे इस बात को भली भांति जानते हैं कि तुम्हारे पिता कभी पक्के कम्युनिस्ट नहीं हो सकते। वे उनका उपयोग तभी तक करेंगे जब तक कि इससे उन्हे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना रहेगी—इसके बाद वे उन्हे कूड़े की भांति फेंक देंगे। वे पूर्वी जर्मनी की सारी प्रतिभाओं को नष्ट कर देना चाहते हैं—राजनीतिक, वैज्ञानिक और साहित्यिक, सभी प्रकार की प्रतिभाएं। प्रत्येक देश में जिस पर वे अधिकार करते हैं ऐसा ही होता है। वे तुम्हारे पिता पर सतर्क दृष्टि रख रहे होंगे—इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। सम्भव है इस समय भी तुम्हारे पिता के दल में उन लोगों का कोई जासूस हो।"

"हां, मिस्टर बड, उन्होंने अपना जासूस रख छोड़ा है।' फ्रित्ज ने कहा।

"तब वे तुम्हारे पिता के सम्बन्ध में सब कुछ जानते हैं। वे तुम्हारे पिता का प्रयोग तब तक करते रहेंगे जब तक कि उनके किसी स्वार्थ का साधन होता रहेगा। अब भी बहुत से जर्मन कम्युनिज्म का विरोध कर रहे हैं और कम्युनिस्ट लोग तुम्हारे पिता को एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में पेश कर रहे हैं। इस प्रकार उनका हित साधन हो रहा है। किन्तु जब कम्युनिस्ट लोग इस बात का अनुभव करने लगेंगे कि पूर्वी जर्मनी में उनके पैर भलीभांति जम गए हैं तब वे तुम्हारे पिता के विरुद्ध कोई न कोई षड़यन्त्र रचकर उनपर मुकदमा चलाएंगे,

उनसे अपराध स्वीकार करवा लेंगे और उन्हें गोली मार देंगे। यदि वे देखेंगे कि तुम्हारे पिता बहुत अधिक लोकप्रिय हैं और इस प्रकार के कार्य की सम्भावना नहीं है तो वे उन्हें खिड़की से फेंककर मार डालेंगे और यह घोषणा कर देंगे कि उन्होंने आत्महत्या कर ली।"

"मैं जानता हूं, मिस्टर बड। आप ठीक कह रहे हैं।"

"तुम्हे इस बात को भलीभांति समझ लेना चाहिए कि तुम स्टालिनवाद के युग में पैदा हुए हो और यह स्टालिनवाद तुम्हारे सम्पूर्ण जीवन को अभिभूत कर रहा है। तुम्हें इसे पूर्ण रूप में समझ लेना चाहिये ताकि तुम संसार को समझा सको। ये कम्युनिस्ट लोग एक नये ईश्वरविहीन धर्म के अनुयायी हैं। कहने को यह नया धर्म भौतिकतावादी है किन्तु वस्तुतः यह आदर्शवादी ही है। यह वीभत्स दर्शन धारा सर्व प्रथम दार्शनिक हेगेल के मस्तिष्क में उत्पन्न हुई थी। इसके बाद मार्क्स ने आर्थिक स्तर पर इसका प्रयोग किया। मार्क्स की धारणा के अनुसार यह विराट परिवर्तन सर्व प्रथम औद्योगिक देशों में आना चाहिये था किन्तु वस्तुतः यह आया एक पिछड़े हुए कृषि-प्रधान देश में। और पिछले कुछ समय में जो अद्भुत विकास हुए हैं उन्हें देख कर मार्क्स स्वयं आश्चर्यचकित और किंकर्तव्यविमूढ़ रह गया होता। मार्क्स रूस के जारों से भयभीत था, वह उन्हें प्रतिक्रिया के नेताओं के रूप में देखता था। उसने इंगलैण्ड में जाकर अपने सिद्धान्तों की रचना की और "न्यूयार्क ट्रिब्यून" में अपने लेख प्रकाशित कराए। उसे आशा थी कि आंग्ल-अमरीकी लोग ही उसके सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करेंगे। किन्तु हुआ ठीक उल्टा। आज क्रेमलिन में बैठे हुए थोड़े से निर्दय, हृदय शून्य और संदेहशील षड़यन्त्रकारी ही उसके नाम पर अपना जघन्य व्यापार चला रहे हैं। वे लोग उसकी पुस्तकों के अधिकृत अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं। इन अनुवादों से मार्क्स की रूस तथा स्वाधीनता से सम्बन्धित अधिकांश उक्तियां निकाल दी गयी हैं। क्या तुम्हें ये बातें मालूम हैं, फ्रित्ज ?"

"थोड़ी बहुत, मिस्टर बड।"

"तुम चाहो तो इस सम्बन्ध में कुछ पुस्तकें मै तुम्हे दे सकता हूं। किन्तु तुम्हारे पास इस प्रकार की पुस्तकें रहना खतरे से खाली न होगा। आवश्यकता

इस बात की है कि तुम इस नयी बर्बर शक्ति के वास्तविक स्वरूप को भलीभांति समझने का प्रयत्न करो। कम्युनिस्टों की कार्य प्रणाली क्या है? इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जब जैसा तब तैसा रूप धारण कर लेती है। उदाहरण के लिये पश्चिमी साम्राज्यवाद से आक्रान्त किसी उपनिवेश में कम्युनिज्म कट्टर राष्ट्रीयता का रूप धारण कर लेता है। अरबों, भारतीयों, चीनियों, नीग्रो आदि की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं के प्रति यह पूर्ण सहानुभूति दिखाता है। इन लोगों का विशालकाय प्रचार यन्त्र पूर्ण रूप में गतिशील रहता है। प्रचार कार्य के लिये इसके पास अपरिमित साधन रहते हैं। ये येनकेन प्रकारेण हड़तालों तथा उपद्रवों की सृष्टि करने में लगे रहते हैं। जब वह देश स्वाधीनता प्राप्त कर लेता है तो कम्युनिस्टों की नीति तुरन्त परिवर्तित हो जाती है और वे उस नवनिर्मित राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध अपना विषाक्त प्रचार शुरू कर देते हैं। वे यह कहना शुरू कर देते हैं कि यह सरकार तो जमींदारों और पूंजीपतियों की है, इससे जन साधारण को किसी प्रकार का लाभ पहुंचने की सम्भावना नहीं है। वे इस सरकार के विरुद्ध भांति भांति के अनर्गल अभियोग लगाने लगते हैं, और उसके द्वारा होनेवाले शोषण की मनगढ़न्त कहानियां सुनाना शुरू कर देते हैं। बस, कम्युनिस्ट पार्टी के तत्वावधान में गुप्त तथा प्रकट—हर प्रकार की क्रियाशीलता आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार स्वाधीनता मिलने के बाद देश के अन्दर द्वितीय क्रान्ति होती है और इस बार कम्युनिस्ट पार्टी सत्तारूढ़ हो जाती है। किसानों को हत्याएं करने के लिए, मजदूरों को कारखानों पर अपना अधिकार जमाने के लिये और जनता को खुलेआम उपद्रव करने के लिये भड़का कर जब यह द्वितीय क्रान्ति सम्पन्न हो जाती है तब क्या होता है?"

फ्रित्ज के चेहरे पर कौतूहल और जिज्ञासा का भाव स्पष्ट रूप में उद्भासित हो रहा था। लैंनी ने बड़ी कठिनाई से अपनी मुस्कराहट दबाई और गम्भीर स्वर में अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा।

"श्रमजीवी समाज की क्रान्ति सम्पन्न हो जाती है अर्थात् किसानों को भूमि मिल जाती है, मजदूरों को कारखाने मिल जाते हैं और कम्युनिस्टों को सरकार मिल जाती है। इसके बाद किसानों को सहकारी समितियां संगठित करने का

निमंत्रण दिया जाता है। उन्हें यह प्रलोभन दिया जाता है कि इस प्रकार वे ट्रैक्टरों तथा अत्याधुनिक साधनों की सुविधा प्राप्त कर सकेंगे। जो लोग इस दिशा में कोई आनाकानी करते हैं उन्हें "कुलक" घोषित कर दिया जाता है और तुरन्त साइबेरिया की ओर निर्वासित कर दिया जाता है। किसानों की जो सहकारिता-समितियां बनती हैं वे कुछ समय तक तो स्वतंत्र रूप में चलने दी जाती हैं, इसके बाद उनपर एक सरकारी अधिकारी आरोपित कर दिया जाता है। सरकार अधिकांश फसल स्वयं ले लेती है, किसानों के लिये केवल उतना ही गल्ला छोड़ दिया जाता है जितने में वे किसी प्रकार प्राण धारण कर सकें। किसानों से कहा जाता है कि यह त्याग आवश्यक है क्यों कि देश में अकाल का खतरो उपस्थित हो गया है। यह खतरा भूतपूर्व जमींदारों तथा महाजनों की करतूतों का फल है। इन्हें अपने अपराधों का उचित फल दिया गया है अर्थात् इन्हें प्राण दंड दे दिया गया है। किन्तु स्थिति पर नियंत्रण प्राप्त करने में कुछ समय अवश्य लगेगा। मजदूरों से कहा जाता है कि इस संकटकालीन स्थिति में उन्हें प्राणपण से परिश्रम करना चाहिए और केवल उतने ही भोजन पर संतुष्ट रहना चाहिए जितना कि शरीर धारण करने के लिए अनिवार्य हो। हड़तालों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है और हड़ताल करने वालों को दास-मजदूर शिविरों में भेज दिया जाता है। तोड़े फोड़ पर मृत्यु दंड की घोषणा कर दी जाती है। जो सरकारी अधिकारी इन नियमों को कार्यान्वित करने का भार लेते हैं वे अमरीकी पूंजीपतियों द्वारा खरीदी गई भारी भरकम शानदार मोटरों में घूमते फिरते हैं। बस यही क्रांति का वास्तविक स्वरूप है।"

"किन्तु कम्युनिस्ट लोग कहते हैं कि इस प्रकार की स्थिति अस्थायी होती है।" फ्रित्ज ने कहा।

"हां, फ्रित्ज। पहले मैं भी एन्जेल्स और लेनिन के इस वक्तव्य पर विश्वास करता था कि राज्य संस्था एक अस्थायी वस्तु है और वह धीरे धीरे स्वयं विलीन हो जायगी और नयी परिस्थितियों में स्वतंत्रता की परिकल्पना स्वतः विकसित होगी। किन्तु अब मैं इस बात का अनुभव करता हूँ कि यह सिद्धांत असत्य है। क्रांति के नेता बराबर हिंसा और आतंक का प्रयोग करते करते इनके अभ्यस्त हो

जाते हैं और उनका चरित्र विकृत हो जाता है। परिणाम यह होता है कि आदर्शवादी व्यक्ति, स्वतंत्रता के भक्तगण, या तो एक दम मार डाले जाते हैं या उन्हें साइबेरिया में निर्वासित कर दिया जाता है। जो व्यक्ति एक बार सत्तारूढ़ हो जाते हैं वे किसी भी अवस्था में अपने अधिकार छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। इन्हें सब समय अपने भविष्य के सम्बन्ध में आशंका रहती है और इसी लिए अपने प्राणों की रक्षा के लिए ये सत्तारूढ़ रहना चाहते हैं। इन्हें यह भय रहता है कि जिन व्यक्तियों पर इन्होंने अत्याचार किया है वे अपना प्रतिशोध लेने के लिए अवसर की प्रतीक्षा में हैं। इन विरोधियों और शत्रुओं—मेरा मतलब वर्ग शत्रुओं से नहीं बल्कि भूतपूर्व मित्रों और सहयोगियों से है—की प्रतिहिंसा से बचने के लिए जहां तक सम्भव होता है ये उन्हें मौत के घाट उतार देने का प्रयत्न करते रहते हैं। 'क्रांति अपने पुत्रों को खा जाती है।' डेढ शताब्दी पूर्व फ्रांस में यह कहावत बहुत प्रसिद्ध थी। और हम लोग पिछले तीस वर्षों से इसे रूस में अक्षरशः चरितार्थ होते हुए देख रहे हैं और जिन जिन देशों पर रूस ने अपना अधिपत्य जमा लिया है वहां भी इसी प्रकार की बात देखी जा रही है।

(४)

युवक फ्रित्ज को ये बातें आंशिक रूप में ज्ञात थीं। किन्तु शेष संसार में किस प्रकार की वस्तु स्थिति है ?

"क्या अमेरिका वास्तव में स्वतंत्र संसार का प्रतीक है, मिस्टर बड ? हम लोगों को तो बराबर यही बताया जाता है कि वह एक साम्राज्यवादी देश है।"

"पिछले जमाने में अमेरिका में साम्राज्यवाद था।" लैनी ने स्वीकार किया। कदाचित् रेड इन्डियन लोगों ने हमें कट्टर साम्राज्यवादी ही समझा होगा। जब हम लोगों ने मेक्सिको से टेक्सास और कैलीफोर्निया छीन लिया था तब भी हमने अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का परिचय दिया था। स्पेन के साथ हमारा युद्ध भी साम्राज्यवादी भावनाओं से अतिरञ्जित था। किन्तु आज ? तुम देख ही रहे हो कि हम लोगों ने अपने उपनिवेशों का क्या किया। हमने इन उपनिवेशों की जनता को शिक्षित किया और बाद में इन्हें स्वतन्त्रता दे दी। हमने फिलीपाइन्स और क्यूबा को स्वाधीनता दे दी है और प्यूर्टोरीको के सम्बन्ध में भी हमने इसी

प्रकार का निश्चय कर लिया है। हमारी सरकार गणतांत्रिक मान्यताओं के आधार पर स्थापित हुई थी। लिन्कन के शब्दों में गणतंत्र का अर्थ है—जनता का शासन, जनता द्वारा, जनता के लिये। वर्ग संघर्ष हमारे यहां भी है किन्तु इसका समाधान करने के लिये हम सामूहिक हत्याओं का आश्रय नहीं लेते। इसका समाधान हम चुनाव-पेटिका द्वारा कर लेते हैं। स्वतन्त्रता और गणतंत्र का अर्थ यही है।"

फ्रित्ज एकाग्र चित्त से सुन रहा था। लैनी कहता गया—

"मैं समझता हूँ कि अपनी आर्थिक समस्याओं का समाधान खोजने के लिये हमें कम्युनिस्टों के पास जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने पिछले तीस वर्षों में स्वयं अपनी समस्याओं का क्या समाधान किया है? हम किस बूते पर इन्हें इस विषय के आचार्य मान लें? मैं इस बात को कभी स्वीकार नहीं कर सकता कि कोई कमीशार हमें जीवन और जगत के सम्बन्ध में शिक्षा दे और राजनीति, विज्ञान, संगीत, साहित्य, कला आदि के सम्बन्ध में हमारा पथ-निर्देश करे। मैं जिस बात को सत्य समझूंगा उसी पर विश्वास करूँगा और सदा यह चाहूंगा कि इस सम्बन्ध में मुझे पूर्ण स्वतंत्रता रहे।"

"यह तो ठीक है मिस्टर बड, किन्तु सरकारों की साम्राज्यवादी मनोवृत्ति नहीं टूटती।" फ्रित्ज ने कुछ शंका स्वर में कहा।"

"जहां तक प्रेसीडेण्ट ट्रूमन की नीति का सम्बन्ध है मैं तुम्हें आश्वासन दे सकता हूँ कि वह साम्राज्यवादी नहीं है। हम लोग जापान को फिर से एक स्वतंत्र और सर्वसत्तासम्पन्न राष्ट्र के रूप में परिणत कर रहे हैं। इधर ब्रिटिश लोग भारत को स्वतन्त्र करने जा रहे हैं। सारे संसार में उपनिवेशों को धीरे धीरे स्वाधीनता मिलती जा रही है। जहां तक जर्मनी का प्रश्न है, हम अमरीकी यही चाहते हैं कि वह एक स्वतंत्र और गणतांत्रिक देश के रूप में रहे और उसका शासन जनमत पर आधारित रहे। किन्तु कम्युनिस्ट लोग जर्मनी को विभाजित रखना चाहते हैं। उन्होंने पूर्वी जर्मनी पर अधिकार कर लिया है और उसे एक रूसी कठपुतली के रूप में परिवर्तित कर देने के लिये कृतसंकल्प हैं।"

(५)

इस प्रकार लैनी ने जर्मन युवक की शंकाओं का समाधान करने का पूरा पूरा प्रयत्न किया और शीघ्र ही उसके मुखमण्डल पर से शंका और संदेह के बादल फट गए। मुस्कराते हुए उसने कहा, "आप मेरे पिता को समझाने का प्रयत्न क्यों नहीं करते, मिस्टर बड ?"

"तुम्हारे पिता पर मेरी बातों का कोई प्रभाव न पड़ेगा क्योंकि वे राजनीति के मामले में जनता के अधिकारों को स्वीकार ही नहीं करते। वे समझते हैं कि शासन का काम कुछ अतिमानव व्यक्तियों द्वारा ही होना चाहिये। वे अपने आप को एक अतिमानवी वर्ग का सदस्य मानते हैं। उनका विश्वास है कि जनता का काम अपने नेताओं के आदेशों का पालन मात्र है। स्वेच्छा से नहीं तो अनिवार्य रूप में उससे यह काम कराना पड़ेगा।"

"पिता जी ने अपनी मानसिक स्थिति मुझे बता दी है। उनका कहना है कि इस समय जिस प्रकार की स्थिति है उसमें यह अनिवार्य हो गया है कि हम भीतर से अपने विश्वासों को अक्षुण्ण रखते हुए भी ऊपर से कम्युनिज्म के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने का प्रयत्न करें।"

लैनी ने मुस्कराते हुए कहा, "यह असम्भव है। क्रान्ति के जमाने में इस प्रकार के व्यक्तियों के लिए कम्युनिस्टों ने एक सुन्दर शब्द खोज निकाला था—लाल गाजर, ऊपर से लाल और भीतर से सफेद! किन्तु फ्रित्ज, नाजीवाद और कम्युनिज्म में कोई विशेष अंतर नहीं है। कहावत प्रसिद्ध है कि उग्र चिन्तन धाराएं अंत में एक हो जाती हैं।"

"मेरे पिता ने भी कुछ इसी प्रकार की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि कम्युनिज्म और नाजीवाद, दोनों ही एकतांत्रिक शासन-पद्धतियां हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि एक में शासन कार्य समाज के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों के हाथ में रहता है, दूसरी में निकृष्टतर व्यक्तियों के हाथ में।"

(६)

युवक फ्रित्ज के साथ होने वाली इस भेंट ने लैनी पर बहुत गहरा प्रभाव डाला

था। उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि प्रकृति देवी अपने बच्चों में जीवित रहने के लिये ऐसी दुर्दम्य आकांक्षा भर देती हैं कि कुरूप से कुरूप परिस्थितियों में भी जीवन सुन्दर प्रतीत होता है। मनुष्य की स्थिति कितनी ही दयनीय क्यों न हो, वह आशा नहीं छोड़ता; वह प्रतिपल अदम्य उत्साह के साथ अपने दुर्भाग्य के साथ लोहा लेता रहता है। मन ही मन फ्रित्ज के सम्बन्ध में लैनी को दुःख भी हो रहा था। उसे याद आ रहा था कि जिस समय वह फ्रित्ज की आयु का था, उसका जीवन आमोद प्रमोद से परिपूर्ण था। किन्तु फ्रित्ज की स्थिति कितनी दुर्भाग्यपूर्ण थी? उसके पास कुछ भी न था और उसका छोटा सा नगण्य अस्तित्व भी दो परस्परविरोधी शक्तियों के बीच में बिंधा हुआ था। किन्तु आश्चर्य! तोप के मुंह में बंधा हुआ यह व्यक्ति भी जीवित रहने के लिये कृत संकल्प था—केवल जीवित रहने के लिये ही नहीं बल्कि गौरव और प्रतिष्ठा के साथ जीवित रहने के लिये। उसे जीवन के प्रति यह उत्कट मोह किसी व्यक्तिगत लोभ के कारण न था बल्कि वह अपने देशवासियों के हित तथा उनके आदर्शों की रक्षा की आशा से अनुप्रेरित था।

लैनी ने वापस आकर मान्क से इस प्रसंग में बातचीत की। मान्क एक अनुभवी तथा कर्मठ व्यक्ति था। वह जो काम अपने हाथ में लेता उसे पूरा करके छोड़ता। वह अपने मस्तिष्क को अन्तहीन नैतिक परिकल्पनाओं द्वारा आग्रस्त न करता था। मान्क ने कहा, "बात एकदम स्पष्ट है। या तो तुम्हे तानाशाहों को मिटाने के लिये डट कर प्रयत्न करना है या स्वयं मिट जाने के लिये प्रस्तुत रहना है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चिन्ता नहीं करता कि अपने विरोधियों से लड़ने के लिये मुझे किस अस्त्र का प्रयोग करना पड़ रहा है। मुझे जब जो अस्त्र मिल जाता है, उसी का उपयोग कर लेता हूँ।"

लैनी ने विनोद के स्वर में एक चुटकुला सुनाया जो उसने न्यूयार्क के जोहानेस रोबिन से सुना था— "दूसरों से तुम जिस व्यवहार की आशा करते हो वैसा ही व्यवहार उनके प्रति करो। किन्तु पहला उदाहरण तुम्हारी ओर से प्रस्तुत होना चाहिये।"

(७)

एक दिन मान्क अपने अमरीकी मित्र के पास आकर बोला, "मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्कता है।"

"मेरी सेवाएं सदा प्रस्तुत हैं।" लैनी ने मुस्करा कर कहा।

"मेरे कार्यालय में एक विचित्र बात हो गयी है। एक जर्मन लड़की ने आकर नौकरी के लिये प्रार्थना की। उसकी आयु अठारह वर्ष के लगभग है—शायद कुछ अधिक हो। काफी तेज़ लड़की है। वह सोवियत क्षेत्र से आयी हुई शरणार्थिन है। पूछने पर उसने बताया कि वह वेण्डेफुर्थ नामक ग्राम की रहने वाली है। अब मैं एक जटिल द्विविधा में पड़ गया हूं। यदि सचमुच वह वेण्डेफुर्थ की है तब तो हमारी पौ बारह है किन्तु दूसरी ओर मैं यह भी सोचता हूँ कि शायद यह एक चकमा मात्र हो।"

लैनी समझ गया। "मैं समझता हूं कि हिमलरी मुद्रा वाले हमारे मित्र लोग तुम्हारे कार्यालय में अपना एक गुप्तचर रखने लिये उत्सुक हो रहे हैं।"

"मुझे ऐसा ही सन्देह हो रहा है। मैंने जहां तक हो सका उसको परखने का प्रयत्न किया। किन्तु मैं उसे यह समझने का कोई अवसर न देना चाहता था कि हमें उस पर सन्देह है।"

"वह शरणार्थी शिविर से कैसे निकल आयी?"

"यों तो शरणार्थी शिविर से किसी व्यक्ति को तभी छुट्टी मिलती है जब वह कहीं पर कोई काम प्राप्त कर लेता है किन्तु इस सम्बन्ध में कभी कभी पक्षपात भी होता है। सम्भव है वह किसी अफसर के साथ सो कर छुट्टी प्राप्त करने में सफल हो गयी हो। मैं चाहता हूं कि तुम उससे मिल कर उसे परखने का प्रयत्न करो।"

"मैं उससे कैसे मिल सकता हूं?"

"मैं प्रकट रूप में तुम दोनों का मिलन नहीं करा सकता क्योंकि इससे उसे सन्देह हो जाएगा और वह सतर्क हो जाएगी। किन्तु एक उपाय है। मैं उसे भोजन के लिये निमंत्रण दूंगा और तुम अकस्मात टपक पड़ना। तुम विण्डेफुर्थ गाँव की काफी जानकारी रखते हो। मौका निकाल कर इस सम्बन्ध में बातें शुरू

कर देना। इसके बाद तुम उससे अपनी आत्मीयता बढ़ा कर उसे सिनेमा अथवा किसी नाइट-क्लब में ले जाने का प्रयत्न करना।"

लैनी सच्चरित्र व्यक्ति था। उसने तुरन्त आक्षेप किया, "किन्तु इस प्रकार के कामों में मैं एक निश्चित सीमा तक ही आगे बढ़ सकता हूँ।"

"ठीक है।" मान्क ने कहा। "किन्तु उस लड़की के सामने तुम्हें अपनी सच्चरित्रता की डींग हाँकने की कोई आवश्यकता नहीं। उसके सामने तो तुम एक सच्चे रसिक का सा हावभाव दिखाना। जो भी हो, उससे किसी प्रकार घनिष्टता बढ़ा कर तुम उसके भेद को प्राप्त करने का प्रयत्न करना।"

"अच्छी बात है।" लैनी ने स्वीकृति दे दी।

"मैं संध्या के समय उसे शूलचेइस काफे में बुला लूंगा। तुम ठीक सात बजे वहां इस प्रकार पहुँचना जैसे अकस्मात आ गए हो। मेरे प्रति तुम यह भाव दिखाना मानों युद्ध के बाद अकस्मात पुराने मित्र से भेंट हो गयी हो।"

(८)

इस प्रकार लैनी एक जर्मन युवती के आमने सामने बैठकर बातें करने के लिये बाध्य हो गया। वह नियत समय पर शूलचेइस काफे में पहुंचा और पूर्वकल्पित योजना के अनुसार सारा अभिनय यथाविधि सम्पन्न हो गया। वह जर्मन लड़की काफी तेज थी। उसका रंग भूरा था किन्तु बाल और आंखें काली थीं। उसने अपने गालों और होठों पर जितना रंग चुपड़ रखा था वह फैशन के साधारण नियमों के अनुसार तो अधिक न था किन्तु लैनी को वह सुरुचिपूर्ण न प्रतीत हुआ। वह एक दुबली पतली, छरहरे बदन की लड़की थी। उसके वस्त्रों से यह भाव स्पष्ट रूप में प्रकट होता था कि वह निर्धन है। किन्तु अपनी इस निर्धनता को छिपाने के लिये वह अपनी काली आँखों में प्रसन्नता का भाव बनाये रखने का भरसक प्रयत्न कर रही थी। प्रथम क्षण से ही लैनी को उसकी मूर्ति करुणाजनक प्रतीत हो रही थी। जर्मनी—पराजित जर्मनी के सभी बच्चों का यही हाल था। बर्लिन रूपी टापू में निवास करनेवाले व्यक्ति औरों की अपेक्षा अधिक दुर्भाग्यग्रस्त प्रतीत होते थे। ये बेचारे इन निराशाजनक परिस्थितियों में भी अपने जीवन की रक्षा

के लिये सोत्साह परिश्रम कर रहे थे। किन्तु यह असम्भव को सम्भव बनाने का सा प्रयत्न था।

"वेण्डेफुर्थ! वाह, उस गांव से तो मैं भली भांति परिचित हूं। मैं वहां कुछ समय तक रह चुका हूं। वहां कर्ट मेसनर नामक मेरे एक मित्र रहते हैं। उन्हें आप जानती हैं?"

लैनी ने मन ही मन यह कल्पना की थी कि लड़की कहेगी—हां, हां, क्यों नहीं। उनसे तो मैं भली भांति परिचित हूं। किन्तु लैनी के अनुमान के विपरीत उसने कहा, "मैंने लोगों को उनकी चर्चा करते हुए सुना था किन्तु व्यक्तिगत रूप में उनके साथ मेरा कोई परिचय न था। हां, एक बार सड़क पर जाते हुए उन्हे दूर से देखा था। वे बड़े दुःखी प्रतीत हो रहे थे। मुझे उनको देखकर बड़ी दया आयी थी।"

लैनी ने लड़की से उसका परिचय पूछा। उसने मन ही मन यह अनुमान लगाया था कि वह अपने आप को किसी रईस खानदान से सम्बन्धित करेगी। किन्तु इस बार भी उसका अनुमान गलत निकला। लड़की ने संक्षेप में कहा कि उसके पिता साधारण सी गोदाम में काम करते थे और उसका लालन-पालन साधारण परिस्थितियों में हुआ है।

इसी प्रकार कुछ देर तक बातें होती रहीं। अन्त में भोजन समाप्त होने पर मान्क ने घर पर कुछ आवश्यक काम का बहाना बना कर बिदा ली।

"लैनी, तुम मेरी अनुपस्थिति में मिस सर्डेन का जी बहलाना।" उसने चलते चलते कहा।

लैनीने मुस्करा कर स्वीकृति दे दी।

(९)

दोनों आपस में बातें करने लगे। लैनी ने उस जर्मन युवती को अपना परिचय देते हुए कहा कि वह एक कला-विशेषज्ञ है और युद्ध-ध्वंस्त जर्मनी में प्राचीन कला-चित्रों को खोजने के लिये आया है। उसने लड़की से पूछा कि इस सम्बन्ध में वह उसकी कोई सहायता कर सकती है क्या? किन्तु उसने सरलता पूर्वक उत्तर

दिया कि उसे कला-चित्रों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। लैनी ने यह प्रश्न उसकी परीक्षा लेने के लिये ही किया था। उसने उसे जानबूझकर नौकरी का प्रलोभन दिया था किन्तु लड़की ने इस काम में अपनी असमर्थता प्रकट की। लैनी इस बात से मन ही मन सन्तुष्ट हुआ।

होटल से निकलकर दोनों बाहर आए और कुर्फ़ूस्टण्डम की प्रशस्त सड़क पर टहलने लगे। एक समय यह स्थान रात्रि के समय बिजलियों की जगमगाहट से जगमगा उठता था; फैशनपरस्त लोगों का जमघट लग जाता था। अब वह शान नहीं रही। किन्तु धीरे धीरे नाइट क्लब फिर खुलने लगे थे। लैनी ने प्रस्ताव किया कि किसी नाइट क्लब में चला जाय। लड़की राज़ी हो गयी। दोनों पास के एक नाइट क्लब में गए और एक कोने में बैठ गए। वहां कोई कुरुचि-पूर्ण और वासना-प्रधान खेल हो रहा था लैनी जैसे सच्चरित्र व्यक्ति के लिये इसमें किसी प्रकार की दिलचस्पी लेना सम्भव न था।

लेनी जर्मन युवती अन्ना सर्डेन से बातें करने लगा। उसने उसे बताया कि वह एडोल्फ हिटलर से मिला था और उसे एक महापुरुष के रूप में समझता था। वह एक जिद्दी व्यक्ति अवश्य था किन्तु उसने जर्मन जनता को सुन्दर ढंग से अनु-शासनबद्ध करके एक ऐसे साम्राज्य की नींव डाली थी जो सचमुच एक हजार वर्ष तक कायम रह सकता था। गणतांत्रिक देशों के नेता यदि कुछ दूरदर्शिता से काम लेते तो हिटलर के साथ कोई न कोई समझौता हो जाना असम्भव न था। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री चैम्बरलेन का यही उद्देश्य था और उन्होंने इस दिशा में भरसक प्रयत्न भी किया था। किन्तु अमेरिका के जिद्दी राष्ट्रपति ने इस प्रयास को सफल न होने दिया।

इसी प्रकार लैनी काफी देर तक बातें करता रहा। अन्त में उसने अन्ना से प्रश्न किया, "आपकी क्या राय है मिस सर्डेन?"

युवती ने कहा कि लैनी के विचार ठीक वैसे ही हैं जैसे कि स्वयं उसके माता पिता के थे। लाखों जर्मन हिटलर के सम्बन्ध में इसी प्रकार की धारणा रखते हैं। उसने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि एक अमरीकी हिटलर के प्रति इस प्रकार के भाव रखता है।

"क्या आपकी भांति अन्य अमरीकी भी ऐसा ही सोचते हैं?" उसने लैनी से पूछा।

"बहुत से अमरीकी मेरे जैसे विचार रखते हैं किन्तु वे अपने विचारों को व्यक्त करनेमें झिझकते हैं। किन्तु मैं एक स्वतन्त्र व्यक्ति हूँ और अपने विचार व्यक्त करने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करता।"

लैनी ने अन्ना से फिर प्रश्न किया, "आप की क्या राय है?"

युवती ने बताया कि जिस समय महायुद्ध शुरू हुआ था वह बच्ची ही थी। इस सम्बन्ध में उसने जो कुछ दूसरों से सुना है केवल उतना ही जानती है। युद्ध निश्चय ही एक भयानक अभिशाप प्रमाणित हुआ है। इसने लाखों परिवारों को नष्ट-भ्रट कर दिया है। स्वयं उसका परिवार भी युद्ध की चपेट में आकर ध्वंस्त हो गया। नाजियों ने उसके दो भाइयों को बलात सेना में भर्ती कर लिया था और दोनों युद्ध में हत हुए। उन्होंने उसके पिता को भी गोली मार दी थी। इन सब बातों के कारण वह नाजियों से घृणा करती है। किन्तु सम्भव है मिस्टर बड का कथन ही ठीक हो क्योंकि वे उसकी अपेक्षा अधिक जानकारी रखते हैं।

इसके बाद लैनी और अन्ना ने नृत्य देखने में अपना ध्यान लगाया। लैनी ने अन्ना की आपत्ति की उपेक्षा करते हुए कुछ और खाद्य पदार्थ मंगाए। उसने अन्ना से प्रश्न किया कि बर्लिन के अमरीकी क्षेत्र में शरणार्थी लोगों का जीवन कैसा है? उसने उसे समझाया कि बेकारी की समस्या का समाधान क्यों इतना जटिल हो गया है। सारे कारखाने नष्ट-भ्रष्ट हो गए हैं और खेतों में भी अधिक व्यक्ति नहीं खपाए जा सकते। उसने अन्ना को सलाह दी कि वह रूसी विचारों तथा भाषा को सीखने का प्रयत्न करे क्योंकि जर्मनी के जिस भाग में वह पैदा हुई थी वह अब रूस के अधिपत्य में आ गया है। सम्भव है रूसी विचार तेजी के साथ फैलें। सम्भव है बड़ी बड़ी जायदादों का राष्ट्रीयकरण हो जाय और उत्पादन पर सामूहिक नियंत्रण आरोपित कर दिया जाय। इस बात की भी सम्भावना है कि अन्त में लेनिन की यह भविष्यवाणी सच निकले कि कम्युनिज्म की स्थापना हो जाने के बाद राज्य नामक संस्था अपने आप समाप्त हो जाएगी और सर्वहारा समाज की सच्ची गणतान्त्रिक स्वतन्त्रता उपलब्ध हो जाएगी। इस प्रकार की

स्थिति आयी तो मिस सडैन जैसे सम्पत्तिशून्य व्यक्तियों को लाभ ही लाभ है।

"मेरे जैसे धनवान व्यक्तियों के लिये तो संसार का वर्तमान स्वरूप ही अच्छा है।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। "किन्तु मैं इस बात को भी समझता हूँ कि इस सम्बन्ध में निर्धन व्यक्तियों के विचार भिन्न प्रकार के हो सकते हैं।"

अन्ना को लैनी की बातों से काफी आश्चर्य हुआ। एक धनी अमरीकी के अन्दर इस प्रकार की राजनैतिक प्रबुद्धता की उसने आशा न की थी।

अन्ना ने बताया कि शरणार्थी शिविर में भिन्न भिन्न राजनैतिक मतवादों की काफी आलोचना प्रत्यालोचना होती रहती है क्योंकि लोगों के पास गप लड़ाने के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं रहता। वह शरणार्थी शिविर में थी तो प्रतिदिन यह वादविवाद सुनती थी। किन्तु राजनीतिक प्रश्नों पर वह अपने मन में कोई स्पष्ट धारणा न बना सकी। इस समय तो वह किसी भी प्रकार जीविकोपार्जन के लिये कोई काम प्राप्त कर लेने के लिये ही अधिक चिन्तित है। क्या मिस्टर बड उसे अमेरिका भेजने का प्रबन्ध कर सकते हैं?

लैनीने इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट की। उसने कहा कि वह जितने जर्मनों से मिलता है उनमें से अधिकांश उससे यही अनुरोध करते हैं। किन्तु वह इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता। न तो उसका कोई राजनैतिक प्रभाव है न कोई स्वतन्त्र व्यापार ही कि वह लोगों को काम दिला सके। इस समय तो वह इतना ही कह सकता है कि प्रत्येक जर्मन को अपने देश के भविष्य पर विश्वास रखना चाहिए। उसे विश्वास है कि अमेरिका तथा अन्य मित्र राष्ट्र जर्मनी को फिर से अपने पैरों पर खड़ा करने के लिये उत्सुक हैं—निराशा के लिये कोई कारण नहीं है।

(१०)

बात चीत करते करते रात काफी बीत गयी। लैनी ने बेहरे से बिल मंगा कर भुगतान कर दिया। बिल की रकम काफी बड़ी हो गयी थी। किन्तु लैनी ने अन्ना को इसका पता न चलने दिया। दोनों बाहर आए तो सड़क सुनसान हो चुकी थी। सवारी मिलने की कोई आशा न थी।

"आप क्या यहां से अधिक दूर रहती हैं?" लैनी ने अन्ना से प्रश्न किया।

"हाँ, मिस्टर बड। किन्तु वहां पर मैं आपको नहीं ले जा सकती। मेरे पास कोई स्वतंत्र कमरा नहीं है। हम कई लड़कियां मिल कर एक कमरे में रहती हैं। वहाँ मैं आपके साथ कैसे जा सकती हूं?" उसने लैनी की बांह से चिपटते हुए उत्तर दिया।

"यह तो बड़ी मुश्किल हुई।" लैनी ने कहा।

"किन्तु क्या आप के पास ऐसा कोई स्थान नहीं जहां आप मुझे ले जा सकें?" उसने लैनी से और भी घनिष्टता के साथ चिपटते हुए कहा।

"आप गलती कर रही हैं, मिस सडेंन।" लैनी ने युवती को सतर्क करते हुए कहा। "मैं एक विवाहित व्यक्ति हूँ।"

उस जर्मन किशोरी के चेहरे पर आश्चर्य का भाव स्पष्ट था। "यह आप क्या कह रहे हैं मिस्टर बड? आपने मुझ पर इतना रुपया खर्च किया और अब"

वह सिसक सिसक कर रोने लगी। उसने अपनी दोनों बाहों से लैनीको जकड़ लिया "मुझे छोड़िये मत मिस्टर बड। मैं आपको बड़ा आनन्द दे सकती हूँ। मेरा विश्वास कीजिए। केवल एक अवसर देकर देखिये। मैं किसी से कुछ कहूंगी नहीं। मैं आपकी सेवा में अपना तन मन धन अर्पित कर दूंगी। आप जो कहेंगे वही करूंगी।"

"मुझे दुःख है, अन्ना।" लैनी ने गम्भीर स्वर में कहा। "मैं तुम्हारा प्रेमी नहीं बन सकता किन्तु एक मित्र के रूप में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। शायद मैं तुम्हें कोई काम दिला सकूँ! चलो मैं तुम्हें घर पहुंचा दूं। इतनी रात बीते तुम्हारा अकेले जाना उचित न होगा।"

रास्ते में लैनी ने उससे पूछा, "मिस सडेंन, तुम मुझे पहले तो यह बताओ कि तुमने बर्नहाड्ट मान्क से काम दिलाने के सम्बन्ध में कोइ अनुरोध किया था या नहीं!"

"मैंने उनसे कहा था और उन्हों ने यह आश्वासन दिया था कि वे मुझे कोई न कोई काम दिलाने के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे। किन्तु वे शायद मेरा विश्वास नहीं करते। बात यह है कि इस समय बर्लिन में बेईमान लोगों की ऐसी बाढ़ सी आ गई है कि ईमानदारों का भी कोई विश्वास नहीं करता।"

अन्ना चलते चलते अचानक फूट फूट कर रोने लगी। "आप भी मेरा विश्वास नहीं करते, मिस्टर बड ? मैं आप के लिये एकदम बेकाम हूं ?" वह अपनी सिसकियों के बीच कह रही थी।

"तुम गलती कर रही हो, मिस सर्डेन।" लैनी ने अपने कण्ठ स्वर को अधिक से अधिक मुलायम बनाते हुए कहा। "मैं आयु में तुमसे काफी बड़ा हूँ। मैं मानव स्वभाव की विशेषताओं से भली भांति अवगत हूं। मै जानता हूँ इस समय जर्मनी में स्त्रियों की क्या हालत है। लाखों पति-पुत्र मर गये हैं, विधवाओं और कुमारियों पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा है। लाख प्रयत्न करने पर भी उन्हें कोई काम नहीं मिलता। किन्तु अन्य जीवधारियों की भांति उन्हें भी पेट की ज्वाला बुझाने के लिये कुछ न कुछ चाहिये। मै जानता हूँ भूख की ज्वाला कितनी भयानक होती है।"

"ओह, मिस्टर बड ! मुझे किसी भी प्रकार कोई काम मिल जाय और अपना कहने लायक एक छोटा सा कमरा। बस इतने से ही मै संतुष्ट हो जाऊंगी और अपने आपको संसार की सबसे अधिक भाग्यशालिनी स्त्री समझने लगूंगी।"

"मुझे पता नहीं कि मान्क तुम्हारे सम्बन्ध में क्या कर रहा है। किन्तु मै जानता हूँ कि ए० एम० जी० में उसका कुछ प्रभाव है। मै उससे कह दूंगा कि तुम पर विश्वास किया जा सकता है। सम्भव है वह तुम्हें कोई काम दिला सके।'

(११)

लैनी, बर्नहाड्ट मान्क तथा ट्रेजरी डिपार्टमेंट के वृहदाकार और प्रसन्नमुख मिस्टर मोरीसन अन्ना के मामले पर परामर्श करने के लिए बैठे। लैनी ने कहा, "उस लड़की के सम्बन्ध में मैं अभी तक पूरा पूरा निश्चय नहीं कर सका हूँ। राजनैतिक प्रश्नों पर वह एकदम मूक थी। सम्भव है वह अभिनय कर रही हो। यदि सचमुच वह अभिनय कर रही थी तो वह एक कुशल अभिनेत्री है। किन्तु एक बात स्पष्ट है। जिस समय उसने रात के समय मेरे साथ सोने का प्रस्ताव किया था, वह अभिनय न कर रही थी। वह इसके लिये पूर्ण रूप में तयार थी। वह सोच रही थी कि आज एक अच्छा शिकार उसके हाथ आ गया है।"

"मेरी धारणा थी कि हम लोगों को एक अच्छा सूत्र मिल गया है। किन्तु अब मैं समझता हूं कि उस लड़की का विश्वास करना ठीक न होगा।" मोरिसन ने अपनी सम्मति प्रदर्शित की।

"किन्तु आपको भय किस बात का है?" लैनी ने प्रश्न किया। "हिमलरी मुद्रा वाला गिरोह इस बात को तो जानता ही होगा कि हम लोग उसे पकड़ने के लिये प्रयत्नशील हैं। जजमान के गायब हो जाने के फलस्वरूप वे लोग और भी सतर्क हो गये होंगे। आपके अनुसार जजमान की भाँति दो अन्य एजेन्ट और भी पकड़े गये थे। यह सब उनको सतर्क कर देने के लिये पर्याप्त है। अब मान लीजिये कि यह लड़की उन्हीं लोगों ने भेजी है। अथवा मान लीजिये कि वह हमारा विश्वास प्राप्त करने के बाद रुपये के लोभ में हमें धोखा देने के लिये तयार हो जायगी। किन्तु इससे क्या हुआ? वह उतनी ही बातें जान सकेगी जितनी कि हम उसे बताएंगे।"

"किन्तु वह हमें जो कुछ बतायेगी उस पर क्या विश्वास किया जा सकेगा?'

"हम किसी की बात पर पूर्ण रूप में विश्वास नहीं कर सकते।" मान्क ने कहा। "हमें प्रत्येक बात की जांच परिस्थितियों के प्रकाश में करनी पड़ेगी। अच्छा तो यह है कि हम लोग उसे इतने वेतन पर रख लें कि उसका निर्वाह किसी प्रकार होता रहे। और इसके बाद यदि वस्तुतः वह उपयोगी प्रमाणित हो तो उसे बड़ा से बड़ा पारितोषिक दे दें।"

लैनी ने शंका प्रकट की—"मान लो वह जाली नोट बनाने वाली प्लेटों का पता लगा भी दे तो क्या हम लोग उन्हें अपने अधिकार में ला सकेंगे?"

"उसकी कोई चिन्ता मत करिये।" मोरीसन ने कहा। "यदि वह सांकेतिक शब्दों में लिखा हुआ एक पत्र हमें भेज देगी तो हम तुरन्त अपना आदमी वहां भेज कर प्लेटों को अपने अधिकार में लाने का प्रबन्ध कर लेंगे।"

"वह जाली मुद्रा का पता लगा भी ले तो आप उसे सीमा से बाहर किस प्रकार निकालेंगे?"

"उसकी हमें कोई आवश्यकता नही है।" ट्रेजरी विभाग के मिस्टर मोरीसन ने मुस्करा कर कहा। "हमारे आदमी उस जाली मुद्रा को एक ठेले में भरकर

किसी जङ्गल में ले जाएंगे और जङ्गली लकड़ी से एक अच्छी सी चिता बना कर सारे नोटों को उसमें डाल देंगे।"

"इन मामलों में आप लोगों की जानकारी मुझसे अधिक है। किन्तु इस समय तो एक दूसरा प्रश्न उपस्थित है।" लैनी ने कहा। "इस लड़की को सोवियत क्षेत्र में भेजा कैसे जाय? क्या हम लोगों को जाली पासपोर्ट बनाना पड़ेगा?"

"नहीं। उसे पासपोर्ट के लिए रूसी सैनिक अधिकारियों के पास आवेदन पत्र भेजना पड़ेगा। यह ठीक है कि रूसी लोग पासपोर्ट स्वीकृत करने के मामले में पूर्वापेक्षा अधिक सख्ती कर रहे हैं, फिर भी यह लड़की उन्हें विश्वास दिला सकती है। वह रूसी अंचल में रहने वाली है, वह यह बहाना बना सकती है कि उसके परिवार वाले रूसी अंचल में हैं। वहां से भाग कर उसने बड़ी गलती की। अमरीकी शरणार्थी शिविर में उसके साथ बड़ा दुर्व्यवहार हुआ। हम लोग उसे कुछ कम्युनिस्ट चुटकले सिखा देंगे। बस, वह पक्की कामरेड बन जायगी। रूसी लोग उसे पासपोर्ट अवश्य दे देंगे क्योंकि वे समझेंगे कि इस लड़की के रूप में उन्हें अमेरिका के विरुद्ध प्रचार करने का अच्छा साधन प्राप्त हो जायगा।"

"अच्छी बात है।" लैनी ने कहा। "आप लोग उस लड़की से कह सकते हैं कि उसे नौकरी मिल सकती है बशर्ते कि वह वेण्डेफुर्थ जाने का प्रबन्ध कर सके। उसे कुछ रुपया दे दीजिये ताकि वह पासपोर्ट के लिये आवेदन कर सके। पासपोर्ट मिल जाने पर आप उसे सारी बातें बता दीजिये। यदि वह इस प्रकार का काम करने में हिचके अथवा आप लोगों को ही कोई सन्देह हो जाय तो इस मामले को यहीं समाप्त कर दें। इससे किसी प्रकार की हानि होने की कोई सम्भावना नहीं है।"

"मान्क तुम्हारी क्या राय है?" मोरीसन ने प्रश्न किया।

"लड़की है तो तेज। वह काफी आकर्षक है और पुरुषों को आसानी से अपने फन्दे में ला सकती है। शायद वह उस गिरोह के किसी एक व्यक्ति को अपने जाल में फंसा कर कोई भेद की बात का पता लगा ले। मेरी तो यही राय है कि उसे जीवन-निर्वाह के लिये कुछ रुपया दे दिया जाय। उसे सांकेतिक शब्दावली भी बता दी जाय ताकि वह हम लोगों के साथ पत्र-व्यवहार कर सके। उससे यह

कह दिया जाय कि यदि वह हिमलरी-मुद्रा का पता लगा देगी तो उसे पारितोषिक के रूप में कई सौ डालर मिलेंगे, ब्रेटों का पता लगाने पर और भी बड़ा पारितोषिक और दक्षिणी अमेरिका जाने के लिये एक टिकट।"

"तुम हम लोगों का रुपया बड़ी निर्दयता से खर्च करा रहे हो, मान्क। किन्तु वाशिन्गटन वाले इसे स्वीकृत कर देंगे।" मोरीसन ने हंसते हुए कहा।

(१२)

लैनी हिमलरी-मुद्रा वाले गिरोह के सम्बन्ध में काफी लम्बे समय से विचार कर रहा था। कई बातें उसे परेशान कर रही थीं। उसने अपने मित्रों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा, "मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि थोड़े से जर्मन सोवियत क्षेत्र के अन्दर इतना बड़ा काण्ड कर रहे हों और वहां की सरकार को इसका कोई पता न हो! सम्भव है सरकार भी इस कांड में शामिल हो।—और एक प्रश्न यह भी है कि यदि थोड़े से सरकारी अधिकारी व्यक्तिगत रूप में उस मामले के साथ सम्बन्धित हैं तो वे रूसी अधिकारी है या जर्मन?"

"इसका निश्चय करना कठिन है।" मोरीसन ने कहा। "वह देश अभी तक अस्त व्यस्त स्थिति में है। बड़े बड़े प्रशासकीय मामले अवश्य रूसी सैनिक अधिकारियों के हाथ में हैं। किन्तु नागरिक मामले सम्भवतः जर्मन अधिकारियों के हाथ में ही होंगे—ठीक उसी प्रकार जैसे पूर्वी जर्मनी में हैं।"

"वे जर्मन क्या कम्युनिस्ट होंगे?"

"शायद। किन्तु इस सम्बन्ध में भी निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है क्योंकि रूसी लोग वहां सर्व-दलीय सरकार बनाने का दिखावा कर रहे हैं। यह स्वांग दिन पर दिन कमजोर पड़ता जा रहा है, किन्तु कुछ न कुछ तो है ही।"

"यदि इस कांड के साथ सचमुच कुछ सरकारी अधिकारी सम्बन्धित निकले तो स्थिति का क्या स्वरूप होगा? क्या उच्च अधिकारी इसे क्षमा कर देंगे? या वे इसे एक गम्भीर अपराध के रूप में देखेंगे?"

"मैं समझता हूं कि ब्रिटिश और अमरीकी मुद्रा का दिवाला निकालने की दिशा में होने वाले इस प्रयास से वे प्रसन्न ही होंगे।" मोरीसन ने मुस्करा कर कहा।

"क्या आपने इस सम्बन्ध में सोवियत सरकार के पास कोई प्रतिवाद भेजा है ?"

"प्रतिवाद भेजते भेजते तो हम लोग थक गए, मिस्टर बड। वहां से बराबर गोल मटोल उत्तर आता है। उन्हें झूठ बोलने में भी कोई संकोच नहीं होता। भले ही आपके पास प्रबल प्रमाण हों किन्तु वे अपनी ही कहे जाएंगे। फलस्वरूप अब हम लोग स्वयं अपने ऊपर निर्भर करने लगे हैं। हम किसी की कोई क्षति नहीं करना चाहते। किन्तु उस जाली मुद्रा और प्लेटों को जलाने की दिशा में हमें सफलता मिल गयी तो हम अपने परिश्रम को सार्थक मानेंगे।"

लैनी एक सुझाव दिया--"मैं एक बात सोच रहा हूँ। यदि बोल्किस्चरबण्ड के इन सदस्यों को किसी प्रकार डरा दिया जाय ताकि वे अपना सरोसामान लेकर जर्मनी में चले आवें तो जर्मनी में उनको पकड़ना अधिक आसान रहेगा।"

"कठिनाई यह है कि इन लोगों को डराया कैसे जाय ! फिर एक बात और भी है। यदि हम लोग रूसी अधिकारियों के पास अधिक स्पष्ट प्रतिवाद भेजने लगे तो इस बात की भी सम्भावना है कि सरकार स्वयं उस जाली मुद्रा को हथिया कर भीतर ही भीतर चलाने लगे और हम लोगों को लिख दे कि उसे इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। इसलिए हम लोगों ने यह निश्चय किया है कि हम लोग स्वयं इस मामले का भण्डाफोड़ करके कम्युनिस्टों को बाद में लिखेंगे।"

"क्या आपका अर्थ यह है कि आप उन लोगों को पकड़ने के लिये अपने आदमी चोरी से रूसी सीमा के पार भेज देंगे ?"

"नहीं इस प्रकार की अनुचित कार्यवाही की चर्चा भी न करनी चाहिये।" मोरीसन ने गम्भीर स्वर में कहा। किन्तु न जाने क्यों उस स्वर में विश्वास की झनकार उतनी स्पष्ट न थी। "हम लोग अभी तो जाली मुद्रा का पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। पता लग जाने पर भविष्य की कार्यवाही पर विचार किया जायगा।—किन्तु तब तक तो आप अमेरिका लौट जाएंगे और इस मामले के साथ आपका कोई सम्बन्ध न रहेगा।"

मोरीसन ने मुस्कराकर कर लैनी की ओर देखा और लैनी भी मुस्करा उठा।

अध्याय ११

● सम्मान में असम्मान के बीज ●

(१)

लैनी आर०आई०ए०एस० ("रिआस") में अपने काम पर लौट गया। बर्लिन में अपने पुराने मित्रों की खोज करने में लगा रहा। वह जब किसी जानकारी की तलाश करता उसके दो उपयोग अपनी दृष्टि के सम्मुख रखता—एक स्थानीय उपयोग के लिये और एक एडगरमीयर में अपने रेडियो स्टेशन के लिए। दो तीन दिन बाद मान्क का टेलीफोन आया।

"फर्डीनेण्ड का पिता इस समय यहीं है।" उसने टेलीफोन पर लैनी से कहा।

"सचमुच ?" लैनी ने आश्चर्य के साथ कहा। "किस क्षेत्र में ?"

"अपने क्षेत्र में।" मान्क ने उत्तर दिया।

"वह वहां क्या कर रहा है ?"

"अभी निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है। किन्तु सम्भव है कि वह अपने साधारण व्यापार के प्रसंग में आया हो।" मान्क ने इस 'साधारण' शब्द पर अत्यधिक जोर दिया और लैनी को यह समझने में देर न लगी कि इससे उसका अभिप्राय कर्ट के संगीत व्यापार से है। सम्भव है वह अपनी संगीतलिपियों के प्रकाशन के सम्बन्ध में किसी प्रकाशक की खोज में आया हो। हो सकता है कि उसे कोई प्रकाशक न मिला हो और वह अपने खर्च पर—अथवा हिमलरी मुद्रा खरीदनेवालों के खर्च पर—अपनी संगीतलिपियों के प्रकाशन की व्यवस्था कर रहा हो।

टेलीफोन पर मान्क की आवाज कह रही थी :—"हम लोगों को अभी इस बात का पता नहीं है कि वह कहां ठहरा है—केवल इतना ही ज्ञात हो सका है कि वह किसी मित्र के साथ रह रहा है। किन्तु उसने स्ट्रानकीम काफे में फर्डीनेण्ड के साथ भोजन किया था। शायद वह नियमित रूप में इस होटल में भोजन करने के लिये जाता है। तुम चाहो तो आज वहां जा सकते हो।

"किन्तु वह मुझ से बात न करेगा।"

"नहीं, तुम भूल रहे हो। इस सम्बन्ध में हम लोग पहले भी कुछ बातें कर चुके हैं।"

अचानक लैनी को याद आ गया कि पिछली मुलाकात के अवसर पर कर्ट ने उसे यह आश्वासन दिया था कि भविष्य में वह उसके प्रति अधिक सहानुभूति पूर्ण भावना रखने का प्रयत्न करेगा। मान्क ने टेलीफोन पर लैनी को संकेत कर दिया कि वह किसी प्रकार कर्ट को आतंकित करने का प्रयत्न करे।

(२)

लैनी पूर्वकल्पित योजना के अनुसार उस लोकप्रिय होटल में पहुँचा जहां आपके पास पैसा हो तो अब भी काफी अच्छा भोजन मिल सकता था। दोपहर का समय था और होटल में काफी भीड़ हो चुकी थी। लैनी ने बड़े बेहरे से कह दिया कि वह एक मित्र की खोज में आया है। इतना कहकर वह टहलने लगा। किन्तु मित्र का कोई चिन्ह न दिखाई दिया। अन्त में दरवाजे के पास एक कुर्सी पर बैठकर वह प्रतीक्षा करने लगा। सच्चे बुद्धिजीवियों की भाँति लैनी ने भी एक दीर्घकालीन भोजन की भूमिका बांधनी शुरू की। इन होटलों में आप बहुधा इस प्रकार के दृश्य देख सकते हैं। नाश्ते और काफी के साथ बेहरा "तामलिच" पत्र की ताज़ी प्रति ले आता है और काफी की चुस्कियों के साथ ग्राहक घण्टों इसके अध्ययन में तल्लीन रह सकता है।

किन्तु लैनी का ध्यान इस समाचार पत्र की ओर न था। वह दो एक पंक्तियाँ पढ़कर दरवाज़े की ओर ताकने लगता था। इस प्रकार प्रतीक्षा में लगभग एक घण्टा बीत गया। उसने देरी होते देख बेहरे को कुछ पुरस्कार देकर एक नया समाचार पत्र लाने के लिये कह दिया और फिर प्रतीक्षा करने लगा। अन्त में उसकी आशा पूर्ण हुई। उसने देखा कि दरवाजा पार करके कर्ट मेसनर भीतर प्रवेश कर रहा है। वह अकेला ही था। पूर्वी जर्मनी के निवासियों की भांति कर्ट का लम्बा छरहरा चेहरा गम्भीर था। लैनी तुरन्त अपनी कुर्सी छोड़कर कर्ट की ओर बढ़ा और प्रफुल्ल स्वर में अपना आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला, 'ओह

कर्ट ! कैसे सौभाग्य की बात है ! यहां बर्लिन में तुम क्या कर रहे हो, कर्ट ? अच्छा मेरे पास बैठो।"

कर्ट ने लैनी का अनुरोध स्वीकार करने में विशेष तत्परता न दिखाई। वह कुछ अनिच्छापूर्वक ही लैनी की कुर्सी की ओर बढ़ा।

लैनी ने बेहरे को नाश्ता लाने का आदेश दिया। कर्ट का एक हाथ बेकार हो चुका था। इसीलिये लैनी ने बेहरे को "राविमोली" नामक पदार्थ लाने के लिये कहा जो केवल एक हाथ से खाया जा सकता था। बेहरे के जाने के बाद लैनी ने कर्ट से कहा, "तुम से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूं कर्ट; मैंने इस आकस्मिक भेंट की कल्पना तक न की थी। अच्छा, अब बताओ, तुम यहां बर्लिन में क्या कर रहे हो ?"

"मैं यहां अपने संगीत-व्यापार के प्रसंग में आया हूं।"

"क्या यहां के प्रकाशक तुम्हारी रचनाएं छापने के लिये तैयार हैं ?"

"अभी कुछ निश्चित नहीं हुआ है।"

कर्ट के लिये संगीत से अधिक आकर्षक विषय दूसरा न था। किन्तु यह विषय भी उसकी गम्भीरता को भंग करने में असफल रहा। यह स्पष्ट था कि कर्ट लैनी के साथ खुल कर बातें नहीं करना चाहता। किन्तु लैनी हार मानने वाला व्यक्ति न था।

"मैं तुम्हारे सम्बन्ध में बहुधा सोचा करता हूं, कर्ट। मैं चाहता हुं कि हम दोनों की मित्रता फिर से स्थापित हो जाय। मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।"

"मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

"मैं जानता हूँ—किन्तु कर्ट, मुझे विश्वास नहीं होता। तुम्हारा खर्च कैसे चलता है ? इन परिस्थितियों में तुम्हारी जीविका का क्या साधन है ?"

"यह इस विषय की चर्चा के लिये कोई उपयुक्त स्थान नहीं है, लैनी।"

"मैं धीमे स्वर में बोलूंगा ताकि कोई हम लोगों की बातें सुन न सके। यदि तुम किसी को समीप आते देखो तो खखार कर मुझे इशारा कर देना। मैं तुरन्त

चुप हो जाऊंगा। मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताना चाहता हूं जिसका पता मुझे हाल ही में लगा है। मैं समझता हूँ तुमने 'काटिन' जंगल और उसके अन्दर होने वाले काण्ड की बात सुनी होगी?"

"हाँ, मैं उस कहानी से अवगत हूं।"

"मैं इससे सम्बंधित व्यक्तियों के नाम गुप्त रखूंगा। तुम जानते हो कि इस अपराध का दोष किन लोगों पर आरोपित किया गया था। और तुम यह भी जानते हो कि वे बेचारे एकदम निर्दोष थे। तुम जानते हो इस जघन्य कृत्य के लिये वस्तुतः कौन उत्तरदायी है। वहीं पर शायद कुछ और कब्रें होंगी जो अभी तक खोदी नहीं गयी हैं। उस घटना में तेरह चौदह हजार सैनिक अधिकारियों की हत्या हुई थी और इन्हें सामूहिक रूप में दफना दिया गया था। इस घटना से तुम्हें इस बात का अनुमान हो जाना चाहिये कि तुम किस प्रकार के व्यक्तियों के साथ काम कर रहे हो।"

"मुझे इस सम्बन्ध में किसी के परामर्श की आवश्यकता नहीं है।"

"तुम जानते हो कि वे लोग बातें बताने में कितने कुशल हैं। वे कला और संस्कृति के समर्थक हैं। वे सभ्यता को अपेक्षाकृत अधिक उत्कृष्ट धरातल पर ले जाने का भीमकाय प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु यह तो कहने की बातें हैं। वे वस्तुतः सारे संसार को एक सांचे में—अपने सांचे में ढालने मात्र के इच्छुक हैं। यही उनकी सारी सभ्यता संस्कृति का अंतिम ध्येय है। इस प्रकार की परिस्थिति में कला अथवा संस्कृति कैसे पनप सकती है? तुम एक स्वतन्त्र व्यक्ति रह चुके हो और उन दिनों तुमने जो कुछ लिखा था, अपने विश्वासों से प्रेरित होकर लिखा था। आज क्या तुम अपने विश्वासों के साथ बलात्कार कर सकते हो?"

"तुम्हें क्या मालूम कि मेरे विश्वास क्या हैं?"

"मैं तुम्हारी अन्तरात्मा को पहचानता हूँ। मैं जानता हूं कि वह बदल नहीं सकती। मैं वर्षों तक तुम्हारे साथ अत्यन्त घनिष्ट रूप में साथ साथ रहा हूं। हमारी मित्रता इतनी साधारण वस्तु नहीं है कि उसे एक क्षण में नष्ट कर दिया जा सके। साधनों के सम्बन्ध में, नीति के सम्बन्ध में हम दोनों के बीच भले ही मतभेद रहा हो; लक्ष्यों और आदर्शों के सम्बन्ध में हम सदा एकमत रहे हैं।

भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। आज तुम अपनी अन्तरात्मा को दबाने का जो प्रयत्न कर रहे हो उसमें तुम्हें क्षणिक सफलता भले ही मिल जाय, सदा के लिये तुम इसे दबाकर न रख सकोगे। मैं तुम से बार बार अनुरोध क्यों कर रहा हूं? केवल इस आशा से कि शायद तुम अब भी चेत जाओ।"

किन्तु पाषाण की भांति कठोर कर्ट के चेहरे पर किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं दिखाई दिया।

"लैनी, तुम कुशल वक्ता हो। किन्तु तुम भूल कर रहे हो। मैं अपने आप को भलीभांति समझता हूँ और मैं अपने काम को भी समझता हूँ।"

"तुम अपने आप को धोखा दे रहे हो। तुम अपने मन में यह आशा पाल रहे हो कि जिन नये व्यक्तियों के साथ तुमने अपना सम्बन्ध स्थापित किया है उन्हें तुम चकमा दे सकते हो। तुम यह समझते हो कि तुम ऊपर से उन लोगों के साथ मित्रता का प्रदर्शन करते हुए भीतर से उन्हे धोखा देने का प्रयत्न कर सकते हो। तुम्हारी धारणा है कि तुम जिस जीवन से घृणा करते हो उसी का अभिनय कर सकते हो। किन्तु यह असम्भव है। यह अभिनय तुम्हारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को नष्ट भ्रष्ट कर डालेगा। साधन ही तुम्हारा साध्य बन बैठेगा। तुम दूसरों को धोखा देने के स्थान पर स्वयं अपने आप को धोखा दे रहे हो।'

"तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है मानो तुम मेरे सम्बन्ध में मुझसे अधिक जानते हो। किन्तु तुमने मेरा जो चित्र खींचा है उससे मैं सहमत नहीं हो सकता।"

"मैं जानता हूं कि तुम्हारी मनोस्थिति इस समय क्या है। तुम अपने परिवार के सम्बन्ध में चिन्तित हो। किन्तु तुम इस बात को क्यों भूल जाते हो कि यहां परिवारों का लालन पालन आकस्मिक घटना नहीं रहती। यहां बच्चों को उनके माता पिता से छीन कर उन्हे प्रचार और अनुशासन के सांचे में ढाला जाता है। वे ठीक वैसे ही गीत गाते हैं जैसे कि उन्हें सिखाए जाते हैं—तुम इन गीतों से भलीभांति अवगत हो, मुझे इनका वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं। किन्तु थोड़ा सोचकर देखो। जब तुम्हारे बच्चे ये गीत गाते हुए तुम्हारे घर में आएंगे तुम्हें कैसा लगेगा? तुम्हारे बच्चों को यह शिक्षा दी जाएगी कि

जीवन में उनका प्रथम कर्तव्य यह है वे तुम पर जासूसी करें। शायद तुम सोच रहे हो कि तुम अपने बच्चों को सिखा पढ़ा कर ठीक कर लोगे। किन्तु तुम्हारी यह धारणा गलत है। छोटे छोटे बच्चों के कोमल मस्तिष्क एक बार जिस ढांचे में ढल जायंगे, आजीवन उसी में रहेंगे। किसी न किसी दिन अनजान में उनके मुंह से तुम्हारे विरुद्ध कोई ऐसी बात निकल जाएगी जो तुम्हारी जीवन लीला समाप्त कर देगी।

(३)

कर्ट थोड़ा सा खांसा और लैनी उसी क्षण चुप हो गया। बेहरे ने तश्तरियां मेज़ पर सजा दीं। तश्तरियां रखकर वह हट कर मेज से कुछ दूरी पर खड़ा हो गया। किन्तु वह जहां पर खड़ा था वहां से दोनों की बातें सुन सकता था। शायद वह इसी उद्देश्य से वहां खड़ा भी हुआ था। उन दिनों बेहरों द्वारा इस प्रकार की जासूसी एक साधारण बात थी। लैनी ने इस बात को लक्ष्य कर लिया और फलस्वरूप वह कर्ट के साथ कला-चित्रों की चर्चा करने लगा। वह तब तक कला चित्रों की बातें करता रहा जब तक कि बेहरे को किसी दूसरे ग्राहक के पास जाने के लिये बाध्य न होना पड़ गया। ज्यों ही बेहरा वहां से चला गया त्यों ही लैनी फिर से अपने पहले वाले विषय पर आ गया :

"कर्ट, मैं पश्चिमी संसार की ओर से तुमसे यह अनुरोध कर रहा हूं। पश्चिमी संसार को तुम्हारी प्रतिभा की आवश्यकता है; वह उसे मिलनी चाहिए। तुम पश्चिम के व्यक्ति हो, तुम्हारे सारे विचार और आदर्श पश्चिमी सभ्यता से प्रसूत हैं। आज तुम जिस संसार में रह रहे हो उसमें गेटे या बीथोवेन जैसे व्यक्तियों के लिये क्या स्थान है? क्या इन महान प्रतिभाओं को ऊपर से यह आदेश मिलता था कि वे क्या लिखें और किस प्रकार लिखें? इस बात को मैं और तुम दोनों ही जानते हैं कि जर्मन सभ्यता स्वतन्त्रता की परिकल्पना पर प्रतिष्ठित है। जर्मन विज्ञान भी इस विचार-स्वातंत्र्य पर आधारित है। जर्मनी के कट्टर से कट्टर प्रतिक्रियावादी शासकों ने भी कभी विचार स्वातन्त्र्य में हस्तक्षेप करने का साहस न किया था। किन्तु तुम जिस संसार में वास कर रहे हो उसकी क्या स्थिति है? मुझे इस सम्बन्ध में विशेष कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है; तुम स्वयं

जानते हो। तुम्हारे संसार के मालिक जर्मनी के विज्ञान से केवल राकेट, जेट वायु यान, अणुबम आदि चाहते हैं। उनकी दृष्टि में प्रगति की बस यही एक कसौटी है। वे रूर क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त करके उसे इन हथियारों के उत्पादन का एक विशाल कारखाना बना देना चाहते हैं। रूर पर अधिकार कर लेने के बाद फ्रांस और ब्रिटेन उनकी मुट्ठी में आ जायंगे। और इसके बाद जर्मनों का क्या हाल होगा? वे क्रीत दासों के रूप में परिवर्त्तित हो जायेंगे।"

"यह स्थान इस विषय की चर्चा के लिये उपयुक्त नहीं है।" कर्ट ने फिर प्रतिवाद किया। इस बार उसके स्वर में तीव्रता थी।

"मैं धीरे धीरे बोल रहा हूँ, कोई हमारी बातें सुन नहीं रहा। मैं तुमसे बार बार अनुरोध कर रहा हूं। किसलिये? केवल इसलिये कि तुम फिर से पश्चिमी संसार में लौट आओ। जब तक तुम अपने पैरों पर न खड़े हो जाओगे तब तक तुम्हारे परिवार के भरण-पोषण का खर्च मैं स्वयं वहन कर लूंगा। मैं तुम्हें यह प्रमाणपत्र दे दूंगा कि तुम किसी प्रकार की राजनैतिक क्रियाशीलता के साथ सम्बन्धित नहीं हो। तुम एक बार फिर एक महान कलाकार बन सकोगे; अभी तो तुम एक कठपुतली-कलाकार ही हो—ठीक शोस्टाकोविच की भाँति।"

"मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मुझे इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम—"

"मैं तुम्हें निश्चित सर्वनाश से बचाने का प्रयत्न कर रहा हूं। वे लोग तुम्हें यहां रहने की अनुमति दे चुके हैं किन्तु यह निश्चित समझो कि यह अन्तहीन रूप में नहीं चल सकता। वे लोग फिलहाल जर्मन लोगों को सन्तुष्ट रखने की नीति अपना रहे हैं। किन्तु जब जर्मन लोग भलीभांति उनकी मुट्ठी में आ जायंगे तब वस्तुस्थिति कुछ दूसरी ही होगी। तुम्हारा नम्बर आने में देर न लगेगी। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि वे तुम्हारे पिछले कार्यकलाप से भलीभांति अवगत हैं। वे यह भी जानते हैं कि तुम्हारे मित्रों में कौन कौन थे—ठीक वही व्यक्ति जिनको वे हृदयसे घृणा करते थे और अब भी करते हैं। वे तुम्हारे ऊपर छिपे छिपे नजर रख रहे हैं। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे मित्रों में कौन कौन हैं। किन्तु इतना निश्चित है कि उनमें से एक जासूस है। जब

समय आएगा वे लोग तुम्हें पकड़ कर गुप्त न्यायालय के सम्मुख खड़ा कर देंगे। तुम्हें यंत्रणा-गृह में बंद कर दिया जायगा और तुमसे वे बातें कबूल करवा ली जाएंगी जो कि आवश्यक समझी जायेंगी। तुम्हें बाध्य होकर यह सब कबूल करना ही पड़ेगा। केवल इतना ही नहीं वे जिन जिन व्यक्तियों से अपना पिण्ड छुड़ाना चाहेंगे उनको भी तुम्हारे मामले में लपेट लेंगे और तुम्हे इन बेचारों का भी अपने साथ सर्वनाश करानेके लिये बाध्य होना पड़ेगा। तुम्हारे बच्चों को किसी सरकारी खेत में काम करने के लिये भेज दिया जाएगा और तुम्हारी पत्नी को कोयले की किसी खदान में। जहां तक तुम्हारा प्रश्न है तुम्हे किसी गैस-गृह में भेजकर मार डाला जायगा अथवा किसी दीवार के सहारे खड़ा करके तुम्हारे शरीर को गोलियों से छेद दिया जायगा।"

"चुप!" कर्ट ने धीरे से कहा। बेहरा फिर अपने पुराने स्थान पर आकर खड़ा हो गया था। लैनी चुप हो गया। कर्ट ने इशारे से बैहरे को बुलाया और अपना बिल मांगा।

"भोजन ठीक नहीं बना क्या, हजूर?" बेहरे ने कुछ आश्चर्यमिश्रित स्वर में कहा क्योंकि तश्तरियां ज्यों की त्यों पड़ी थीं।

"नहीं, भोजन में कोई दोष नहीं है। मेरी तबियत ठीक नहीं है।"

लैनी ने अपना बटुआ निकालकर बिल का भुगतान कर दिया और बेहरे के लिये कुछ पुरस्कार भी छोड़ दिया। कर्ट बिना और कुछ कहे होटल के बाहर चला गया।

(४)

लैनी ने मान्क के पास जाकर सारी बात बतायी। उसने कहा, "मैंने कर्ट को डरा तो काफी दिया है किन्तु देखो इसका क्या फल निकलता है।" मान्क ने लैनी को यह समाचार दिया कि उसने उस लड़की को नौकरी दे दी है और वह हर प्रकार का काम करने के लिये तयार है। वह सोवियत सैनिक अधिकारियों के पास वेन्डेफुर्थ में अपने परिवार वालों के पास जाने की अनुमति प्राप्त करने के लिये गयी है। यह समाचार प्राप्त करके लैनी को संतोष हुआ। वह "आर० आई० ऐ० एस" में अपने काम पर लौट गया। तीन चार दिन बाद मान्क का

टेलीफोन आया। उसने लैनी से कहा, "वह सफल हो गयी।" लैनी के लिये इतना संकेत पर्याप्त था। यह बात पहले ही निश्चित हो चुकी थी कि अन्ना भी पत्र-व्यवहार करते समय सांकेतिक भाषा का व्यवहार करेगी। किन्तु इस बात की भी सम्भावना थी कि वह सदा के लिये विलीन हो जाय और उसका कोई चिन्ह न रह जाय। वस्तुतः यह ज्वालामुखी के गर्भ में कूदने की भाँति ही था।

इस समय बर्लिन की स्थिति बड़ी विचित्र थी। अधिकांश नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। सबसे अधिक क्षति व्यापारिक और औद्योगिक अंचलों ने सही थी। ३४० वर्गमील के क्षेत्र में इस समय लगभग ३० लाख व्यक्ति वास कर रहे थे। उन्हे अपनी रोटी की चिन्ता में आकाश पाताल एक करना पड़ता था। इधर नगर में नित्य सैकड़ों नये आगन्तुकों का तांता लगा रहता था।

नगर के चार भाग कर दिये गये थे और चारों पर भिन्न-भिन्न सेनाओं का सैनिक शासन था। एक प्रकार की नागरिक सरकार की स्थापना कर ली गयी थी। इस सरकार का गठन नागरिकों ने स्वयं किया था। जनता में अधिकांश व्यक्ति गणतांत्रिक समाजवादी थे और उन्होंने एक गणतांत्रिक समाजवादी व्यक्ति को अपने मेयर के रूप में चुना था। यह व्यक्ति था अर्नेस्ट रायटर। किन्तु सोवियत क्षेत्र के अधिकारियों ने सहयोग करने से इनकार कर दिया था क्योंकि यह व्यक्ति सोवियत विरोधी था। फलस्वरूप एक समझौता करना आवश्यक हो गया था। अर्नेस्ट रायटर भी सहकारिणी थीं एक महिला। सोवियत क्षेत्र ने इन्हें मान्यता देना स्वीकार कर लिया था। परिणाम यह हुआ कि गर्व-दर्प-पूर्ण जर्मनी की राजधानी बर्लिन ने अपने मेयर के रूप में एक महिला को नियुक्त किया—स्वेच्छा से नहीं, बाध्य होकर।

बर्लिन जर्मनी की राजनैतिक राजधानी तो था ही, वह उसकी सांस्कृतिक राजधानी भी था। सोवियत अधिकारियों की योजना यह थी कि वृहदाकार प्रचार कार्य द्वारा बौद्धिक रूप में जर्मन जनता को पराभूत किया जाय। रेडियो बर्लिन उनके हाथ में था ही। इसके अतिरिक्त उन्होंने पोट्सडम, लेपजिग, और ड्रेस्डन में भी नये रेडियो स्टेशन स्थापित कर लिये थे।

अमेरिकन लोगों को रूसी अधिकारियों की इस गहरी योजना का पता लगने

में देर लगी। किन्तु अन्त में उनकी दृष्टि में यह बात स्पष्ट हो गयी कि उनके सामने एक दूसरा युद्ध आ उपस्थित हुआ है। यह युद्ध शस्त्रों का न होकर शब्दों का था। फलस्वरूप अमेरिकन लोगों ने भी एक छोटे से टेलीफोन एक्सचेञ्ज को बदल कर रेडियो स्टेशन के रूप में परिवर्तित कर लिया था। यह रेडियो स्टेशन ही आर० आई० ए० एस० ("रिआस") के नाम से प्रसिद्ध था। रेडियो स्टेशन छोटा सा था किन्तु वह जर्मन जनता को वाह्य संसार की गतिविधि से अवगत कराते रहने का पूरा पूरा प्रयत्न करता रहता था। हां, एक बात अवश्य थी। अमरीकी क्षेत्र के प्रधान थे जेनरल क्ले और उन्होंने इस बात का कड़ा आदेश दे रखा था कि रेडियो पर रूसियों के विरुद्ध किसी प्रकार का प्रचार न किया जाय और उनके प्रति पूर्ण नम्रता का प्रदर्शन किया जाय।

फलस्वरूप आर० आई० ए० एस की ध्वनि "मानवतावादी" थी – वह किसी जाति, दल अथवा वर्ग के प्रति अनुचित पक्षपात न दिखाता था। उसके प्रोग्राम सभी प्रकार के लोग सुना करते थे। रूसी सैनिकों को उच्च अधिकारियों द्वारा यह आदेश था कि वे इसके प्रोग्राम न सुना करें। किन्तु वे भी इस नियम को भंग करते रहते थे। धीरे धीरे आर० आई० ए० एस की ख्याति चारों ओर फैलने लगी। यहां तक कि वाशिंगटन की कांग्रेस में राजनीतिज्ञों को इसके लिये कुछ अधिक रुपया स्वीकृत करने के लिये बाध्य होना पड़ा।

(५)

युद्ध के समय में लैनी को जर्मनी में एक ऐसा अमरीकी सर्जेण्ट मिल गया था जो रूसी भाषा धाराप्रवाह रूप में बोल लेता था। वह रूसी युद्ध-बन्दियों के साथ प्रश्नोत्तर करने के लिये रखा गया था। उसका नाम था बोरिस शब। लैनी इससे मिला। दोनों ने पिछले दिनों की बातें कीं और अपना आनन्द प्रदर्शित किया।

शब ने लैनी को बताया कि युद्ध समाप्त होने पर रूसियों ने ब्रिटिश तथा अमरीकी सैनिकों के प्रति जो सौहार्द प्रदर्शित किया था वह अब एकदम समाप्त हो गया है और रूसियों की दृष्टि भंगी बिलकुल बदल गयी है। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में जिस समय जर्मन सेनाएं रूसी भूमि पर वायु के वेग से बढ़ रही थीं

बहुत से रूसी सैनिक बन्दी बना लिये गए थे। कुछ ने जान बूझ कर आत्म समर्पण कर दिया था क्योंकि वे लड़ना न चाहते थे; किन्तु कुछ ने दृढ़तापूर्वक जर्मन सेनाओं का विरोध किया था और आत्म समर्पण तभी किया था जब उनके पास हथियार न रह गए थे। बाद में अमरीकी सेनाओं ने इन रूसी बन्दियों का उद्धार किया था।

इन रूसी बन्दियों में लगभग तीन सौ रूसी अफसर भी थे जिन्हें युद्ध-बन्दी-शिविरों में रख दिया गया था। वे लोग यहां से छूट कर फिर से अपनी सेना में चले जाने के इच्छुक थे और सोवियत अधिकारियों के आदेश की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता के साथ कर रहे थे। किन्तु सोवियत अधिकारियों ने इनके प्रति किंचित मात्र भी दिलचस्पी न दिखाई; इनसे मिलने तक से इनकार कर दिया। इधर जिन रूसी नागरिकों को जर्मनों ने पकड़ कर दास-मजदूर-शिविरों में डाल दिया था वे भी अपने स्वदेश को लौटने के इच्छुक थे। किन्तु मन ही मन वे आतंकित भी थे। वे अमरीकी सैनिकों से इस सम्बन्ध में पूछ-ताछ किया करते थे और प्रत्येक बार उन्हें यही उत्तर मिलता था कि उन्हें लौट कर रूस जाना ही पड़ेगा। अमरीकियों ने रूसी अधिकारियों से इस सम्बन्ध में बातचीत की थी और उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि रूसी शरणार्थियों के लिये चिन्ता का कोई कारण नहीं है। रूस में पहुँचने पर उनके साथ भद्र व्यवहार किया जायगा।

फलस्वरूप बेचारे रूसी शरणार्थी वापस भेज दिये गए। किन्तु रूस में उनके साथ बड़ा बुरा व्यवहार हुआ। इनमें से कुछ वहां से भाग कर फिर अमरीकी क्षेत्र में चले आए। शब ने इन लोगों से मिल कर इनकी दयनीय गाथा सुनी। योरोप में युद्ध समाप्त होने के बाद के चार मासों में लगभग ५० लाख रूसी बंदी जर्मनी तथा इटली से वापस भेजे गए थे। इनमें से अधिकांश को सशस्त्र सैनिकों के पहरे में सैकड़ों मील पैदल चलना पड़ा था। कभी कभी इन्हें लारियों में भूसे की भांति भर कर भेजा जाता था। अधिकांश अफसरों के तमगे तथा वर्दियां छीन ली गयी थीं। इनसे भयानक ढंग से अनवरत रूप में प्रश्नोत्तर होता रहता था। प्रश्नपत्र में १५३ प्रश्न थे जो उस अभागे व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करते थे। कुछ बन्दियों को रूसवाले ले तो गए किन्तु बाद में उनका कोई पता न चल सका।

कुछ रूसी सैनिक अब भी उन बन्दी शिविरों में पड़े हुए थे जहां पहले जर्मन सैनिकों को रखा गया था। इस समय इन बंदी शिविरों में इतनी गन्दगी थी कि वहां बैठना कठिन था। अर्ध बुभुक्ष बन्दियों को भांति भांति की बीमारियां भी सता रही थीं। इन बन्दियों को उत्तरी रूस तथा साइबेरिया की खदानों में काम करने के लिये भेज दिया गया था। अधिकांश बन्दियों को साइबेरिया में तीन से पांच वर्ष के कठोर श्रम का दण्ड दिया गया था और उन्हें इस आशय का एक प्रतिज्ञा-पत्र भी लिख कर देना पड़ा था कि सजा समाप्त होने पर वे किसी से इस बात की चर्चा न करेंगे कि साइबेरिया में उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार हुआ।

इतने में कुछ लोग भाग कर बर्लिन चले आए थे। कुछ लोग पेरिस चले गए थे। शब ने इन लोगों से मिलकर एक डायरी तैयार की थी। इस डायरी में छै बन्दियों की आत्मकथाएं थीं। ये आत्मकथाएं बाद में एडगरमीयर में आ गयी थीं। एक रूसी सैनिक दुर्भाग्यग्रस्त होने के पूर्व मेजर जेनरल ग्राचेव नामक एक उच्च सैनिक अधिकारी का मोटर ड्राइवर था। वह मेजर जेनरल ग्राचेव को मोटर में ड्रेस्डेन से मास्को तक ले गया था। २७ अप्रैल १९४६ को मास्को पहुंच कर उसने जो दृश्य देखा था वह इस प्रकार है :—

"अखिल-रूस-कृषि-प्रदर्शनी के पास मैंने स्त्रियों की एक लम्बी कतार देखी। कतार के दोनों ओर राइफल लिये हुए सैनिक चल रहे थे। जब मेरी गाड़ी इस कतार के समीप पहुँची मेरा हृदय सिकुड़ कर बिन्दु मात्र रह गया। ये स्त्रियां बोरे के लंहगे और कनवास के ब्लाउज पहने हुए थीं; इनके जूते भी लकड़ी के थे। भूरे रंग के चीथड़ों से इन्होंने अपने सिर बांध रखे थे। इनकी संख्या डेढ़ दो सौ के लगभग थी। मैंने जानना चाहा कि ये कौन हैं और इनकी यह दशा क्यों की गयी है तो मुझे उत्तर मिला कि इन्होंने मातृभूमि के साथ विश्वासघात किया है। अब इन्हें पुनर्निर्माण कार्य में लगा दिया गया है। ये युद्ध के समय शत्रुओं द्वारा बन्दी बना ली गयी थीं और अब निष्कासित होकर वापस आयी हैं। इस प्रकार की निष्कासित युद्ध बन्दिनी स्त्रियों की आज कल यहां बहुतायत हो गयी है।"

(६)

लैनी आर० आई० ए० एस कार्यालय में एडगरमीयर से प्रसारित होने वाला शान्ति-प्रोग्राम नियमित रूप में सुनता रहता था। इसके लिए उसने एक शार्ट वेव रेडियो लगा लिया था। सप्ताह में एक बार वह लारेल को टेलीफोन करके उसकी कुशल पूछ लेता था। उसका बच्चा स्वस्थ था।

किन्तु अब रह रह कर उसका मन क्षुब्ध हो उठता था। वह घर जाकर लारेल और अपने बच्चे को देखने के लिए व्याकुल हो रहा था। इसके अतिरिक्त वह अमेरिका पहुंच कर वहां की जनता को बर्लिन की वर्त्तमान स्थिति से अवगत कराना चाहता था। रूसियों की ओर से प्रचार-युद्ध भयानक रूप में चल रहा था। लैनी अमेरिका के अधिकारियों को वस्तुस्थिति के प्रति सजग करके उनसे यह अनुमति प्राप्त करने के लिये उत्सुक हो रहा था कि आर० आई० ए० एस को भी इस बार युद्ध में भाग लेने दिया जाय—रूसी प्रचार का मुंहतोड़ उत्तर दिया जाय।

फलस्वरूप वह वायुयान द्वारा रवाना हुआ। रास्ते में वह एक दिन के लिये लंदन में ठहर गया ताकि अपने मित्र अल्फ्रेड पामेराय नीलसन के साथ बातें कर सके। अल्फ्रेड ने लैनी से मिलकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। वह लेबर पार्टी का सदस्य था और इस समय ब्रिटेन में लेबर पार्टी ही सत्तारूढ़ थी। अल्फी लेबर पार्टी की ओर से ब्रिटेन के संसद का सदस्य भी था। उसने लैनी को बताया कि किस प्रकार सत्तारूढ़ होने के बाद लेबर पार्टी देश के अन्दर अहिंसक उपायों द्वारा समाजवाद की स्थापना कर रही है। आधारभूत उद्योग धंधों का राष्ट्रीय-करण हो गया है और शीघ्र ही चिकित्सा व्यवस्था का राष्ट्रीयकरण होने वाला है ताकि ब्रिटेन में कोई भी बीमार व्यक्ति औषधि अथवा सुश्रूषा के अभाव में न मरने पावे।

लैनी ने कहा, "अहिंसक उपायों द्वारा समाजवाद के सम्बन्ध में बोलशेविक लोग क्या कहेंगे? किन्तु उनकी भविष्यवाणी चरितार्थ कहां हुई? लेनिन ने कहा था कि राज्य संस्था का धीरे धीरे तिरोधान हो जायगा। किन्तु वह दिन पर दिन और भी कठोर होती जा रही है।"

अल्फी ने कहा, "एक अन्तर और भी है। उन लोगों ने लाखों व्यक्तियों की हत्या की है। हम लोगों ने सामाजिकीकरण के तारतम्य में एक बूंद रक्त भी नहीं बहाया।"

(७)

लैनी के मन में यह जानने की उत्सुकता थी कि ब्रिटेन के कुलीन लार्ड लोग इस सामाजिकीकरण अभियान के प्रति क्या दृष्टिकोण रखते हैं। इसके लिए उसे एक बहाना भी मिल गया। उसने निश्चय किया कि वह इर्मा को उसकी नवविवाहिता पुत्री का कुशल समाचार देने के लिए जायगा। फलस्वरूप वह इर्मा से मिलने के लिए विकथार्प कैसेल गया। किन्तु वहां उसे पता चला कि लार्ड विकथार्प और लेडी इर्मा इस समय लन्दन में हैं। लैनी ने इर्मा को टेलीफोन किया। उसने लैनी को आग्रह के साथ भोजन का निमन्त्रण दिया।

लैनी ने इर्मा को फ्रांसिस का समाचार दिया। उसने बताया कि वह पहले की भांति ही आदर्शवादिनी बनी हुई है और तृतीय महायुद्ध को रोकने के लिए भरसक प्रयत्न कर रही है। लार्ड विकथार्प ने कहा कि यह उसकी भूल है, बोल-शेविक लोग विश्व-युद्ध के लिए कृतसंकल्प हैं और उन्हें युद्ध के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय द्वारा संतुष्ट करना सम्भव नहीं है।

लैनी लार्ड विकथार्प को उस समय से जानता था जब वे गुलाबी गालों वाले एक नवयुवक थे। अब तो वे एक प्रौढ़ मध्यवयस्क व्यक्ति थे। वह मुस्करा कर रह गया।

(८)

लार्ड विकथार्प एक कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। ब्रिटेन में इस समय लगभग आठ सौ लार्ड थे किन्तु इनमें से अधिकांश राजनीति में कोई दिलचस्पी न रखते थे। एक प्रकार से यह ठीक भी था क्यों कि सबके बैठने के लिए हाउस आव लार्ड्स में स्थान भी न था। वहां ढाई तीन सौ व्यक्तियों के बैठने के लिए स्थान था। किन्तु लार्ड विकथार्प राजनीति को एक गम्भीर वस्तु के रूप में लेते थे। वे अपना भाषण बड़ी सावधानी के साथ तयार करते थे, उसे बार बार पढ़ कर संशोधित करते थे और इसके बाद हाउस आव लार्ड्स में उसे सुना कर उसे समाचार पत्रों

में प्रकाशित होने के लिए भेज देते थे। किन्तु स्थानाभाव के कारण समाचार पत्र वाले उसका अधिकांश भाग काट छांट डालते थे और एकाध अंश ही प्रकाशित करते थे।

बहुत दिनों की बात हुई। इर्मा के साथ लैनी की शादी होना एक प्रकार से निश्चित हो गया था। किन्तु बाद में यह शादी न हो सकी क्यों कि इर्मा एडोल्फ हिटलर की प्रशंसक हो गई थी। उसका विश्वास था कि हिटलर एक समाजवादी है और वह बड़ी बड़ी जायदादों का राष्ट्रीयकरण करना चाहता है। इस प्रकार इर्मा का विवाह लैनी के साथ न होकर लार्ड विकथार्प के साथ हो गया। हिटलर के सम्बन्ध में लार्ड विकथार्प की धारणा भी ऐसी ही थी। उनका विश्वास था कि वह योरोप में चाहे जो कुछ करे, ब्रिटिश साम्राज्य में कोई हस्त-क्षेप न करेगा। बाद में उनके भ्रम का निवारण बड़ी निर्दयतापूर्वक हुआ।

किन्तु अब इर्मा और विकथार्प स्टालिन के सम्बन्ध में दुबारा किसी प्रकार के भ्रम में न रहना चाहते थे। उन्होंने स्टालिन के "आश्वासनों" पर विश्वास करने से साफ इन्कार कर दिया था। लैनी को इससे आश्चर्यमिश्रित संतोष ही हुआ।

उस दिन अमेरिका से लैनी के पास एक पत्र आया था। यह पत्र फ्लोरीडा के एक किसान का था। इसने लैनी को विश्व शान्ति का शत्रु बताते हुए झिड़-कियां दी थीं। उसने विश्वशांति के शत्रुओं की एक तालिका बनाई थी—मैका-थर, च्यांग काई शेक, इन्डोचीन के फ्रांसीसी, जावा के डच, ईरान और अरब की तेल कम्पनियां, तुर्क, ग्रीक नाजी, जेनरल डे गाल, पोप, फ्रैन्को, सलाजार और लैनी बड।

लैनी ने इस तालिका को देखा तो उसके मन में यह विचार आया कि वह एक दूसरे प्रकार की तालिका बना सकता है। इस तालिका में विश्व शांति के शत्रुओं के रूप में स्टालिन से लेकर उन सब अत्याचारियों के नाम दिये जा सकते हैं। जिनने "गायापायू", "चेका", "एन० के० वी० डी०" और "एन०-वी० डी०,' में समय समय पर काम किया था। इस तालिका में काटिन जङ्गल के हत्यारों के नाम भी आएंगे और उन रूसी अधिकारियों के भी जो वार्सा के

बाहर चुपचाप खड़े रहे थे जब कि नाजी लोगों ने खुले आम हजारों यहदियों की हत्या कर दी थी। इस तालिका में उन व्यक्तियों के नाम भी आएंगे जो अपने लाल साम्राज्य के अन्दर दो करोड़ व्यक्तियों को दास-मजदूर शिविरों में बन्द किए हुए हैं।

लैनी के मन में यह विचार आया कि वह फ्लोरीडा के इस किसान को लिख दे कि वह महाकवि टेनीसन के "लोटस ईटर्स" की भाँति संसार से अवकाश ग्रहण करके स्वप्निल जगत की तंद्राच्छन्न छायाओं में विचरण करते हुए फ्लोरीडा में बैठा रहे। लैनी ने टेनीसन की "लाटर्स ईटर्स" कविता का एक रूपक बनाकर उसे उस किसान के पास भेजने का निश्चय किया था। रूपक इस प्रकार था —

स्वप्न देश के वासी

●

स्वप्न देश के तरु कुञ्जों में विचरण करते घूमेंगे।
गिरिश्रृंगों में देवों से हम मधुमय होकर झूमेंगे।
अरे जगत की चिन्ता गाथा, मानव के दुख का विस्तार।
छोड़ सदा के लिये इसे हम, मधु प्यालों को चूमेंगे॥

●

बैठ यहां के मधुवन में हम जब देखेंगे ऊसर खेत।
अनावृष्टि, जलप्लावन भीषण, भूकम्पन या जलती रेत।
महामारियों की आंधी में उड़ता जीवन का मृदु फूल।
सबल तरंगाघातों से आकुल होता सागर का कूल॥

●

घुमड़ घुमड़ कर घिरते बादल, उल्काओं का वज्र निनाद।
रणक्षेत्रों की शोणित धारा, राजनीति का वाद विवाद।
धू धू कर नगरों का जलना; जनता का आतंक प्रलाप।
शिशुओं की विस्फारित आँखे, विधवाओंका आर्त्त विलाप॥

●

बैठ यहां के गिरि शृंगों पर देखेंगे कौतुक अनमोल।
देखेंगे बस बैठ यहाँ से और हंसेंगे हम जी खोल।
जब जी ऊबेगा इन सबसे, क्षण भर को सो जाएंगे।
जागेंगे तब नया तमाशा जग में होता पायेंगे॥

●

(९)

लैनी लन्दन से न्यूयार्क के लिए रवाना हुआ। मार्ग उसका पूर्व परिचित था। आइसलैंड और न्यूफाउण्डलैण्ड होकर जिस वायुयान में लैनी यात्रा कर रहा था उसमें एक अमरीकी लेफ्टीनेन्ट कर्नल डेविड क्रीचेव्स्की भी यात्रा कर रहा था। वह अमरीकी सेना में बिजली इञ्जीनियर था। उसका जन्म रूस में हुआ था किन्तु बाद में उसने अमरीकी नागरिकता स्वीकार कर ली थी। उसे बर्लिन और जर्मनी के अमरीकी क्षेत्र के बीच की दो केबिल लाइनें सुधारने का काम सौंपा गया था और इस समय वह छुट्टी लेकर घर जा रहा था। केबिल लाइनें सोवियत क्षेत्र से होकर गयी थीं। इसी लिए क्रीचेव्स्की को अपने काम के प्रसंग में अनेकानेक कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ता था। रूस वालों की इच्छा यह थी कि अमरीकियों को यहां से भगा दिया जाय और इन केबिल लाइनों को समाप्त कर दिया जाय। इसके लिए वे भांति-भांतिके उपाय काम में ला रहे थे—अपहरण और हत्या तक।

इन केबिल लाइनों के किनारे किनारे सात "रिपीटर स्टेशन' थे। प्रत्येक स्टेशन में एक दो मंजिला मकान था। ऊपर की मञ्जिल में अमरीकी रहते थे और नीचे की मञ्जिल में रूसी—एम० वी० डी० (रूस की खुफिया पुलिस) के एजेन्ट। ये अमरीकियों की चाल चलन पर बड़ी कड़ी निगरानी रखते थे। किसी भी समय ये इनकी मञ्जिल में खाना तलाशी के लिये आ उपस्थित होते थे। ये किसी कमरे में ताला न लगाने देते थे। ताला लगा भी दिया जाता तो ये इसे मौका पाकर तोड़ डालते थे।

क्रीचेव्स्की ने लैनी से कहा, "जब तक हमारी यह केबिल लाइन बन्द न हो जायगी तब तक रूसी लोग चैन न लेंगे। मेरा तो विश्वास है कि ये लोग हमें बर्लिन से भगा कर ही दम लेंगे।"

"नहीं, ये लोग इतनी दूर तक जाने का साहस न करेंगे" लैनी ने उत्तर दिया।

"किन्तु यदि इन्होने सड़कें और केबिल लाइनें बन्द कर दीं तो क्या होगा? बर्लिन में अमरीकी अंचल में पहुँचने के लिए रूसी क्षेत्र पार करना पड़ता है। क्या इन लोगों के साथ जो समझौता हुआ है उसमें ऐसी कोई शर्त है कि हमें अपने अंचल तक जाने के लिये रास्ता देना पड़ेगा?"

लैनी को इस प्रश्न पर सन्देह था। उसने कहा, "कानून के अनुसार तो वे रास्ता देने के लिए बाध्य हैं। किन्तु वे कह सकते हैं कि हमारे कानून आप के कानून से भिन्न हैं। जो भी हो, मेरा विश्वास है कि हम लोग डर कर भागने वाले नहीं हैं। और रूसी लोग हमारे अंचल का रास्ता भले ही बन्द कर दें तथापि हम अपनी जनता को भूखों न मरने देंगे।"

(१०)

अमेरिका पहुँच कर लैनी ट्रेजरी बिल्डिन्ग में मिस्टर टर्नर से मिलने के लिए गया। उसने उन्हें जर्मनी में अपनी यात्रा के अनुभवों से अवगत कराया। सारी बातें सुनने के बाद टर्नर ने कहा, "मिस्टर बड, आपके पास घन्टा दो घन्टा समय हो तो मैं आपको एक मजेदार चीज़ दिखा सकता हूँ।"

लैनी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। टर्नर उसे लेकर एक कमरे में गया जहां कई छोटे छोटे मेजों पर एक एक विचित्र प्रकार की मशीन रखी हुई थी। प्रत्येक मेज के सामने एक कुर्सी पड़ी हुई थी। मशीनों पर किसी धातु का बना हुआ एक ढक्कन सा लगा था जो सामने की ओर से खुला हुआ था। ऊपर एक बल्ब था जिसे जलाने पर बड़ी तेज रोशनी निकलती थी। यह रोशनी नीचे लगे हुए दो कांच की प्लेटों पर पड़ कर सामने के ढालू ढांचे पर झलकती थी। यह मशीन माइक्रोफिल्म पढ़ने के लिये बनाई गयी थी। टर्नर ने अपनी जेब से एक छोटा सा लिफाफा निकाला। इसमें सिल्लाइड के कई छोटे छोटे टुकड़े पड़े हुए थे। प्रत्येक टुकड़े में एक फोटो था—उसका आकार डाक टिकट के बराबर था। जब इसे उन कांच के रोलरों में डाल कर बिजली जलायी गई, सामने वाली ढालू प्लेट पर पुस्तक के आकार का एक पृष्ठ आ गया। इसे आसानी के साथ पढ़ा

जा सकता था। इसे पढ़ कर दाहिनी ओर थोड़ा सा सरका देने पर दूसरा पृष्ठ आ जाता था। इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता था।

टर्नर ने लैनी को बताया कि वह हिमलरी मुद्रा पर स्काटलैण्ड यार्ड द्वारा भेजी गयी गुप्त रिपोर्ट है। सिलूलाइड के इन टुकड़ों पर लिखा हुआ था "हिमलरी मुद्रा—साचसेन हासेन।" स्काटलैण्ड यार्ड ने हिटलर के जमाने की जर्मन खुफिया पुलिस "एस० डी०" के गुप्त रेकर्डों का अध्ययन करने के बाद हिमलरी मुद्रा पर यह गुप्त रिपोर्ट तयार की थी। इस रिपोर्ट को तयार करते समय स्काटलैंड यार्ड के लोगों ने हिटलर के साचसेन हासेन बन्दी-शिविर के उन अभागे व्यक्तियों के साथ भी बात चीत की थी जिन्हें हिटलर ने ब्रिटिश जाली नोट बनाने के लिये नियुक्त किया था। रिपोर्ट काफी लम्बी थी—लगभग तीस पृष्ठ। लैनी को इसे पढ़ने और आवश्यक नोट तयार करने में लगभग दो घन्टे का समय लग गया।

यह एक विचित्र कहानी थी, अपने ढङ्ग की एकदम अनूठी। संसार के इतिहास में इसका जोड़ खोजने के लिए सोवियत खुफिया पुलिस "एम० वी० डी०" के रेकर्डों को देखने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। किन्तु एम० वी० डी के रेकर्ड तो अभी प्राप्त नहीं हैं। साचसेन हासेन काण्ड का अध्ययन करने पर इस बात का पता चला था कि किस प्रकार अद्भुत दूरदर्शिता और सूक्ष्मता के साथ जाली मुद्रा बनाने की व्यवस्था की गयी थी। इस जाली मुद्रा के उत्पादन के लिए कुशल कारीगरों और विशेषज्ञों को न जाने कहां कहां से खोज निकाला गया था। किन्तु इस प्रसंग में केवल यहूदियों को चुना गया था। कारण यह था कि काम पूरा होते ही इन्हें मार डालने की योजना थी ताकि इस जाली मुद्रा का रहस्य सदा के लिए विस्मृति के गर्भ में छिप जाय।

इन अभागे कारीगरों को वेतन न दिया गया था। इन्हें किसी पद पर नियुक्त न किया गया था। इन्हें पकड़ कर सीधे साचसेन हासेन बन्दी शिविर में भेज दिया गया था। इसके बाद इन्हें बन्दी शिविर के ब्लाक नं० १९ में बन्द कर दिया गया था। शिविर के अन्य बन्दियों के साथ इनका कोई सम्बन्ध न रखा गया था। अन्य बन्दियों की तुलना में इनके साथ अच्छा व्यवहार होता था; इन पर अत्याचार न किया जाता था। इन्हें अपेक्षाकृत अच्छा भोजन दिया

जाता था और इन्हें शीत से पीड़ित न होना पड़ता था। किन्तु इन्हें बाहर वालों के साथ बातचीत न करने दी जाती थी। इस दिशा में कठोर से कठोर नियंत्रण रखा जाता था। यदि कोई बन्दी यक्ष्मा अथवा अन्य किसी व्याधि से पीड़ित हो जाता तो उसे शिविर के बाहर ले जाकर गोली मार दी जाती। शिविर में किसी भी अपराध के लिये एक ही दण्ड था—मृत्यु।

बन्दी शिविर के इस अभागे दल का नाम था—"सोण्डेरकोमाण्डो हिमलर" युद्ध समाप्त होने के समय इसमें लगभग एक सौ चालीस कारीगर थे। ये लोग केवल जाली नोटों का ही उत्पादन न करते थे; ये हर प्रकार के जाली कागज, टिकट, दिस्तावेज, बाण्ड, प्रमाणपत्र, परिचय-पत्र आदि वे सभी वस्तुएं जो जर्मनों के उपयोग में आ सकती थीं—बनाते थे। इस दल का मुख्य अधिकारी था जर्मन खुफिया पुलिस का प्रधान हेडरिक। मई १९४२ में हेडरिक की हत्या होने के बाद इस दल को अर्न्स्ट कात्टेनब्रनर के अधीन कर दिया गया था। संक्षेप में जाली मुद्रा बनाने वाले इस अनुष्ठान को "आर० एच० एस० ए०" के नाम से पुकारा जाता था।

कुशल कारीगर जाली नोट छापने के लिए प्लेटें बनाते थे और इन प्लेटों से नोट छापने के लिये चार मोनोपोल मशीनें लगी हुई थीं। नोट छापने के लिये एक विशेष प्रकार का कागज व्यवहार किया जाता है जो हाथ से बनाया जाता है। यह बाहर से आता था। हर प्रकार के नोट छपते थे — पांच, दस, बीस और पचास पाउण्ड तक के। जिन कागजों पर नोट छपते थे उन्हें रेसेरेई नामक स्थान में काटा जाता था और फिर इन्हें सोर्टियेरेई में जांच के लिए भेज दिया जाता था। अत्यन्त सूक्ष्म विद्युत यन्त्रों से प्रत्येक नोट की जांच की जाती थी। प्रथम वर्ग के नोट विदेशों में जर्मन राजदूतावासों के पास भेज दिये जाते थे, द्वितीय वर्ग के नोट गुप्तचरों को दे दिये जाते थे। इस जांच कार्य में जो नोट सब से अधिक निकृष्ट निकलते थे उन्हें सुरक्षित रख लिया जाता था। यह योजना थी कि ब्रिटेन को जीत लेने के उपरांत वहीं पर इनका उपयोग किया जायगा।

ब्रिटिश लोगों की रीति के अनुसार नोटों की गड्डियां बनाकर इन्हे तार से बांध दिया जाता था। यदि नोटों में कोई दोष रह जाता तो उसे तार से ढक देने

का प्रयत्न किया जाता। ब्रिटिश लोगों की भांति नोटों के एक ओर का कोना अवश्य फाड़ दिया जाता। इसके अतिरिक्त नोटों को कुछ मैला भी कर दिया जाता था ताकि वे आवश्यकता से अधिक नये न प्रतीत हों। कुल मिला कर जर्मनों ने १३४, ६०९, ९४५ पाउण्ड के जाली नोट छापे थे। सन् १९४४ में जर्मनों ने अमरीकी डालर छापने का प्रयत्न शुरू किया था। यह प्रयत्न पूर्णतया सफल भी हो गया था और २२० प्रारम्भिक प्रयोगों के उपरान्त उन्हें अपनी दक्षता पर संतोष हो गया था। किन्तु इसके पूर्व कि अमरीकी मुद्रा किसी बड़े पैमाने पर छापी जाय युद्ध समाप्त हो गया—और युद्ध की समाप्ति उस रूप में न हुई जिस रूप में जर्मन नेताओं ने कल्पना की थी।

(११)

जिस समय मित्र राष्ट्रों की सेनाएं जर्मनी में तेज़ी के साथ बढ़ रही थीं और जर्मनी की पराजय निश्चित सी प्रतीत होने लगी थी जाली नोट बनानेवाले इस कारखाने को साचसेनहासेन शिविर से हटाकर माथाओसेन बन्दी-शिविर में भेज दिया गया था। यह बन्दी-शिविर डैन्यूब नदी के तट पर स्थित था। यह स्थान अपेक्षाकृत निरापद समझा गया था। किन्तु जेनरल पैटन की सेनाएं शीघ्र ही इस ओर भी बढ़ने लगी थीं। फलस्वरूप कारखाने को यहां से भी हटाना पड़ा था। इस बार उसे रेडेल-जिप नामक ग्राम में रख दिया गया था। किन्तु कारखाना मुश्किल से खड़ा हो पाया था कि मित्र राष्ट्रों की सेनाएं समीप आ धमकीं और सारी योजना नष्ट भ्रष्ट हो गयी। जर्मनों ने शीघ्रता पूर्वक मशीनों को उखाड़ कर पास की एक झील में फेंक दिया। जाली मुद्रा के बण्डल भी लोग इधर उधर ले भागे। वे एक सौ चालीस यहूदी कारीगर जिन्होंने इस जाली मुद्रा का उत्पादन किया था मौत के घाट उतार देने के लिये लारियों में भरकर एक अज्ञात स्थान की ओर रवाना कर दिए गए।

किन्तु दो कारीगर न जाने कैसे भाग निकले। शेष बन्दियों ने पहरेदारों से अनुनय विनय करना शुरू किया। दो बन्दियों के भाग जाने से इस रहस्य का पर्दा फाश तो हो ही गया, अब व्यर्थ में खून खराबी करने से क्या लाभ! अमरीकी सेनाएं आ रही हैं और वे निर्दोष व्यक्तियों के इस रक्तपात को क्षमा न

करेंगी। सम्भव है दण्ड के रूप में उन सारे पहरेदारों को मार डाला जाय जो इन निर्दोष व्यक्तियों के रक्त से अपने हाथ रंगेंगे। इसके अतिरिक्त एक बात और भी थी। जाली मुद्रा बनाने के लिये कुछ असली ब्रिटिश और अमरीकी मुद्रा नमूनों के रूप में इन कारीगरों को दी गयी थी। इसका एक अच्छा खासा भाग कारीगरों ने कहीं पर छिपा रखा था। पहरेदार लोग व्यर्थ में रक्तपात न करके इस रुपये में हिस्सा क्यों न बटावें? युद्ध तो आखिर समाप्त हो ही रहा है। वे इस रुपये के साथ नौ दो ग्यारह क्यों न हो जायं?

फलस्वरूप पहरेदारों ने इन यहूदी कारीगरों की हत्या न की और रुपया लेकर अपने अपने घर की ओर रवाना हो गए। बाद में ब्रिटेन के स्काटलैण्ड यार्ड से विशेषज्ञ लोग आए और उन्होंने इन अभागे कारीगरों को खोजकर "हिमलरी मुद्रा" का पूर्ण इतिहास तयार किया।

स्काटलैण्ड यार्ड की रिपोर्ट में सबसे अधिक मनोरञ्जक बात यह थी कि जर्मन लोगों ने अपने इस गंदे कृत्य को छिपाने के लिये मित्र राष्ट्रों पर इसी प्रकार का अभियोग लगाया था। जिस समय ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओं ने उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण किया था गोबेल्स के प्रचार मन्त्रालय की ओर से बड़े बड़े शीर्षकों के साथ यह समाचार प्रकाशित किया गया था कि "अलजियर्स में जाली नोटों की बाढ़ सी आ गयी है।" यह समाचार सर्वप्रथम रोम के एक पत्र में प्रकाशित हुआ था। इसके अनुसार अंगरेज और अमरीकी सेनाएं अपने साथ काफी बड़ी तादाद में जाली नोट लायी थीं। यह अभियोग लगाया गया था कि पांच पांच फ्रांक के ये जाली नोट स्वयं बैंक आफ इङ्गलैण्ड में छापे गए थे।

लैनी ने उत्तरी अफ्रीका में अपने निवास काल के समय यह कहानी सुनी थी किन्तु उसे विश्वास न हुआ था। अब उसे वास्तविक रहस्य का पता चला। उसने टर्नर का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तो उसने संक्षेप में इतना ही कहा, "यह तो नाजी लोगों का एक पुराना हत्कण्डा है। अब इसे रूस वालों ने अपना लिया है। जब कभी रूस वालों की ओर से यह प्रचार होने लगे कि अमरीकी सेनाएं युद्ध के अन्तर्राष्ट्रीय नियमों को भंग कर रही हैं, गैस अथवा कीटाणु-

युद्ध पर उतर आयी हैं, अथवा इसी प्रकार का कोई अन्य जघन्य कृत्य कर रही हैं तो तुम तुरन्त समझ जाना कि वे लोग स्वयं यह सब कर रहे हैं अथवा करने की तयारी कर रहे हैं।"

(१२)

लैनी प्रेसीडेण्ट ट्रूमन से मिलना चाहता था। किन्तु पता लगाने पर उसे ज्ञात हुआ कि प्रेसीडेण्ट छुट्टी पर गए हुए हैं। फलस्वरूप उसने ह्वाइट हाउस को अपना संदेश भेज दिया और होटल में उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही समय बाद प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के सेक्रेटरी ने लैनी को टेलीफोन किया कि प्रेसीडेण्ट की इच्छा है कि आप अण्डर सेक्रेटरी आफ स्टेट मिस्टर एचीसन से मिल लें। फलस्वरूप लैनी ने एक टैक्सी ली और स्टेट डिपार्टमेंट की ओर रवाना हुआ। स्टेट डिपार्टमेंट में लैनी मिस्टर एचीसन से मिल कर काफी प्रभावित हुआ। मिस्टर एचीसन एक भद्र और नम्र व्यक्ति थे और लैनी की भांति ही छोटी छोटी मूछें रखते थे। वे पहले हारवर्ड में वकालत करते थे। लैनी का इनके साथ यह प्रथम परिचय ही था किन्तु प्रथम दृष्टिपात में ही दोनों एक दूसरे को समझ गए। डीन एचीसन मिस्टर ट्रूमन की नीति के कट्टर समर्थक थे। वे इस बात के लिये कृत-संकल्प थे कि स्वतन्त्र संसार को कम्युनिज्म द्वारा निगले जाने से बचाना ही होगा। उनका विश्वास था कि तुर्की और ग्रीस को सामरिक सहायता देने से रूस के साथ युद्ध होना अनिवार्य न हो उठेगा। बल्कि इन्हें सामरिक सहायता न देने का अर्थ होगा इनका रूस द्वारा निगल लिया जाना।

लैनी ने मिस्टर एचीसन को अपनी बर्लिन यात्रा का वृत्तान्त सुनाया। उसने उन्हें बताया कि रेडियो बर्लिन इस समय अपने भूतपूर्व मित्रों के विरुद्ध भयानक रूप में विषवमन कर रहा है—विशेष कर अमेरिका के विरुद्ध। मिस्टर एचीसन को यह बताना आवश्यक भी था क्योंकि उन्होंने तथा उनके उच्च अधिकारी जेनरल मार्शल ने ही बर्लिन में अमरीकी रेडियो "आर० आई० ए० एस" को यह आदेश दे रखा था कि वह सोवियत रूस के विरुद्ध किसी प्रकार का प्रचार कार्य न करे। मिस्टर एचीसन की भाव भंगिमा से यह प्रकट होता था कि वे एक कुशल और सतर्क व्यक्ति हैं। उनके प्रत्येक शब्द से इसी प्रकार की ध्वनि

निकलती थी। इसलिये जब उन्होंने लैनी को उत्तर देते हुए कहा कि इस समय सोवियत रूस के साथ हमारी मित्रता है और दूसरी ओर जर्मनी पराभूत शत्रु ही है इसलिये आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने मित्र के प्रति अधिक से अधिक भद्रता का प्रदर्शन करें और शत्रु की ओर संयत विवेक का, तो लैनी को कोई आश्चर्य न हुआ।

मिस्टर एचीसन एक अच्छे श्रोता थे। उन्होंने लैनी की बातों को ध्यान पूर्वक सुना और इसके बाद कहा, "विश्वास रखिये मिस्टर बड, हम लोग इन बातों से अनभिज्ञ नहीं हैं। हम इन नयी परिस्थितियों से पूर्णतया अवगत हैं हम इनके प्रति उदासीन भी नहीं हैं। किन्तु किसी भूतपूर्व मित्र राष्ट्र के प्रति अपनी नीति बदलना एक गुरुत्वपूर्ण कार्य है और कोई निश्चय करने के पूर्व हमें समस्या पर भली भाँति विचार करना आवश्यक होगा। सोवियत रूस हमारे विरुद्ध जो कार्यवाही कर रहा है उसकी ओर हमने उसका ध्यान आकर्षित करते हुए अपना प्रतिवाद भेज दिया है। इस प्रकार के कोई प्रतिवाद भेजे जा चुके हैं। धीरे धीरे रेडियो तथा समाचार पत्रों द्वारा जनता को भी इस नयी वस्तु स्थित से परिचय प्राप्त हो जाएगा। जनमत को बदलने में समय लगता है और यह तो आप मानेंगे ही कि जब तक जनमत हमारे पक्ष में नहीं हो जाता तब तक हम ऐसे गुरुत्वपूर्ण विषय पर कोई निश्चय नहीं कर सकते। यह ठीक है कि सरकार का काम जनता का नेतृत्व करना है किन्तु वह नेतृत्व इतनी दूर न चला जाना चाहिए कि जनता के साथ सरकार का सम्पर्क नष्ट हो जाय।"

"आप ठीक कहते हैं, मिस्टर एचीसन।" लैनी ने उत्तर दिया। "मैंने भी यह शिक्षा एक महान शिक्षक से प्राप्त की थी। यह शिक्षक और कोई नहीं प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ही थे। उन्होंने मुझसे कहा था "मैं उतनी ही दूर जा सकता हूँ जितनी दूर जनता मुझे जाने देगी!" किन्तु मिस्टर एचीसन, दो दिन आगे या दो दिन पीछे, हमें जर्मन लोगों को अपने भाग्य निर्णय के लिये स्वतन्त्र करना ही होगा। उस समय उन्हें पूर्व और पश्चिम, इन दो में से एक को चुनना होगा। सोवियत रूस जर्मनी के मस्तिष्क पर अधिकार

प्राप्त करने के लिए प्राणपण से चेष्टा कर रहा है। उसके पास विशाल बर्लिन रेडियो है। इसके अतिरिक्त उसने प्राप्य प्रतिभाएं खरीदने की दिशा में कोई कसर नहीं उठा रखी। सैकड़ों कुशल कारीगर उसने खरीद लिये हैं और उनसे अपना काम करवा रहा है। आज बर्लिन रेडियो से सुन्दर से सुन्दर संगीत प्रसारित होता है, मनोरञ्जन के लिये अच्छे से अच्छे प्रोग्राम प्रसारित होते हैं। किन्तु इस संगीत और मनोरञ्जन के समारोह के साथ साथ हम लोगों के विरुद्ध भयानक असत्य का प्रचार भी होता रहता है। यह प्रचार पूर्वी और पश्चिमी, दोनों क्षेत्रों में होता है। सोवियत रूस की ओर से यह घोषणा होती रहती है कि जर्मन जाति की एकता, स्वतन्त्रता, गणतन्त्र तथा शान्ति का सबसे बड़ा समर्थक सोवियत रूस है। यह देखा गया है कि जर्मनी की लगभग दो तिहाई जनता बर्लिन-रेडियो सुनती है। ब्रिटिश और अमरीकी रेडियो को शेष एक तिहाई श्रोताओं पर निर्भर करना पड़ता है। हमें इस स्थिति को बदलने का प्रयत्न करना चाहिए, मिस्टर एचीसन। यह आसानी के साथ हो सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हमारे रेडियो को बर्लिन-रेडियो के मिथ्या प्रचार का खण्डन करने की अनुमति दे दी जाय।"

मिस्टर एचीसन ने कहा, "विश्वास रखिये मिस्टर बड, हम लोग इस विषय पर काफी गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही इस दिशा में कोई न कोई निश्चय हो जाएगा।"

लैनी इस मुलाकात के बाद बाहर निकला तो उसने देखा कि कई प्रेस-रिपोर्टर हाथ में कागज पेंसिल लिये हुए उत्सुकतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। लैनी को आश्चर्य हो रहा था कि इन्हें इस मुलाकात का पता कैसे लग गया। उसने प्रेस रिपोर्टरों से कहा, "मिस्टर एचीसन ने मुझसे क्या कहा यह मैं आपको नहीं बता सकता किन्तु मैं आपको यह बता सकता हूं कि मैंने उनसे क्या कहा।'

प्रेस रिपोर्टर इस समझौते पर राज़ी हो गये।

अध्याय १२

● आहत प्रेमी की नारकीय यातना ●

(१)

लैनी वायुयान द्वारा न्यूयार्क पहुंचा। वह शान्ति-परिवार को परेशान न करना चाहता था। इसलिये मोटर के लिये टेलीफोन न करके वह टैक्सी द्वारा एडगरमीयर की ओर रवाना हुआ। लारेल आतुरतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। लारेल के अतिरिक्त उस नवजात शिशु का आकर्षण भी था जो अनन्त के वक्ष को चीरकर एक नक्षत्र की भाँति एकदम आकस्मिक रूप में आ टपका था और पृथिवी रूपी अपने नये वासस्थान में सृष्टि के अन्त तक रहने के लिये कृतसंकल्प प्रतीत होता था। यह लैनी की तृतीय संतान थी। किन्तु लैनी को प्रकृति के इस रहस्य पर अब भी आश्चर्य होता रहता था कि वह एक निष्प्राण मांस पिण्ड में प्राणप्रतिष्ठा किस प्रकार कर लेती है। लैनी को ऐसा लगता था कि प्रकृति की यह प्रणाली निरापद नहीं है। कभी कभी उसके मन में यह भावना पैदा होती थी कि यदि प्रकृति शिशु-जन्म के मामले में उससे सलाह लेती तो वह इससे कहीं सुन्दर और निरापद प्रणाली बता देता।

जो भी हो, लैनी की बच्ची एक बहुत बड़े उत्तरदायित्व के रूप में उपस्थित थी। उसकी देख भाल आवश्यक थी। उसका नाम भी लारेल रखा गया था—बेबी लारेल। किन्तु यह स्पष्ट था कि आगे चल कर इसे संक्षिप्त करके केवल 'बेब' कर दिया जायगा। बच्चों के नामों के साथ सदा ऐसा ही होता है। इस बच्ची के अतिरिक्त लैनी का ज्येष्ठ पुत्र भी था। उसकी आयु इस समय केवल पांच वर्ष की थी और परिवार में वह जूनियर के नाम से प्रसिद्ध था।

लैनी के पहुंचते ही शान्ति-परिवार के सारे सदस्य उसका स्वागत करने के लिं आ पहुंचे। उन्होंने उसके मुंह से बर्लिन का वृत्तान्त सुना। बाद में लैनी ने शान्ति परिवार के रेडियो पर भी एक छोटी सी वार्त्ता दी। इस वार्ता में उसने जाल

मुद्रा आदि की कोई चर्चा न की किन्तु "आर०आई०ए०एस०" के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी दी। कारण यह है कि जर्मनी का यह रेडियो स्टेशन शान्ति-परिवार के रेडियो स्टेशन से बहुत कुछ मिलता जुलता था। दोनों के आदर्श और उद्देश्य एक से ही थे। इस वार्त्ता में लैनी ने स्पष्ट रूप में यह घोषणा की कि सोवियत रूस विश्व-शान्ति नहीं बल्कि युद्ध चाहता है। सदा की भांति इस बार भी लैनी के पास प्रतिवादों की बाढ़ आ गयी। कम्युनिस्टों और कम्युनिस्टों से सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों ने लैनी के इस वक्तव्य के विरोध में जो पत्र भेजे उनमें बहुत से पत्र काफी मनोरञ्जक थे।

(२)

एक पत्र बड़ा विचित्र आया। इस पर "व्यक्तिगत" की मोहर लगी हुई थी और हस्ताक्षर के स्थान पर "रोटरडम" लिखा हुआ था। रोटरडम उस जगह का नाम है जहां हैन्सी का जन्म तथा लालन-पालन हुआ था और जहां से उसने लगभग तीस वर्ष पूर्व लैनी को प्रथम पत्र लिखा था। उस पत्र में उसने लिखा था "मेरी आयु इस समय बारह वर्ष की है और मैं अपनी वायलिन पर बीथोवेन-गीत का अभ्यास कर रहा हूं।" तब और आज में आकाश पाताल का अन्तर हो गया है। आज हैन्सी को बीथोवेन के सारे गीत कण्ठस्थ हैं और वह प्रत्येक गीत को अपनी वायलिन पर निष्प्रयास रूप में बजा सकता है।

जो भी हो, इस पत्र में उसने लैनी को लिखा था कि वह उससे मिलना चाहता है। उसने टेलीफोन करके इस मुलाकात के लिये समय निश्चित कर लेने का आश्वासन भी दिया था। संध्या के समय उसका टेलीफोन आया भी। लैनी को टेलीफोन पर हैन्सी की आवाज पहचानने में देर न लगी। उसने अपने पुराने मित्र का अभिवादन किया।

"कहां और किस समय तुम मुझसे मिलना चाहते हो?"

"कल दो बजे, लेक्सिन्गटन एवेन्यू, ३२ वीं सड़क। याद रहेगा न?"

हैन्सी ने बिना और कुछ कहे लाइन काट दी। लैनी को इससे कोई आश्चर्य न हुआ क्योंकि पहले ही इस बात का निश्चय हो चुका था कि हैन्सी अधिक से अधिक सतर्कता रखने का निश्चय करेगा।

नियत समय पर लैनी उपरोक्त स्थान पर जा उपस्थित हुआ। हैन्सी भी थोड़ी ही देर बाद दूसरी ओर से आता हुआ दिखाई दिया। वह अपनी आंखों पर मोटे कांच का धूप का चश्मा लगाए हुए था। लैनी ने उसे अपनी गाड़ी में बैठा लिया और दोनों शहर के बाहर किसी निर्जन क्षेत्र की खोज में आगे बढ़े। हैन्सी चुपचाप बैठा हुआ था। वह सड़क के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न करना चाहता था।

गाड़ी जब शहर के बाहर निकल कर एक निर्जन स्थान में आ गयी तब हैन्सी ने धीरे से कहा, "लैनी, मैं तो इस समय नर्क भोग रहा हूँ।" उसके स्वर में विषाद की तीक्ष्ण छाप थी।

"तुम्हें किसी बात का पता चला?"

"बेस एक दिन अपनी मोटर लेकर लान्ग आइलैण्ड गयी थी! वहां बिजली के तार बनाने का एक कारखाना है। कारखाने के किसी कर्मचारी ने उसे माइक्रो-फिल्म का एक पैकेट दिया। यह पैकेट लेकर बेस नगर के एक कम्युनिस्ट फोटोग्राफर के पास गयी थी।"

"अच्छा! हमारी सरकार इस सम्बन्ध में क्या करने जा रही है?"

"सरकार इस गिरोह के पीछे पड़ी हुई है। वह इन लोगों को गिरफ्तार करना चाहती है। और इस मामले में मुझे सरकार की यथासम्भव सहायता करनी है।"

लैनी को कोई आश्चर्य न हुआ। उसने इसी प्रकार की स्थिति की कल्पना की थी। उसने अपने प्रिय मित्र और बहनोई की परेशानियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रूप में विचार किया था। फिर भी उसने हैन्सी को बढ़ावा देते हुए कहा, "हैन्सी मैं जानता हूं तुम्हारे लिये यह कार्य कितना कठिन है। तुम्हे ठीक वही काम करना पड़ रहा है जो कि कम्युनिस्ट लोग किया करते हैं। किन्तु हिम्मत मत हारो। अपने आप को लोहे की भांति मजबूत बना लो। तुम अपने देश और सारे स्वतंत्र संसार का एक महत्वपूर्ण काम कर रहे हो।"

कहने को तो लैनी यह सब कह गया किन्तु उसके शब्दों में वजन न था। वह अपने आप को ही लोहे की भांति कहाँ बना पाया था? उसके हाथ कांप रहे थे और उसे स्टीयरिन्ग सम्हालने में काफी कठिनाई हो रही थी।

"जिस स्त्री को मैं हृदय से प्यार करता हूं उसी को गिरफ्तार कराने का प्रयत्न कर रहा हूँ। हाय रे भाग्य! यह एक भयानक बात है लैनी। इस समय भी मुझे उसके साथ प्रेम का अभिनय करना पड़ता है। और सच तो यह है कि इस समय मेरी अन्तरात्मा दो भागों में विभक्त हो गयी है। एक भाग उसे प्रेम करता है, दूसरा उसे घृणा करता है। इन दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के बीच मैं अपने अन्तर में विभक्त बैठा हूँ।"

"मैं जानता हूँ, हैन्सी।" लैनी ने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा। "किन्तु यह मत भूलो कि वह मेरी बहन है। उसके प्रति मेरे हृदय में भी कोई कम ममता नहीं है।"

"बहन और पत्नी अथवा प्रेमिका में बड़ा अन्तर होता है लैनी। मुझसे यह यातना सहन नहीं होती। मुझे ऐसा लगता है कि यह काम अपने हाथ में लेकर मैंने गलती की। इसके लिये मुझे एक कुशल अभिनेता होना चाहिये था।"

"प्रत्येक कलाकार किसी न किसी रूप में एक अभिनेता होता है। तुम महान संगीतज्ञों की स्वरलिपियां बजाते समय उनका अभिनय ही तो करते हो। कभी तुम मोजार्ट बन जाते हो, कभी बीथोवेन; कभी पागानीनी, कभी क्रेसलर। यह भी तो एक प्रकार का अभिनय ही है।"

"वह अभिनय तो थोड़े ही समय तक सीमित रहता है किन्तु यह अभिनय सदा अन्तहीन रूप में चलता रहता है। मैं एक भयानक असत्य का अभिनय कर रहा हूं। मेरा सम्पूर्ण जीवन एक विराट असत्य में परिवर्तित होता जा रहा है। मुझे अपने आप से घृणा होने लगी है।"

"हैन्सी तुम जानते हो कि मुझे वर्षों तक इसी प्रकार का अभिनय करना पड़ा है।"

"इसीलिये तो मैं तुम्हारे पास आया हूँ। तुम इस काम में पारंगत हो, तुम्हारे चरित्र में दृढ़ता है, तुम्हारा मस्तिष्क साफ है। किन्तु मैं एक निर्बल व्यक्ति हूं। मेरी सम्पूर्ण स्नायु-मण्डली इस भयानक बोझ के कारण चूर-चूर हुई जा रही है।"

(३)

लैनी को हैन्सी की मनोस्थिति समझने में कोई कठिनाई न हुई। वह उसे एक लम्बे समय से जानता था। हैन्सी यहूदी था। उसके हृदय में जो संघर्ष चल रहा था वह उसके व्यक्तिगत स्वभाव का परिचायक तो था ही, उसकी जातिगत विशेषताओं का भी परिचायक था। यह यहूदी जाति पिछले तीन चार हजार वर्षों से सत्य और असत्य की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों के संघर्ष का अनुभव करती आ रही है। लैनी ने हैन्सी को सदा प्रोत्साहन दिया था, उसकी प्रतिभा के विकास में हर प्रकार की सहायता पहुंचाई थी। इसके बाद उसने अपनी सौतेली बहन बेस के साथ हैन्सी का परिचय कराया था और अपने उच्च कुलीन परिवार के विरोध के बावजूद दोनों की शादी करा दी थी।

इस प्रकार विपत्ति के समय हैन्सी स्वाभावतः अपने मित्र और शुभचिन्तक लैनी की ओर आकर्षित होता था। इस बार भी उसने लैनी के सामने अपना हृदय उड़ेल कर रख दिया। हैन्सी की कठिनाई कल्पित न थी, वह सचमुच वास्तविक और कठोर थी। वह एक नैतिक व्यक्ति था और असत्य से घृणा करता था। किन्तु इस समय उसे असत्य का एक अन्तहीन जाल बिनने के लिए बाध्य होना पड़ गया था। वह लैनी के पास इसी आशा से आया था कि उसकी बातों से उसके टूटते हुए मनोबल को कुछ सहारा मिले।

हैन्सी अपनी पत्नी बेस से प्रेम भी करता था और घृणा भी। यह एक विरोधाभास था। किन्तु लैनी ने उसे येन केन प्रकारेण यह विश्वास दिला ही दिया कि इस विरोधाभास में कोई विशेष विचित्रता नहीं है; संसार में यह होता ही रहता है।

अनुभवी लैनी ने कुछ देर बाद हैन्सी से प्रश्न किया, "सुनो हैन्सी। तुम ने एक बार मुझे बताया था कि जब तुम लोग रूस गए थे तब बेस को मास्को की लेनिन अकादमी में भर्ती होने का अवसर दिया गया था। यह एक ऐसा सौभाग्य है जो साधारणतया अमरीकी लोगों को नहीं मिल पाता। क्या बेस ने तुम्हें कभी बताया कि वहां पर उसे किस प्रकार की शिक्षा दी गयी थी?"

"वहां पर उन लोगों ने उसे लेनिन के आर्थिक और राजनैतिक सिद्धांतों की शिक्षा दी थी।"

"क्या बेस ने तुम्हें यह नहीं बताया कि वहां पर उसे जासूसी करने की कला भी सिखाई गई थी ?"

"नहीं, उसने यह नहीं बताया।"

"बताती भी कैसे ? उसकी प्रथम शिक्षा यह थी कि वह किसी भी अवस्था में पार्टी की भीतरी बातें किसी को न बताए और लेनिन के सिद्धांतों के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान अपने तक ही सीमित रखे। बेस यदि सचमुच कम्युनिज्म की समर्थक है तो वह सदा यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करेगी कि कम्युनिज्म सशस्त्र क्रांति नहीं चाहता, युद्ध नहीं चाहता बल्कि पूंजीवादी शक्तियां ही युद्ध के लिए लालायित हैं। कम्युनिस्ट लोग अपने मन की बात पार्टी की गुप्त सभाओं में ही कहते हैं। बाहर तो वे सुविधानुसार बातें बनाते रहते हैं। किन्तु मजे की बात यह है कि पार्टी के सदस्य इस दोहरे अभिनय के कारण स्वयं एक दूसरे का विश्वास नहीं कर पाते। सबको इस बात का भय रहता है कि उसका सहयोगी उसपर जासूसी कर रहा है। एक बात और भी है। पार्टी के हजारों सदस्य ऐसे भी हैं जो "उदासीन" कहलाते हैं। मन ही मन वे अपनी पार्टी की नीति के प्रति वफादार रहते हैं किन्तु बाहर से वे अपने आपको गैर कम्युनिस्ट प्रमाणित करने का प्रयत्न करते रहते हैं। ये दूसरी पार्टियों और सभा समतियों में गैर-कम्युनिस्टों के रूप में प्रवेश कर जाते हैं और भीतर ही भीतर उन्हें नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयत्न करते रहते हैं। अभी हाल ही में मैं बर्लिन गया था तो मुझे इसी प्रकार का एक नया अनुभव हुआ था। एक सामाजिक समारोह में एक उच्च कुलीन जर्मन सज्जन के साथ मेरी मुलाकात हुई। यह व्यक्ति उदार विचारों वाला चिन्तक समझा जाता था। उसकी विद्वता प्रसिद्ध थी और उसने अपने विचारों के कारण काफी कष्ट भी भोगा था। समारोह में उसकी पत्नी भी थी। यह महिला बड़ी आकर्षक थी। उसने मुझसे कहा कि वह "क्वेकर" मत का अनुसरण कर रही है। उसे विश्वास हो गया है कि विश्वशांति के लिए यह आवश्यक है कि आप एक निश्चित मत पर अडिग रहें और किसी भी शर्त पर शत्रु के साथ समझौता न करें। मुझे इस महिला की बातों से बड़ी प्रसन्नता हुई थी। किन्तु दूसरे दिन मुझे उसके पति

से एक पत्र प्राप्त हुआ। पत्र में उन सज्जन ने लिखा था—'कर्त्तव्यवश मैं आपको सूचित कर रहा हूं कि मेरी पत्नी कम्युनिस्ट है।"

(४)

हैन्सी को इन "उदासीन" कम्युनिस्टों का पता था। पार्टी वाले इतनी दूर तक उसका विश्वास करने लगे थे कि पार्टी की कार्य प्रणाली का थोड़ा बहुत भेद उसे बता दें। उन लोगों ने उसकी परीक्षा के लिए एक काम सौंपा था। लैनी को इसकी सूचना देते हुए उसने कहा, "बेस को मुझ पर निगरानी रखने के लिए कहा गया है। मैं 'उदासीन' कम्युनिस्ट न रहूंगा। यह निश्चय किया गया है कि मैं खुले आम अपने आप को कम्युनिस्ट घोषित कर दूं।"

"बात यह है कि तुम एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो और पार्टी वाले तुम्हारी ख्याति का उपयोग करना चाहते हैं। यों उदासीन कम्युनिस्टों का काम कुछ कम महत्व पूर्ण नहीं होता। ये किसी प्रतिष्ठित संस्था में क्लर्कों अथवा स्टेनोग्राफरों के रूप में घुस जाते हैं। और धीरे धीरे उन्नति करके किसी महत्वपूर्ण पद पर आरूढ़ होकर उस संस्था को अपने अधिकार में ले आते हैं। ये जब जैसा तब तैसा रूप धारण कर लेते हैं। कभी ये नागरिक अधिकारों की मांग करते हुए नारे लगाने लगते हैं, कभी सामाजिक न्याय के समर्थक बन जाते हैं। कभी ये विश्व-शांति की आवाज उठाने लगते हैं, कभी आवागमन पर से प्रतिबन्ध उठाने की चर्चा शुरू कर देते हैं। आवागमन पर से प्रतिबन्ध हटाये जाने की मांग इसलिए की जाती है ताकि बाहर से कम्युनिस्ट एजेण्टों का आना जाना आसान हो जाय। इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार के उद्देश्यों और आदर्शों की आड़ में जन-सभायें संगठित की जाती हैं। इन सभाओं में चुन चुन कर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भाषण देने के लिए बुलाया जाता है। ये प्रतिष्ठित लोग अपना भाषण इस प्रकार शुरू करते हैं—'मैं कम्युनिस्ट नहीं हूं·····किन्तु' और इसके बाद वे पार्टी नीति के अनुसार अपना भाषण दे डालते हैं।"

"ओह, मै इन लोगों से ऊब गया हूं।"

"मैं जानता हूं, हैन्सी। हिटलर से मैं भी इसी प्रकार ऊब गया था। दस वर्ष तक लगातार उसकी चीख पुकार सुनते सुनते मेरे कान पथरा गए थे। वह

बोलने लगता था तो मानों उस पर भूत सवार हो जाता था, बातों का कोई अन्त ही न रहता था। मेरा सिर चक्कर खाने लगता था। किन्तु मुझे बराबर सतर्क रहना पड़ता था, उसके प्रत्येक शब्द को ध्यानपूर्वक सुनते रहना पड़ता था, कभी कभी बीच में एकाध शब्द कह कर अथवा सिर हिला कर सहमति भी जनानी पड़ती थी। इस मनोवैज्ञानिक अभिनय का मुझे अच्छा खासा अभ्यास करना पड़ा था। तुम वायलिन-वादक हो। कभी कभी तुम्हें अर्थहीन स्वर पद्धतियों का अभ्यास करना पड़ता है। तुम जानते हो कि यह व्यर्थ है किन्तु फिर भी तुम्हें करना तो पड़ता ही है। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि इस नीरस और व्यर्थ अभ्यास में तुम यथासम्भव सरसता और सार्थकता लाने का प्रयत्न करो।"

"तुम ठीक कहते हो लैनी। भविष्य में मैं ऐसा ही प्रयत्न करूंगा।"

"बर्लिन से लौटते समय मैंने एक विलायती पत्रिका में बड़ी मनोरञ्जक बात पढ़ी थी। तुम्हे सुनाता हूँ। समाज विज्ञान के किसी विद्यार्थी ने न्यू गिनी के जंगली आदिवासियों की सामाजिक प्रथाओं पर एक लेख लिखा था। यह जाति मारिण्डीज़ के नाम से प्रसिद्ध है। ये लोग मनुष्य का शिकार करते हैं किन्तु आदमखोर नहीं हैं। ये मनुष्य को मारकर खा नहीं जाते। ये मनुष्य की हत्या केवल इसीलिये करते हैं क्योंकि उनका जीवन—दर्शन उन्हे ऐसा करने के लिये बाध्य कर देता है। बात यह है कि जब इनके घरमें किसी बच्चे का जन्म होता है और उसके नामकरण की आवश्यकता पड़ती है तब किसी की हत्या करना अनिवार्य हो उठता है। ये अपने बच्चे के लिए कोई नया नाम नहीं खोजते बल्कि किसी व्यक्ति को मारकर उसका नाम अपने बच्चों को दे देते हैं। हत व्यक्ति का कंकाल उस नाम के प्रतीक के रूप में सुरक्षित रख लिया जाता है। उनका विश्वास है कि यदि बच्चे का नामकरण न हुआ तो वह आजीवन निर्बल और दुःखी रहेगा। फलस्वरूप इस जाति के लोग अपने जासूस भेजकर पड़ोस की किसी दूसरी जाति के लोगों पर नजर रखते हैं। किसी दिन मौका पाकर रात के समय ये उस पर धावा बोल देते हैं और अधिक से अधिक व्यक्तियों की हत्या कर डालते हैं। हत व्यक्तियों के सिर लेकर ये लोग लौट आते हैं। उनके

छोटे छोटे बच्चे भी ले आते हैं। इन बच्चों से उन्हें उनके मृत पिताओं के नाम मालूम हो जाते हैं। इस प्रकार मारिण्डीज जाति के लोग अपने बच्चों का नामकरण कर लेते हैं और निश्चिन्त हो जाते हैं।"

"जासूसी वाला काण्ड तो कम्युनिस्टों की कार्यपद्धति से मिलता जुलता है।" हैन्सी ने कहा।

"हां, किन्तु दोनों में कुछ अन्तर है। मारिन्डीज जाति के लोग दूसरों के नाम लेकर अपने बच्चों को देते हैं किन्तु कम्युनिस्ट लोग अपने नाम दूसरों पर लादना चाहते हैं। जब वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जायगा तब हम लोग भी कम्युनिस्टों की भांति समान रूप में दरिद्र और दयनीय हो जाएंगे। किन्तु उस समय हम अमरीकी साम्राज्यवादी न रहेंगे और ट्रूमन-सिद्धान्त का प्रचार करते न घूमेंगे। उस समय हम भी अपने कम्युनिस्ट बन्धुओं की भांति मार्क्स-लेनिन स्टालिन-विलियम जेड फोस्टरवादी हो जाएंगे और सर्वहारा समाज की तानाशाही के अन्तर्गत निवास करते हुए नये ढंग से जीवन यापन की कला सीखते हुए दिखाई देंगे। उस समय उन सारी दार्शनिक समस्याओं का समाधान हो जाएगा जो आज हमें परेशान कर रही हैं और हम लोग वापस चौथी शताब्दी में चले जाएंगे—उस चौथी शताब्दी में जिसमें छोटी छोटी धार्मिक उलझनों के लिए खून की नदियां बह जाती थीं।"

"हे भगवान! लैनी तुम मुझे सहारा दो। मैं बेस को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न कर रहा हूं। मैं उसे विश्वास दिलाना चाहता हूं कि संसार को बदलने के लिये कम्युनिस्ट लोगों ने जिस नये जादू का आविष्कार किया है उसके प्रति मैं सदा से आस्थावान रहा हूं। मुझे "उद्देश्यवाद", "व्यवहारवाद", "अवसरवाद", "बौद्धिकतावाद" "अन्तर्राष्ट्रीयतावाद" आदि विभिन्न मत मतान्तरों को भलीभांति समझकर इनके भेद प्रभेदों को जानना है और पार्टी को विश्वास दिलाना है कि मैं कभी इन वादों के फेर में न आऊँगा। मुझे इन सारे मत मतान्तरों को छोड़कर सदा उस नीति के प्रति आस्थावान रहना होगा जो केवल दो चार दिन पहले ही क्रेमलिन के किसी दार्शनिक ने घोषित की होगी।"

"और इसके दो चार दिन बाद पोलिटब्यूरो की ओर से यह घोषणा हो

जाएगी कि वह दार्शनिक ट्राटस्कीवादी था और उसे दण्डस्वरूप शीघ्र ही साइबेरिया की किसी खदान में काम करने के लिये भेज दिया जाएगा—और तुम्हें फिर से एक नयी पार्टी-नीति का अध्ययन करना पड़ेगा।"

(५)

हैन्सी ने लैनी से कहा कि उसे अपने मनका गुबार निकाल देने से बड़ी सान्त्वना मिली है। उसका हृदय हल्का हो गया है और वह अपने नारकीय काम के लिए तयार हो गया है। लैनी ने उसे एक बार फिर न्यूगिनी के बर्बर आदिवासियों की जघन्य प्रथा की याद दिलाई। इस जाति के लोगों को अपने घरों के दरवाजों पर इतने नरमुण्ड लटकाने के लिये मिल जाते हैं क्योंकि इन लोगों के जासूस सदा सक्रिय और सतर्क रहते हैं। दूसरी जातियों के लोग आलसी हो जाते हैं और उनके जासूस भी क्रियाशील नहीं रहते। आज भी स्वतन्त्रता की प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त्त है सतर्कता। अणु बम के इस युग में इसकी और भी अधिक आवश्यकता है।

"सुनो हैन्सी।" लैनी ने गम्भीर स्वर में कहा, "मैं हिटलर के विरुद्ध एक जासूस के रूप में काम करता था! मैं इस बात का सतत प्रयत्न कर रहा था कि वह विश्व-युद्ध न छेड़ने पावे। इसमें मुझे सफलता न मिली। किन्तु मैंने भरसक प्रयत्न किया था। मैं जानता था कि हिटलर ज्योतिष, अध्यात्म आदि पर विश्वास रखता है। इसलिये मैंने यह स्वांग रचा था कि लारेल के शरीर में प्रेतात्माएं बड़ी सरलता के साथ आ जाती हैं। लारेल को मैंने सारी बात समझा कर तयार किया और इसके बाद हेस के साथ मुलाकात की। हम लोगों को बरगोफ नामक स्थान में बुलाया गया। वहां बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और सेनापतियों का जमघट लगा था। लारेल ने समाधिस्थ होने का अभिनय बड़ी सफलता के साथ किया। हिटलर के सम्मुख नाजी आन्दोलन के पुराने साथियों हासहोफर और डायट्रिच एकार्ट की प्रेतात्माएं लारेल के माध्यम से बुलायी गयीं और उन्होंने युद्ध के विरुद्ध चेतावनी दी। हिटलर कुछ असमंजस में पड़ गया और उसकी सामरिक योजनाएं एक सप्ताह के लिये स्थगित हो गयीं। इस एक सप्ताह का समय स्वतन्त्र संसार के लिये कितना बहुमूल्य प्रमाणित हुआ यह

कौन कह सकता है ? इस प्रसंग में मैंने और लारेल ने कितना असत्य भाषण किया था ! किन्तु क्या कोई यह कह सकता है कि हम लोगों ने अनैतिक काम किया ?"

हैन्सी ने अपनी सहमति जनायी।

"तुम चाहो तो शान्तिवादी हो सकते हो। बाइबिल का आदेश है कि कोई तुम्हे इस गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो। मैं नहीं समझता कि आज तक किसी देश ने यह प्रयोग करने का साहस किया हो। किन्तु शायद हम लोग आज यही करने जा रहे हैं। "सरमन आन दि माउण्ट" के आदेश के अनुसार हम लोग यह घोषणा कर सकते हैं कि हम कम्युनिज्म का कोई विरोध न करेंगे बल्कि उसका स्वागत करेंगे। परिणाम यह होगा कि हमारे देश में कम्युनिस्ट लोगों के जत्थे के जत्थे लाल झण्डे उड़ाते और अपना अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाते हुए आने लगेंगे। वायुयानों और जलपोतों में भर भर कर कम्युनिस्टों के ये विशाल दल जब हमारे देश की भूमिपर उतरेंगे तब क्या होगा ? हमारी सरकार चुपचाप एक ओर हट जाएगी और कामरेड फोस्टर तुरन्त चीफ कमीशार के रूप में नियुक्त कर दिए जाएंगे। जैक स्टाचेल अथवा पाल राबसन को प्रधान सेनापति बना दिया जाएगा। किन्तु ये लोग अधिक से अधिक तीन मास तक अपने पदों पर रह सकेंगे। इसके बाद मास्को के पोलिट-ब्यूरो की ओर से यह घोषणा होगी कि ये लोग अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, अथवा बौद्धिकतावादी प्रमाणित हुए हैं और इन्हें हटाकर इनके स्थान पर रूसी विशेषज्ञों की नियुक्ति आवश्यक हो उठी है। क्रान्ति के सिद्धान्तों के अनुसार कारखानों पर मजदूरों का अधिकार हो जाएगा किन्तु इसके बाद एक मास के अन्दर ही उन पर कोई कमीशार नियुक्त कर दिया जाएगा। इसी प्रकार खेतों का सामूहिकीकरण हो जाएगा और वे भी किसी कमीशार के अधीन कर दिये जाएंगे। इसके बाद पोलिटब्यूरो की ओर से यह घोषणा होगी कि अमरीकी लोग प्रतिक्रियावादी प्रमाणित हुए हैं और भविष्य में उन्हें किसी सरकारी पद पर नियुक्त न किया जाएगा। राजनैतिक तथा आर्थिक विषयों पर लिखी गयी हमारी सारी पुस्तकें जला दी जाएंगी और हमारे स्कूलों में रूसी भाषा की पढ़ाई अनिवार्य कर दी जाएगी।

इस समय केन्द्रीय योरोप में इसी प्रकार मी स्थिति दिखाई दे रही है। जो लोग अमेरिका में भी ऐसी ही स्थिति की सृष्टि होते देखना चाहते हैं वे अवश्य यही कहेंगे कि मैंने अपनी बहन पर जासूसी करके एक अनैतिक कार्य किया है। ये लोग तुम्हारी आलोचना भी करेंगे; कहेंगे कि तुमने अपनी पत्नी को पुलिस के हवाले करने में जो सहायता पहुंचायी वह एक निन्दनीय कार्य है। इनके अनुसार तुम्हे अपनी पत्नी को देश के सामरिक रहस्य शत्रु के पास पहुंचाते रहने की पूरी छूट दे देनी चाहिए।—हैन्सी, सच तो यह है कि हम दोनों एक दुर्भाग्यग्रस्त समय में पैदा हुए हैं और हमें यह विडम्बना सहन करनी ही पड़ेगी। मैं मानता हूँ कि हमें अपने देश में स्वतन्त्रता और आर्थिक समानता का विस्तार करना है। किन्तु इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि नयी स्वतन्त्रताओं को लाने के लिये हम पुरानी स्वतन्त्रताओं का गला घोट दें।"

इस प्रकार दोनों मित्रों में काफी देर तक बातें होती रहीं। दोनों शहर की ओर रवाना हुए। किन्तु शहर के समीप पहुंचकर हैन्सी ने कहा, "लैनी, अब हम दोनों का साथ साथ जाना ठीक नहीं है। यदि किसी की नजर पड़ जायगी तो ठीक न होगा।"

लैनी ने भी यही उचित समझा कि शहर में दोनों साथ न जाएं। उसने हैन्सी को एक भूगर्भ रेलवे स्टेशनपर उतार दिया। इसके बाद लैनी ज्यार्ज वाशिंगटन पुल से होकर न्यूजर्सी में अपने घर की ओर रवाना हो गया। घर पहुंचकर उसने लारेल को हैन्सी की दयनीय मानसिक स्थिति की बात बतायी। किन्तु उसने बेस के सम्बन्ध में कुछ न कहा क्योंकि बेस का मामला "गुप्त और विश्वसनीय" हो गया था।

लारेल ने कहा। "हैन्सी और बेसके लिये मैं दुःखी हूँ। किन्तु उनके बच्चों के लिये मैं और भी चिन्तत हूँ। वयस्क लोग तो अपना हित अहित सोच लेते हैं किन्तु बेचारे बच्चे क्या करें?"

लैनी ने कहा, "योरोप में मुझे इस प्रकार की दयनीय स्थिति में इतने अधिक बच्चे दिखाई दिये थे कि अब मुझे इनके प्रति कोई विशेष चिन्ता नहीं होती। मेरे मनमें दया का स्रोत ही शायद सूख गया है।"

लारेल ने उत्तर दिया, "सब का यही हाल है।—और यह एक प्रकार की आध्यात्मिक मृत्यु ही है।"

(६)

कुछ दिन बीत गये। इसके बाद एक दिन अचानक बेस का टेलीफोन आया। वह कह रही थी, "लैनी मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ।"

"अवश्य मिलो। क्या तुम यहां आ सकती हो?"

"मैं तुम्हारे कार्यालय में अथवा तुम्हारे घर में नहीं आना चाहती। इन दोनों ही स्थानों में मेरा स्वागत नहीं होता बल्कि अनादर ही होता है।"

"अच्छी बात है। तुम जहां कहोगी वहीं मैं आ जाऊंगा।"

"मैं तुम्हारे पड़ोस के एक गांव बेवरली में आ जाऊंगी। तुम वहीं आजाना कल सबेरे दस बजे मैं इस गांव के डाकखाने के सामने तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।"

"मैं पहुंच जाऊंगा।"

लैनी ने लारेल को यह समाचार बता दिया। लारेल ने मुस्करा कर कहा, "कहीं वह तुम्हें फुसला कर अपने धर्म में दीक्षित न कर ले।" किन्तु मन ही मन वह जानती थी कि इसकी कोई सम्भावना नहीं है। लैनी और बेस दोनों ही ने यह अनुमान लगाया कि कदाचित बेस शान्ति रेडियो से प्रसारित होने वाले प्रोग्रामों के विरुद्ध प्रतिवाद करने के लिए ही उससे मिलना चाहती है। हाल ही में लैनी ने रेडियो पर अपनी बर्लिन यात्रा के अनुभव सुनाये थे। बेस के लिए अवश्य ही ये विशेष रूप से आपत्तिजनक थे

दूसरे दिन लैनी नियत समय पर बेवरली पहुंच गया। उसने अपनी गाड़ी एक स्थान पर खड़ी करके उसमें ताला लगा दिया और फिर टहलने लगा। थोड़ी ही देर में बेस भी आ गयी। उसने लैनी को संकेत करके बुलाया और अपनी मोटर में बैठा लिया। अब लैनी पूर्णतया बेस के अधिकार में था। वह तब तक गाड़ी चलाती रह सकती थी जब तक कि पेट्रोल समाप्त न हो जाय। यह कोई असुविधा की बात न थी। असुविधा की बात थी तो यह कि इतनी देर तक उसका मुंह अनवरत रूप में चलता रहेगा और लैनी को चुप चाप सुनते रहना होगा।

किन्तु इस प्रकार की स्थिति न आयी। बेस ने केवल एक वाक्य ही कहा और वह वाक्य लैनी की सम्पूर्ण स्नायुमण्डली को स्तब्ध कर देने के लिये पर्याप्त था। "लैनी, तुम मेरे पति को फुसलाने का प्रयत्न क्यों कर रहे हो?"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" लैनी ने निस्तरंग स्वर में कहा।

"तुम जानते हो मेरा मतलब एकदम स्पष्ट है।"

लैनी क्षण भर के लिए चुप हो गया। वह चाहता तो कह सकता था कि उसे कुछ नहीं मालूम, क्षण भर के लिए उसके मनमें यह विचार भी आया कि वह पूछे कि तुम्हें इसका पता कैसे चला? किन्तु उसके मुंह से कुछ भी न निकला। उसकी बुद्धि क्षण भर के लिए जड़वत हो गई थी। अन्त में अपने आपको संयत करते हुए उसने कहा, "हैन्सी तुम्हारा पति अवश्य है किन्तु वह मेरा मित्र भी है और उसके साथ मेरी मित्रता तुम्हारी मित्रता से अधिक पुरानी है।"

"वह तुम्हारा मित्र ही है, पति नहीं। पति और मित्र में काफी अन्तर होता है। मैं पूछती हूँ कि क्या तुम हम लोगों के दाम्पत्य जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर देने के लिए कृतसंकल्प हो गये हो?"

लैनी को सोचने के लिए कुछ समय मिल गया था। क्या हैन्सी ने बेस से कुछ कहा है? नहीं, यह नहीं हो सकता। क्या हैन्सी के टेलीफोन की खबर उसे किसी प्रकार मिल गयी है? हे भगवान! ये कम्युनिस्ट लोग सर्वत्र फैले हुए हैं। क्या हैन्सी उससे मिलने के लिए चला था तब किसी कम्युनिस्ट ने उसका पीछा किया था? या स्वयं उसी का पीछा किया गया था? लैनी का माथा चकराने लगा। उसे ऐसा लगा कि वह चारों ओर शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ है।

(७)

पास ही सड़क के किनारे पर एक घना वृक्ष था। बेस ने अपनी गाड़ी रोक दी। वह इस वृक्ष की छाया में बैठ कर अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना चाहती थी। उधर से निकलनेवाले भूले भटके राहगीरों को कोई संदेह भी न होगा। वे समझेंगे कि कोई प्रेमी प्रेमिका अपनी प्रेम समस्या पर विचार कर रहे हैं। अथवा कोई दम्पति अपने झगड़े का निबटारा कर रहे हैं। उन बेचारों को इस बात का क्या पता चलेगा कि ये दोनों कोई प्रेमी प्रेमिका अथवा नवविवाहित

दम्पति नहीं हैं बल्कि दो परस्पर विरोधी गुप्तचर हैं—एक रूसी एजेन्ट और दूसरा उसका प्रतिद्वन्द्वी अमरीकी एजेण्ट !

बेस तुरन्त अपने प्रश्न पर आ गई। "लैनी तुमने हैन्सी के साथ मेरी शादी कराने में सबसे अधिक उत्साह दिखाया था और इसके लिए मैं हृदय से तुम्हारा आभार मानती थी। मेरा विश्वास था कि मैं इसी प्रकार आजीवन तुम्हारे प्रति कृतज्ञ रहूँगी। किन्तु तुम सब कुछ उलट पुलट देना चाहते हो। और यह एक भयानक बात है।"

"तुम गलती कर रही हो बेस। तुम्हारे दाम्पत्य जीवन को नष्ट करने की किंचित मात्र इच्छा न मेरे मन में है न लारेल के मन में।"

"तुम जानते हो कि हैन्सी के साथ मेरा गहरा मतभेद रहा है। किन्तु अब हैन्सी रास्ते पर आ गया है। वह मेरे साथ सुलह कर लेना चाहता है। किन्तु तुम बीच में पड़कर बाधा डाल रहे हो। ओह ! पिछले कुछ दिनों में हम लोग कितने सुखी रहे हैं—और अब फिर—"

"मैं कहता हूं कि तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो, बेस।" इसके बाद वह कहने जा रहा था कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध हैन्सी से एक शब्द भी नहीं कहा, किन्तु वह तुरन्त सतर्क हो गया। उसे ऐसा लगा कि यह कहने का अर्थ होगा कि वह हैन्सी से मिला था। प्रत्युत्पन्न मति द्वारा प्रेरित होकर उसने अपने मन में यह निश्चय कर लिया था कि वह कुछ भी स्वीकार न करेगा। वह बेस की बातों को ध्यानपूर्वक सुनेगा और उससे जो जानकारी प्राप्त हो सकेगी ले लेगा। किन्तु अपनी ओर से सत्य-कृष्ण कुछ न कहेगा।

"तुम हैन्सी को सदा मेरे विरुद्ध भड़काया करते हो। तुम जानते हो कि मैंने कम्युनिस्ट आन्दोलन को अपना तन मन धन अर्पित कर दिया है। और तुमने अपने आप को एक भीषण प्रतिक्रियावादी के रूप में परिवर्तित कर लिया है। तुम जो कुछ भी कहते हो वह मेरे विरुद्ध प्रत्यक्ष आक्रमण होता है।"

लैनी के मस्तिष्क में आशा की एक क्षीण रेखा का उदय हुआ। शायद बेस रेडियो प्रोग्रामों के सम्बन्ध में कह रही है। शायद उसने हैन्सी को शान्ति प्रोग्राम सुनते हुए पकड़ लिया था।

"बेस, यह एक गणतान्त्रिक देश है।" उसने उदारतापूर्वक कहा। "तुम्हें जो उचित लगे तुम कह सकती हो और उसी प्रकार मुझे जो उचित लगता है मैं कहता हूँ।"

"किन्तु मेरे पति से कहने की क्या आवश्यकता है? उससे मिलने की क्या आवश्यकता है?"

तो यह रेडियो तक ही सीमित नहीं है! बेस को सब कुछ मालूम है!

लैनी ने कोई उत्तर न दिया। बेस कहती गयी "अब उससे तुम्हारा क्या मतलब निकल सकता है? तुम्हारे अनुसार वह मूर्ख है, औरत का गुलाम है। वह एक कठपुतली मात्र है जो यन्त्रवत कम्युनिस्ट नारे रटता रहेगा—ठीक एक ग्रामोफोन रेकर्ड की भाँति। किन्तु तुम्हें उस रेकर्ड को सुनने की क्या आवश्यकता है? लाखों व्यक्ति तुम्हारी बातें सुनने के लिए तैयार हैं। क्या तुम्हें इतने से सन्तोष नहीं होता? क्या तुम मेरे पति को छेड़े बिना नहीं रह सकते?"

बेस कौशल के साथ तर्क कर रही थी; लैनी हठात कोई उत्तर न दे सका। किन्तु उसके मन में अब भी यह आशा थी कि शायद बेस के पास उसकी और हैन्सी की मुलाकात की कोई निश्चित जानकारी नहीं है; केवल संदेह ही है। यदि सचमुच इस सम्बन्ध में कोई निश्चित अभिज्ञता होती तो वह अब तक चुप न रहती; पहले इसी का उल्लेख करती!

किन्तु साथ ही साथ लैनी के मन में यह विचार भी आया कि शायद वह भी उसी की भाँति सतर्कता के साथ बातें कर रही हो! वह अब एक कुशल जासूस बन चुकी थी और अपनी ओर से कोई सूराग न देना चाहती थी।

"बेस, तुम मुझसे साफ साफ कहो कि मैं क्या करूं और क्या न करूं?"

"मैं तुम्हें न जाने कितनी बार बता चुकी हूं कि तुम क्या करो और क्या न करो। तुम मेरे पति को अकेला छोड़ दो। वह तुम्हारे लिये कोई विशेष उपयोग भी नहीं रखता। वह कोई प्रचारक नहीं है; सैद्धान्तिक विश्लेषण में उलझने लायक मस्तिष्क उसे नहीं मिला है।"

यह बात सच न थी। हैन्सी रोबिन एक महान संगीतज्ञ के रूप में काफी

प्रसिद्ध था और यदि वह एक कम्युनिस्ट के रूप में विशाल जन-सभाओं में खड़ा होता तो उसका प्रचार मूल्य कुछ कम न होता। इसके अतिरिक्त पार्टी के लिए पैसा प्राप्त करने के लिये भी उसकी कला काफी उपयोगी हो सकती थी। किन्तु यह एक गौण बात थी और लैनी ने इसकी चर्चा न उठाई। उसके मन में एक विचार उठा। लारेल से एक समझौता क्यों न कर लिया जाय? उससे क्यों न कह दिया जाय कि, "मैं हैन्सी को फोड़ने का कोई प्रयत्न न करूंगा बशर्ते कि तुम प्रचार कार्य में उसका कोई उपयोग न करो।" किन्तु लैनी ने अपने आप को सम्हाल लिया। उसे लगा कि यह प्रस्ताव करना व्यर्थ है, बेस कभी न राज़ी होगी। इसके अतिरिक्त शायद एफ० बी० आई० वाले भी इसे पसंद न करेंगे क्योंकि उनके दृष्टिकोण से हैन्सी के लिये यह आवश्यक था कि वह पार्टी का अधिक से अधिक विश्वासभाजन बने।

अन्त में लैनी ने कहा, "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, बेस, कि मैं हृदय से हैन्सी का शुभचिन्तक हूँ। मैं उसके सुख-सौभाग्य में कोई बाधा नहीं डालना चाहता।"

"कैसी बच्चों की सी बातें कर रहे हो, लैनी? मैं वर्षों से तुम्हारी बातें सुनती आ रही हूं। मेरे प्रति तुम बराबर विष-वमन करते रहे हो। और तुम्हारा प्रत्येक कार्य हैन्सी को मुझसे अलग करने में सहायक हुआ है।"

"मुझे दुःख है कि तुम मेरे विचारों को इस प्रकार व्यक्तिगत रूप में लेती हो। हम दोनों के अपने अपने विश्वास हैं और हमने उन्हें अपने अपने ढंग से व्यक्त किया है। पिछली बार जब हम मिले थे तब तुमने कहा था कि आदर्श के सामने व्यक्ति का कोई महत्व नहीं है। क्या तुम्हें याद नहीं आती वह बात?"

"हां, मुझे याद है। किन्तु अब मैं अपने शब्दों को वापस लेती हूँ। एक व्यक्ति मेरी दृष्टि में अत्यधिक मूल्यवान है। हैन्सी मुझसे पृथक हो गया था तो मेरा जीवन साक्षात् नर्क हो गया था।"

उसका स्वर कांप रहा था। लैनी ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा उसकी आंखों में आंसू छलछला उठे थे।

"मैं जानता हूं, बेस, ।" उसने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा। उसे बेस के प्रति सचमुच सहानुभूति हुई क्योंकि वह स्वयं एक पति था और दाम्पत्य प्रेम की गहनता से भली भाँति अवगत था।

"मैं हैन्सी को हृदय से प्यार करती हूँ। उसके साथ मेरा जीवन सचमुच बड़ा आनन्दमय हो उठा था। तुमने हम दोनों के सामने एक आदर्श रखा था और वह आदर्श ही हम दोनों को एक साथ बांधे हुआ था। मैं समझती थी कि मैं और हैन्सी इतने अभिन्न हैं कि मृत्यु के अतिरिक्त अन्य कोई शक्ति हमें एक दूसरे से अलग न कर सकेगी। किन्तु अचानक मैंने देखा कि तुम्हे अपने उस आदर्श पर विश्वास नहीं रहा और तुम हैन्सी को भी अपने पक्ष में मिलाने का प्रयत्न कर रहे हो। प्रथम प्रतिक्रिया के रूप में मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति घृणा का भाव पैदा हुआ। किन्तु मैं तुमसे घृणा न कर सकी। आज भी मैं तुमसे घृणा नहीं करती। किन्तु मेरा हृदय अवश्य भयानक रूप में क्षुब्ध हो उठा है।"

"बेस, तुमने एक गलती की। वह यह कि तुमने अपने आदर्श को बदल दिया। यह वह आदर्श नहीं है जो मैंने तुम्हे सिखाया था। मैंने तुम्हे सामाजिक न्याय की बात बतायी थी। और यह मी स्पष्ट रूप में कह दिया था कि उस सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए पवित्र और असंदिग्ध उपायों का अनुसरण आवश्यक है। यह गणनान्त्रिक परम्पराओं के माध्यम से, मुक्त और स्वतंत्र विचार-विनिमय के तारतम्य से स्थापित करना होगा। ये गणतान्त्रिक परम्पराएं अमेरिका के लिये नवीन नहीं हैं, हम सदियों से इनके साथ परिचित हैं।"

"वह एक स्वप्न मात्र था लैनी। उस आदर्श की स्थापना इस प्रकार नहीं हो सकती क्यों कि संसार इसके लिये तयार नहीं है। पूंजीपति लोग यह न होने देंगे। वस्तुस्थिति पर व्यावहारिक दृष्टिकोण से विचार करो। तुम्हारे सामने केवल दो मार्ग हैं एक तो यह कि तुम क्रान्तिकारी सर्वहारा समाज का समर्थन करो, दूसरा यह कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों के हाथ मजबूत करो।"

(८)

अब फिर एक अच्छे खासे तर्क की सम्भावना उपस्थित हो गई। "मेरी बात सुनो, बेस।" लैनी ने संयत स्वर में कहा, "तुम मुझे वस्तु-स्थिति पर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने के लिये कहती हो। मैं वही कर रहा हूं। अभी हाल ही में मैं पूर्वी जर्मनी की यात्रा करके लौटा हूँ। वहां मुझे बार बार तुम्हारे तर्कों की याद आती रहती थी। मैं बार बार अपने मन से यह प्रश्न पूछता था—यदि बेस यह सब देखती तो क्या कहती? मेरी बात ध्यान से सुनो। मैंने वहां जो कुछ देखा वही तुम्हे सुना रहा हूं।"

"अच्छी बात है, लैनी। मैं सुनने के लिए तयार हूं। किन्तु यदि मैं इसे सफेद झूठ कहूं तो तुम्हे आश्चर्य तो न होगा?'

लैनी ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। उसने संयत स्वर में ही कहा, "मैं तुम्हे केवल एक उदाहरण देता हूँ। क्या तुमने काटिन-जंगल के हत्याकाण्ड की बात सुनी है?"

"हे भगवान! लैनी, क्या तुम मुझे वह पुरानी कहानी सुनाने जा रहे हो?"

"हां, वह घटना हुए दो साल हो गए और इसलिये तुम उसे पुरानी कहानी कह सकती हो किन्तु मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूं कि वह पुरानी बात फिर से प्रकाश में आ रही है।"

"सारा संसार जानता है कि वह हत्या-काण्ड नाजियों ने किया था और वे लोग अपने इस जघन्य अपराध का उत्तरदायित्व रूसियों के गले मढ़ने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।"

"क्रेमलिन की ओर से अवश्य ऐसा ही कहा जाता है किन्तु मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूं, बेस, कि सत्य को अधिक समय तक अंधकार में नहीं रखा जा सकता। स्टालिन ने जानबूझ कर चौदह पन्द्रह हजार पोलिश अफसरों को मरवा डाला था क्यों कि वह चाहता था कि पोलैण्ड फिर से एक सबल राष्ट्र के रूप में पुनर्जीवित न हो सके।"

"पोलैन्ड फिर से पुनर्जीवित हो रहा है। किन्तु इस बार वह मजदूरों और

किसानों के राष्ट्र के रूप में पुनर्जीवित हो रहा है—रईसों और जमींदारों के राष्ट्र के रूप में नहीं।"

"यह तुम्हारी भ्रान्ति मात्र है। पोलैण्ड में हत्याओं, निर्वासन और दास-मजदूर-शिविरों का बाजार गर्म है। और यह सब पोलैण्ड की भूमि पर नहीं हो रहा—पोलैण्ड की भूमि का अधिकांश भाग क्रेमलिन ने अपने आधिपत्य में ले लिया है। दूसरी ओर जर्मनी का एक भाग लेकर पोलों को दे दिया गया है। नये युद्ध के बीजों का रोपण इसी प्रकार होता है। क्या तुम समझती हो कि जर्मन लोग इस वस्तु स्थिति को चुपचाप स्वीकार कर लेंगे? उत्तरी और दक्षिणी साइलेसिया से लगभग सत्तर लाख जर्मन भगा दिए गए हैं। पोलैण्ड आज पोलैण्ड नहीं रहा; वह एक सोवियत कठपुतली मात्र रह गया है। पोलिश लोग आज सोवियत रूस के लिए आलू पैदा करनेवाले दासों के रूप में रह गए हैं। सामाजिक न्याय के सम्बन्ध में तुम्हारी धारणा क्या यही है? मेरी धारणा दूसरे प्रकार की है।"

इस प्रकार दोनों बड़ी देर तक झगड़ते रहे। इस झगड़े का कोई अन्त न था। बेस की स्थिति लैनी की स्थिति से एक दम भिन्न थी। बेस के लिये पोलिट ब्यूरो किसी रात को सफेद झूठ बता देता तो बेस के लिए वह सफेद झूठ ही हो जाता। और जहाँ तक लाल झूठों का सम्बन्ध था, बेस के लिये इनका कोई अस्तित्व ही न था।

लैनी ने बेस से कहा, "मुझे तुम पर आश्चर्य होता है, बेस। क्या तुम अपने विचारों पर सचमुच विश्वास करती हो? या तुम पार्टी के आदेशों का पालन करना ही अपना एकमात्र कर्तव्य समझती हो?"

"तुम मेरा अपमान कर रहे हो, लैनी। इन गंदी बातों से कोई लाभ नहीं।"

"मैं तुम्हारा अपमान नहीं कर रहा, एक अप्रिय सत्य की चर्चा कर रहा हूं। जब तुम्हारी पार्टी-लाइन में कोई परिवर्तन होता है तब रातोरात तुम्हारे विचारों में भी परिवर्त्तन हो जाता है। क्या कोई संयत और विचारशील व्यक्ति अपने विचारों को इस प्रकार अचानक बदल सकता है? उसे यह परिवर्त्तन बड़ा विचित्र प्रतीत होगा।"

फोन करने के लिए उतर पड़ा। टेलीफोन-घर का दरवाजा बन्द करके एकान्त में उसने हैन्सी की लाइन जुड़ाई। उधर से उत्तर आने पर लैनी ने प्रश्न किया, "क्या मिस्टर रोटर्डम बोल रहे हैं?"

"यहाँ इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है।" उधर से उत्तर आया। किन्तु लैनी ने हैन्सी की आवाज पहचान ली। लैनी ने हैन्सी के साथ यह सांकेतिक शब्द निश्चित कर रखा था। हैन्सी के घर में दो टेलीफोन थे; एक नीचे की मंजिल में और एक ऊपरवाली मंजिल में। इस बात की काफी सम्भावना थी कि दोनों की बातचीत कोई तीसरा व्यक्ति चोरी से सुन ले। इसलिए लैनी ने केवल इतना संकेत किया : "तुम शेफर्डस्टाउन १४३८ में बात करो।"

"शायद आपको गलत नम्बर मिल गया है!" हैन्सी ने कहा।

"शेफर्डस्टाउन १४३८" लैनी ने एक बार फिर दोहराया और रिसीवर रख दिया।

लैनी और हैन्सी ने यह सांकेतिक योजना काफी सोच विचार के बाद निश्चित की थी। यह प्रबन्ध हुआ था कि जब कभी लैनी को उससे बातें करनी होंगी वह हैन्सी को टेलीफोन करके "मिस्टर रोटर्डम" से बातें करने की इच्छा प्रकट करेगा। हैन्सी इस संकेत को समझ जाएगा किन्तु ऊपर से प्रतिवाद करते हुए कहेगा कि आपको गलत नम्बर मिल गया है, यहां इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं रहता। इसके बाद वह घर से निकल कर किसी सार्वजनिक टेलीफोन स्टैण्ड से लैनी का नम्बर मिलाकर बात कर लेगा।

लैनी प्रतीक्षा करते हुए टहलने लगा। इसी समय एक व्यक्ति आकर टेलीफोन-घर में घुस गया। लैनी ने देखा कि इससे हैन्सी को अड़चन होगी। वह उधर से लाइन जुड़ाएगा तो नम्बर खाली न मिलेगा। किन्तु प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त कोई उपाय न था। अन्त में टेलीलोन खाली हुआ और थोड़ी ही देर में घण्टी बजी। लैनी ने लपक कर रिसीवर उठा लिया। उसने टेलीफोन पर अपने नाम का उच्चारण न किया, इसकी कोई आवश्यकता भी न थी। दोनों एक दूसरे की आवाज से भलीभांति परिचित थे।

लैनी ने प्रश्न किया, "क्या उस दिन की मुलाकात की बात तुमने इसाबेला को बता दी थी?"

"नहीं तो!" हैन्सी के स्वर में आश्चर्य का भाव था।

"मुझे स्वयं यह विश्वास था कि तुम ऐसी भूल न करोगे। किंतु न जाने कैसे उसे हमारी मुलाकात का पता लग गया है। आज वह मेरे पास आयी थी। यह कहने के लिये कि मैं तुम से मिलने जुलने का प्रयत्न न करूं। मैंने उससे कह दिया है कि मैं तुम्हारे विचारों को परिवर्त्तित करने का कोई प्रयत्न न करूंगा। जो भी हो—भविष्य में अधिक सतर्कता आवश्यक है।"

"इस ओर कुछ महत्वपूर्ण बातें हो रही हैं। किन्तु टेलीफोन पर मैं उनकी चर्चा नहीं कर सकता।"

"ठीक है। इनके बारे में हम लोग फिर बातें कर लेंगे। धन्यवाद। आज की घटना से तुम अधिक परेशान मत होना।"

अध्याय १३

● भाग्य की विडम्बना ●

(१)

मान्क का एक और पत्र आया। इस पत्र में मान्क ने बर्लिन में अनवरत रूप से चलने वाले भयानक शब्द-युद्ध का कुछ विस्तृत वृत्तान्त दिया था। बर्लिन नगर इस समय एक ऐसे असहाय जीवित मांसपिण्ड की भांति था जिसे छीनने के लिए दो परस्पर विरोधी हिंस्र जन्तु आपस में छीना झपटी कर रहे थे। "घृणा एक अन्धी वस्तु है" मान्क ने अपने पत्र में लिखा था, "वे लोग तुम अमरीकियों को बर्लिन से भगा देना चाहते हैं। किन्तु इसका परिणाम केवल इतना ही होता है कि तुम लोगों की क्रोधाग्नि में आहुति पड़ जाती है।"

लैनी ने मान्क के इस कथन पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना शुरू किया। उसे ऐसा लगा कि वस्तुतः रूसी जनता जर्मन जनता की भांति ही असहाय और निर्बल है। झगड़े की सारी जड़ तो क्रेमलिन के वे महाप्रभु ही हैं जिनके घृणित कार्यकलाप ने सारे संसार में शिष्ट और सभ्य व्यक्तियों के लिए "रूसी" शब्द को आपत्तिजनक बना दिया है। घृणा का यह तत्व सभ्यता की तह में कितनी गहराई तक पहुंच गया है !! सारा सभ्य संसार दो भागों में विभाजित हो गया है, और कदाचित दोनों का ही सर्वनाश सुनिश्चित है ! और यह घृणा कितनी तत्परता और कटुता के साथ फैलायी जा रही है !!

मान्क ने इस पत्र में अपने कार्य कलाप के सम्बन्ध में केवल एक पंक्ति लिखी थी "हम लोगों का काम ठीक से चल रहा है किन्तु अत्यन्त धीमी गति से प्रगति हो रही है"—बस इतना ही संकेत था। किन्तु इसके बाद उसने एक जटिल वाक्य जोड़ दिया था—'बहरी फ्रेन्च लड़की काम कर रही है।' लैनी सोचने लगा। उसे जर्मनी में किसी फ्रेन्च लड़की से मिलने की बात याद न आ रही थी, बहरी लड़की का तो प्रश्न ही न उठता था। किन्तु मान्क के पत्र में लिखा था—"उसने फर्डीनेण्ड से मुलाकात की है और मेरा विश्वास है कि इन दोनों के बीच कुछ

बात चल रही है। यह एक पेंचीदा प्रश्न है और मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इस सम्बन्ध में क्या करूं।"

अचानक लैनी के मस्तिष्क में एक विचार बिजली की भांति घूम गया। उसे लगा कि मान्क निश्चित रूप में सांकेतिक शब्दावली का व्यवहार कर रहा है। लैनी और मान्क दोनों काफी समय तक पेरिस में रहे थे और फ्रांसीसी भाषा जानते थे। मान्क का संकेत फ्रांसीसी शब्द "साउर्दे" की ओर था। इस शब्द का अर्थ होता है बहरा। इस शब्द को फ्रांसीसी लड़की बनाकर मान्क लनी को अपनी सांकेतिक शब्दावली का परिचय दे रहा था।

उसका अर्थ स्पष्ट था। अन्ना सर्डेन और फ्रित्ज मेसनर किसी न किसी झमेले में पड़ गये थे। लैनी ने जिस समय अन्ना के सम्बन्ध में मोरीसन और मान्क के साथ बात की थी, यह निश्चित हुआ था कि वह हिमलरी मुद्रा बनानेवाले गिरोह के किसी व्यक्ति को पकड़वाने का प्रयत्न करेगी। उस समय किसी ने इस बात की कल्पना भी न की थी कि बेचारा फ्रित्ज मेसनर ही अन्नाका प्रथम शिकार होगा।

लैनी के सामने समस्याओं का ताना बाना उलझता चला जा रहा था।

(२)

बहुत दिनों की बात हुई। प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर पेरिस शान्ति सम्मेलन में जो कुछ हुआ था उससे लैनी को सन्तोष न हुआ था। उसने क्षुब्ध होकर यह घोषणा की थी कि वह अब संसार के कार्यकलाप में कोई दिलचस्पी न लेगा बल्कि किसी समुद्र तट की शीतल बालुका राशि पर लेट कर संसार को सर्वनाश के पथ पर अग्रसर होते हुए शान्तिपूर्वक ताकता रहेगा। उस समय वह युवक था और इस प्रकार का कार्य कर सकता था। किन्तु २७ वर्ष बाद उसे एक और विश्व-युद्ध देखने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ और यह विश्व-युद्ध पहले वाले युद्ध की तुलना में कहीं अधिक भयानक था। इस बार वह वस्तु-स्थित को उपेक्षा की दृष्टि से न देख सका। कारण यह है कि अब वह पहले की भांति पूर्णतया मुक्त और स्वतंत्र न था। अब वह एक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति था, उसके पीछे एक विशाल संगठन था, उसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय लेना पड़ता था। संसार तेजी के साथ बदल रहा था और इसके साथ साथ उसके विचारों में परिवर्तन होना

अवश्यम्भावी था। मनुष्य को अपने विचार बदलना काफी कठिन प्रतीत होता है; लैनी के लिए भी यह प्रक्रिया सरल न थी।

तीस वर्ष पूर्व रूसी राज्यक्रान्ति घटित हुई थी। उस समय अन्य युवकों की भांति लैनी ने भी इसका हृदय से स्वागत किया था। वर्डस्वर्थ ने फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति के सम्बन्ध में जो उद्‌गार प्रकट किए थे वे लैनी पर अक्षरशः चरितार्थ होते थे—

"उस नवप्रभात की बेला में
जीवन था वरदान !
किन्तु युवा होना तो
साक्षात स्वर्ग ही था !!"

उस समय लिन्कन स्टेफेन्स ने पेट्रोग्रेड जाकर लेनिन से मुलाकात की थी और वापस लौट कर पेरिस में लैनी से कहा था, "मैंने भविष्य के दर्शन कर लिए हैं !" किन्तु आज बेचारा स्टेफेन्स जीवित नहीं है। मृत्यु के पूर्व ही उसका स्वप्न भंग हो गया था और उसका उत्साह फीका पड़ गया था। और लैनी ? वह स्टेफेन्स की भांति मरने के लिए तयार न था और वस्तुस्थिति को चुपचाप स्वीकार कर लेना भी उसके स्वभाव में न था।

सन् १९१७ में रूस के अन्दर जो क्रान्ति हुई थी उसका आज कोई चिन्ह अवशिष्ट न था। आज वहां फिरसे एक अत्याचारपूर्ण निरंकुश शासन व्यवस्था उत्पन्न हो गई थी। सोवियत प्रणाली केवल नाम मात्र के लिए, प्रचार के एक साधन के रूप में, रह गयी थी। नया संविधान कागज पर तो बड़ा आकर्षक लगता था। किन्तु व्यावहारिक स्तर पर वह एकदम अर्थशून्य था। उसकी उदार शब्दावली काल्पनिक प्रतीत होती थी। आज रूस के पुराने स्वर्णिम स्वप्नों का नाम निशान न रह गया था। इनके स्थान पर जिस कठोर, निर्दय और आतंक पूर्ण शासन का वहां उदय हो गया था वह पश्चिमी संसार के लिए कल्पनातीत था।

पश्चिमी संसार की सहायता से ही स्टालिन ने अपनी पश्चिमी सीमा पर अनेकों देश जीते थे। एस्टोनिया से प्रारम्भ करके उसने बलगेरिया तक—एक

एक करके इन भूभागों को निगल लिया था। उसने इन देशों में गणतांत्रिक शासन की स्थापना करने का आश्वासन दिया था किन्तु अन्त में इन्हें रूसी साम्राज्य में अन्तर्भुक्त करके कठपुतली देशों के रूप में परिवर्तित कर लिया था। लैनी प्रति दिन समाचार पत्रों में स्टालिन की इस योजना को बढ़ते हुए देखा करता था। गणतांत्रिक देशों की सरकारें भी अत्यन्त चिन्ता के साथ इस घटना क्रम को देखती रहती थीं और समय समय पर स्टालिन के पास अपने प्रतिवाद-पत्र भेजती रहती थीं।

११ जून १९४७ को अमेरिका के स्टेट विभाग ने इसी प्रकार का एक प्रतिवाद-पत्र भेजकर यह घोषणा की थी कि हंगरी के आन्तरिक मामलों में रूसियों द्वारा अनधिकार हस्तक्षेप हुआ है। तीन दिन बाद प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने हंगरी, बलगेरिया और रूमानिया के साथ संधि-पत्रों पर हस्ताक्षर करते हुए इन देशों की एकतांत्रिक तथा निरंकुश शासन व्यवस्था की भर्त्सना की। ग्यारह दिन बाद अमेरिका की ओर से रूमानिया को एक प्रतिवाद-पत्र भेजा गया जिसमें उसका ध्यान संसद के विरोधी दल के कुछ नेताओं की गिरफ्तारी तथा अन्य "आतंकपूर्ण" उपायों की ओर आकर्षित किया गया था। इसके दो दिन बाद राष्ट्र संघ में अमरीकी प्रतिनिधि ने यूगोस्लाविया, अलबेनिया और बलगेरिया द्वारा ग्रीस में सशस्त्र छापे मारे जाने की चर्चा करते हुए यह अनुमति मांगी कि इस प्रकार की हरकतों का रोकने के लिए बल-प्रयोग का अवलम्बन करने दिया जाय। किन्तु कोई लाभ न हुआ। दिन पर दिन बीतते गए और स्टालिन का मोर्चा दृढ़ से दृढ़तर होता गया।

जून मास के प्रारम्भ में सेक्रेटरी आफ स्टेट, मिस्टर मार्शल ने योरोपीय देशों को आर्थिक सहायता देने के लिए अपनी योजना प्रेषित की। शर्त्त केवल यही थी कि ये देश अपने पुनर्जीवन के लिए किसी सामूहिक व्यवस्था में शामिल होना स्वीकार करें। इस योजना से सोवियत रूस को कोई खतरा न था; केवल इतनी ही बाधा थी कि वह भविष्य में अन्य देशों पर सशस्त्र आक्रमण करने की सुविधा न प्राप्त कर सकेगा। किन्तु रूसियों ने इस योजना को अपने विरुद्ध एक सबल कार्यवाही के रूप में देखा और इस प्रश्न पर ही फ्रांस और ब्रिटेन के साथ तनाव

पैदा कर लिया। जेकोस्लोवाकिया मार्शल योजना के अन्तर्गत सहायता प्राप्त करने के लिए इच्छुक था। किन्तु तुरन्त मसारिक और बेनेस को मास्को बुलाया गया और उन्हे अपना निश्चय बदलने का आदेश दिया गया। वे बेचारे यह आदेश मानने के लिये बाध्य हो गए। इन परिस्थितियों में ही जान मसारिक की हत्या की योजना बनी थी। लैनी को इसकी भीतरी बातों की जानकारी थी।

(३)

इन सब बातों के फलस्वरूप ही लैनी शान्तिवादी से युद्धवादी हो गया था। अनेकों प्रतिवादों के बावजूद उसके विचारो में अब कोई परिवर्त्तन न होता था। जब प्रेसीडेण्ट ट्रूमन ने अमेरिका में अनिवार्य सैनिक शिक्षा की योजना बनायी थी, रिपब्लिकन पार्टी ने उसका तीव्र विरोध किया था किन्तु लैनी ने उसका हृदय से समर्थन किया था। शान्ति रेडियो के सदस्यों के बीच भी इस प्रश्न को लेकर काफी आलोचना-प्रत्यालोचना हुई थी। किन्तु अन्त में दोनों पक्षों के वक्ताओं को रेडियो पर समान रूप में अपने विचार व्यक्त करने की सुविधा देने का निश्चय किया गया थो।

अगस्त मास में ब्रिटेन ने भारत को स्वतन्त्र कर दिया। यह इतिहास की एक अत्यन्त विवेकपूर्ण घटना थी। इसका श्रेय ब्रिटिश लेबर पार्टी तथा समाजवादो चिन्तकों को था जो वर्षों से इस नीति का प्रचार कर रहे थे। यदि सोवियत रूस सचमुच समाजतंत्री देश होता तो ब्रिटिश सरकार के इस स्तुत्य कार्य का वहां भी जोरदार स्वागत किया जाता और इस पर हर्ष प्रकट किया जाता। किन्तु रूस में इसकी कोई चर्चा तक न हुई। कम्युनिस्ट लोग चर्चिल से जितनी घृणा करते थे उससे कहीं अधिक घृणा बेविन से करते थे। कारण स्पष्ट था। चर्चिल एक ऐसे शत्रु थे जिन्हें कम्युमिस्ट लोग अन्त में पराभूत कर लेने का विश्वास रखते थे; किन्तु बेविन उनकी दृष्टि में एक खतरनाक व्यक्ति था—एक ऐसा व्यक्ति जो संसार के मजदूरों को स्टालिनवाद से हटाकर सच्चे समाजवाद की ओर प्रेरित कर सकता था।

अगस्त मास में अमेरिका के स्टेट विभाग की ओर से रूमानिया को एक प्रतिवाद-पत्र भेजा गया। इस प्रतिवाद-पत्र में रूमानिया पर यह अभियोग लगाया

गया था कि उसने अपने देश में नैशनल पेजेण्ट पार्टी को दबाकर तथा उसके नेता को गिरफ्तार करके एक अगणतांन्त्रिक कार्य किया है और अमेरिका के साथ होनेवाली संधि का अतिक्रमण किया है । एक सप्ताह बाद अमेरिका की ओर से राष्ट्र संघ में यह प्रस्ताव रखा गया कि सोवियत रूस के कठपुतली देश बालकान प्रदेश से ग्रीक कम्युनिस्टों को अस्त्र शस्त्र न भेजें और रूसी राजदूत ग्रोमीको ने इस प्रस्ताव को "ग्रीस के अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में निन्दनीय हस्तक्षेप" बताकर इसका तीव्र खण्डन किया। इसके बाद अमेरिका ने बलगेरिया के विरोधी दल के नेता पेटकोफ को दिये जानेवाले मृत्यु दण्ड को अनुचित और अन्यायपूर्ण बताते हुए इसकी भर्त्सना की। स्टेट विभाग की ओर से रूसियों द्वारा चीनी बन्दरगाह डायरेन पर अधिकार बनाए रखने की भी निन्दा की गयी।

इधर कोरिया में अमरीकी तथा रूसी सैनिक अधिकारियों का जो संयुक्त कार्य मण्डल था, वहां से अमरीकी जेनरल की यह शिकायत आयी कि सोवियत प्रतिनिधि पूर्ण एकाधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। शान्ति-प्रोग्राम के श्रोताओं को इसकी कोई विशेष चिन्ता न थी। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता था कि लैनी शान्ति-प्रोग्राम में सुदूर कोरिया में होनेवाली घटनाओं की चर्चा बार बार क्यों करता है । उनकी दृष्टि में यह अमेरिका की साम्राज्यवादिनी मनोवृत्ति थी।

जो भी हो, दोनों पक्षों ने यह मान लिया था कि कोरिया के लोगों को अपनी सरकार चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी जाय। किन्तु सदा की भांति इस बार भी कम्युनिस्ट लोग इस बात के लिए कृतसंकल्प थे कि बहुमत किसी के भी पक्ष में क्यों न हो, सरकार उन्हीं की बनेगी।

(४)

उस दिन रेडियोपर बोलने के लिए आए प्रोफेसर सैमुअल गाउड्समिट। वे एक यहूदी वैज्ञानिक थे। उनका जन्म हालैण्ड में हुआ था और वे युवावस्था में अमेरिका चले आए थे। युद्ध समाप्त होने पर वैज्ञानिकों का एक प्रतिनिधि-मण्डल जर्मनी भेजा गया था और प्रोफेसर गाउड्समिट को उसका प्रधान नियुक्त किया गया था। इस प्रतिनिधि मण्डल का कार्य यह था कि वह जर्मन वैज्ञानिकों की

नयी नयी खोजों से परिचय प्राप्त करे और उन्हें अमेरिका में आ जाने के लिये राजी करने का प्रयत्न करे। उन दिनों वैज्ञानिकों के लिये काफी छीना झपटी चल रही थी। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस—ये चारों देश इन्हे हथियाने के लिये अलग अलग प्रयत्न कर रहे थे। अमेरिका की ओर से जो प्रतिनिधि-मण्डल जर्मनी भेजा गया था उसका संक्षिप्त नाम "अलसोस" था। लैनी भी इसके साथ गया था। इस समय प्रोफेसर गाउड्समिट के साथ वह उन दिनों की चर्चा करते हुए बड़े आनन्द का अनुभव कर रहा था।

उस समय वैज्ञानिकों के सामने सबसे अधिक समस्याग्रस्त विषय अणु-बम ही प्रमाणित हुआ था। आज भी राष्ट्र-संघ में यही सबसे अधिक विवाद का विषय बना हुआ था। निरस्त्रीकरण के लिए जो भी प्रस्ताव उठता उसके सम्बन्ध में रूसी प्रतिनिधि की यह मांग अनिवार्य रूप में उठ खड़ी होती कि पहले अणु बम को बहिष्कृत किया जाय; इसके बाद ही निरस्त्रीकरण के प्रश्न पर विचार किया जा सकता है। किन्तु प्रत्येक चिन्तनशील व्यक्ति इस बात को जानता था कि अणु बम के विरुद्ध रूसियों की यह चीख पुकार क्यों उठ रही है। अणु बम के हटते ही शक्ति-संतुलन रूसियों के पक्ष में हो जाता और उनके सशस्त्र अभियान का मार्ग साफ हो जाता।

लैनी ने प्रोफेसर गाउड्समिट से प्रश्न किया कि क्या निकट भविष्य में रूसियों को अणु बम का रहस्य प्राप्त हो जाने की कोई सम्भावना है। प्रोफेसर ने उत्तर दिया कि दो दिन आगे या दो दिन पीछे अणु बम का रहस्य उनके हाथ में आ जाना अनिवार्य है। इस समय उनके यहां कुछ जर्मन वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य में लगे हुए हैं और इनके अतिरिक्त स्वयं रूसी वैज्ञानिकों द्वारा भी इस दिशा में काफी प्रयत्न हो रहा है। इन लोगों के साथ रूसियों का व्यवहार काफी अच्छा है, उन्हे हर प्रकारकी सुविधा दी जा रही है। लैनी एक गुप्तचर था और इसी-लिए उसका मस्तिष्क एक और दिशा की ओर दौड़ने लगा। उसने प्रोफेसर से प्रश्न किया कि कैनाडा में सोवियत जासूसों का एक दल है जो वहाँ से आणविक रहस्य रूस को भेज रहा है। क्या अमेरिका में भी इस प्रकार की गुप्त क्रिया-शीलता की सम्भावना नहीं है? प्रोफेसर गाउड्समिट ब्रकहैवेन की राष्ट्रीय

शोधशाला में काम करते थे जहाँ सरकार एक नया आणविक प्लाण्ट स्थापित करने की योजना बना रही थी। लैनी की बात सुनकर वे क्षण भर के लिए स्तम्भित हो गए। किन्तु कुछ सोचकर उन्होंने कहा कि उनके संगठन में इस प्रकार के देश-द्रोहियों के रहने की सम्भावना बिलकुल नहीं है। किन्तु यदि इस प्रकार की कोई घटना हो गयी तो वह एक अत्यन्त भयानक बात होगी।

(५)

रेडियो पर प्रोफेसर गाउड्समिट का परिचय देते हुए लैनी को मन ही मन बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। उसे शान्ति-प्रोग्राम के श्रोताओं को यह बताते हुए गर्व का अनुभव हो रहा था कि प्रोफेसर ने आणविक अनुसंधान के कार्य में बड़ी महत्वपूर्ण खोज की है। आज कल विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं। इन आविष्कारों का तारतम्य कुछ इस प्रकार तेजी के साथ चल रहा है कि जन साधारण को इनकी पूरी पूरी जानकारी रखना सम्भव नहीं रहता।

प्रोफेसर ने अपनी रेडियो वार्त्ता में इसी विषय को लिया। उन्होंने कहा कि आजकल वैज्ञानिक जगत में सबसे बड़ी कठिनाई की बात यह है कि विशेषज्ञों के एक वर्ग का दूसरे वर्गों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रहने पाता। एक ओर सैद्धान्तिक गणितज्ञ लोग विज्ञान की सैद्धान्तिक समस्याओं पर विचार करते रहते हैं, दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिक इन सैद्धान्तिक मान्यताओं का शोधशाला में प्रयोगात्मक अध्ययन करने में लगे रहते हैं। यदि उन्हे सफलता मिलती है तो अन्य वर्गों को इसकी सूचना वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्राप्त हो जाती है। प्रत्येक नया आविष्कार सैकड़ों उत्साहपूर्ण मस्तिष्कों को आकर्षित करता है और उस पर नये नये प्रयोग होते रहते हैं। किन्तु आणविक विशेषज्ञों की स्थिति भिन्न है। प्रत्येक देश में इन्हें अन्य लोगों से एकदम अलग रखा जाता है; जनता के साथ इनका कोई सम्पर्क नहीं रहने दिया जाता। इस दिशा में ऐसी सतर्कता रखी जाती है मानों ये वैज्ञानिक लोग कोई भयंकर अपराधी हों। इन लोगों द्वारा जो आविष्कार होते हैं उन्हें भी सर्वोच्च महत्व के भेद समझकर एकदम गुप्त रखा जाता है, राष्ट्र की सुरक्षा के लिये यह सतर्कता आवश्यक समझी जाती है।

आणविक अनुसंधान के कार्य में लगे हुए वैज्ञानिकों के एक दल को इस बात का कोई पता नहीं रहता कि दूसरे दल ने क्या प्रगति की है।

रेडियो पर अपने पिछले भाषण में प्रोफेसर ने चेतावनी दी थी कि जर्मनी को पूर्वी और पश्चिमी राष्ट्रों के बीच खींचतान का अखाड़ा न बनने दिया जाय। किन्तु एक वर्ष के अनुभव ने उनके विचारों को काफी दूरतक परिवर्त्तित कर दिया था। आज जर्मनी दो टुकड़ों में विभाजित हो गया था। रूसवाले पूर्वी भाग को अपने साम्राज्य का एक कठपुतली देश बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। दूसरी ओर पश्चिमी राष्ट्रों की ओर से जर्मनी के दूसरे भाग में ठीक उसी प्रकार की शासन व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न हो रहा था जिस प्रकार की उनके यहां थी। प्रोफेसर गाउड्समिट का विश्वास था कि जर्मनी की जनता अपने देश को इस प्रकार दो टुकड़ों में विभाजित होते न सहन कर सकेगी; उसकी ओर से अवश्य राष्ट्रीय एकता की मांग उठेगी। किन्तु लैनी ने प्रश्नोत्तर के समय प्रोफेसर के मंतव्य का खण्डन करते हुए कहा कि यह एक संदिग्ध बात है। आज के युग में प्रचार कार्य का बहुत बड़ा महत्व है, प्रचार की यह शक्ति इतनी भयानक है कि इसका अनुमान लगाना कठिन है। जर्मनी दो भागों में विभाजित हो गया है और दोनों भागों की सरकारें अपने अपने ढंग से प्रचार कार्य कर रही हैं। यह प्रचार कार्य समाचार पत्रों, पुस्तकों, रेडियो, स्कूलों आदि के माध्यम से अनवरत रूप में चल रहा है। यदि यह प्रक्रिया जारी रही तो जर्मन जाति दो परस्पर विरोधी पीढ़ियों में विभाजित हो जाएगी। ये दोनों पीढ़ियां एक दूसरे से उसी प्रकार भिन्न होंगी जिस प्रकार कि जर्मन लोग पोलों अथवा फ्रांसीसियों से भिन्न हैं। इतिहास में एक बार तीस वर्षीय युद्ध हुआ था जिसमें जर्मन लोग आपस में लड़ते रहे थे। क्या दुबारा इसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं है? प्रोफेसर ने लैनी के तर्क को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि पूर्वी जर्मनी में रेडियो तथा अन्य साधनों द्वारा पश्चिम की गणतांत्रिक चिन्तनधारा पहुँचाना अत्यन्त आवश्यक है।

(६)

फिर मान्क का एक पत्र आया। इस बार उसने लिखा था, "वस्तुस्थिति

उलझती जा रही है। तुम्हारा तुरन्त आना आवश्यक है।" इसके बाद उसने अपने पत्र में यह भी लिखा था, "फर्डीनेण्ड और वह गूंगी लड़की एक दूसरे पर नज़र रख रहे हैं। दोनों अपनी अपनी रिपोर्ट भेजते रहते हैं। किन्तु उनकी रिपोर्टों में वह बात नहीं रहती जो हम चाहते हैं।"

वाह! कैसी विचित्र परिस्थिति है? ये दोनों युवक युवती एक दूसरे के साथ प्रेम का अभिनय कर रहे होंगे और दोनों एक दूसरे को नाजी गुप्त संगठन से सम्बन्धित समझ रहे होंगे!—या इस बात की भी सम्भावना है कि इनमें से प्रत्येक दूसरे को कम्युनिस्ट समझ रहा हो?

इधर बोरिस शब का भी एक पत्र आया था। उसने लिखा था कि "आप आर० आई० ए० एस रेडियो स्टेशन के नये रूप को देखने के लिये आइये। आजकल हम लोग प्रतिदिन बाईस घण्टे का प्रोग्राम चला रहे हैं। आप को सब कुछ इतना नवीन प्रतीत होगा कि आप उसे एकाएक पहचान भी न सकेंगे। हमारा विश्वास है कि निकट भविष्य में ही शब्द-युद्ध और भी उग्रता धारण करेगा। कम्युनिस्टों ने जर्मन-लेखक-संघ का आयोजन किया है। यह सम्मेलन पूर्वी जर्मनी में भी होगा किन्तु पश्चिमी जर्मनी से भी कुछ लेखक इसमें भाग लेने के लिये जाएंगे। बड़ा तमाशा रहेगा। आप आकर हम लोगों की कुछ सहायता क्यों नहीं करते? आप एक अच्छे रेडियो—लेखक हैं। आपने हमें जितने लेख भेजे थे वे सब हमने अनुवाद करके काम में ले लिये। दो लेख इतने पसंद किये गए कि हमें उन्हें दोहराना पड़ा।"

एक बात और भी हुई। लैनी का एक धनी ग्राहक अपने नगर में अपने नाम से एक कला-केन्द्र स्थापित करने का इच्छुक था। उसके पास बड़े बड़े कलाकारों के चित्रों का एक अच्छा संग्रह था। किन्तु इस संग्रह में एक कमी थी। इसमें रेम्ब्राण्ड्ट का कोई चित्र न था। उसने लैनी का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा कि वह उसके लिये कलाकार रेम्ब्राण्डट् का कोई वास्तविक चित्र खरीद लाने का प्रयत्न करे। लैनी स्वयं इन उत्कृष्ट कलाकृतियोंको अमेरिका में ले आने के लिये बड़ा उत्सुक था। वह बहुधा सोचा करता था कि उसे सफ-

लता मिली तो वह लारेल को ये चित्र दिखाने के लिये ले जाएगा। इन्हें देखकर वह कितनी प्रसन्न होगी।

फलस्वरूप लैनी फिर से योरोप-यात्रा के लिए रवाना हो गया। वायुयान में आराम के साथ बैठकर उसने पढ़ने के लिए एक पत्रिका निकाली। पत्रिका गम्भीर ढंग की थी। उसमें उसे एक स्थान पर एक प्रसिद्ध वाक्य दिखाई दिया जो कि प्रसिद्ध अंगरेज वक्ता एडमण्ड बर्क ने आज़ से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व कहा था—"अत्याचारी शासन का तर्क उतना ही घृणित होता है जितना कि उसकी शक्ति भयानक होती है।" लैनी ने इस वाक्य को अपनी स्मृति में सुरक्षित रख लिया। उसने सोचा कि कदाचित जर्मन-लेखक-संघ में उसे इसकी आवश्यकता पड़े। और आवश्यकता पड़ी भी।

(७)

लेखक सम्मेलन का आयोजन प्रचार कार्य के लिए ही हुआ था। इसकी रूप रेखा मास्को में बनी थी और इसकी निगरानी का कार्य सैनिक अधिकारियों को सौंपा गया था। योजना यह थी कि जर्मनी के चारों भागों से लेखकों को बुलाकर उन्हें सोवियत कम्युनिज्म के धर्म में दीक्षित करने का प्रयत्न किया जाय; उनके मस्तिष्क में यह धारणा प्रस्थापित करने का प्रयत्न किया जाय कि कम्युनिज्म द्वारा विश्व-विजय अनिवार्य है। किसी प्रकार कौशल द्वारा यह सम्मेलन जर्मनी की चारों सरकारों के तत्वावधान में आयोजित कर लिया गया था। इसका प्रबन्ध "अखिल जर्मन लेखक संघ" नामक प्रभावोत्पादक संस्था द्वारा कराया गया था। यह संस्था प्रथम महायुद्ध के पूव स्थापित हुई थी, इसके बाद हिटलर ने इसे बन्द कर दिया था। अब फिर से उसे खड़ा किया गया था। इसकी अध्यक्षा थीं प्रसिद्ध महिला उपन्यासकार रिचार्डा हच। इस समय इनकी आयु ८१ वर्ष की थी। इसके अतिरिक्त हेनरिक मान भी इसके अवैतनिक सभापति थे। संस्था के अधिवेशन अधिकतर पूर्वी जर्मनी के कामर्सवियले नामक स्थान में हुआ करते थे जो खुफिया पुलिस के दफ्तर से कुछ ही दूरी पर था। अमरीकियों को इस संस्था में कोई दिलचस्पी न थी। सम्मेलन में भी किसी अमरीकी लेखक को आमंत्रित न किया गया था।

लैनी जिस समय वायुयान से उतरा अधिवेशन का दूसरा दिन चल रहा था। लैनी को इसका पता बोरिस शब से चला। शब ने स्वयं उसके पास आकर अधिवेशन की सारी बात बतायी और अपने यहां भोजन का निमंत्रण दिया।

लैनी स्नानादि से निवृत्त होकर कई जर्मन और अमरीकी लेखकों से मिला। सभी बड़े उत्तेजित प्रतीत हो रहे थे। वे लोग लेखक संघ के अधिवेशन में गए थे। उन्होंने यह आशा की थी कि वहां किसी साहित्यिक विषय की चर्चा होगी। किन्तु वह सब कुछ न हुआ। वहां कर्नल डिम्सचिज ने एक रूसी लेखक को सामने कर दिया। ये लेखक महोदय मास्को की किसी पत्रिका के सम्पादक थे और एक सनसनीखेज फिल्म "वी आर फ्राम क्रोन्सटाड्ट" का सम्पादन भी कर चुके थे। इनका नाम था कामरेड विश्नेव्स्की। ये अपनी वर्दी और तमगों से लैस होकर रंगमंच पर आए और छूटते ही यह घोषणा की कि 'अमेरिका आक्रमणात्मक युद्ध की तयारी कर रहा है किन्तु रूस इस ओर सतर्क है। आज जर्मन लेखकों से भी उसका अनुरोध है कि वे अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ने के लिये तयार हो जायं।' उनका वक्तव्य यहीं तक सीमित न रहा था। वे कहते गए—

"वाशिंगटन और लंदन में प्रतिक्रियावादी शक्तियां एक "लौह-यवनिका" बनाने का प्रयत्न कर रही हैं। किन्तु सोवियत रूस इससे डरनेवाला नहीं है—अणुबम से भी नहीं। भाइयो! हम लोग इन धमकियों का उत्तर देना जानते हैं। यदि तुम्हे हमारी सहायता की आवश्यकता पड़े तो हमें तुरन्त सूचित करना; हम साथ साथ लड़ेंगे।"

प्रखर करतल ध्वनि से रूसी प्रवक्ता का स्वागत हुआ। बेचारे उदार जर्मन और अमरीकी लेखक सन्न से हो गए। उन्होंने आपस में विचार विनिमय किया कि विश्नेव्स्की के भाषण का उत्तर देना चाहिए। लेखक संघ से सम्बन्धित एक जर्मन लेखक बर्केनफेल्ड भीतर ही भीतर उदार मनोवृत्ति रखता था। उसने यह आश्वासन दिया कि यदि कोई अमरीकी लेखक विश्नेव्स्की के भाषण का उत्तर लिखकर तयार कर लेगा तो उसे बोलने का अवसर दिलाने के लिये वह भरसक प्रयत्न करेगा।

(८)

मेलविन जे० लास्की नामक एक अमरीकी लेखक आगे आया। वह बेचारा ऐतिहासिक लेख लिखने में लगा हुआ था और जीविकोपार्जन के लिये लिफ्ट चलाया करता था। वह जर्मनी में एक सैनिक के रूप में आया था किन्तु युद्ध समाप्त होने पर "न्यू लीडर" और "पार्टीजन रिव्यू" का संवाददाता हो गया था। उसकी आयु केवल २७ वर्ष की थी और वह जर्मनों से पूर्णतया अपरिचित था। विश्नेव्स्की से मिड़ने का कार्य अपने हाथ में लेकर उसने काफी साहस का परिचय दिया था। शब ने लैनी को बताया कि वह अपने कमरे में बैठा हुआ टाइपराइटर पर अपना भाषण तयार कर रहा है। संन्ध्या के समय वह उसके पास जाकर जर्मन में उसका अनुवाद करने में सहायता प्रदान करेगा।

इस प्रकार लैनी से मेलविन लास्की का प्रथम परिचय हुआ। शीघ्र ही दोनों में मित्रता हो गयी। मेलविन एक मझोले कद का व्यक्ति था, उसके छोटी छोटी मूंछे और दाढ़ी थी। यह दाढ़ी कम्युनिस्टों को बड़ी अरुचिकर प्रतीत होती थी क्योंकि बोलशेविक परम्परा के अनुसार दाढ़ी मूंछ सफाचट रखना आवश्यक समझा जाता था। वह रात भर अपना भाषण तयार करने में लगा रहा। शब, श्रीमती बर्कैनफेल्ड और लैनी ने अनुवाद कार्य में उसकी यथासम्भव सहायता की।

प्रातःकाल दस बजे सब लोग लेखक सम्मेलन के विशाल हाल में पहुँचे। प्रथम पंक्ति में अपने तमगों और वर्दियों से सुसज्जित सोवियत लेखक बैठे थे। द्वितीय पंक्ति में लैनी अपने दल के साथ बैठा था। कटु तथा उग्र विश्नेव्स्की के साथ नाटककार काटाएव भी बैठे हुए थे। इन महाशय ने सोवियत रूस में निवास-स्थान की तंगी को लक्ष्य करते हुए एक व्यंग लिखा था। यह व्यंग अमेरिका में बहुत पसंद किया गया था। किन्तु अब इन्होंने व्यंग लिखना बन्द कर दिया था। पास ही एक अन्य सोवियत लेखक गोर्बाटोंव बैठा हुआ था। शब ने एक बार एल्ब नदी के पास इससे भेंट की थी। उस समय इसने शब से क्षमायाचना करते हुए इस बात पर लज्जा प्रकट की थी कि जर्मनी से जो रूसी बन्दी वापस भेजे जा रहे हैं उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार हो रहा है; उन्हें क्रेमलिन के आदेश के अनुसार दास-मजदूर-शिविरों में बन्द किया जा रहा है।

अन्त में मेलविन लास्की को रंग मंचपर खड़ा किया गया। उसने अपना भाषण सावधानी के साथ पढ़ना शुरू किया। भाषण का पूर्वार्द्ध बड़ा आकर्षक था। उसने सम्मेलन को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह उसी के प्रयासों का फल है कि जर्मन लेखक एक बार फिर एक स्थान पर एकत्रित होकर आपस में विचार-विनिमय का अवसर प्राप्त कर सके हैं। उसके प्रत्येक वाक्य का रूसी प्रवक्ता अपनी भाषा में अनुवाद करता जाता था और रूसी लेखकों द्वारा तुमुल करतल ध्वनि होती रहती थी। उसने अपने भाषण में कहा कि अमरीकी लेखक भी "सचाई, स्पष्टवादिता और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।" सोवियत लेखकोंने अपनी सहमति जनायी, विरोध न किया। यह उनका पुराना हत्कण्डा था।

इस प्रकार भाषण चलता रहा। यदि लास्की और कुछ न कह कर अपना भाषण यहीं समाप्त कर देता तो उसे अवश्य ही एक महान लेखक के रूप में घोषित कर दिया जाता। किन्तु वह यहीं नहीं रुका। अमेरिका में युद्धकाल के अन्दर पुस्तकों के प्रकाशन पर सरकारी सेन्सर की चर्चा करते हुए उसने कहा कि "युद्ध-काल में अमेरिका की सरकार ने ट्राटस्की की आत्मकथा के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगा दिया था क्योंकि उसका विचार था कि इससे अमेरिका और रूसके पार-स्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा होगा। सोवियत रूस की तानाशाही, एक-पार्टी व्यवस्था, दास-मजदूर-शिविर आदि की आलोचना करती हुई अन्य कई स्पष्ट मनो-वृत्ति वाली पुस्तकों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। किन्तु मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि यह प्रतिबन्ध अस्थायी ही प्रमाणित हुआ। बाद में ये सारी पुस्तकें प्रकाशित हो गयीं।"

रूसी लेखकों की उपस्थिति में इस प्रकार के विचार व्यक्त करना एक खतर-नाक बात थी; सच तो यह है कि बर्लिन में इस प्रकार के विचार प्रथम बार ही व्यक्त हुए थे। कारण यह है कि अमरीकियों को सोवियत रूस की आलोचना करने से मना कर दिया गया था। प्रथम पंक्ति में बैठे हुए रूसी लेखकों की ओर ताकते हुए लास्की ने कहा, "मैं जानता हूँ कि किसी लेखक के लिए लिखने का

कार्य उस समय कितना कठिन हो जाता है जब उसके आगे सेन्सर और पीछे पुलिस का पहरा बैठा दिया जाता है।"

सभा मण्डप में हलचल मच गयी। सांस्कृतिक कमिश्नर उठकर चल दिये। व्यंगकार काटाएव (जिन्होंने पिछले दस वर्षों में कोई व्यंग न लिखा था) भी उठकर चले गए। अन्य कम्युनिस्टों ने हल्ला मचाना शुरू कर दिया– "युद्ध-पिपासु है! इसे बाहर निकालो! नीचे उतार दो!! एसलर की बात क्यों नहीं बताते?" किन्तु लास्की ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया; वह बोलता ही रहा। उसने उच्च स्वर में घोषणा की कि लेखक का कर्त्तव्य अत्यन्त पवित्र है, उसे मानव स्वतन्त्रता की रक्षा और हर प्रकार के अत्याचार का विरोध करना है। उसने बर्क के उस प्रसिद्ध वाक्य का व्यवहार किया जो उसने लैनी से सीखा था—"अत्याचारी शासन का तर्क उतना ही दयनीय है जितनी कि उसकी शक्ति भयावह है।"

लास्की का भाषण समाप्त हुआ। उसके शब्दों में कवि शेली के शब्द प्रतिध्वनित होते हुए प्रतीत हो रहे थे– "कवि मानव समाज का वास्तविक विधान-निर्माता है!"

(९)

रूसियों ने इस भाषण की बड़ी निन्दा की किन्तु जर्मनों ने इसकी प्रशंसा की। कई जर्मन लेखकों ने आकर उसे चारों ओर से घेर लिया। वृद्धा रिचार्डा हच जिसकी ख्याति का रूसी लोग अनुचित उपयोग करने पर तुले हुए थे, ने आकर लास्की को छाती से लगा लिया।

मध्यान्ह के समय सभा की अध्यक्षता एक रूसी ने की। व्यंगकार काटाएव बोलने के लिये खड़ा हुआ। उसने कहा :

"मैंने इस तथाकथित अमरीकी लेखक लास्की का भाषण सुना है और मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि अन्त में एक युद्ध पिपासु को अपने सामने सशरीर देख सका। सोवियत रूस में इस प्रकार के व्यक्ति नहीं दिखाई पड़ते। मुझे नहीं मालूम कि लास्की ने किस प्रकार की पुस्तकें लिखी हैं। मैं अन्य अमरीकी लेखकों से परिचित हूं किन्तु लास्की के साथ मेरा यह प्रथम परिचय ही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि इस लेखककी मृत्यु के बाद अमरीकी लोग कोई स्मारक बना-

एंगे तो उस पर ये शब्द अंकित करना न भूलेंगे—"अप्रसिद्ध लेखक का स्मारक" ! ···आज मनुष्य की सुरुचि और सांस्कृतिक गहराई उसके राजनैतिक विचारों से मापने की प्रथा चल पड़ी है। इस अप्रसिद्ध लेखक ने सोवियत रूस के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह आरम्भ से अन्त तक एकदम झूठ है। इस प्रकार की झूठी बातें हमारे लिए नयी नहीं हैं। डाक्टर गोबेल्स भी जर्मन जनता को रूस के विरुद्ध भड़काने के लिए इसी प्रकार के मिथ्या प्रचार का आश्रय लिया करते थे।"

इसके बाद कई सप्ताह तक रूस तथा उसके बन्दी देशों में इस साहित्यिक भिड़न्त की प्रतिध्वनि गूंजती रही। अत्याचारी सदा यही गलती करता है। वह इस बात को भूल जाता है कि इस प्रकार के वाद विवाद को प्रोत्साहन देने से उसी का अहित साधन होता है; जिन बातों को वह दबाना चाहता है वही प्रकट हो जाती हैं। मास्को के 'लिटरेरी गजेट' नामक समाचार पत्र ने इस घटना पर पूरा एक स्तम्भ लिखा था जो इस प्रकार है :—

"सभा मण्डप में शोरगुल बढ़ने लगा। 'अतिथि' के लम्बे भाषण से ऊब कर श्रोताओं ने एक स्वर से मांग की कि उसे हटा दिया जाय। अन्त में इस ठग को रंगमंच से नीचे उतार दिया गया और सभा-मण्डप छोड़ कर चले जाने के लिये बाध्य किया गया।"

किन्तु कम्युनिस्ट प्रेस में यह चर्चा यहीं समाप्त न हुई। समाचार पत्रों में उसे भांति भांति की गालियां दी जाती रहीं। एक पत्र ने उसकी दाढ़ी की ओर संकेत करते हुए लिखा "ट्राटस्की की दाढ़ी की सस्ती, हालीवुड के ढङ्ग की नकल'। उसे फासिस्ट और युद्ध-पिपासु घोषित किया गया। सांस्कृतिक कमीशार ने उसके भाषण के उत्तर के रूप में लगभग साढ़े तीन हजार पंक्तियों का एक उग्र वक्तव्य प्रकाशित किया। इस वक्तव्य में लास्की के व्यक्तित्व को ग्लानिपूर्ण बताते हुए उसका सम्बन्ध अणु बम के साथ स्थापित किया गया।

लास्की ने अपना भाषण जिन लोगों को प्रभावित करने के लिए तयार किया था वे नवयुवक जर्मन बुद्धिजीवी लोग थे। इन लोगों ने लास्की के भाषण से प्रभावित होकर एक "लास्की दल" की स्थापना कर डाली। कुछ लोग तो लास्की की भांति छोटी सी दाढ़ी भी रखने लगे।

लास्की के भाषण का प्रभाव बर्लिन के नवयुवकों तक ही सीमित नहीं रहा। अमरीकी लोग भी इससे काफी प्रभावित हुए थे। इस घटना के केवल तीन सप्ताह बाद जेनरल क्ले ने "इनफार्मेशन कन्ट्रोल डिवीजन" के डाइरेक्टर को यह आदेश दे दिया कि कम्युनिज्म पर हर प्रकार से आक्रमण किया जाय और उसके वास्तविक स्वरूप के नग्न प्रदर्शन का प्रयत्न किया जाय। इस प्रकार वह बात आखिर हो ही गई जिसके लिये लैनी ने अण्डरसेक्रेटरी आफ स्टेट मिस्टर अचेसन से इतनी अनुनय-विनय की थी। इस घटना के फल स्वरूप ही जर्मन भाषा में एक सुन्दर, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक मासिक पत्रिका निकालने का निश्चय हुआ। पत्रिका का नाम "डेर मोनाट" रखा गया और मेलविन लास्की को इसका सम्पादक बनाया गया।

(१०)

बर्लिन में लेखक सम्मेलन में भाग लेने के लिए मान्क के पास समय न था। किन्तु लैनी ने उसे सारा हाल बता दिया। मान्क ने लैनी को "काटिन हत्याकाण्ड" के सम्बन्ध में होने वाली कुछ नवीनतम खोजों की जानकारी दी। उसने 'वोल्किस्चरबण्ड' के सम्बन्ध में होने वाली खोजों की चर्चा भी की। कर्ट मेसनर अभी तक पूर्वी बर्लिन में ही था। शायद अभी कुछ समय तक वहीं रहने का विचार था। वह जर्मन जनता की राष्ट्रीय भावना को जागरूक रखने के लिए सक्रिय रूप में प्रयत्नशील था। फ्रित्ज के सम्बन्ध में उसने यह निश्चय किया था कि वह अपनी पढ़ाई चालू रखे।

'बहरी फ्रांसीसी लड़की' अभी तक वेन्डेफुर्थ में थी। "बहरी फ्रांसीसी" लड़की के मजाक पर दोनों मित्र जी खोल कर हंसे। उसने वेण्डेफुर्थ में हैंस शूफर्ट नामक एक व्यक्ति से घनिष्टता प्राप्त कर ली थी। वह वहां से समय समय पर मान्क को अपनी रिपोर्ट भेजती रहती थी। हायनरिक ब्रिकमान जो इस दल का नेता था, इस समय हंगरी चला गया था। वहाँ इन लोगों का एक छापाखाना था। इस बात की काफी सम्भावना थी कि जाली नोट छापने वाली प्लेटें भी वहीं भेज दी गयीं हों।

जासूसी का काम एक टेढ़ा काम है। सब कुछ अनुमान पर निर्भर करता है अंधेरे में भटकते हुए अपना रास्ता खोजना पड़ता है।

लैनी ने फ्रित्ज और उस लड़की के सम्बन्ध में पूछा। मान्क ने बताया कि जहां तक उसका अनुमान है अभी इन दोनों में से किसी को भी इस बात का पता नहीं चला है कि दूसरा व्यक्ति जासूस है। इस समय दोनों एक दूसरे से दूर हैं। मान्क ने यह भी बताया कि फ्रित्ज के साथ उसकी मुलाकात हुई थी किन्तु उसने इस लड़की अन्ना सर्डेन के सम्बन्ध में उससे अधिक पूछताछ नहीं की क्यों कि वह यह न चाहता था कि फ्रित्ज इस बात को जान जाय कि अन्ना के साथ मान्क का पहले से ही परिचय था। किन्तु सम्भव है कि फ्रित्ज इस सम्बन्ध में लैनी से बातें करने के लिए उत्सुक हो। यदि ऐसा हुआ तो यह एक महत्व पूर्ण बात होगी क्यों कि इससे दोनों की मनोस्थित पर काफी प्रकाश पड़ेगा।

अन्त में मान्क ने ही अप्रत्यक्ष रूप में फ्रित्ज और लैनी की मुलाकात का प्रबन्ध कराया। फ्रित्ज लैनी के होटल में गया। उसने लैनी से मिलकर बड़ी प्रसन्नता का अनुभव किया। उसने कहा कि इस समय वह स्कूल में अपने सहपाठियों के सामने इस प्रकार का भाव प्रदर्शित कर रहा है, मानों वह नाजी दल का कोई गुप्तचर हो। किन्तु यह एक खतरनाक बात है क्योंकि नाजी आदर्शों से सहानुभूति रखने वाले कई विद्यार्थी स्कूल से अचानक गायब हो चुके हैं। कम्युनिस्टों की खुफिया पुलिस के आदमी अचानक रात के समय उनके निवास स्थान पर पहुंचे और उन्हें अपने साथ ले गये।

"जहां तक पिता का सम्बन्ध है वे कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति का स्वांग रच रहे हैं।"

लैनी ने फ्रित्ज की बातों को ध्यानपूर्वक सुना। इसके बाद अभिभावक के स्वर में प्रश्न किया "मैंने सुना है कि तुम्हारा किसी लड़की से प्रेम हो गया है। क्या यह बात सच है?"

"मैं क्या बताऊं मिस्टर बड, मुझे बड़ी उलझन हो रही है। मैं समझने लगा था कि अब मैं सुख और आनन्द के साथ रह सकूंगा·····किन्तु नहीं। आजकल के जमाने में सुख शांति किसके भाग्य में है?"

"यह लड़की कौन है ?"

"उसका नाम अन्ना सडेंन है। वह वेण्डेफुर्थ में अपने परिवार वालों को खोजने के लिए आई थी। किन्तु उनका कोई पता नहीं है। शायद वे लोग गांव छोड़ कर कहीं दूसरी जगह चले गये। हम दोनों में बातें हुईं। वह एकाकीपन के भार से दुखी थी और मैं भी संसार में अपने आप को अकेला अनुभव कर रहा था। आप जानते हैं इस प्रकार की परिस्थितियों में क्या होता है।"

"मै सब जानता हूं। किन्तु क्या तुम्हें यह भय न हुआ कि तुम्हारे कारण वह बेचारी किसी मुसीबत में पड़ सकती है।"

"मैंने पूरी सावधानी रखी थी।"

"क्या तुम्हे इस बात का भय भी न हुआ कि उसे तुम्हारे वास्तविक काम का पता चल जाय और वह तुम्हें पकड़ा दे ?"

"उसे राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है, मिस्टर बड।"

"उसने तुम्हारे कामकाज के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया ?"

"किया था। किन्तु मैंने गोल मटोल उत्तर देकर टरका दिया। मैंने कह दिया कि मेरे पिता मेरा खर्च उठाते हैं और मैं मनोयोग के साथ अपने अध्ययन में लगा हुआ हूं।"

"उसने तुम्हारे पिता के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया ?"

"कभी कभी वह उनके सम्बन्ध में पूछताछ करती रहती थी। यह स्वाभाविक भी है क्यों कि मेरे पिता एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और सब के मन में उनके सम्बन्ध मे कुछ न कुछ कौतूहल है। किन्तु आप विश्वास रखिए, मैंने उसको कोई ऐसी बात नहीं बतायी जो हमारी योजना पर कोई असर डाले।

"इस समय वह कहां है ?"

"इस समय वह वेण्डेकुर्थ में ही है क्योंकि और कहीं उसके लिये कोई स्थान नहीं है।" मैं उसे छोड़कर यहां आ गया हूं क्योंकि पिता जी का हठ है कि मैं पढ़ाई न छोड़ूं। मेरे चले आने से उस बेचारी को गहरा सदमा लगा होगा।"

"वह तुम्हे पत्र लिखती है ?'

"लिखती है। किन्तु मैं इस बात का भरसक प्रयत्न करता हूं कि उसे भूल

जाऊं क्योंकि मैंने जो कार्य अपने हाथों में लिया है उसे पूरा करना आवश्यक है। इस प्रकार की स्थिति में शादी की बात सोची भी कैसे जा सकती है? वह अवश्य प्रतीक्षा करने के लिए राजी है किन्तु मैं उसे कोई प्रोत्साहन नहीं दे सकता।"

लैनी भी फ्रित्ज को कोई प्रोत्साहन न दे सकता था। उसके मनमें हैन्स शूफर्ट का विचार आया जिससे अन्ना को वहां की जानकारी प्राप्त होती रहती थी। लैनी जानता था कि नाजी लोग किस प्रकृति के होते हैं। वह लड़की फ्रित्ज के प्रति प्रेम बनाए रहेगी तो शूफर्ट के साथ उसकी घनिष्टता अधिक समय तक न चल सकेगी। इस प्रकार इन भयानक परिस्थितियों में न प्रेम की गुञ्जायश थी न विवाह की!

(११)

लैनी जर्मनी में अपने ग्राहक के लिए रेम्ब्राण्ड्ट का कोई चित्र खरीदने के उद्देश्य से आया था। उसे दो चित्रों का पता भी चला। किन्तु ये दोनों चित्र एक दूसरे से पूर्णतया भिन्न थे। एक में उस कलाकार को एक सुन्दर स्वस्थ और सुखी युवक के रूप में अंकित किया गया था; दूसरे में एक वृद्ध, चिन्तित तथा उदास व्यक्ति के रूप में। यदि किसी कला केन्द्र में ये दोनों चित्र साथ साथ रखे जायं तो कैसा अभूतपूर्व दृश्य हो! प्रत्येक सहृदय दर्शक क्षण भर के लिये स्तम्भित हो उठे!!

यह दूसरा चित्र जर्मनी के ब्रिटिश अंचल में स्वलास नामक नगर में था। यह नगर हैनोवर के पास था। लैनी वायुयान द्वारा वहां पहुँचा और उस चित्र के मालिक से मिला। इसी व्यक्ति से लैनी ने बीस वर्ष पूर्व यही चित्र खरीदने का प्रयत्न किया था। किन्तु उसने इनकार कर दिया था। किन्तु आज परिस्थितियां बदल गयी थीं। वह धनी स्टील-व्यापारी अब निर्धन हो चुका था। उसका नाम था हर श्लेसिन्गर।

दोनों में मूल्य के सम्बन्ध में काफी देर तक मोल तोल होता रहा। पहले उसने इस चित्र के लिये सवा दो लाख डालर मांगे। किन्तु लैनी इतना ऊंचा मूल्य देने के लिये राजी न हुआ। वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और दरवाजे

की ओर बढ़ा। चित्र के मालिक ने सौदा बिगड़ते देख कर अपना मूल्य घटा कर २ लाख १० हजार डालर किया। किन्तु लैनी की दृष्टि में यह मूल्य भी ऊंचा था। वह कमरे से बाहर निकल कर अपनी मोटर की ओर बढ़ा। बेचारे श्लेसिन्गर की आंखों में आंसू आ गए। उसने कांपते हुए स्वर में कहा, "अच्छा, पौने दो लाख डालर दे दीजिए।"

इस मूल्य पर लैनी राजी हो गया।

(१२)

दोनों वापस कमरे में आकर बैठ गए। कागज निकाले गए और पक्की लिखा पढ़ी हो गयी। लैनी ने हर श्लेसिन्गर को लन्दन की एक बैंक पर पौने दो लाख डालर का एक ड्राफ्ट दे दिया और उसके बाद बैंक को टेलीफोन करके इस बात का निश्चय कर लिया कि ड्राफ्ट का भुगतान हो जायगा। चित्र लैनी की गाड़ी में रख दिया गया। वृद्ध श्लेसिन्गर की आंखों में हर्ष और विषाद का एक मिश्रित सा भाव था।

लैनी ने उस बहुमूल्य चित्र को एक दूकान पर ले जाकर अच्छी तरह से वाटर प्रूफ कागज में पैक करवाया और इसके बाद अपने होटल में ले गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल अमेरिकन एक्सप्रेस कम्पनी के माध्यम से उस बहुमूल्य कलाकृति को न्यूयार्क के लिये रवाना कर दिया गया। उसके पूरे पूरे मूल्य का बीमा करवा लिया गया था। लैनी ने अपने ग्राहक को तार भेज कर सूचित कर दिया और इसके बाद इस ओर से निश्चिन्त हो गया। इस सौदे में कला-विशेषज्ञ लैनी को १७ हजार ५०० डालर कमीशन के रूप में प्राप्त हुए।

यह काम समाप्त होने पर लैनी वायुयान द्वारा बर्लिन की ओर रवाना हुआ। मार्ग में पढ़ने के लिये उसने जेन वेल्श कार्लाइल की एक पुस्तक ले ली थी। यह पुस्तक उसे बड़ी पसन्द आयी। उसे आश्चर्य हुआ कि जेन कार्लाइल की अपेक्षा लोग उसके पति टामस कार्लाइल की पुस्तकें पढ़ना क्यों अधिक पसंद करते हैं।—और जेनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ टामस कर्लाइल की वह विराट पुस्तक "फेडरिक महान" समाप्त कर चुके या अभी तक उसी में उलझे हुए हैं?

अध्याय १४

● अधर में अटके ●

(१)

जब लैनी वापस बर्लिन पहुँचा उसे अपने होटल में एक पत्र मिला। पत्र में हस्ताक्षर के स्थान पर "ब्रान" लिखा हुआ था। लैनी समझ गया कि यह मान्क का पत्र है। उसने मान्क को टेलीफोन किया और कहा कि वह तुरन्त चला आवे।

कुछ ही देर में मान्क लैनी के पास आ गया। कमरे का दरवाजा बन्द करके दोनों बातें करने के लिए बैठे। मान्क ने बिना किसी प्रकार की भूमिका बांधे संक्षेप में कहा, "बुरी खबर है, लैनी। फर्डीनेन्ड गिरफ्तार हो गया है।" होटल के बन्द कमरे में भी मान्क ने फित्ज का असली नाम न लेकर उसे फर्डीनेण्ड कहना ही अधिक उपयुक्त समझा क्योंकि होटल के कमरे भी निरापद नहीं रहते ; नौकरों को घूस देकर उनसे जासूसी करवाई जा सकती है अथवा गुप्त रूप में रेकार्डिंग मशीन बैठा दी जा सकती है।

मान्क की बात सुनते ही लैनी आश्चर्य से अभिभूत होकर उछल पड़ा। "अरे, नहीं। यह एकदम अविश्वसनीय है!"

"यह एकदम सत्य है। जिस कमरे में वह रहता था उसमें और भी कई साझी दार रहते थे। एक दिन तीन व्यक्ति वहां गए। एक ने उसकी ओर संकेत किया और शेष दो ने बिना कुछ कहे सुने उसे हथकड़ी पहना दी।"

"तीनों रूसी थे?"

"निश्चय ही तीनां एम० जी० बी० के एजेण्ट थे। पूर्वी जर्मनी में सोवियत खुफिया पुलिस का यही नाम है।"

"क्या हम लोगों के साथ इस घटना का कोई सम्बन्ध है?"

"चलो, जरा घूम आवें।" मान्क ने कहा।

दोनों सीढ़ियों से अलग अलग उतरे और बाहर सड़क पर मिल गए। इसके

बाद दोनों छोटी छोटी तंग गलियों से होते हुए आगे बढ़े। वे इस बात को निश्चय कर लेना चाहते थे कि कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा।

रास्ते में मान्क ने कहा, "इस प्रश्न पर मैंने काफी सोचा है। बड़ा पेंचीदा मामला है। उस लड़के पर अधिकारियों का पहले से ही संदेह था। वे समझते थे कि हृदय से वह नाजी है और ऊपर से कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति का स्वांग रच रहा है। उसने अपने कुछ मित्रों से भी कह रखा था कि हृदय से वह नाजी ही है। इस प्रकार इस बात की काफी सम्भावना है कि अधिकारियों ने उसे नाजी होने के सन्देह पर गिरफ्तार किया हो। किन्तु इतना निश्चित है कि उसे हर प्रकार की यातना देकर उससे भेद की बातें प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया जाएगा।"

"क्या तुम समझते हो कि वह हम लोगों का भेद खोल देगा?"

"वे लोग उसे इतनी यातना देंगे कि उसका मस्तिष्क नष्टभ्रष्ट हो जाएगा और वह अपना होश हवास खोकर अनजान में ही बहुत कुछ कह जाएगा। सब कुछ कह डालने के बाद भी शायद उसको इस बात का पता न लगेगा कि उसने क्या क्या कहा है।"

"मान्क, यह तो सर्वनाश हो गया! इस सम्बन्ध में हम लोग कर भी क्या सकते हैं?"

"कुछ भी नहीं। कानूनन वह एक सोवियत नागरिक है। और जहाँ तक मेरा अनुमान है इस समय वह रूस में ही होगा। यदि हम लोग उसके सम्बन्ध में किंचित मात्र दिलचस्पी दिखाएंगे तो अधिकारियों को तुरन्त सन्देह हो जाएगा कि हम लोगों के साथ भी उसका कुछ न कुछ सम्बन्ध था। यह और भी बुरा होगा।"

"और इस बात का भी कोई ठीक नहीं कि हमें कब तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'

"मैं इस प्रकार के मामले भी देख चुका हूँ कि जिन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया उनके परिवार वालों को दस वर्ष तक कुछ पता ही न चल सका। कम्युनिस्ट लोगों ने जिन जिन लोगों को पकड़ा था उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो अभी तक लापता हैं।"

"यह सब सोच कर मुझे और भी बेचैनी हो रही है।" लैनी सचमुच बड़ा उद्विग्न हो रहा था। अपने आप को संयत करने के लिये वह क्षण भर के लिये एक टूटे फूटे मकान के सामने पड़ी हुई ईंटों के ढेर पर बैठ गया। मान्क भी उसके पास बैठ गया किन्तु बोला कुछ नहीं। इस नये योरोप में जिस प्रकार की वस्तुस्थिति की सृष्टि हो गयी थी उसमें निवास करने के लिये काफी दृढ़ मनोबल की आवश्यकता थी और वैसा मनोबल लैनी तक अपने अन्दर विकसित न कर सका था।

(२)

थोड़ी देर बाद दोनों फिर चलने लगे। मान्क ने समस्या पर अपना मत प्रकट करते हुए कहा, "यदि वे लोग उसे नाजी समझेंगे तो यह उसके लिये अच्छा ही रहेगा। बात यह है कि इस समय वे लोग नाजियों की विशेष चिन्ता नहीं करते क्योंकि नाजीवाद पराभूत हो चुका है। सम्भव है वे लोग उससे यह प्रस्ताव करें कि तुम हम लोगों की ओर से काम करो। यदि ऐसा हुआ तो हम लोग शीघ्र ही उसे फिर देख सकेंगे।"

"वह किसी भी अवस्था में हम लोगों के साथ विश्वासघात न करेगा—इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।" लैनी ने कहा।

"उसे वे लोग दोहरा एजेण्ट बनाने का प्रयत्न कर सकते हैं। सम्भव है उससे अपने पिता पर जासूसी करने के लिए कहा जाय और मुझ पर भी। उन लोगों को तो इस बात का पता न होगा कि वह अपने पिता पर जासूसी कर ही रहा है।"

"यदि उसे कुछ हुआ तो मैं अपने आपको कभी क्षमा न कर सकूँगा।"

"पागल मत बनो।" मान्क ने दृढ़ स्वर में कहा। "इस समय हम लोग एक प्रकार के युद्ध से गुजर रहे हैं। तुमने लोगों को मरते हुए देखा है। फिर यहाँ ऐसी भावुकता क्यों? वह लड़का जानता था कि उसने जो काम अपने हाथ में लिया है वह खतरनाक है। उसने हंगरी तक जाकर उन जाली सिक्के वालों का पता भी लगाया था। एक बात और भी है। यदि तुम्हारे साथ उसकी मुलाकात न हुई होती तब भी वह निरापद न रह सकता था, अपने पिता का अनुसरण

करने पर भी वह निरापद न रह सकता था और उनका विरोध करने पर भी वह निरापद न रह सकता था।"

"यह सब मैं जानता हूँ। मैंने स्वयं उसको चेतावनी दी थी।"

"हम सब ने उसको आगाह कर दिया था। उसने जान बूझ कर यह रास्ता अपनाया था। जर्मनी में इस प्रकार की घटनायें होती ही रहती हैं। अभी कुछ ही दिन पहले कम्युनिस्ट लोग विश्वविद्यालय से ६ विद्यार्थी पकड़ ले गये थे। इससे बड़ी हलचल मच गई थी। किन्तु कम्युनिस्ट लोग इसकी चिन्ता नहीं करते। वस्तुतः वे आतंक फैला कर प्रसन्न ही होते हैं। हम लोगों के अंचल में भी वे लोग बहुधा आते रहते हैं। यहां से रातोरात वे जर्मनों को पकड़ कर ले जाते हैं और हमको इसकी कोई सूचना तक नहीं मिल पाती। हमें इन बातों का पता तभी लगता है जब कोई खलबली मचती है। वे कम से कम एक दर्जन अमरीकियों को यहां से उड़ा ले गये हैं। किन्तु प्रत्येक बार उन्होंने हमें यही उत्तर दिया कि उन्हें इन अमरीकियों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। जो भी हो, जब तक हमें इस मामले के सम्बन्ध में सारी बातें न मालूम हो जायं तब तक हम कोई अनुमान नहीं लगा सकते।"

"इन गिरफ्तारियों और अपहरण काण्डों के बारे में मुझे भी काफी जानकारी है किन्तु यह प्रथम अवसर ही है कि मेरे किसी परिचित व्यक्ति के साथ यह घटना घटी हो।"

"अच्छा, एक बात और है। मैं तुम्हें पहले भी कई बार सावधान कर चुका हूँ और एक बार फिर कह रहा हूँ। रात के समय सड़कों पर कभी अकेले मत घूमना। वे लोग तुम्हें "आर० आई० ए० एस० रेडियो के कर्मचारी के रूप में जानते हैं और इस रेडियो के प्रति उनके मन में जैसी घृणा है वह तुम जानते ही हो। उस दिन तुम लेखक सम्मेलन में चले गये थे। वे लोग तुम्हें लास्की के मित्र के रूप में जानते हैं। और अब यह फर्डीनेण्ड काण्ड हो गया है। उस लड़के से वे लोग हमारा भेद प्राप्त कर सकते हैं अथवा सम्भव है उन्हें पहले से ही सारी बातों का पता हो। जो भी हो, तुम्हारा जीवन निरापद नहीं है। मैं तुम्हें सावधान किये देता हूं कि यदि कभी तुम्हे पकड़ने का प्रयत्न हो तो तुम भलमन-

साहत के फेर में मत पड़ना—तुरन्त जोर जोर से चिल्लाने लगना, अपना नाम चिल्ला चिल्ला कर प्रकट कर देना। तुम्हारे बचने का यही एक मात्र उपाय है कि शायद किसी भले आदमी को दया आ जाय और वह टेलीफोन करके ए० एम० जी० को सूचित कर दे। यदि हमें इस बात का पता चल जाता है कि हमारे क्षेत्र से कम्युनिस्ट लोग किसी को उड़ा ले गये हैं तो हम लोग ऐसा शोरगुल मचाने लगते हैं कि अन्त में कम्युनिस्टों को उसे लौटा देने के लिए बाध्य होना पड़ता है।'

"अच्छा ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगा।" लैनी ने मुस्कराते हुए कहा। उसे मन ही मन इस प्रकार की स्थिति में पड़ने और बेतहाशा चिल्लाने की कल्पना पर हंसी आ रही थी। किन्तु दूसरे ही क्षण उसकी वह मुस्कराहट गायब हो गयी। उसे अचानक फ्रित्ज की याद आ गई। वह बेचारा भी इस समय किसी काल कोठरी में चिल्ला रहा होगा। किन्तु उसकी चीख पुकार उस कोठरी के बाहर न जा पाती होगी क्यों कि कम्युनिस्ट लोगों ने अपने कैदियों को रखने के लिये एक विशेष प्रकार की कोठरियां बनवा ली हैं जिनमें कोई कितना ही चीखे पुकारे उसकी आवाज बाहर नहीं जा पाती। कम्युनिस्टों ने यह कला नजियों से सीखी थी। हरमान गोयरिन्ग एक बार लैनी को इस नये ढंग के कैदखाने दिखाने के लिये ले गया था।

"तुम बड़े भावुक हो, लैनी।" मान्क ने कहा, "ऐसे भावुक व्यक्तियों को यहां आना ही न चाहिये। किन्तु हम लोगों का काम तो भावुकता से नहीं चल सकता। हम लोग उस लड़के को मरा हुआ समझ कर उसके स्थान पर कोई नया एजेंट नियुक्त करने का प्रयत्न करेंगे। यदि वह लौट आया तो ठीक है– किन्तु शायद उसे वापस भेजा भी गया तो उसके स्नायु तन्तुओं को इस प्रकार छिन्न भिन्न करके भेजा जायगा कि भविष्य में वह कोई काम न कर सकेगा।"

"जो भी हो, तुम्हें उसने वे सारी बातें तो बता ही दी होंगी जिनका कि उसने पता लगाया था।"

"इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ कहना कठिन है। शायद उसके पास कुछ कागज रह गये हों। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा।"

"बेचारा कर्ट !" लैनी ने एक लम्बी सांस लेकर कहा। "मैं समझता हूँ उसे तो इसका पता चल ही गया होगा।"

"मैं एक दूसरी ही बात सोच रहा हूं।" मान्क ने उत्तर दिया। "इस समय मेरे सामने प्रथम प्रश्न यह है कि फ्रित्ज के स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति को खोजने का प्रयत्न किया जाय।"

"और यह एक ऐसा प्रश्न है जहां मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता" लैनी ने संक्षेप में उत्तर दिया।

(३)

लैनी ने कहने को तो कह दिया किन्तु इस विचित्र व्यापार में किसी प्रकार का निश्चय कर लेना और उसको निभा ले जाना कठिन था। भविष्य में कब किस प्रकार की परिस्थिति पैदा होगी इसका कोई अनुमान न लगाया जा सकता था। उदाहरण के लिये होटल में लौटकर लैनी ने जो दृश्य देखा उसकी उसने स्वप्न में भी कल्पना न की थी। बाहर बरामदे में बैठा हुआ था कर्ट मेसनर! उस पराभूत जर्मनी में आश्चर्यों की कोई कमी न थी किन्तु यह आश्चर्य तो एकदम कल्पनातीत था !!

भाव भंगिमा से वह और भी वृद्ध, गरीब तथा हतोत्साह प्रतीत हो रहा था। उसका चेहरा फक हो गया था। इस रूप में कर्ट को देखने की लैनी ने कभी कल्पना तक न की थी। अचानक उसके मन में यह विचार बिजली की भांति दौड़ गया कि कदाचित कर्ट को अपने पुत्र की गिरफ्तारी की बात मालूम हो गयी है।

किन्तु लैनी ने अपने मन के भाव को प्रकट न किया बल्कि प्रफुल्लता के स्वर में कर्ट का अभिवादन करते हुए कहा, "क्यों कर्ट, कैसे आये? क्या तुम मुझसे मिलने के लिए आये हो?"—मानों उसे विश्वास न हो रहा था कि कर्ट उसी से मिलने के लिए आया है!

"वे लोग मेरे बड़े लड़के फ्रित्ज को पकड़ ले गये हैं।" कर्ट ने निस्तरंग स्वर में कहा।

"कौन? कम्युनिस्ट लोग?"

'हां, वे लोग उसे उसके कमरे से पकड़ ले गये हैं।"

"ओह ! कैसी भयानक बात है!" लैनी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। "अब क्या किया जाय ?"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। मैं पुलिसवालों के पास गया था, सैनिक अधिकारियों के पास भी गया था। किन्तु वे लोग कहते हैं कि उन्हें कुछ भी पता नहीं है। वे मेरी ओर अपमान भरी दृष्टि से देखते हैं। मानों उन्हें आश्चर्य हो रहा हो कि एक जर्मन कुत्ता उनके पास आने की धृष्टता कैसे कर रहा है।'

"मुझे यह बताओ कि तुम्हारा लड़का क्या कर रहा था ? उसके राजनैतिक विचार किस प्रकार के थे ?"

"वह स्वभावतः एक जर्मन राष्ट्रभक्त था। किन्तु मैंने उसे चेतावनी दी थी कि हम लोगों को पूर्वी क्षेत्र में रहना है और इसलिये ऊपर से कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करना आवश्यक है। अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं। वे लोग अवश्य ही उसपर अत्याचार करेंगे और उससे सब कुछ कबुलवाने का प्रयत्न करेंगे। इसके बाद शायद मेरी बारी आएगी। मैं जब एम० जी० बी० के कार्यालय में फ्रित्ज का पता लगाने के लिये गया था तब मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद मैं बाहर न आ सकूंगा। मैं अपने बारे में चिन्तित नहीं हूँ—अब मुझे जीवन में कोई आकर्षण नहीं रहा। मैं एक विक्षिप्त और पराजित व्यक्ति हूं। किन्तु मुझे अपनी पत्नी एल्सा और बच्चों की चिन्ता है। उनका क्या होगा ?'

"क्या तुमने एल्सा को बता दिया है ?" लैनी ने प्रश्न किया।

"एल्सा अभी वेण्डेफुर्थ में है। मैंने अभी तक उसे कुछ भी नहीं लिखा है। मुझे साहस नहीं हो रहा। उसे पता चलेगा तो वह दुःख से पागल हो जायगी। वह फ्रित्ज को बहुत चाहती है।"

"कर्ट, यह सचमुच एक भयानक बात है।" फ्रित्ज के लिए लैनी के हृदय में भी अपार सहानुभूति थी किन्तु कर्ट के लिए उसकी सहानुभूति एकदम निस्सीम न थी। वह जानता था कि यद्यपि आज कर्ट अपने पुत्र की गिरफ्तारी का समा-

चार सुनकर शोकाकुल हो रहा है तथापि नाजियों के राज्य में कितने ही पिताओं को इसी प्रकार शोकाकुल होना पड़ा था !! लाखों व्यक्तियों को नाजी अत्याचार की विभीषिका में पिसना पड़ा था। उस समय कर्ट नाजी दल का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। उसे सारी बातों की जानकारी थी। किन्तु उसने इस अत्याचार के विरुद्ध एक शब्द भी न कहा था। और आज स्थिति बदल गई है। गर्वोन्नत विजयी पराभूत हो गया है!

"तुम्हें फ्रित्ज की याद है न, लैनी ?" कर्ट ने प्रश्न किया।

"मुझे उसकी याद है—भूरे भूरे बाल, नीली आंखे, लम्बा छरहरा शरीर।"

"हां, इस समय उसका कद तुम्हारे बराबर है। मैंने उसे एक कर्त्तव्य परायण और दृढ़ मनोबल वाले व्यक्ति के रूप में तयार किया है। किन्तु कम्युनिस्टों के अत्याचार के सामने उसका मनोबल कहां तक टिक सकेगा, यह कहना कठिन है।"

"किन्तु तुम अपने आप पर जो अत्याचार कर रहे हो वह व्यर्थ है। शायद वस्तुस्थिति इतनी बुरी न निकले जितनी की तुम समझते हो। सम्भव है कुछ दिनों तक उसे बन्द रख कर वे लोग उसे छोड़ दें।"

"इसकी कोई सम्भावना नहीं प्रतीत होती। वे लोग हिटलर के प्रभाव की छाया तक को समूल नष्ट कर देने पर तुले हुए हैं। वे लोग उससे मेरे बारे में और मेरे साथियों के बारे में प्रश्न करेंगे। मैंने अभी तक उनके विरुद्ध किसी प्रकार की क्रियाशीलता में कोई भाग नहीं लिया है। किन्तु तुम तो जानते ही हो, वे लोग किसी भी व्यक्ति से जो कुछ चाहें कबूल करवा सकते हैं।"

लैनी के अन्तर्मन में एक क्रूर प्रतिस्पर्द्धा की सी भावना उठी। तो तुम अब समझे हो ! अभी तक तुम क्या कर रहे थे ? किन्तु लैनी ने बलात इस अनुदार भावना को दबा लिया। सहानुभूति के स्वर में उसने कहा, "कर्ट, अब तुम्हें अपने परिवार के शेष व्यक्तियों की ओर ध्यान देना चाहिए।"

"इसीलिये तो मैं तुम्हारे पास आया हूँ। तुमने मुझसे एक बार कहा था कि तुम मुझे अमरीकी क्षेत्र में चले आने की सुविधा दिला सकते हो। क्या अब भी यह सम्भव है ?"

"मैं पूरा पूरा प्रयत्न करूंगा। क्या एल्सा को अपने बच्चों के साथ बर्लिन आने की अनुमति मिल सकती है?"

"मिल तो जानी चाहिए। मैं इस समय बर्लिन में हूँ और इसलिए यदि मेरे परिवार वाले मेरे पास आने की इच्छा प्रकट करेंगे तो यह एक स्वाभाविक बात ही समझी जायगी। एक बार पूर्वी बर्लिन में पहुंच जाने पर वे आसानी से सीमा पार करके अमरीकी क्षेत्र में आ सकते हैं। प्रश्न केवल यही है कि उन्हें अमरीकी क्षेत्र में रहने की अनुमति दी जायगी या नहीं। एक बार यहां आकर लौटना पड़ा तो साइबेरिया की ओर निर्वासन सुनिश्चित है।"

"मैं स्वयं नहीं चाहता कि तुम्हारे बच्चों का लालन पालन कम्युनिस्ट व्यवस्था के अन्दर हो। किन्तु कर्ट, एक बात है। जब मैं सैनिक अधिकारियों से तुम्हारे लिए पश्चिमी क्षेत्र में आने की अनुमति मांगने के लिये जाऊंगा तो वे अवश्य ही यह पूछेंगे कि भविष्य में तुम्हारी राजनैतिक गतिविधि किस प्रकार की रहेगी। तुम तो जानते ही हो, वे अपने अंचल में नये नाजियों को नहीं लाना चाहते।"

"मैं विश्वास दिलाता हूं, लैनी, मैं राजनैतिक व्यक्ति नहीं हूँ। मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि नाजी आंदोलन समाप्त हो चुका है और उसके पुनर्जीवन की कोई सम्भावना नहीं है। अब जर्मनी को एक गणतांत्रिक देश बनना ही पड़ेगा।"

यह कहते हुए कर्ट ने लैनी की ओर एक ऐसी गहरी और स्पष्ट दृष्टि डाली कि वह प्रभावित हुए बिना न रह सका। लैनी जानता था कि नाजी लोग झूठ बोलने की कला में सिद्धहस्त हैं—ठीक कम्युनिस्टों की भांति। किन्तु इस बार कर्ट के स्वर में कुछ सत्य का पुट प्रतीत हुआ।

"अच्छी बात है, कर्ट। मुझसे जो कुछ हो सकेगा, मैं अवश्य करूंगा। किन्तु कुछ देरी हो सकती है क्योंकि शरणार्थी समिति के पास आवश्यकता से अधिक कार्य है। किन्तु इस बीच में तुम कम्युनिस्टों से जितनी दूर रह सको उतना ही अच्छा है।—अच्छा, यह तो बताओ कि अमरीकी क्षेत्र में आने की अनुमति तुम्हें मिल गई तो तुम किस स्थान में रहना पसन्द करोगे?"

मैं जनरल ग्राफ स्टूबेनडर्फ के समीप रहना पसन्द करूंगा। वे इस समय टेगर्नसी नामक स्थान के पास निवास कर रहे हैं। मैं उन्हे पत्र लिखने की सोच रहा था। किन्तु मुझे भय है कि कहीं मेरा पत्र खोल कर पढ़ न लिया जाय।"

लैनी ने देखा कि उसे जेनरल ग्राफ के साथ अपनी पिछली भेंट की बात बता देनी चाहिए। उसने संक्षेप में कहा, "इस समय वे काफी निर्धन हैं और बड़ी कठिनाई से गुजर बसर कर रहे हैं।"

"मैं जानता हूं। किन्तु उनकी झोपड़ी से कुछ ही दूरी पर एक और झोपड़ी है और शायद इसे वे किराये पर दे दें।"

"तुम्हें रुपये की आवश्यकता तो नहीं है?"

"नहीं, मैंने कुछ रुपया बचा लिया था। इसकी चिन्ता मत करो। फिर भी तुम्हें धन्यवाद है, लैनी?"

लैनी के होठों पर मुस्कराहट आ गयी किन्तु इस मुस्कराहट को उसने बलात दबा दिया। बेचारे कर्ट को क्या पता कि लैनीको कर्ट के रुपये के सम्बन्ध कितनी चिन्ता करनी पड़ रही थी !!

(४)

कर्ट के चले जाने के बाद लैनी ट्रेजरी विभाग के मिस्टर मोरीसन के पास गया। मोरीसन को फ्रित्ज की गिरफ्तारी का समाचार सुन कर दुःख हुआ क्यों कि फ्रित्ज से यह आशा की जाती थी कि वह एक अच्छा जासूस प्रमाणित होगा और हिमलरी मुद्रा के स्रोत का पता लगाकर अमेरिका के ट्रेजरी विभाग का एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा कर देगा। किन्तु कर्ट पर मोरीसन को कोई दया न आई। फिर भी उसे इस बात से संतोष हुआ कि वह कम्युनिस्ट अंचल छोड़कर अमरीकी अंचल में आना चाहता है।

"कर्ट और उसके दल के अन्य लोग भयानक व्यक्ति हैं।" उसने अपना निर्णय देते हुए कहा "किन्तु वे लोग यदि अमरीकी अंचल में चले आये तो हमारा लाभ ही होगा। हम उन पर और भी अधिक सतर्क निगरानी रख सकेंगे। नाजियों पर नजर रखने के लिये नाजी-विरोधी व्यक्ति आसानी से मिल जाते हैं —विशेषकर जब उन्हें इस कार्य के लिए पूरा पैसा दिया जाता है। एक बात

और भी है। यदि कर्ट और उसके साथी अपने साथ वह जाली मुद्रा भी ले आए तो हमारा काम और भी आसान हो जायगा। हम इसे आसानी के साथ जब्त कर सकेंगे।"

"हां, वह तो है ही।" लैनी ने सहमति जनायी। "कर्ट ने कम्युनिस्ट क्षेत्र से आकर टेगर्नसी में रहने की इच्छा प्रकट की थी। यह अंचल बवेरिया में पड़ता है और बवेरिया एक धार्मिक देश ही रहा है। यद्यपि हिटलर के जमाने में बवेरिया वालों को भी अपने आप को नाजी घोषित करना पड़ा था तथापि अधिकांश व्यक्ति हृदय से नाजी न थे।"

"ठीक कहते हो। अच्छा मुझे स्टूबेनडर्फ के सम्बन्ध में कुछ बताओ। क्या उससे जिसी प्रकार की सहायता मिल सकती है?"

"मैं इस सम्बन्ध में कोई आश्वासन नहीं दे सकता। वह एक सैनिक था और राजनीति के प्रति उसकी कोई विशेष अभिरुचि न थी। किन्तु वह कर्ट को अपने आदमी के रूप में देखता है। वह एक पुराना रईस है और अब भी इसकी आशा रखता है कि जर्मन कुलीनता अतीत के गौरव मन्डित स्थान पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लेगी।"

"क्या फ्रित्ज ने तुमसे उस गुप्त धन के सम्बन्ध में कुछ कहा?"

"मुझे याद नहीं आता।"

"उसने हम लोगों से कहा था कि उसके पिता को नाजियों के गुप्त धन का पता है। तुम तो जानते ही हो कि नाजियों ने हीरे जवाहरातों और सोने चाँदी के रूप में अपार सम्पत्ति जमीन में गाड़कर रख दी थी। जब उनका पतन हुआ वे इस सम्पत्ति को लेकर भिन्न-भिन्न स्थानों की ओर भागे और जिसे जहां सुविधा दिखाई दी वहां इसे छिपा दिया। कई स्थानों की खुदाई हम लोग करा चुके हैं, अन्य कई स्थानों का सूराग लगा रहे हैं। सम्भव है कर्ट को भी इस प्रकार के किसी गुप्त खजाने का पता हो और यही से वह खर्च के लिये रुपया निकालता हो।"

"मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता। कर्ट एक सम्मानीय व्यक्ति है। यदि उसे इस प्रकार के किसी खजाने का पता भी होगा तो भी वह इसमें हाथ न

लगाएगा; इसे वह राष्ट्र की सम्पत्ति समझ कर सुरक्षित रखने का प्रयत्न करेगा। 'बोल्किश्चरबण्ड' के काम के लिये भले ही वह इस रुपये को निकाल ले, तथापि अपने पारिवारिक खर्च के लिए वह इसे कभी न छुएगा।"

"किन्तु जाली मुद्रा तो वह अपने व्यवहार में लाता ही है।"

"वह उसके सिद्धान्त के अनुसार एक दूसरी बात है। यह ब्रिटिश और अमरीकी मुद्रा है और इसे चलाकर, हमारी आँखों में धूल झोंककर, वह सन्तुष्ट होता है। इसे वह युद्ध-नीति के रूप में देखता है।"

"भले ही वह नकली मुद्रा जर्मन लोग ही खरीदें।"

लैनी को हंसी आ गयी। "इसका उल्टा प्रभाव पड़ेगा। यह नकली मुद्रा बनायी इसलिये गयी थी कि शत्रु-देशों में स्फीति पैदा करके उनकी अर्थ-व्यवस्था को चौपट कर दिया जाय। किन्तु अब वह स्वयं उन्हीं के देश में आर्थिक गड़बड़ी की सृष्टि कर सकती है। जो भी हो, यह ध्यान में रखने की बात है कि कर्ट ने आत्म समर्पण नहीं किया है; वह अस्थायी रूप में जमीन के अन्दर चला गया है।"

"कोई हर्ज नहीं। हम उसे अपनी जमीन में ले आयेंगे और इसके बाद देख लेंगे। मैं शरणार्थी समिति से कह कर उसे अमरीकी अंचल में आने की अनुमति शीघ्र से शीघ्र दिलवा दूंगा।"

"वे लोग अनुमति दे देंगे?"

"अवश्य। यद्यपि पूर्वी जर्मनी से पश्चिमी जर्मनी में आने के लिये इतने अधिक व्यक्ति इच्छुक हैं कि सबको स्थान देना सम्भव नहीं है तथापि जब हम लोग उनसे किसी मामले में सिफारिश कर देते हैं तो काम हो जाता है। वे लोग जानते हैं कि हम किसी विशेष कारण से ही कोई सिफारिश करते हैं।"

"तो मैं कर्ट से कह दूं कि उसे अनुमति प्राप्त हो जाएगी?"

"हां तुम उससे कह दो कि ज्यों ही अनुमति प्राप्त हो वह अपने परिवार के साथ अविलम्ब अमरीकी अंचल में चला आवे।"

"मैंने उसके साथ एक सांकेतिक शब्दावली ठीक कर ली है। मैं उसे लिख दूंगा कि संगीतलिपियां प्राप्य हैं और वह समझ जाएगा।'

"किन्तु तुम पत्र पर हस्ताक्षर न करना।" मोरीसन ने अपना परामर्श दिया।

"मैं उस पर "बियेन बेनू" के नाम से हस्ताक्षर कर दूंगा। यह फ्रेन्च रिवेयरा पर मेरी मां के निवास स्थान का नाम है। कर्ट वहां बहुत दिनों तक रहा था। मैं उसे इसकी याद दिलाता रहता हूँ क्योंकि अब भी मुझे आशा है कि किसी दिन वह अपने जंजालों से मुक्त होकर वहीं चला जाएगा और एक महान संगीतज्ञ तथा संभ्रान्त व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकेगा।"

(५)

लैनी ने मोरीसन की कार्यवाही की प्रतीक्षा में समय नष्ट करना उचित न समझा। मोरीसन ने उसे विश्वास दिला ही दिया था कि वह कर्ट को अमरीकी अंचल में आने की अनुमति शीघ्रातिशीघ्र दिला देगा। उसने यह आश्वासन भी दिया था कि वह जहां कहीं भी होगा उसे घटनाक्रम की जानकारी मिलती रहेगी। मान्क ने भी इसी प्रकार का आश्वासन दे दिया था। इसके अतिरिक्त मान्क ने उसे पेरिस में अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर के प्रतिनिधि मिस्टर इर्विन्ग ब्राउन के नाम एक पत्र भी दिया था और यह कह दिया था कि इन सज्जन से उसे पेरिस की महत्वपूर्ण घटनाओं की पूरी पूरी जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

फलस्वरूप एक दिन प्रातःकाल लैनी वायुयान द्वारा पेरिस की ओर रवाना हो गया। हवाई अड्डे पर उतर कर वह शानदार होटल क्रिलन की ओर रवाना हुआ। वह इस भव्य होटल से भलीभांति परिचित था क्योंकि व्यापार के प्रसंग में जब जब अपने पिता के साथ पेरिस आता था इसी होटल में ठहरता था। इस बार होटल के मैनेजर ने विनीत स्वर में उससे कहा कि उसे एक कमरे के दैनिक किराए के रूप में २५०० फ्रांक देना पड़ेगा। लैनी को इससे कोई आश्चर्य न हुआ। वह जानता था कि फ्रांक की विनिमय दर पहले की तुलना में बहुत घट गयी है। सरकार के दृष्टिकोण से यह मुद्रा स्फीति विशेष चिन्ताजनक भी न थी। इसके फलस्वरूप उसे धनियों का जमा पड़ा हुआ धन समाप्त करने तथा वेतन भोगियों के वास्तविक वेतन को कम करने में काफी सहायता मिलती थी।

पेरिस पहुंच कर लैनी ने पहला कार्य यह किया कि मार्क्विस डे ला टूर डे ब्रियेल्ले को एक पत्र लिखकर अपने आगमन की सूचना दे दी और उनके पास

रेम्ब्राण्ड्ट: का जो प्रसिद्ध चित्र था उसे देखने की इच्छा प्रकट की। मार्क्विस का निवास स्थान सेण्ट जर्मन नामक शानदार मोहल्ले में था जहां केवल कुलीन और सम्भ्रान्त व्यक्ति ही रहते थे। साधारण अमरीकी नागरिकों को यहां आने का अवसर कम ही दिया जाता था। किन्तु आजकल स्थिति दूसरे प्रकार की थी। रईसों के सामने भी जीवन-निर्वाह की समस्या थी और इस समय एक अमरीकी डालर ११९ फ्रांक के बराबर था; चोर बाजार में भाव और भी ऊँचा था।

पत्र भेजकर लैनी दो दिन के लिये निश्चिन्त हो गया। वह जानता था कि मार्क्विस का उत्तर आने में इतना समय अवश्य लग जायगा। वहां से टेली-फोन पर संवाद आने की कोई सम्भावना न थी क्यों कि मार्क्विस उन रईसों में थे जिनका आचार व्यवहार पुराने रीति रिवाज के अनुसार चलता था और इस रीति रिवाज के नियम टेलीफोन का आविष्कार होने के दो शताब्दी पूर्व निश्चित हो गए थे। किन्तु लैनी कुछ ऐसे फ्रांसीसियों को भी जानता था जिनके विचार आधुनिक ढंग के थे। इसमें से एक थे कैप्टेन डेनिस डे ब्रूयने। ये महाशय पेरिस के बाहर साइन-एट-ओइस नामक नगर में रहते थे। लैनी ने इन्हें टेली-फोन किया। लगभग एक वर्ष बाद लैनी की आवाज सुन कर ये बड़े प्रसन्न हुए और गद्गद स्वर में बोले, "मैं अभी आकर आपसे मिलूंगा।"

इस बीच में लैनी को एडगरमीयर टेलीफोन करके लारेल से बात चीत करने का समय मिल गया। वहां सब कुशल थी। लैनी के दोनों बच्चे मजे में थे।

"अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।" लारेल ने उत्कण्ठा के स्वर में कहा।

लैनी ने उसे आश्वासन दिया किन्तु उसने लारेल से इसी प्रकार का अनुरोध करने की कोई आवश्यकता न समझी क्योंकि वह जानता था कि लारेल स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सदा सतर्क रहती है।

(६)

कैप्टेन डेनिस जब लैनी से मिलने के लिये आया, उसकी बांह पर एक काला कपड़ा बँधा हुआ था। यह उसके पिता की स्मृति के रूप में था जिनकी मृत्यु इसी वर्ष हुई थी। सम्भवतः मृत्यु के बाद इन वृद्ध महाशय को स्वर्ग में परियों के दल के साथ रखा गया होगा क्योंकि इस पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में वे

अपनी व्यापार कुशलता के साथ साथ लम्पट मनोवृत्ति का भी पूरा पूरा परिचय दे चुके थे। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें अपनी पत्नी मारी की श्रद्धा और प्रेम से वंचित होना पड़ा था। किन्तु लैनी के लिये यह बात सौभाग्यपूर्ण ही प्रमाणित हुई थी। प्रायः दस वर्ष के दीर्घ समय तक मारी उसकी बौद्धिक प्रेमिका के रूपमें रही थी। फ्रेंच रीति नीति के अनुसार इस प्रेम ने लैनी को परिवार के एक सदस्य के रूप में परिणत कर दिया था। मारी की मृत्यु के समय लैनी एक शोकातुर प्रेमी की भाँति उसके अन्तिम संस्कार में उपस्थित हुआ था और किसी ने इस बात को आपत्तिजनक न समझा था।

परिवार के साथ इस पुराने सम्बन्ध के फलस्वरूप कैप्टेन डेनिस तथा उसका छोटा भाई चार्लट लैनी को अपने पिता के रूप में ही देखते थे। छोटा भाई चार्लट युद्ध के अन्तिम दिनों में 'वीची के गुण्डों' द्वारा मार डाला गया था। डेनिस भी जर्मनों से युद्ध के तारतम्य में दो बार बुरी तरह घायल हो चुका था। चार्लट की विधवा पत्नी ने दूसरी शादी कर ली थी और अपने बच्चों के साथ नये पति के घर चली गयी थी। फलस्वरूप डेनिस अपने पैत्रिक मकान में अकेला रह गया था।

डेनिस ने लैनी से अनुरोध किया कि वह रात उसी के घर पर बितावे। उसने अपनी पत्नी एनेट से कह दिया था कि युद्ध काल में लैनी ने ही उसके परिवार को राजनैतिक गुण्डों के आक्रमण से बचाया था और इसलिये एनेट भी लैनी से मिलने के लिये बड़ी व्यग्र थी। लैनी ने थोड़ा सा आवश्यक सामान एक झोले में रख लिया और डेनिस के साथ चल पड़ा। डेनिस की मोटर का ड्राइवर लैनी को भलीभांति पहचानता था। उसने हाथ उठाकर मुस्कराते हुए लैनी का स्वागत किया। गाड़ी जिस समय घर की ओर रवाना हुई धुआँधार वर्षा हो रही थी। पेरिस की सड़कों पर इस प्रकार के मौसम में मोटर चलाना खतरे से खाली नहीं रहता। लैनी बहुधा कहा करता था कि पेरिस की सड़कें आत्महत्या पर उतारू ड्राइवरों से भरी रहती हैं। किन्तु कोई दुर्घटना न हुई और वे लोग जीते जागते निकल आए। पेरिस के बाहर आकर उन्होंने सुन्दर स्वच्छ उपनगर में प्रवेश किया जो नवम्बर मास में इस भयानक वर्षा के बावजूद बड़ा आकर्षक प्रतीत हो रहा था।

मोटर जिस कच्ची सड़क पर से गुजर रही थी उससे लैनी भलीभांति परिचित था। प्रायः पचीस वर्ष पूर्व मारी डे ब्रूयने इसी सड़क से लैनी के साथ प्रणय बसन्त मनाने के लिये निकली थी। इसके अतिरिक्त गत महायुद्ध में जब अमरीकी सैनिक फ्रांस में उतरे थे तब भी लैनी इस सड़क से होकर गुजरा था। उस घटना को बीते आज तीन वर्ष हो गए। उस समय इस क्षेत्र में जर्मनों का अधिकार था और लैनी ने रात के समय आकर ब्रूयने परिवार को परामर्श दिया था कि वे शीघ्र से शीघ्र अमरीकी अंचल में चले आवें।

बच्चे बोर्डिन्ग स्कूल में रहते थे। फलस्वरूप घर में डेनिस और उसकी पत्नी ही रहते थे। डेनिस एक कठोर नैतिक मनोवृत्ति वाला व्यक्ति था। कदाचित यह नैतिकता अपने पिता की लम्पटता के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में ही थी। परिवार के तीनों सदस्य अंग्रेजी धाराप्रवाह रूप में बोल लेते थे। उन्होंने लैनी के शान्ति-पत्र को पढ़ा था और समय समय पर शान्ति रेडियो के प्रोग्रामों को सुना था। इस प्रकार वे लैनी की विचार धारा से परिचित थे। किन्तु उन्हें लैनी के मस्तिष्क की उन गुप्त तहों के सम्बन्ध में कोई जानकारी न थी जो वह अपने तक ही सीमित रखता था। इस सम्बन्ध में वे लोग कोई अनुमान भी न लगा सकते थे। लैनी ने उन्हें अपनी बर्लिन यात्रा का वृत्तान्त बताया। उसने अपनी इस यात्रा के लिये एक विश्वसनीय कारण भी दे दिया—वह रेडियो चलाता है और बर्लिन के आर० आई० ए० एस० रेडियो ने उसे आमंत्रित किया है।

(७)

डेनिस ने बताया कि युद्ध-ध्वंस्त फ्रांस में पुनर्निर्माण का कार्य धीमीगति से चल रहा है और फ्रांस को फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने में काफी समय लगेगा। डेनिस ने यह शिकायत की थी कि उसके पास बड-अलिन्ग-एयरक्राफ्ट कम्पनी के काफी शेयर हैं किन्तु कई वर्षों से इन पर कोई डिवीडेण्ड नहीं मिला। लैनी ने मन ही मन अनुमान लगाया कि इस समय जैसी स्थिति है उसके अनुसार शीघ्र ही युद्ध-विमानों की मांग फिर उठेगी और कम्पनी का काम जोर शोर से चलने लगेगा। किन्तु जब उसने डेनिस से इसकी चर्चा की तो आशा के

विपरीत वह बोला कि उसे युद्ध में कोई दिलचस्पी नहीं है; वह नहीं चाहता कि अमेरिका अथवा अन्य कोई देश फिर से युद्ध शुरू करे। उत्तर में लैनी ने कहा कि इस उदासीन दृष्टिकोण का अर्थ होगा कम्युनिस्टों के सम्मुख पूर्ण आत्म-समर्पण। किन्तु डेनिस ने कहा कि युद्ध की अपेक्षा यह फिर भी ठीक है; कम से कम फ्रांस अब फिर से युद्ध करने के लिये तयार नहीं है, उसके शरीर में जितना रक्त था वह बह चुका है और अब वह किसी प्रकार भी नये रक्तपात के लिये राजी नहीं हो सकता।

लैनी को डेनिस की यह मनोवृत्ति आश्चर्यजनक न प्रतीत हुई। वह जानता था कि डेनिस उत्तरी अफ्रीका तथा फ्रांस—दोनों ही मोर्चों पर जर्मनों के साथ वीरतापूर्वक युद्ध कर चुका है। किन्तु यहां वह अपनी व्यक्तिगत नहीं बल्कि, फ्रांसीसी जनता की मनोभावना व्यक्त कर रहा है। फ्रांसीसी लोग अब किसी प्रकार भी युद्ध के लिये तयार न होंगे। वे जानते हैं कि यदि फिर से युद्ध छिड़ा तो पहले की भांति ही शत्रु सेना के हजारों टैन्क फ्रांस को रौंद डालेंगे और वायुयानों की भीषण बमवर्षा सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर डालेगी। यह ठीक है कि अमरीकी लोग फिर से उनकी रक्षा के लिये आ जायंगे किन्तु इस आणविक युद्ध में रक्षा के लिये बचेगा क्या? ऐसी स्थिति में अनुभवी फ्रांसीसी लोग आत्म समर्पण करके वस्तुस्थिति को चुपचाप स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त और सोच भी क्या सकते हैं?

वार्त्तालाप के तारतम्य में डेनिस ने यह भी बताया कि युद्ध समाप्त होने पर कम्युनिस्टों के एजेन्ट लोग कारखानों में घुस गए और नाना प्रकार के छल कौशल से मजदूरों को अपनी ओर मिला लिया। अधिकांश ट्रेड यूनियनें कम्युनिस्टों के हाथ में हैं और वे किसी भी समय एक भयानक उपद्रव खड़ा कर सकती हैं।

वे एक विराट हड़ताल कराने की तयारी कर रही हैं। यह हड़ताल किसी भी दिन हो सकती है। यदि हड़ताल दबा भी दी गयी तो भी कम्युनिस्टों की शक्ति घटने के स्थान पर उल्टे बढ़ जायगी और वे दुबारा आक्रमण करने की तयारी में लग जाएंगे। यही सब सोचकर उसने अपने अमरीकी शेयरों के डिवी-

डेण्ड न्यूकैसेल की एक अमरीकी बैन्क में जमा कर दिये हैं। उसने अपने व्यापार का अधिकांश भाग बेच दिया है और बहुमूल्य समान छिपा कर रख दिया है। संकटकालीन स्थिति उत्पन्न होते ही वह अपनी सारी जमापूंजी क्षण भर में इकट्ठी करके भाग खड़ा हो सकता है। उसके बच्चे अभी तो बोर्डिन्ग हाउस में हैं किन्तु उसका विचार है कि उन्हें वापस बुलाकर घर में ही रख लिया जाय क्योंकि किस समय विपत्ति खड़ी हो जाएगी इसका कोई ठीक नहीं है। उसके पास दो मोटरें हैं, एक परिवार के लिये और एक नौकरों के लिये। विपत्ति उपस्थित होते ही वे तुरन्त इन मोटरों में बैठ कर स्पेन की ओर रवाना हो जाएंगे। वहां से वे कैलीफोर्निया अथवा अर्जेण्टाइना चले जाएंगे।

यह थी एक कुलीन, सम्भ्रान्त और धनी फ्रांसीसी युवक की मनोस्थिति। उसकी पत्नी पास ही बैठी हुई सब कुछ सुन रही थी। उसके मुखमण्डल पर भय और चिन्ता की छाया स्पष्ट थी। वह भी अपने जीवन काल में अनेकों संकटों से गुजर चुकी थी और अब इनकी पुनरावृत्ति न चाहती थी। वह रूढ़िवादी मनोवृत्ति की थी और इसलिये जेनरल डे गाल को वापस सत्तारूढ़ होते देखना चाहती थी। किन्तु इससे भी क्या होगा? यह ठीक है कि जेनरल डे गाल कम्युनिस्टों का दमन करने के लिये हृदय से उत्सुक हैं। किन्तु इस प्रकार की भयानक परिस्थितियों में वे भी क्या कर सकते हैं? और फिर उनके सत्तारूढ़ होने की कोई सम्भावना भी नहीं है। फ्रांस में इस समय दर्जनों पार्टियां हैं और जनता के वोट खण्ड खण्ड होकर इनमें बंट जाते हैं। राजनीतिक नेतागण भी किसी समस्या पर एकमत नहीं हैं; उनमें आपसी कतरब्यौंत चलती ही रहती है। प्रत्येक तीन चार मास में एक नयी सरकार का गठन हो जाता है। किन्तु नयी सरकार के आने से वस्तु स्थिति में कोई नवीनता नहीं आती, वह पहले की भांति ही गम्भीर बनी रहती है।

संक्षेप में ब्रूयने परिवार के अनुसार फ्रांस की स्थिति निश्चित रूपमें निराशाजनक थी।

(८)

दूसरे दिन सबेरे लैनी शहर आया। उसने अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर के

आफिस में जाकर मिस्टर इर्विङ्ग ब्राउन से मुलाकात की और उन्हे अपना परिचय पत्र दिखाया। ऊपर से देखने पर यह बात बड़ी बेतुकी प्रतीत होती थी कि इस अमरीकी संस्था की कोई शाखा पेरिस में रखी जाय। अमेरिका में बहुत से प्रतिक्रियावादी लोग यह ताना मारा करते थे कि पेरिस में ब्राउन गैरकानूनी काम कर रहा है अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्धित जो कार्य अमेरिका की सरकार को करने चाहिये वह कार्य ब्राउन कर रहा है। किन्तु इन आलोचना प्रत्यालोचनाओं के बावजूद ब्राउन का काम चल रहा था और उसे किसी भी अभियोग में गिरफ्तार न किया जा सका था। हां, कम्युनिस्टों ने उसकी हत्या की धमकी अवश्य दी थी। उसकी आयु केवल ३६ वर्ष की थी जो इस प्रकार के उत्तरदायित्वपूर्ण पद के लिये कम ही थी। वह न्यूयार्क विश्वविद्यालय का स्नातक था, छात्र जीवन में खेलकूद के क्षेत्र में अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। बाद में उसने अपने आपको मजदूर आन्दोलन से सम्बन्धित कर लिया था और अमेरिका के मोटर उद्योग में काम करने वाले मजदूरों का संगठन करने लगा था। इसके बाद मजदूर नेताओं का सरकार के साथ समझौता हो जाने के फलस्वरूप उसने विरोधात्मक क्रियाशीलता बन्द कर दी और एक वेतनभोगी अधिकारी के रूप में योरोप चला आया।

वह पिछले एक वर्ष से योरोप में था। उसका कार्य यह था कि जिस प्रकार भी हो मजदूरों को कम्युनिस्टों के जाल में फंसने से रोके। वह भिन्न भिन्न ट्रेड यूनियनों तथा मजदूर-नेताओं से मिलता था और उन्हें अमेरिका की रीति-नीति समझाने का प्रयत्न करता था। वह उन्हें समझाता था कि मार्शल प्लान अमरीकी साम्राज्यवाद नहीं है बल्कि वास्तविक सहृदयता और उदारता द्वारा प्रसूत है। फ्रांसीसी राज्य क्रांति का नारा था "स्वतंत्रता, समानता और मित्रता"। ब्राउन इसकी चर्चा करते हुए कहा करता था कि इस नारे में स्वतंत्रता को प्रथम स्थान दिया गया था क्योंकि उसके बिना शेष दोनों की कोई सम्भावना नहीं है।

ब्राउन का काम ऐसा था कि उसे बड़े धैर्य तथा कौशल के साथ आगे बढ़ना पड़ता था। कम्युनिस्टों की यूनियन "कोकोस" काफी प्रभावशाली थी और वह इस "अवांछित अमरीकी" के विरुद्ध अनवरत रूप में विषवमन करती रहती थी

कम्युनिस्ट लोग उसे "वाल स्ट्रीट का एजेण्ट" बताते थे और कहा करते थे कि उसके पास खर्च के लिए लाखों रुपये रहते हैं। वे लोग एक स्वर से यह मांग उठाते रहते थे कि उसे फ्रांस से निकाल दिया जाय।

ब्राउन का चेहरा बड़ा आकर्षक था, उस पर किसी प्रकार का दाग न था। लैनी बड से मिलकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ क्यों कि वह शांति-परिवार के कुछ रेडियो प्रोग्राम सुन चुका था। लैनी ने उसे बर्लिन के "आर आई. ए. एस." रेडियो का हाल बताया; अण्डर सेक्रेटरी एचीसन के साथ होने वाली अपनी वार्त्ता की चर्चा भी की। ब्राउन यह सब सुन कर प्रसन्न ही हुआ। उसने लैनी को बताया कि वह स्वयं जेनरल क्ले तथा अन्य ए० एम० जी० अधिकारियों से मिला था। और उनके साथ काफी तर्क वितर्क किया था। किन्तु उन लोगों को यह समझने में कुछ देर लगेगी कि कम्युनिस्टों की मित्रता एक धोखा मात्र है। मित्रता की कौन कहे उनसे भद्र व्यवहार की आशा भी नहीं की जा सकती।

ब्राउन ने लैनी का ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित किया कि जर्मनी में एक सोशलिस्ट नेता को जेल भेज दिया गया—केवल इसलिए कि उसने सोवियत रूस की आक्रमणात्मक नीति की आलोचना की थी! और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह हुई कि ब्रिटेन की सोशलिस्ट सरकार ने बिना किसी प्रकार का प्रतिवाद किये हुये अपनी सहमति जना दी। इस नीति को "तटस्थता' बताया जाता है!

"किन्तु मैं यह बात स्पष्ट रूप में जानता हूं कि अत्याचार और स्वतंत्रता के बीच होने वाले संघर्ष में तटस्थता की कोई गुञ्जायश नहीं है। हमें दो में से एक को चुनना ही पड़ेगा।"

(९)

लैनी एक टैक्सी लेकर सेण्ट जर्मेन मोहल्ले में मार्विर्वस से मिलने के लिए गया। मकान प्राचीन किलों की भांति लौह द्वारों तथा ऊंची ऊंची क्यारियों से घिरा हुआ था। लैनी ने घन्टी बजाई। काली वर्दी में लैस एक नौकर ने आकर दरवाजा खोल दिया। लैनी ने अपना नाम बताया। इस बार एक प्रौढ़ा महिला, जो कदाचित मार्विर्वस की सेक्रेटरी अथवा कोई निर्धन रिश्तेदार थी, ने प्रवेश

किया। मार्विर्वस ने न जाने क्यों बाहर आना उचित न समझा, पुराने ढंग के रईसों की परम्परा कुछ इसी प्रकार की होती है।

महिला लैनी को साथ लेकर आगे बढ़ी और एक पुराने ढंग से सजे हुए कमरे में ले गयी। मखमल के मोटे मोटे पर्दों को थोड़ा सा हटाने पर लैनी को उस बहुमूल्य चित्र के दर्शन हो गए जो कि वह खरीदने के लिये आया था। यह चित्र रेम्ब्राण्ड्ट के युवा रूप का था और इसको उत्कृष्टता निर्विवाद थी। यह सुन्दर चित्र कदाचित इसी दीवार पर एक शताब्दी से इसी प्रकार लटक रहा था। लैनी अपने साथ बिजली की टार्च तथा दुर्बीन लाया था ताकि वह उसकी जांच कर सके। जांच करने पर उसे संतोष हो गया और उसने मूल्य जानना चाहा। उसे बताया गया कि चित्र का मूल्य १ करोड़ १० लाख फ्रान्क होगा—लगभग दो लाख डालर। दाम बहुत अधिक था किन्तु लैनी जानता था कि उसके ग्राहक को इसकी आवश्यकता है। कुछ दिन पूर्व उसने जर्मनी में वृद्ध रेम्ब्राण्डट का चित्र खरीदा था; उसके साथ युवा रेम्ब्राण्ड्ट का यह चित्र बड़ा सुन्दर रहेगा। लैनी को भय था कि मोल तोल करने में सौदा कहीं बिगड़ न जाय। इसीलिए उसने चुपचाप यह मूल्य स्वीकार कर लिया।

"मैं यह चित्र ले लूंगा।" उसने संक्षेप में कहा। पुराने जमाने की एक स्वर्ण-मण्डित कुर्सीपर बैठ कर उसने एक करोड़ दस लाख फ्रांक का चेक लिख दिया। उसने यह भी कह दिया कि चेक का भुगतान हो जाने पर ही वह चित्र लेने के लिये आएगा; इसके पूर्व नहीं। लैनी ने बाहर आकर बैंक की लन्दन शाखा को टेलीफोन कर दिया कि वह यथाशीघ्र मार्विर्वस को एक पत्र लिखकर सूचित कर दे कि उस चेक का भुगतान स्वीकार कर लिया गया है।

इस सौदे के बाद भी लैनी को चाय अथवा काफी के लिये न पूछा गया। वह महिला कदाचित लैनी को इतनी बड़ी रकम की चेक लिखते हुए देखकर अवाक हो गयी थी; किन्तु उसने अपना आश्चर्य प्रकट न किया। आश्चर्य प्रकट करना रईसी परम्परा के विरुद्ध था। इसके अतिरिक्त उस महिला की दृष्टि में मार्विर्वस ही संसार के सबसे अधिक महान और आश्चर्यजनक व्यक्ति थे—ठीक उसी प्रकार

जिस प्रकार कि पुराने जमाने के नीग्रो लोग अपने श्वेत मालिकों को ही एकमात्र श्रद्धाभाजन समझते थे।

(१०)

शीघ्रता की कोई आवश्यकता भी न थी क्योंकि लैनी को वह चित्र उसी दिन मिल गया होता तो भी वह उसे फ्रांस से बाहर भेज न सकता था क्योंकि दूसरे दिन प्रातः काल मजदूरों की हड़ताल घोषित हो गयी थी। हड़ताल की तयारी एक अर्से से चल रही थी किन्तु किस दिन उसकी घोषणा होगी इस रहस्य को एक सैनिक रहस्य की भांति गुप्त रखा गया था। अब जबकि उसकी घोषणा कर दी गयी, हड़ताल बिजली की भाँति फ्रांस के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ गयी; लगभग तीस लाख मजदूरों ने अपने औजार रख दिये और कम्युनिस्ट नेताओं के भाषण सुनने के लिये चल पड़े।

कम्युनिस्टों के तत्वावधान में परिचालित इस हड़ताल का कारण यह बताया गया था कि जीवन-यापन-व्यय बढ़ जाने के फलस्वरूप वेतन में वृद्धि होना अनिवार्य हो उठा है। जीवन-यापन-व्यय में वृद्धि होने का मुख्य कारण फ्रांसीसी मुद्रा का मूल्य ह्रास ही था। किन्तु मुद्रा का मूल्यपात एक निराकार आर्थिक तत्व है; इसके विरुद्ध किसी को कैसे भड़काया जाय? इसीलिये कम्युनिस्ट नेताओं ने अपने उद्देश्य के लिये एक साकार शत्रु खोज लिया था। यह शत्रु का "वाल स्ट्रीट" अथवा अमरीकी साम्राज्यवाद के रूप में मार्शल-योजना। यह कहा गया था कि अमेरिका के नये सेकरेटरी आफ स्टेट जेनरल मार्शल श्रमजीवी जनता के कट्टर शत्रु हैं।

फ्रांस में कम्युनिस्ट पार्टी के दस लाख सदस्य थे। इसका यह अर्थ था कि सभा समितियों में, गली कूचों में और मैदानों में भाषण देने के लिये वक्ता सहज ही प्राप्य थे। पिछले महीने में फ्रांस के अन्दर जो आम चुनाव हुआ था उसमें कम्युनिस्टों को २९ प्रतिशत वोट मिले थे। इसका यह अर्थ था कि इन वक्ताओं के भाषण सुनने के लिये कम से कम पचास लाख व्यक्ति तयार थे। ये श्रोतागण रटे रटाए नारों को दोहराने, जलूस निकालने, ईंट पत्थर फेकने तथा इसी प्रकार के अन्य उपद्रवों के लिये भी पूर्णतया कटिबद्ध थे। पचास लाख व्यक्तियों की

भीड़ किसी भी समय पेरिस में लूटपाट शुरू कर सकती थी और एसेम्बली भवन को घेर कर एक संकटापन्न स्थिति की सृष्टि कर सकती थी।

केवल इतना ही नहीं स्थिति एक अन्य दृष्टिकोण से भी गम्भीर थी। युद्ध काल में हजारों फ्रांसीसियों ने नाजियों के विरुद्ध गोरिल्लायुद्ध करने की कला सीख ली थी और अब वे अपनी इस विद्या का उपयोग अमरीकी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध कर सकते थे। मार्शल योजना के अन्तर्गत आने वाले माल फ्रांस के अन्दर प्रवेश न कर सकें इसके लिये रेलों को उखाड़ा जा सकता था, बन्दरगाह के डकों को नष्ट भ्रष्ट किया जा सकता था और पुलों को तोड़ फोड़ कर बर्बाद किया जा सकता था !! इन सब कार्यों को छिप कर करने की कोई आवश्यकता न थी ; इन्हे खुलेआम किया जा सकता था। जलूसों के आगे औरतों और बच्चों को रखकर पुलिसवालों को गोली चलाने से मना करवाया जा सकता था। हड़-ताल का ऊपरी उद्देश्य जो भी बताया गया हो उसका वास्तविक उद्देश्य फ्रांस में राज्यक्रान्ति कराकर शासन-सत्ता कम्युनिस्टों के हाथ में लाना ही था। संक्षेप में योजना यह थी कि फ्रांस में रूस की पुनरावृत्ति कराई जाय। "दुनिया के मजदूर एक हो !"

लैनी हड़तालियों की एक सभा में चला गया। यह उसके लिए एक दुस्साहस का कार्य था। वह स्पष्ट रूप में "अमरीकी साम्राज्वाद"—वाल स्ट्रीट का लाड़ला था ! उसने एक दिन पहले १ करोड़ दल लाख फ्रांक की चेक काटी थी—यह रकम इतनी बड़ी थी कि इस सभामें एकत्रित होने वाले सभी व्यक्तियो का मासिक वेतन भी इतना न होता था। चारों ओर से उस पर क्रुद्ध दृष्टियां पड़ने लगीं। किन्तु वह चुपचाप बैठा रहा। जब और लोग तालियां पीटते तो वह भी तालियाँ पीटने लगता, जब और लोग मुट्ठी बांध कर अपने हाथ आकाश की ओर उठाते तो उसका हाथ भी अपने आप उठ जाता। लोगों ने समझा कि शायद वह उन पूंजीपतियों में हो जो अन्त में कम्युनिज्म के समर्थक बन कर अपनी लाखों की सम्पत्ति जागरूक सर्वहारा समाज को दान कर देते हैं।

लैनी यह सुनना चाहता था कि सभा में क्या दलीलें दी जाती हैं। वह फ्रांस के मजदूरों की मनोस्थित को समझना चाहता था। किन्तु दो घन्टे के छोटे से

समय में उसने अमेरिका के विरुद्ध इतने मिथ्या अभियोग सुने जिनका उत्तर वह दो दिन में भी न दे सकता था। आश्चर्य! लैनी मन ही मन सोच रहा था कि अमेरिका ने आकर फ्रांस को नाजियों के चंगुल से छुड़ाया अपना खून और पसीना एक कर दिया, इस समय भी अपना खजाना उड़ेल रहा है—किन्तु यह सब आज एक जघन्य अपराध के रूप में परिणत हो गया !! अमेरिका का अर्थ हो गया वाल स्ट्रीट और क्रेमलिन हो गया संसार के सर्वहारा समाज का हितचिंतक !!

(११)

घृणा की इस आंधी को कौन रोक सकता था? डेनिस डे ब्रूयने के अनुसार यह कार्य सम्भव ही न था। किन्तु लैनी निराश न हुआ था। उसने पिछले कुछ दिनों में ब्राउन के कार्यालय में बैठ कर वस्तुस्थित की काफी अभिज्ञता प्राप्त कर ली थी। अब भी फ्रांस में ऐसे बहुत से मजदूर नेता थे जो मास्को के गुलामों के रूप में परिणत न हो गये थे। इसके अतिरिक्त ब्राउन को पेरिस में इसीलिए रखा गया था कि वह कम्युनिस्टों के इस षड्यन्त्र को सफल न होने दे। हां, एक आशंका अवश्य थी। फ्रांस में यह षड़यन्त्र सफल न हुआ तो अवश्य ही इटली में इसकी पुनरावृत्ति होगी और इटली में कम्युनिस्टों की संख्या फ्रांस की तुलना में अधिक है। इस प्रकार धीरे धीरे यह स्थिति आ जायगी कि पश्चिमी योरोप में कम्युनिस्टों का विरोध करने लायक कोई शक्ति न रह जायगी। प्रतिरोध का सारा मोर्चा चूर चूर हो जायगा।

इस समय इस कम्युनिस्ट षड़यन्त्र का विरोध कौन कर सकता है? केवल एक व्यक्ति पर ही कुछ आशा थी। ६ फीट लम्बा, स्वस्थ, सबल और हंसमुख लिओन जाऊहाक्स ही इस समय एक शक्तिस्तम्भ के रूप में प्रतीत हो रहा था।

फ्रांस के मजदूरों की महासमिति जिसे संक्षेप में "सी० जी० टी०" कहते हैं के दो सेक्रेटरी थे। जाऊहाक्स इनमें से एक था। दूसरा सेक्रेटरी कम्युनिस्ट था। वर्षों से दोनो व्यक्तियों में द्वन्द्व युद्ध चल रहा था। जब हड़ताल की घोषणा हुई जाऊहाक्स ने उसकी निन्दा की—यद्यपि यह उस व्यक्ति के लिए एक कठिन कार्य था जिसका अधिकांश जीवन मजदूरों को संगठित करने में बीता था। किन्तु जाऊहाक्स के मन में यह बात भली भांति स्पष्ट थी कि आज यह संगठन

फ्रांसीसी नहीं रहा ; वह कम्युनिस्टों के हाथ में चला गया है और इसलिए एक सोवियत संगठन हो गया है। जाऊहाक्स ने रेडियो पर अपना एक भाषण दिया और हड़ताल को फ्रांसीसी हितों के विरुद्ध घोषित किया।

परिणाम यह हुआ कि कम्युनिस्टों द्वारा उस पर विषवमन होने लगा ; उसे "वाल स्ट्रीट का गुलाम' बताया गया। जाऊहाक्स वर्षों तक मजदूरों में "जेनरल' के रूप में प्रसिद्ध रहा था, युद्ध के समय मजदूरों की हितचिन्ता के कारण ही उसे हिटलर के बन्दी शिविर में रहना पड़ा था। किन्तु क्षण भर में उसे मजदूर जनता का शत्रु घोषित कर दिया गया।

जाऊहाक्स जानता था कि इस हड़ताल का भीतरी उद्देश्य क्या है ; यह फ्रांस पर एक विदेशी आक्रमण की भांति ही थी। कार्यकारिणी ने हड़ताल की घोषणा करने के पूर्व मजदूरों का मतामत लेने की भी कोई आवश्यकता न समझी थी और हड़ताल सफल कराने के लिए कम्युनिस्ट लोग सड़कों पर पहरा देते हुए घूम रहे थे। जो भी मजदूर हड़ताल में सम्मिलित न होना चाहता था उसका सिर फोड़ दिया जाता था। इसके अतिरिक्त रेलकी पटरियां उखाड़ना, बांध तोड़ना सड़कों में यातायात बन्द करना तथा ईंट पत्थर चलाना जारी था।

किन्तु कम्युनिस्टों के लाख प्रयत्नों के बावजूद जाऊहाक्स अपने पद पर डटा हुआ था ; उसने त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया था। उसके नेतृत्व में फ्रांस के अनेकों मजदूरों ने मिलकर एक प्रतिरोध मोर्चा खड़ा किया। इस मोर्चे का काम था जिस प्रकार भी हो इस हड़ताल को असफल करना। इसमें लगभग आठ लाख मजदूरों का सहयोग था। ये रेलों, पुलों, खदानों तथा अन्य राष्ट्रीय सम्पत्ति की रक्षा करने में लग गये।

लैनी इर्विन्ग ब्राउन के कार्यालय में बैठकर इस पारस्परिक द्वन्द्व युद्ध को देखने लगा। उसने तथा ब्राउन ने इस युद्ध में कोई सक्रिय भाग न लिया—क्योंकि वे दोनों 'अमरीकी साम्राज्यवादी' थे। किन्तु दोनों व्यक्ति समझदार मजदूर नेताओं को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते रहे कि अमेरिका फ्रांस की स्वाधीनता को हड़पने का किंचित मात्र इच्छुक नहीं है। लैनी पूरे योरोप का भ्रमण कर चुका था और जानता था कि आजकल जिस प्रकार का शब्दयुद्ध चल रहा है

उसमें सत्य को असत्य और असत्य को सत्य बनते देर नहीं लगती। गणतन्त्र को तानाशाही बना दिया जाता है और दास-मजदूर शिविरों को गणतंत्र। किन्तु उसे विश्वास था कि आधुनिक जगत में स्वाधीनता की भावना का जन्म सर्वप्रथम फ्रांस में हुआ था और इसीलिए फ्रांसीसी लोग इस शब्द के वास्तविक अर्थ को न भूलेंगे।